

अथ

पंक्ति लब्धिविजय विरचित श्री

हरिवलमहीनो रास प्रागञ्ज



॥ दोहा ॥

॥ प्रथम धराधर जगधणी, प्रथम श्रमण पण एह ॥
प्रथम तीर्थकर जग जयो, प्रथम गुरु पणोह ॥ १ ॥
विश्वस्थिति कारक प्रथम, कारक विश्व वयोह ॥ धा
रक अतिशय आदि जिन, तारक जवनिधि पोह ॥ २ ॥
लघुवय इष्टा इष्टुनी, पारण दिन पण तेह ॥ मिष्ट
इष्ट जेहने सदा, नाजिनंदन प्रणमेह ॥ ३ ॥ सिद्धव
धुना संगमें, थठक ठक्यो दिन रात ॥ हुं तस पदपंक
ज नमुं, नित्य ठही परजात ॥ ४ ॥ हंसासन जे स
रसती, वरसति वचन विज्ञास ॥ कविजन केरा हृद
यमें, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥ ते हुं प्रणमुं नारती,
वारति जड अंधार ॥ मुऊ मन मंदिरमें वसी, करवा
मुऊ उपगार ॥ ६ ॥ माता मुऊ महोटी करी, देजे व
चन रसाज ॥ संगसंगीजी जनसजा, सांजजे थइ उज

माल ॥ ७ ॥ जे हुं चाहुं चित्तमें, ते तूं करजे मात
 ॥ वचननी रचना रस दियो, वाधे तुज आव्यात ॥
 ॥ ८ ॥ गुरु दाता माता पिता, गुरुथी अधिक
 न कोय ॥ देवधर्म गुरु उलख्या, बलिहारी गुरु सो
 य ॥ ९ ॥ ते गुरु चरण नमी करी, नवियणने हित
 कार ॥ रास रचुं हरिबल तणो, पुण्य उपर अधि
 कार ॥ १० ॥ पुण्यें वंढित पामीयें, पुण्यें लहि नव
 नीध ॥ पुण्यें महिला संपजै, पुण्यें कृ-६ समृ-६ ॥ ११
 जीवदया पाली जिणें, तिण उपराज्युं पुण्य ॥ सुर नर
 तस सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव
 दयायकी पामियो, हरिबल मढी राय ॥ तास संबं
 सुणतां थकां, सघलां पातक जाय ॥ १३ ॥ रास स
 रस सुणतां थकां, जे को करशे वात ॥ तेहने तस द
 ह्नन तणा, सम देवं ठवं सात ॥ १४ ॥ जिम मृग नाद
 लिणो रहे, निसुणे थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो नवि
 यण तुमें, आणी चित्त अचंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ लक्ष योजननो रे जंबुद्वीप
 ए कह्यो, शाश्वत वर्तुलाकार ॥ सोजागी ॥ तेहमें द्वे
 त्र ए नंद सोहामणुं, कुलगिरि सात कह्या सार ॥

सो० ॥ १ ॥ जाव परीने रे नवि तुमै सांजली ॥ रवि
 या देई रे कान ॥ सो० ॥ सुगनां सुलनां रंग रंग क
 पजे, सुगमै राग्यां तिम यान ॥ सो० ॥ शाजा० ॥ क्षेत्र
 तिनमें कमी वमे निदां, अमि मजि कही गोजगार ॥
 सो० ॥ आलीविकार्ये जीव जीवाद्वा, आरग्या ए
 तीन व्यापार ॥ सो० ॥ शाजा० ॥ धीजां क्षेत्र जे जुगजां
 धर्मनां, नाग्यां अकरमि उदार ॥ सो० ॥ निदां को
 व्यापार तीनमें नवि लहे, ने कल्पगुहना आदार ॥
 सो० ॥ शाजा० ॥ तेहमें पटपुगलादिक क्षेत्र जे, नरत ने
 ऐरवत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुदीपमां, गो
 नित शोने ने एह ॥ सो० ॥ पा० ॥ ए नव क्षेत्र सात
 ठे कुजगिरि, तेहना अतिही विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र
 समास में गुरुमुख सांजली, धायो तात विचार ॥
 सो० ॥ पा० ॥ एण इहां हरिबल मघी रायतुं, चरित्र सु
 णो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक उखाणो जगमां इम
 कहे, जे परणे ते गयाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ जा० ॥ हवे
 इहां जंबुदीपें अति ननुं, नरत क्षेत्र कहाय ॥ सो०
 ॥ पांचशैं ठबीश योजन पटकला, धनुपाकारें सोहा
 य ॥ सो० ॥ ७ ॥ जा० ॥ सहस्र वत्रीश ते जन
 पद तेहमां, तेहना खत खंम होय ॥ सो० ॥ तिण

वचमें पड्यो वैताढ्य रजतनो, जोयण पचासनो
 जोय ॥ सो० ॥ ए ॥ जा० ॥ षट्खंममें खंम तिन
 तिन तेंणें कख्या, दक्षिण उत्तर श्रेणि ॥ सो० ॥ सो
 ल सोल सहस ए जनपदमें रहे, वसती अनार्य
 नी तेण ॥ सो० ॥ १० ॥ जा० ॥ साढा पचवीश
 आरय अति जला, केकै अर्थ समेत ॥ सो० ॥ श्रीजि
 नधर्मनो वास तिहां लहे, सहस वत्रीश मध्य एत ॥
 ॥ सो० ॥ ११ ॥ जा० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां,
 कनकपुरी अनिधान ॥ सो० ॥ साव सोनामय सुंदर
 शोचती, अमरपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ जा० ॥
 नलिनीगुडम विमान तणी परें, एकविश चूमि आ
 वास ॥ सो० ॥ रतन जटितमें गोख विराजता, कर
 ता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ जा० ॥ कुंतीआ
 वण परें हटश्रेणि राजती, ठाजती विजयनी पंक्ति
 ॥ सो० ॥ देश देशांतर विणज करे बहु, वरसे वसु
 धारा शक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ जा० ॥ धनवंत धनद
 जंमारी सारिखा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥ सो० ॥
 पंच विषयना रसमेंलीणा रहे, जोगी चातुर लोक ॥
 ॥ सो० ॥ १५ ॥ जा० ॥ षट् दरशनना पोषक जन
 बहु, पाजे निज निज धर्म ॥ सो० ॥ घर घर शत्र

कार करे घणा, लेहवा शिव सुख हर्म ॥ सो० ॥ १६ ॥
 ॥ जा० ॥ जिनशासनना देउल दीपतां, वत्रीश थडा
 प्रासाद ॥ सो० ॥ चोराशी मंमप अति चोंपणुं, कर
 ता स्वरगणुं वाद ॥ सो० ॥ १७ ॥ जा० ॥ दंमधजा
 अतिपवनें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥ सो० ॥ ध
 न्य दिवस मुज जिन शिर हुं चढी, पावन करवा मुज
 थंग ॥ सो० ॥ १८ ॥ जा० ॥ श्रीजिन केरी जगति करे
 सदा, नविक जीव अपार ॥ सो० ॥ तीर्थकर पद ते
 उपराजता, रावणनी परें सार ॥ सो० ॥ १९ ॥ जा० ॥
 वरण अठार वसे तिण नगरीयें, जाणियें सुर अव
 तार ॥ सो० ॥ गढ मढ मंदिर पोलि शोना घणी, नू
 रमणी उरहार ॥ पाठांतर ॥ नगर कनकपुरनामें शोज
 तुं, स्वर्गपुरी अनुहार ॥ सो० ॥ २० ॥ जा० ॥ नंदनवन
 सम परिमल वाटिका, चिहुंदिशि नगरीनी पास ॥
 ॥ सो० ॥ वापी कूप सरोवर जल नखां, खटकुतु फलें
 सुखास ॥ सो० ॥ २१ ॥ जा० ॥ काल झुकाल ते को
 नवि उलखे, अहोनिश सुखनी ठे वात ॥ सो० ॥ इति
 उपड्व सुपनें नवि जाणे, पुहवीयें प्रगटीए ख्यात
 ॥ सो० ॥ २२ ॥ जा० ॥ कनकपुरीना ए गुण सां
 जजी, जाजी लंका तिवार ॥ सो० ॥ जलनिधिमां

जइ बूढी बापडी, जाणे सकल संसार ॥ सो० ॥
 ॥ १३ ॥ जा० ॥ स्वर्गपुरी पण नजमां जइ रही, नि
 सुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनक
 पुरी तणी, दिन दिन चढती ठे लाज ॥ सो० ॥ १४ ॥
 ॥ जा० ॥ कनक पुरीनां रे वयण वखाणतां, पनणी
 पहेली ए ढाल ॥ सो० ॥ लब्धिविजय कहे नवियण
 सांजलो, आगल वात रसाल ॥ सो० ॥ १५ ॥ जा० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तिण नगरीयें राजवी, वसंतसेन नूपाल ॥ न्यायि
 निपुण वसुदेव ज्युं, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ वाक्य
 बढल हरिचंद जिस्यो, भुजवलि नीमसमान ॥ अरिय
 ए सयला वश करी, ऊताखां तस मान ॥ २ ॥ पर
 जाने पाळे सदा, करे हथेली ठांह ॥ दाण जगात
 दिसे नही, करदंम बंधन क्यांह ॥ ३ ॥ करदंम मुनि
 देखल शिरें, बंधन स्त्रीशिरकेश ॥ वसंतसेन नृप इ
 णि परें, पाळे राज्य विशेष ॥ ४ ॥ तस पटराणी पद
 मिनी, रूपें रंज समान ॥ बीज सुरंगी भुजमती, व
 संतमेना अनियान ॥ ५ ॥ मालती मधुकरनी परें,
 प्रीतडी निम जल मीन ॥ तिम नृपराणी एकमना,
 रंगें रहेजय लीन ॥ ६ ॥ दोणुंछक सुरनी परें, पंचविषय

सुख जोग ॥ नृपराणी विलसे सदा, पूर्वपुण्य संयोग ॥ ७ ॥

॥ दाल बीजी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो बाह्मा ॥ जगजीवन ॥ ए देखी ॥
 विलसे जोग ते राजवी, वसंतसेना साथ लाल रे ॥ जन्म
 सफल लेखे गणे, जाणे पाम्यो आय लाल रे ॥ १ ॥
 सुगुण सनेहा सांजजो, आगल बात रसाल ला ॥
 जीवदया पाली जिएँ, ते जह्यो मंगल माल ला ॥
 ॥ २ ॥ सु० ॥ राज रुद्धि रमणी घणी, पूरवपुण्यपसाय
 ला ॥ सुरपतिनी परें राजवी, पुढ्यीयें ते गवराय
 ला ॥ ३ ॥ सु० ॥ पण तस पुत्र ते को नही, तेणें
 चिंतातुर होय ला ॥ आय उपाय करे घणा, टेकी न
 लागे कोय ला ॥ ४ ॥ सु० ॥ देव दाणव जख जो मले,
 तो पण तिणयी न थाय ला ॥ कर्म आगल चाले
 नही, जो करे जह्नु उपाय ला ॥ ५ ॥ सु० ॥ माहा
 देव महोठो महीयलें, लोकमांहे परसिद्ध ला ॥
 पार्वती सरखी नारीने, कर्में पुत्र न दीध ला ॥
 ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो बीजानुं शुं गजुं, ए सवि कर्मनां
 काम ला ॥ कर्म सखाई जो हुवे, मनवंतित फले
 ताम ला ॥ ७ ॥ सु० ॥ एकनें शुन कर्म करी,
 पुत्र तणे घरे पुत्र ला ॥ नाम करे चिहुं खूंटमां,

राखे घरनां सूत्र ला० ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र
विना सही, सूनां तस आगार ला० ॥ प्रेत मंदिर
सम जाणीये, पुत्र विना घरबार ला० ॥ ए ॥ सु० ॥ पुत्र
विना गति को नही, पुत्र विना नही स्वर्ग ला० ॥ लौकि
क मतना शास्त्रमें, जाषे ऋषिजन वर्ग ला० ॥ १० ॥ सु० ॥

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तं पि मसाणे, जह न दीसंति
धूलि धूसर छाया ॥ उवंतं पडंत रडंत, दो तिनि मिंजा
न दीसंति ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गे नैव च नैव च ॥ त
स्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् धर्म समाचरेत् ॥

॥ पूर्व ढाल ॥

॥ अहोनिश श्म चिंता करे, वसंतसेन नूपाल ला० ॥
तिण अवसर एक ज्योतिषी, आवी मल्यो ततकाल ला०
॥ ११ ॥ सु० ॥ आगम नीगमनी कहे, शास्त्र तणे अ
नुसार ला० ॥ एहवो पंथित देखीने, नरपति हर
ख्यो अपार ला० ॥ १२ ॥ उठीने प्रणीपत करे,
जाव धरी मनमांही ला० ॥ मुझ सहित फल फू
लशुं, पुस्तक पूजे उच्चाहि ला० ॥ १३ ॥ सु० ॥ वे
कर, जोडी वीनवे, कीजें करुणा कृपाल ला० ॥ प्रश्न
जुवो च्छु माहरे, होशे बाल गोपाल ला० ॥ १४ ॥

सु० ॥ तव पैमित तक जोशने, वेला साधी सार
 ला० ॥ १५ ॥ सु० ॥ लमनबलें कहे रायने, सांज
 लजो सुविचार ला० ॥ पुत्र तो तुज करमें नही, पूरव
 जावी जोग ला० ॥ पण एक पुत्री ठे सही, पूरव पुण्य
 संजोग ला० ॥ १६ ॥ सु० ॥ रूपें रंजासारिखी, नंदिनी
 तोहोशे तुज ला० ॥ जाणीयें बीजी शारदा, प्रगट
 होशे गुप्त ला० ॥ १७ ॥ सु० ॥ एम कहीने विप्र ते गयो,
 जेइ वंठित दान ला० ॥ नृप मनमें हरख्यो घणुं, जिम
 रवि कज इक्तान ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥ विप्र वचन
 ते योग्यी, राणी गर्न धरेय ला० ॥ वसंत ऋतु फल
 फलजुं, शोणित सुपना लहेय ला० ॥ १९ ॥ जागी तव
 नृपने कहे, सुपना तणो अधिकार ला० ॥ सांजली
 नृप हरख्यो घणुं, ब्रूता श्रीकिरतार ला० ॥ २० ॥
 ॥ सु० ॥ हरखित थइ राणी हवे, करे ते गर्नजतन
 ला० ॥ अनुक्रमें मास पूरा थई, जन्मी पुत्री रतन ला०
 ॥ २१ ॥ सु० ॥ दुवां हरख वधामणां, घर घर मंगलमाल
 ला० ॥ लब्धिजय रंगें करी, पजणी बीजी ढाल ला० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ जन्मोठव अति हे करे, वसंतसेन नृपाल ॥ मणि
 माणक मोती घणा, वरसे ज्युं वरसाल ॥ १ ॥ कुंकुम

केशर ठाटणां, द्वीज करेह विशाल॥ सोहव सवि टोले म
 ली, गावे गीत रसाल ॥ ३ ॥ घर घर गूडी उडले, घर
 घर झोणी माल ॥ घर घर तोरण बांधीयां, दीसे जा
 क जमाल ॥ ३ ॥ नृत्य करे नटुवा जला, खेले नवनव
 खेल ॥ बंदीजन मूक्या परा, उपजावे रंगरेल ॥ ४ ॥
 इम उडव करतां थकां, बोव्या दिन ते बार॥ नगरीजन
 सहु पोषीया, देई मिष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज कुटुंब
 मेली करि, पुत्री नाम ठवीज ॥ सुपन तणा अनु
 सारथी, वसंतसिरी ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन
 दिन वधे, ज्युं वधे इकुदंम ॥ चंडकलाजिम बीजथी, वाधे
 तेज अखंम ॥ ७ ॥ इम करतां वधती अइ, पंचवरसनी
 बाल ॥ गुनजग्न लेई करी, लइ थापी नीशाल ॥ ८ ॥
 खटदरशननां शास्त्र जे, तेहमां थई प्रवीण॥ रंग राग ना
 टक कला, यंत्रवाजित्र मिलीन ॥ ९ ॥ षट जाषा लह
 ती मुखें, चोशठ कलानिधान ॥ अजिनव जाणे शारदा,
 प्रगट अइ सावधान ॥ १० ॥ इम करतां ते अनुक्रमें,
 वरस थयां जव शोल ॥ नवयौवन नारी तणा, उलट्या
 काम कलोल ॥ ११ ॥ मात पिता हरखे घणुं, पुत्री देखी
 ॥ रतना वरनी चिंता चित धरे, करतां कोटियतन्न ॥

॥ दाल बीजी ॥

॥सुमति सदा दिलसां धरो॥ए देशी॥ तिण नगरीमें
 ह्क रहे, धीवर हरिवल नाम॥गनेही॥जनवर जीव हणे
 सदा, मेले छुळत ताम ॥सनेही॥१॥ हवे सुणजो तेहनी
 कथा, भूकी सयलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर झख तणी
 परें, विण पड्से व्यो स्वाद ॥ स० ॥२॥ह०॥ धीवर ते
 जाणे नही, जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ उद्यम उदर
 ने कारणें, करे नित्य करणीकर्म ॥स०॥३॥ ह० ॥
 धिग्धिग् डुरनर पेटने, पेट करावे वेत ॥स०॥ उत्तम म
 ध्यम प्राणीने, पेट ते हरावे नेट ॥ स० ॥४॥ ह० ॥
 पेटने कारणें जीवडा, जावे देश प्रदेश ॥ स० ॥ जावे
 जलनिधिमारगें, पेटने हेतविशेष ॥ स०॥५॥ह०॥अ
 गम्यांनी करणी करे, चोरी हेरी प्रत्यक्ष ॥स० ॥पेटना
 अर्थी जे अठे, न गणे नक्ष अनक्ष ॥स०॥६॥ ह०
 घात कला खेले घणुं, नटुआ नटवी जोर ॥ स० ॥
 मावीत्र वेचे ठोरुने, पेटने अर्थी घोर ॥ स०॥७॥ह०॥
 जिनवरआदि मुनिवरा, जावें जेलीये दिख ॥ स० ॥
 ते पण पेटने कारणें, घर घर मागे नीख ॥ स० ॥
 ॥ ए ॥ ह० ॥ पांढव पांचे रडवळ्या, पेटने कारणें
 धीर ॥ स० ॥ हरिचंद सरिखा राजवी, मुंव घरे

वह्यां नीर ॥ स० ॥ ए ॥ ह० ॥ तिम ए उदरने कार
 ऐं, हरिवल मन्नी जेह ॥ स० ॥ धीवरकुल जनम ल
 ही, जीव हणे ठे तेह ॥ स० ॥ १० ॥ ह० ॥ हलुआकरमी ठे
 घणुं, पण ते लखुं कुल नीच ॥ स० ॥ कुलाक सव आ
 वी पळ्यो, मेले ते कर्मना कीच ॥ स० ॥ ११ ॥ ह० ॥
 एक दिन हरिवल मन्नीयें, जलमें नाखी जाल ॥ स० ॥
 ते जलकंठें मुनिवरु, वेगो ठे सुकृतमाल ॥ स० ॥
 ॥ १२ ॥ ह० ॥ हवे जलमें जाल नाखी तदा, मुनि
 बोव्यो ततकाल ॥ स० ॥ धीवरने प्रतिबोधवा, दे उ
 पदेश रसाल ॥ स० ॥ १३ ॥ ह० ॥ रे प्राणी ए तुं गुं क
 रे, विण अपराधें कर्म ॥ स० ॥ ठे महोटी संसारमां, जी
 वदयानो धर्म ॥ स० ॥ १४ ॥ ह० ॥ जीवदया पाली जिएं,
 जहे कुल उत्तम सार ॥ स० ॥ दुर्गति पडतां जी
 वने, धर्म निश्चें आधार ॥ स० ॥ १५ ॥ ह० ॥
 पारेवुं शरणें राखवा, काण्युं ते निज अंग ॥ स० ॥ जो
 ५२ राजवी, दो पदवी लही रंग ॥ स० ॥ १६ ॥
 ॥ शिवादेविनंदन नेमजी, तजि निज राजुल
 ॥ स० ॥ १७ ॥ ह० ॥ पणुवाडो ठोडावियो, आणीमन
 ॥ स० ॥ जीवदया जे पाले नही, पामे ते दुःख
 ॥ स० ॥ १८ ॥ ह० ॥ सुनूम ब्रह्मदत्त चक्री दो, पडीया

रक मजार ॥ स० ॥ १९ ॥ ह० ॥ माता पितादिक
 थवा, पामे वियोग ते मंद ॥ स० ॥ दालिश् दोहग
 वि टले, मले न वल्लनरुंद ॥ स० ॥ २० ॥ ह० ॥
 हेम दिये को दिन प्रते, देवे को दान सुपात्र ॥ स० ॥
 तेहथी दश गणो लान ठे, जीवजतन करे गात्र ॥
 स० ॥ २१ ॥ ह० ॥ इम उपदेश ते सांजली, बोले
 मञ्जी तिवार ॥ स० ॥ छुं करीयें अमें साधुजी, ठे अम
 कुल आचार ॥ स० ॥ २२ ॥ ह० ॥ धीवर कुलें आ
 वी पञ्चा, क्यां रहे गुरुनुं ज्ञान ॥ स० ॥ आजी
 विका ए पेटनी, दीधी करमें निदान ॥ स० ॥ २३ ॥ ह० ॥
 ॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजथी में पण
 लीध ॥ स० ॥ पहेली जालमां जीव जे, तेहने में
 जीवित दीध ॥ स० ॥ २४ ॥ ह० ॥ इणि परें अजि
 ग्रह आदरी, हरिवल वलियो ताम ॥ स० ॥ मुनि पण
 ईर्या शोधता, पद्दोता बीजे ठाम ॥ स० ॥ २५ ॥ ह० ॥
 हलुआ करमी जीव जे, तरत लहे उपदेश ॥ स० ॥
 नारे करमी जीवडा, माने नही लवलेश ॥ स० ॥ २६ ॥
 ह० ॥ पापीने प्रतिबोधतां, पत पोतानुं जाय ॥ स०
 ॥ टपलो सराणे चडावीयें, आरीसो नवि आय ॥ स०
 ॥ २७ ॥ ह० ॥ हरिवलनी परें प्राणीया, गुरुमुखें

होवे जेह ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनव
 हित लहे तेह ॥ स० ॥ १७ ॥ ह० ॥ लब्धिविजय
 रंगें करी, नाखी ए त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ हरिवल
 जीवदयायकी, जेहरो मंगलमाल ॥ स० ॥ १८ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हरिवल अजिग्रह लेइने, पाठो वलियो जाम ॥
 तिण अवसरें सुर प्रगटियो, सुस्थित जलनिधि स्वाम
 ॥ १ ॥ अवधी झानी देवता, रूप करे ततकाल ॥
 धीवरनुं मन खोजवा, मढ हुवो मुंढाल ॥ २ ॥ धीव
 र ते जलमें जइ, लांवी नाखी जाल ॥ आव नरा
 णो जालमां, लांवो मढ पुढाल ॥ ३ ॥ तव धीवर ते
 मढने, मूके करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदे धरी, पा
 ले ते जलसंत ॥ ४ ॥ वली बीजे आनक जइ, उंमा
 इहमां जाल ॥ नाखी तव फरि मढ ते, आव्यो जा
 ल मढराल ॥ ५ ॥ ते पण वलि मढ मूकीयो, नीय
 म निज संचार ॥ नाखी धीवर जलधिमां, जाल ते
 त्रीजी वार ॥ ६ ॥ वलि फरीने मढ आवियो, जाल
 मां त्रीजी वार ॥ ते पण धीवर मूकीयो, आणी म
 न उपगार ॥ ७ ॥ तव धीवर कहे फरि फरि, आवे
 ए जलमढ ॥ तो सहिनाणी हुं करुं, जिम जलखाये

सह ॥ ७ ॥ हरिवल चित्त इम चिंतवी, कर ग्रहियो
जलजात ॥ कोटें उलखवा सही, कोडी बांधी सात ॥
॥ ढाल चौथी ॥

॥ इमर आंवा आंवली रे ॥ ए वेशी ॥ हरिवल द्वे
आयो गयो रे, वंहुं ठे जल ज्यांह ॥ डुरजर ठवरने का
रणे रे, जाल नाखी जइ त्यांह ॥ १ ॥ सूरिनन सां
नलजो अवदात ॥ एतो रंग रसीली वात ॥ सू० ॥
फरी पाठो ते जालमां रे, आव्यो चौथी वार ॥ कोटें
कोडी देखी करी, मूक्यो मद्य विचार ॥ २ ॥ सूरि० ॥
पांचमी ठछी सातमी रे, फरि फरि नाखे जाल ॥ तेम
तेम ते आवी रहे रे, जालमां मद्य मुठाल ॥ ३ ॥ सू०
॥ तिम तिम ते मद्य उलखी रे, मूकी ये ततकाल ॥
हरिवल व्रत महेव्युं नही रे, गुरु उपदेश रसाल ॥
सू० ॥ ४ ॥ इम करतां दिन निर्गम्यो रे, मेहेनत करतां
तेह ॥ तोही पण क्षोन्यो नही रे, मछी हरिवल जेह ॥
॥ ५ ॥ सू० ॥ मछीनी परीक्षा लही रे, प्रगट अयो
सुरराज ॥ सुर कहे हरिवल माग तुं रे, हुं वृवो तुज
आज ॥ ६ ॥ सू० ॥ सुर वाणी ते सांजली रे, हरि
वल वोव्यो तिवार ॥ दालिइ डुःख दूरें करी रे, सम
खा करजो सार ॥ ७ ॥ सू० ॥ सांजलि धीवर सुर

कहे रे, आणी मन उद्धास ॥ संजारिश मुऊ जे घ
 डी रे, ते घडी हुं तुऊ पास ॥ ७ ॥ सू० ॥ एम वचन
 देई करी रे, ते सुर गयो निज आन ॥ मढी पण निज
 मंदिरे रे, वलियो थइ साव धान ॥ ८ ॥ सू० ॥ धीवर म
 नमें हरखियो रे, धन धन गुरुनुं वचन ॥ फलि
 यो अनिग्रह माहरे रे, तूगो सुर दिन धन्य ॥ १० ॥
 सू० ॥ सागर देव पसायथी रे, हुं थयो महोटो सनाथ
 ॥ आजथी जीव हणुं नही रे, जो ग्रही महोटी वाथ
 ॥ ११ ॥ सू० ॥ इम करतां संध्या थई रे, आव्यो न
 यर नजीक ॥ पण निज मंदिर नारीनी रे, मनमें आ
 णी वीक ॥ १२ ॥ सू० ॥ पेट जराइ जडी नही रे,
 नामगो राम कुहाड ॥ जाइश जो खाली घरे रे, वेस
 गो लेई राड ॥ १३ ॥ सू० ॥ काली नागणनी परें
 रे, रोपें जरी ठे चंम ॥ ठोकरडांने मारे वणुं रे, वोले
 ज्युं खोखर चंम ॥ १४ ॥ सू० ॥ मुखमांथी नोंठा पडे
 रे, कोइ बोलावे बोल ॥ बलगे वावणनी परें रे, राखे
 -हि तस तोल ॥ १५ ॥ सू० ॥ दीवालीनो परोडी
 रे, दीसंती जाणे अलव ॥ आंगण आवे को मा
 ॥ रे, देखी जाये गव ॥ १६ ॥ सू० ॥ कूडा बोली
 रे, दे वली अठतां आज ॥ गुण अवगुण जा

से नहीं रे, परिणामें विकराल ॥ १७ ॥ सू० ॥ उ
 तरे जे वर्ष सातनी रे, जेह पनोती कहाय ॥ पण
 लागि पनोती जन्मनी रे, ते किम उतरी जाय ॥ १७
 ॥ सू० ॥ जाणी बंधुल कोयला रे, एहवुं रुप नीहा
 ल ॥ खाधानी संख्या नही रे, जाणीयें पेटमें काल
 ॥ १८ ॥ सू० ॥ धीवर कहे मुज नारीनां रे, केतां क
 रुंहुं बखाण ॥ पूर्ण पापना जोगथी रे, मली ए कर्म
 प्रमाण ॥ १९ ॥ सू० ॥ हरिबल चितखुं चिंतवे रे, न
 जख्यो जलचर जीव ॥ घरे जावुं तो बोकही रे, रुठी
 करशे रीव ॥ २० ॥ सू० ॥ ते माटे वनमें रही रे,
 रजनी छेवं विशराम ॥ दिन उगे घर जाइखुं रे;
 जडशे जीविक ताम ॥ २१ ॥ सू० ॥ इम जाणी तें
 वनमें रे, हरिबल रहियो ताम ॥ कालीकाने देवलें
 रे, लीधो तिहां विश्राम ॥ २२ ॥ सू० ॥ धीवर सू
 तो चिंतवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥ एक में जीव
 उगारीयो रे, तो बायी मुज शर्म ॥ २३ ॥ सू० ॥ तो
 में निश्चै आज्यी रे, हणवो नही कदि जीव ॥ जल
 निधिनो धणी देवता रे, फलशे मुज सदीव ॥ २४ ॥
 सू० ॥ परतख देखी पारखुं रे, धीवर हरखें पइछ ॥
 जीवदया धर्म उपरें रे, वेतो रंग मजीठ ॥ २५ ॥

सू० ॥ रजनी मध्य गई तिहां रे, हरिवल सूतो ज्या
ह ॥ तिण अवसरें जे नीपजे रे, ते सुणजो उवाह
॥ सू० ॥ ३७ ॥ चोथी ढाल पूरी अई रे, प्रगटी पु
ण्यनी वेल ॥ लब्धि कहे गुरु देवथी रे, नाखीयें
दुःखने ठेल ॥ ३८ ॥ सू० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवि तिण नगरीमां वसे, बीजो हरिवल नाम ॥
वडवखती सुखीयो सदा, व्यवहारी अनिराम ॥ १ ॥
पठित गुणित सघली कला, शीख्यो ठे सावधान ॥
रूपें रतिपति सारिखो, उपे रूप निधान ॥ २ ॥ च
तुराइ तो चकोर ज्युं, कंठें कोकिल कंठ ॥ नोगी केत
की ज्रंग ज्युं, वाको वंस निगंठ ॥ ३ ॥ इक दिन चहु
टे संचख्यो, लेइं निज परिवार ॥ नजरें हरिवल निर
खियो, कुमरीयें गोख मजार ॥ ४ ॥ वसंतसिरी नृ
पनी धुआ, उलखी हरिवल तेह ॥ विहुंनी दृष्टि मिली
तिहां, बाध्यो नवलो नेह ॥ ५ ॥ कुमरीनुं मन वेधि
युं, देखी हरिवल रूप ॥ कामातुर अतिही अई, वर
वानी अइ चूंप ॥ ६ ॥ राजचुवनने मारगें, हरिवल
चाव्यो जाय ॥ गोखतलें आव्यो जिसे, खिण एक
तिहां विलमाय ॥ ७ ॥ गोखेंथी पत्री लखी, पडती

मेहली तेह ॥ हरिबल बांची समकियो, वण तुं मुज
 ससनेह ॥ ७ ॥ वंची दृष्टि जोझे, करी समस्या सा
 र ॥ वाचा देइ आवियो, हरिबल निज आगार ॥ ८ ॥
 कुमरीयें पत्री जे लखी, ते सुणजो अधिकार ॥ राम
 तुं सुहणुं नरत परि, फलजे ते श्रीकार ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ निड्डी वेरण दुइरही ॥ ए देशी ॥ हांजी काली
 चउदशने दिने, कालिकानुं हो देवल ठे ज्यांह के ॥
 अखुट खजानो लेझे, मध्यरात्रे हो हुं आवुं तुं त्यां
 ह के ॥ १ ॥ कुमरीयें पत्रीयें लखी, हरि बलने हो
 तिहां कीधो संकेत के ॥ शीघ्रगति तुमें आवजो, व
 रवाने हो घणुं आवणी हेत के ॥ कु० ॥ २ ॥ व्यवहा
 री हरख्यो घणुं, कुमरीनुं हो देखीने चित्त के ॥ एतो
 साचें आवशे, निज घरनुं हो लेझे वित्त के ॥ कु० ॥
 ॥ ३ ॥ पण ए नृपनी नंदिनी, मुजयी केम हो निरवाहो
 थाय के ॥ किहां शशली किहां सिंहनी, किहां हंसि
 णी हो किहां वगलुं कहाय के ॥ कु० ॥ ४ ॥ किहां अ
 लसी किहां नागणी, किहां हाथणी हो किहां अज बल
 वंत के ॥ किहां कुमरीने हुं कीहां, किहां सरशव हो
 किहां मेरु महंत के ॥ कु० ॥ ५ ॥ जाति गरीब वणी

क तणी, मर राखे हो सघले संसार के ॥ तो किम कुं
 वरी हुं वरुं, उठी जावे हो जेह ठे व्यवहार के ॥ कुं० ॥
 ॥ ६ ॥ जो नृप जाणे वातडी, घडि एकमें हो नाखे
 तस वेर के ॥ सबल कुटुंब जे पलकमें, लुसी मूके हो
 तेहमें नही फेर के ॥ कुं० ॥ ७ ॥ तो किम वात ए
 हुं करुं, कुल जाजे हो निज तातनुं जेह के ॥ मुंज घ
 रमें ठे पदमणी, किम देहुं हो तेहने हुं ठेह के ॥ ८ ॥
 कुं० ॥ कडुवां फल ठे एहनां, परनारी हो साथें धरे
 राग के ॥ पग पग दोष लहे घणो, नवि पामे हो कि
 हां वेठानो लाग के ॥ ९ ॥ कुं० ॥ किंषाकनां फल
 सारिखां, देखतां हो घणुं फूटडां जोर के ॥ पण ते
 फल चारव्याथकी, जीव पामे हो मरणांत कठोर
 के ॥ १० ॥ कुं० ॥ जगमें चाले वातडी, करे हासी
 हो सहु मलीने लोक के ॥ जिन वचनें पण जाणीयें,
 दुर्गतिनां हो फल पामे रोक के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ राव
 ए मुंज तणी परें, शीश रडवडे हो नूमितलें जेह के ॥
 परनारीना संगथी, बीजानी हो गति निपजे एह के
 ॥ १२ ॥ कुं० ॥ इम जाणी मन वालियुं, व्यवहारी
 हो निज कुल संजाल के ॥ तिहां जावुं नही माहरें,
 जिहां कीधो हो संकेत विशाल के ॥ १३ ॥ कुं० ॥ हवे

कुमरी विरहें करि, थाये व्याकुल हो जावाने तेह के
 ॥ केइ घडी ठे एहवी, जइ देखुं हो हरिवल ससनेहके
 ॥ १४ ॥ कुं० ॥ जेहने लागे प्रीतडी, जाणे तेहने हो
 लागुं ठे प्रेत के ॥ शूनी फरे तस देहडी, विरहानल
 हो चुसी बल लेत के ॥ १५ ॥ कुं० ॥ मन लागुं
 जस उपरें, तस आगल हो बीजो न सुहाय के ॥ खिण
 घरमें खिण आंगणे, रहि न शके हो जाणे लागी
 घलाय के ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बुद्धि अकल जाये परी,
 नवि उकले हो निज घरनुं काम के ॥ फुरि फुरि पंज
 र रुश करे, कामी मन हो लुब्धुं जे वाम के ॥ १७ ॥
 कुं० ॥ मात पितादिक नवि गणे, नवि माने हो
 निजकुल मरजाद के ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गणे,
 विरहें करि हो मांनि उनमाद के ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कु
 मरी कामातुर थई, हरिवलनो हो विरहो न खमाय
 के ॥ अन्न उदक दो नवि रुचे, वरवाने हो घणुं आ
 कुजी थाय के ॥ १९ ॥ कुं० ॥ मणि माणिक हीरा घ
 णा, हेम रजत नें हो मुगताफल लेय के ॥ थरमां पा
 मरी सावटु, जरतारी हो जनां वस्त्र जरेय के ॥ २० ॥
 कुं० ॥ सामग्री सपली करी, जावाने हो जिहां की
 धो संकेत के ॥ उंट सात जरिया जला, अश्व रतन हो

(३३)

कुमरी दो लेत के ॥ २१ ॥ कुं० ॥ रजनी मध्य समे
वही, दास दासी हो बलि साथें लीध के ॥ दरवाजे
दरवाने, डव्य आपी हो घणुं राजी कीध के ॥ २२ ॥
कुं० ॥ पोल उघाडी पोलीये, वहि कुमरी हो जिहां
संकेत कीध के ॥ कालीकाने देउलें, तिहां पहाती
हो मनवंडित सिद्ध के ॥ २३ ॥ कुं० ॥ धीवर सूतो
ठे जिहां, तिहां कुमरी हो आवी उजमाल के ॥ ल
ब्धि विजय रंगें करि, ढाल पांचमी हो कही रंग
रसाल के ॥ कुं० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे जागो प्रभु, मूको निडा दूर ॥ आपण
वहीयें वे जणां, आगल पंथ सनूर ॥ १ ॥ अखुट
खजानो लेइने, आवी तुं नरपूर ॥ करहा सात डव्ये न
खा, एह ठे तूम हजूर ॥ २ ॥ अश्व रत्न दो लेइने,
आवी तुं तुम कल्ल ॥ उंय तजी उतावला, आवी च
डो थइ सल्ल ॥ ३ ॥ हरिवल वणीक ते जाणीने, विन
वे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहने कहे अ
अजिराम ॥ ४ ॥ हरिलंकी अप्पर समी, देखी कुमरी
रूप ॥ धीवर मन विव्हल थयुं, ए गुं दीसे सरूप ॥
॥ ५ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, धीवर चिंते ताम ॥

होश्क वात विचार ठे, मौन कल्यानुं काम ॥ ६ ॥
 प्रणवोच्यो कठयो तुरत, करी असवारी सार ॥ कुम
 री मन हरखित थई, चाव्यां पंथ विचार ॥ ७ ॥ पा
 रीपंथा घोडला, तेहवुं करहा जोर ॥ पंथें चाव्या
 बढवडी, पदोतां जे वन घोर ॥ ८ ॥ वसंतसिरी कु
 मरी हवे, टाली सघली वीक ॥ हरिवलने बोलाववा,
 आवी पास नजीक ॥ ९ ॥

॥ ढाल ठछी ॥

॥ पारकर देशथी आयो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिवल
 प्रभुजी बोलो, मनवहजन मनहुं खोलो रे ॥ माहारा
 जीवनजी तुमें बोलो ॥ हवे कोई मर मत आणो, प्रभु
 मेव्यो तुम अम टाणो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मुज सरखी
 तुम नारी, विण पैसे मलि सुख कारी रे ॥ मा० ॥
 कनक रयण ठे सार्थें, तुमें बावरो सुखें निज हाथें
 रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा बाधा, जरतारी वां
 धो पावा रे ॥ मा० ॥ खटरस रसवती सारी, करी
 पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुम संगें रहुं क
 र जोडी, करुं टेहल ते आलस गोडी रे ॥ मा० ॥ हुं हुं
 तुम प्रेम बिलुखी, आवी हुं हुं तुम सखी रे ॥ मा० ॥
 ॥ ४ ॥ हवे तुम वयण न लोपुं, जीवित लगें वरमा

ला रोपुं रे ॥ मा० ॥ करहा जे साते उप्प्या, जेई तुम गुं
 जे सौप्प्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन मन धन तुम केरुं,
 करि लेखवजो ए नलेरुं रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेहे
 रनी आशा, अमें राखुं प्रेमना पाशा रे ॥ मा० ॥ ६ ॥
 इणि परें कुमरी बोले, पण हरिवल वाचा न खोले
 रे ॥ मा० ॥ तव तिहां कुमरी विमासे, छुं ठे ए वणि
 क न जासे रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करतां थयुं ते वा
 हाणुं ॥ दीतुं मुख श्याम ज्युं जाणुं रे ॥ मा० ॥ दिन
 उगमतें ते दीगो, दीन वस्त्र विहूणो धीगो रे ॥ मा० ॥
 ॥ ८ ॥ जाणे आलोकनो पिंन, जाणे पाड्यो देवें
 दंन रे ॥ मा० ॥ देही ठे गलीयल वान, वलि जाणे को
 किल मान रे ॥ मा० ॥ ९ ॥ जाती धीवर जाणी, त
 व कुमरी मन उलजाणी रे ॥ मा० ॥ सुंदरी थई ते
 निराशी, चिंते थइ हाणी ने हासी रे ॥ मा० ॥ १० ॥
 सहकारज केरे जरूसे, फल चारव्यां आक आळूसे रे
 ॥ मा० ॥ जाण्युं सुरतरु पामी, पण निमज्यो कनक
 निकामी रे ॥ ११ ॥ मा० ॥ प्रभुयें मेरुयें चढावी, पण
 दैवें नूयें अथडावी रे ॥ मा० ॥ कुल मरजादा मूकी,
 पण पानीयें मति चूकी रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ करस
 ए टोतां सोई, गोला गोफण पण खोई रे ॥ मा० ॥

म ए ठखाणो मेळो, निज मंदिर कुज अगहेळ्यो
 ॥ मा० ॥ १३ ॥ जाणुं जोवनवेगें, जेणुं ते ला
 विजोषें रे ॥ मा० ॥ उजळ्यो मदन एराकी, तव
 णिकें मूकी न वाकी रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ बिटल
 णिकें विमासी, दीधी जुं कूपके फांती रे ॥ मा० ॥
 णिकनो जे करे संग, तस जनम ते खोटो दंग रे
 ॥ मा० ॥ १५ ॥ जाणुं जे वणिकने वरणुं, निज ज
 म ते सफलो करणुं रे ॥ मा० ॥ पापीयें वाचान
 गली, विण गुनहे मूकी वाली रे ॥ मा० ॥ १६ ॥
 जननी तात मूकावी, मूकी ते विरह जगावी रे ॥
 ॥ मा० ॥ जो तुज खोटा विजासा, तो शाने दोजें
 आशा रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ फिट रे देव तुं हेळ्यो, धी
 वरने किहां ते मेळ्यो रे ॥ मा० ॥ तें किहां रची ए
 गोढो, कखो अण मजतो ए जोडो रे ॥ मा० ॥ १८ ॥
 दीसे ए धोवड धिंग, बलि जाणे जवके जोटिंग रे
 ॥ मा० ॥ जगती जोतां जडियो, मुज करमें ए वर
 घडियो रे ॥ मा० ॥ १९ ॥ शी विघें मुज मन वेसे,
 माहारुं जोवन एलें वहेजो रे ॥ मा० ॥ इम सुंदरी विल
 पंती, लही मूर्खा पडी ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥
 तव तिहां धीवर जूरे ॥ मनणुं ते पुण्य अधूरे रे ॥

॥ मा० ॥ में ते ए छुं कीछुं, निज मंदिर मूकी दीछुं
 रे ॥ मा० ॥ ११ ॥ लवलेख पोंक न खाधो, निजकमें
 हाथे दाधो रे ॥ मा० ॥ जे कहे लोक उखाणो, ते में
 तो नजरें पिठाण्यो रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ फोगट सुंदरी सा
 थ, आवी खोई घरनी आथ रे ॥ मा० ॥ ए दुःख के
 हने दाखुं, एहवो नही कोइ जाखुं रे ॥ मा० ॥ १३ ॥
 सुख दुःख जे लख्यां पाने, ते जोगवे जीव एक ताने
 रे ॥ मा० ॥ धीवर मनमें विमासे, रोइ राज न पामे
 उछासैं रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ एतो सुंदरी मोहोटी, कि
 म रांक घरे रहे त्रोटि रे ॥ मा० ॥ रूपें रंजसमान,
 किम सुंदरी दे मुज मान रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ धिग
 मुज जीवित एह, धीवर पणुं लखुं में जेह रे ॥ मा० ॥ मा
 हरुं कुरूप देखी, कुमरीयें नारख्यो उवेखी रे ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ धिग धिग जाति अकामी, मुज देखी मूर्छा
 पामी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखीयो अपार, वहैं नय
 णें आंसु धार रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ किहां गयो सागर
 देव, मुज काम पडे इहां हेव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी जे
 मूरठाणी, करे जीवित ते सुख खाणी रे ॥ मा० ॥
 ॥ १८ ॥ जलनिधि सुर तव आवे, धीवरने हर्ष उपा

वे रे ॥ मा० ॥ लब्धि कहे ढाल ठही, कुमरीने करे
हवे वेठी रे ॥ मा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर तनमें संक्रमे, ततखिण सागर देव ॥ अमृत
त जल लेई करी, कुमरी ठांटी हेव ॥ १ ॥ रंजा फल
पत्रें करी, कखो पवन उपचार ॥ तव कुमरी साजी
थई, पामी चेतन सार ॥ २ ॥ आंख उघाडी निर
खियुं, हरिवल केरुं रूप ॥ वाला चमकी चित्तमें, ए
शुं देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मटी गयो, प्रगट्यो
सोवन वान ॥ अद्भुत कांति शरीरनी, दीपे देव स
मान ॥ ४ ॥ एतो धीवर कुल नही, मन इम चिंते
वाल ॥ ए साचुं के सूहणुं, के दीसे इंड जाल ॥ ५ ॥
तिण समे सुरवाणी थई, सांजल कुमरी सुजाण ॥
हरिवल मछी रूप ए, वख तुं पति गुण खाण ॥ ६ ॥
एह थकी सुख संपदा, दिन दिन अधिकी होय ॥
जाग्यवलें तुज वर मल्यो, अण चिंतवियुं सोय ॥ ७ ॥
तव कुमरी हरखित थई, सांजली देव वचन ॥ थार
त चिंता सवि टली, उलस्युं ते निज मन्त्र ॥ ८ ॥
वसंतसिरी हरिवल प्रते, वर वरियो धरी प्रीत ॥ शी
तल मन वेहुनां थयां, वांघ्यो अविहट हीत ॥ ९ ॥

पय प्रणमी हरिवल तणा, देई वर ससनेह ॥ सागर
सुर निज थानकें, पढोतो ते गुणगेह ॥ १० ॥ मान
व जव सफलो करी, दंपती जोगवे जोग ॥ रामनुं सु
हणुं जरतने, फलियुं पुण्य संयोग ॥ ११ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शीयालो जलें आवियो ॥ ए देशी ॥ दुथ्या हे ह
रख वधामणां, वेहु जणनां हे मनवंठित सीध के ॥
कुमरी हरिवल वर वरी, मनुजवनो हे फल लाहो
जीध के ॥ १ ॥ हु० ॥ किहां नृपनंदिनी सुंदरी, किहां
हरिवल हे मढी अवतार के ॥ अणमलतो ए ताक
डो, पुण्यजोगें हे मेळ्यो किरतार के ॥ २ ॥ हु० ॥
एक में जीव उगारीयो, तस पुण्यथी हे तूगो निधि
राज के ॥ परतख दीतुं पारखुं, गुरुवयणथी हे मुज
वाधी लाज के ॥ ३ ॥ हु० ॥ धन धन गुरुनां वयण
ने, मुज कीधो हे महोटा उपगार के ॥ कीडीयकी
कुंजर कखो, जनें प्रगट्यो हे सद्गुरु संसार के ॥ ४ ॥
हु० ॥ इम चिंतवतां वे जणां, पंथें चाव्यां हे ते वन
हमजार के ॥ रंग विनोदनी वातडी, वहे करतां हे
एक चिन्त उदार के ॥ ५ ॥ हु० ॥ वाट विपम जे
आडरी, गिरि गव्हर हे वली विपमा वाट के ॥

अंगि जाडी जे खूंखनी, परि उत्तया हे निज पुणने
 पाट के ॥ ६ ॥ हु० ॥ तिण समे कुमरी चिंतवे, न
 वि जाणुं हे पियुनी कुज नाति के ॥ तो हवे जोबुं
 एहनी, करुं परीक्षा हे ए शी ठे जाति के ॥ ७ ॥ हु० ॥
 जोबुं बली तस पारखुं, पराक्रमे हे केहवो ठे सधीर के ॥
 जीवित सुधी माहरो, मन राखी हे केहवो मेले हीर
 के ॥ ८ ॥ हु० ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सुणो प्री
 तम हे थया खरा वपोर के ॥ पाणीनी तिरपा घ
 णी, पीयु लागी हे घणुं अति हें जोर के ॥ ९ ॥ हु० ॥
 तव हरिबल तिहां सज थयो, अबलानां हे सुणी
 दीन वचन के ॥ केड बांधी काठी खरी, नीर जोवा
 हे निकल्यो ते वन के ॥ १० ॥ हु० ॥ अटवीमां जो
 तो फरे, नवि दीसे हे क्यांह नदी नवाण के ॥ तव
 एक तरु ऊपर चढी, दृष्टें जोवे हे चिहुं दिशि जल ठा
 ए के ॥ ११ ॥ हु० ॥ तव तिहां दूरधी पेखियो, सरो
 वर हे जल नरियुं नीर के ॥ तिहां जइ जल नरि पो
 यणें, लावि पावे हे निज प्यारीने नीर के ॥ १२ ॥
 हु० ॥ अंग उखां जल पीवतां, मनयी लह्यो हे पियु
 माहावलवंत के ॥ हरखित अइ तव सुंदरी, मुज व
 खतें हे पियु मलियो संत के ॥ १३ ॥ हु० ॥ धन्य

दिवस धन ते घडी, धन वेला हे मुऊ प्रगट्यां नाग्य
 के ॥ मनवंडित पियुडो मव्यो, थयां परगट हे मुऊ
 सुख सौनाग्य के ॥ १४ ॥ दु० ॥ सुरवाणी साची
 मली, जेवी नाखी हे तेहवी नजरें दीठ के ॥ मुह मा
 ग्या पासा ढव्या, राजकुमरी हे मन हरख पश्ठ के
 ॥ १५ ॥ दु० ॥ दंपती बेहुने प्रीतडी, एकतारी हे ब
 नी ज्युं नख मांस के ॥ एकंगी जल मीन ज्युं, तिम बे
 हुने हे बनीयुं तन हंस के ॥ १६ ॥ दु० ॥ श्म क
 रतां ते अनुक्रमें, विघनाटवी हे परि उतख्यां तेह के ॥
 दूरथी दीतुं सोहामणुं, एक मोटकुं हे शोणित डिं
 ग जेह के ॥ १७ ॥ दु० ॥ कनकजडित डिंग डुर्ग ठे,
 कोशीसां हे मणिमय दीपंत के ॥ जाणीयें नूरमणी
 करें, सोहे कंकण हे रवितेज जिपंत के ॥ १८ ॥ दु० ॥ नं
 दन वन सम वाटिका, फलि फूली हे चिहुं दिशि सोहंत
 के ॥ सजल सरोवर जल जख्यां, देखीने हे वर नारी
 मोहंत के ॥ १९ ॥ दु० ॥ नगर समीपें आवीयां,
 वाडीमां हे उतारा कीध के ॥ तिण समे तिहां एक
 आवियो, बैताल कहे जलि आशिप दीध के ॥ २० ॥
 दु० ॥ पूठे हरिवल तेहने, कहो वारोट हे आ नग
 रीनुं नाम के ॥ कुण नृप राज्य करे इहां, अधिकारी

हे ठे कुण अनिराम के ॥ २१ ॥ दु० ॥ तव हरि
 बलने ते कहे, वेतालक हे सुणो पंथी साथ के ॥ म
 वनवेग ठे नृपति, वीशाला हे नगरीनो नाथ के ॥ २२ ॥
 दु० ॥ अरियण सयला वरा करी, राज्य नोगवे हे
 सुरपतिनी समान के ॥ पायक गज तुरी ठे घणा,
 सत लक्ष्मी हे ठकुराईए मान के ॥ २३ ॥ दु० ॥ व
 रण अढार वसे इहां, पुण्य करणी हे करतां सद्गु लो
 क के ॥ पापनी बुद्धि मले नही, नोगीजन हे वसे चा
 तुर कोक के ॥ २४ ॥ दु० ॥ वार जोयण पोली कही, नव
 जोयण हे दीर्घ शोजित पोल के ॥ कनक रयणमय
 मालियां, चोराशी हे चहुटानी उल के ॥ २५ ॥ दु० ॥
 जाणीयें स्वर्गपुरी जली, वीशाला हे नगरीनुं नाम के ॥
 सुखीयां लोक वसे सद्गु, दुःखीयानुं हे नवि दीसे ठा
 म के ॥ २६ ॥ दु० ॥ एहवो व्यतिकर मांमीने, वैता
 लकें हे कह्यो थइ उजमाल के ॥ सांजलि वेदु राजी
 थयां, लब्धि कहे हे ए तो सातमी ढाल के ॥ २७ ॥ दु० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ नगरी नृपनी वारता, वैतालें कहि जाम ॥ वात
 वधामणि हरिवलें, दीधी मुझा ताम ॥ १ ॥ चित ठ
 रियुं वैतालनुं, देखी पीजी वस्त ॥ हरिवलने चरणो न

खिले सुख जोगवे, एतो वसंतसिरीनी साथ रे ॥ सु०
 ॥ मानवजव सफलो करे, एतो जाणे पामी आथ रे
 ॥ सु० ॥ ११ ॥ शु० ॥ एतो शत्रुकार मांमयो घणो,
 एतो देवे दान उठाह रे ॥ सु० ॥ बंदीजन बिरुदाव
 ली, ए तो हरखिलनी बोले अथाह रे ॥ सु० ॥ १२ ॥
 शु० ॥ ताल कंसाल मृदंगना, एतो वाजे नाद अचंन
 रे ॥ सु० ॥ हरखिल आगल शोचता, एतो होवे नाटा
 रंन रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ शु० ॥ चाली पुरमें वातडी, ए
 तो हरखिलनी आख्यात रे ॥ सु० ॥ मदनवेग नृप
 आगलें, एतो हरखिलनी थड वात रे ॥ सु० ॥ १४ ॥
 शु० ॥ एतो क्षत्रीवंशें राजवी, एतो वीरखल केरो धी
 र रे ॥ सु० ॥ जुजवली नीम समो वडी, एतो दानें
 विक्रम वीर रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ शु० ॥ आव्यो आपणा नय
 रमां, एतो परदेशी प्राहुणो जोर रे ॥ सु० ॥ वसंतश्री
 तस जारजा, एतो रूपें रंन चकोर रे ॥ सु० ॥ १६ ॥
 शु० ॥ एहवी थड दरवारमां, एतो हरखिल केरी वा
 त रे ॥ सु० ॥ क्षत्री वंश शिरोमणी, एतो वीरखल के
 रो जात रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ शु० ॥ मदनवेग नृप सां
 नली, एतो मनमें हुड हेराण रे ॥ सु० ॥ तो वोला
 बुं एहने, एतो जोबुं ते अहिनाण रे ॥ सु० ॥ १८ ॥

शु० ॥ इम जाणीने नृप तदा, एतो सचिवने दीध
 आदेश रे ॥ सु० ॥ आग्रह करि तस तेडीने, तुमें
 आवजो अत्र विशेष रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शु० ॥ तत
 खिण सचिव तिहां जई, हरिवलने कीध प्रणाम
 रे ॥ सु० ॥ नृपतुं तेडुं तुम अढे, तुमें आवो आतमराम
 रे ॥ सु० ॥ २० ॥ शु० ॥ उठी हरिवल ततखिणे, च
 ढ्यो अग्व रत्न गुण गेह रे ॥ सु० ॥ नेट नली नृप
 आगले, जइ सूकी नृप प्रणमेह रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ शु० ॥
 नृप पण हरिवलने तदा, एतो उठीने दीधी बांह रे
 सु० ॥ वेठा एकण गादीयें, एतो हरिवल नृप उठा
 ह रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ शु० ॥ आगम नीगमनी करी, एतो
 वे घडी वातनी गोवि रे ॥ सु० ॥ अन्यो अन्य राजी
 थया, जिम कर चढे साकर पोवि रे ॥ सु० ॥ २३ ॥
 शु० ॥ सागर देव प्रसादथी, एतो हरिवल केरुं तेज
 रे ॥ सु० ॥ राज्यसजादिक नृप तणुं, एतो देखी वा
 धुं देज रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ शु० ॥ वंदीजन वि
 रुदावली, एतो बोले कूत्री वंश रे ॥ सु० ॥ माता
 वीरायें जनमीयो, एतो वीखल कुल अवतंस रे ॥
 सु० ॥ २५ ॥ शु० ॥ हरिवल गुण नृप सांचली,
 एतो मंत्रीसर पद दीध रे ॥ सु० ॥ आनूपण थंगें

ठवी, एतो नृपें निजबंधव कीध रे ॥ सु० ॥ १६ ॥
 शु० ॥ अश्व अमूलक पालखी, एतो हरिवल च
 ढवा काज रे ॥ सु० ॥ एतो आपे नृप हर्षे करी, एतो
 प्रवल बधारी लाज रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ शु० ॥ एतो
 नलें आव्या तुमें नयरमें, तुम आवे वध्युं हम हेज रे
 ॥ सु० ॥ नगरी अम पावन अई, एतो दिन दिन चढते ते
 ज रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ शु० ॥ इम सनमानी बोलावियो,
 एतो वसंतसिरीने गेह रे ॥ सु० ॥ लब्धि कहे ढाल
 आवमी, एतो पुण्ये लप्ते एह रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शु० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हरिवल ते निज मंदिरें, आव्यो करी आमंग ॥
 वसंत सिरि हरखित अई, देखी पियुनो रंग ॥ १ ॥ म
 दन वेग नृपनी सदा, सारे निशदिन सेव ॥ बांध ठो
 ड दरवारनी, हरिवल करे ततखेव ॥ २ ॥ हाल हुकु
 म हरिवल तणो, थयो विशालामप्र ॥ जीरण सचिव
 कोरें रह्या, अलगा अई अकड्डा ॥ ३ ॥ हरिवल नृपहुं
 एक मन, दीसंता तन दोय ॥ बाजी पूरण प्रीतडी,
 लुं नख मांगने होय ॥ ४ ॥ वसंतसिगि अपठर स
 मी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगुंडक सुरनी परें, हरिव
 ल जोगवे जोग ॥ ५ ॥ एक दिन वेठा रंगमें. दंपति

करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतररी, दीजें नोजन
 सार ॥ ६ ॥ तव प्यारी पिपुने कहे, सांजलो प्राणा
 धार ॥ इण बातें कृण ना कहे, करतां पुण्य उपचा
 र ॥ ७ ॥ पण एक बात विचार ठे, धारो चित्त म
 जार ॥ दीपक छेइ देखाडवो, तेडी नृप आगार
 ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चाढीयो, काग अही सोनार ॥
 एता नोहे आपणां, कीजें कोडि प्रकार ॥ ९ ॥ ते
 माटे तुमने कहुं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरी
 ने नोतररी, द्यो नोजन अनिराम ॥ १० ॥ सांजल
 गोरी माहरी, साच कही तें बात ॥ जो ठे दाहाडा
 पाथरा, छुं करजो नृप घात ॥ ११ ॥ पुण्ये चैरी आं
 धला, पुण्ये पाप विलाय ॥ पुण्य प्रवज्ज जो कीजियें,
 तो सयलां छुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे सांजल प्रि
 या, जो प्रभु दीधी आथ ॥ जिमणे हाथें दीजियें, तो
 ते आये साथ ॥ १३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ गणधर दश पूर्वधर सुंदर ॥ अथवा; एम कही
 आब्यो जब रातें ॥ ए देशी ॥ हवे हस्विल मनहरख
 धरीने, आतमरंगें चेळी रे ॥ गोधूम तंडुल मिशिरा
 खंभा, पृत सामग्री मेळी रे ॥ १ ॥ खटरस नोजन

सार निपाई, सागर देव प्रजावें रे ॥ नोतरुं देवा नृप
 दरवारें, हरिवल पोतें जावे रे ॥ ख० ॥ १ ॥ आग्र
 ह करि निज आसन आपे, हरिवलने नृप हेतें रे ॥
 मदनवेगं कहे हरिवलने, तुमें ठो जीवन जेते रे ॥
 ॥ ख० ॥ २ ॥ तव नृपने हरिवल कर जोडी, नांखे
 सांजलो स्वामी रे ॥ हुं सेवक हुं तुम पद केरो, तुमें
 मुऊ अंतरजामी रे ॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमशी महोटा
 थाउं अमें महोटा, तुमें ठो वंछित पोटा रे ॥ तुमें ठो
 गिरुवा सायर पेटा, तुम नजरें थाउं घेटा रे ॥ ख० ॥
 ॥ ५ ॥ तुम शिर महोटो ठे परमेसर, जगशिर प्रभु तुमें
 सहुना रे ॥ तुमें ठो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें किं
 बहुना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिरें मीठे वचने नृपने,
 रीऊवी हरिवल बोले रे ॥ अरज सुणो एक प्रभुजी
 अमारी, नोतरुं वचन ते खोले रे ॥ ख० ॥ ७ ॥ नग
 र सहित तुमें राज पधारो, अम घरे नोजन करवा
 रे ॥ हुं आव्यो हुं तेडवा सारु, तुमने जमण आचर
 वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित थइ नृप परिवारें,
 हरिवल मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मां
 मी, निजस्त्री पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमरी
 नवनवा शणगार पेहरी, नृपने नोजन प्रीसे रे ॥ ह

निखल पल कृप ब्रमल नाभे, पंखे धवन लकीरें
 रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकदिन जानकी सुनडी गिरसी,
 फलने भीठा मेवा रे ॥ तिंदकेलरीपा मोदक मडो
 टा, वेत आरोगे गड्ढा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत
 पाक ने आंवां पोली, श्रीराम मीन तुंझाली रे ॥ का
 ल दाल ने घृत परनालि, विरमे गुं गंगा वाली रे ॥
 ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तीलां अंजन, बग्रीश
 जातिनां धामे रे ॥ नृप आदे नगरीमहाजन ते, जम
 तां तुति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जमतां जमतां
 अन्योअन्ये, रसवती जीनें बसाणे रे ॥ के गुं देव
 आकर्षां रसोइ, हरिधनें करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥
 ॥ १४ ॥ रसीयावाले मळो जन कपर, फूजे मन आ
 द्हादे रे ॥ अमली जंगी जंगी जन ते, कीधां नोजन
 खादे रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंदोल रंगें, दे
 मुखवासनी बूकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जमाडी,
 नागोले चोखा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस
 पडहो वजडावी, हरिधनें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर
 कुललहि हरिवल पोतें, सुकृत कारज कीधुं रे ॥ ख० ॥
 ॥ १७ ॥ मदने वेगें रसवती जमतां, वसंतसिरी ते
 दोठी रे ॥ मृगनयणीनुं रूप सुकोमल, देखत लागी

मीठी रे ॥ ख० ॥ १७ ॥ नृपनुं मन विह्वल थयुं ज
 मतां, कामें कीधो जोरो रे ॥ नृप चिंते मुज स्त्री ठे न
 लेरी, पण नहि एहवो तोरो रे ॥ ख० ॥ १७ ॥ ख
 टरस नोजननी सुघडाई, नृपना मनमें वेठी रे ॥
 कामज्वरथी नोजन चूब्यो, स्त्रीनी चिंता पेठी रे ॥
 ॥ ख० ॥ १८ ॥ खाधुं न खाधुं करीने नृपते, मन
 विमनो अइ ऊठयो रे ॥ असेनियो अइ नृप धरे वली
 यो, जाणे जगदीश रूठयो रे ॥ ख० ॥ १९ ॥ चमकी
 चितमें चतुरा ततखिण, दीतुं नृप मन बिगड्युं रे ॥
 तव प्रीतमने कहे निज प्यारी, चेतो नृप हेत उध
 ड्युं रे ॥ ख० ॥ २० ॥ तव हरिवल कहे सांजल
 प्यारी, नावी हशे ते थाशे रे ॥ खणशे ते पडशे
 खाईमां, आपणुं कांइ न जाशे रे ॥ ख० ॥ २१ ॥
 चिहुं जगमें हरिवलनी कीर्त्ति, बोले गुणिजन जीहा
 रे ॥ सुखें समार्थें दंपति दोये, सुखमें काढे दीहा रे ॥
 ख० ॥ २२ ॥ जोजो नविया धीवर जाति, एक
 जीव उगाख्यो रे ॥ सुरसानिध मनवंठित फलि
 ॥ जगमें जस विस्ताख्यो रे ॥ ख० ॥ २३ ॥ शुद्ध परं
 नी, सोहमस्वामी, हीरविजय सुरिराया रे ॥ साह
 नवनवार जे प्रतिबोधी, जैनमार्ग दीपाया रे ॥ ख० ॥

॥ २६ ॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, सयल गु
 षें करि ढाजे रे ॥ कोविदशिर मुकुटामणि सोहे, तस
 शिष्य धनहर्षे राजे रे ॥ ख० ॥ २७ ॥ तस शिष्य कु
 शलविजय कविराया, दिनमणि तेज सवाया रे ॥
 तस बंधव गणि कमल विजय शुज, तस श्रुतज्ञान
 सुहाया रे ॥ ख० ॥ २८ ॥ तस शिष्य पंमित लक्ष्मी
 विजय गुरु, सोहे साधु नगीना रे ॥ ज्ञान क्रिया दो
 विधिगुं आराधी, आत्म साधन कीना रे ॥ ख० ॥
 ॥ २९ ॥ तस शिष्य दो हुवा साधु शिरोमणि, कुमती
 मद जीपंता रे ॥ पंमित केशर अमर दो चाता, रवि
 शशिपरे दीपंता रे ॥ ख० ॥ ३० ॥ ते गुरुचरण प
 सायें लब्धि, पुण्य उपर परबंध रे ॥ पहेलो उल्लास
 कह्यो नव ढालें, हरिवल केरो संबंध रे ॥ ख० ॥ ३१ ॥
 ॥ इति श्रीहरिवलचरित्रे हरिवल राजर्षि पुरवर्णन
 नृपवर्णनादि प्रथमउल्लासः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयउल्लासः प्रारब्धते ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम ज्योति परकाश कर, त्रिचुवन तिलक स
 मान ॥ गरिव निवाज गोडी धणी, नयचंजन जग

वान ॥ १ ॥ अविनाशी अव्यय अरूप, अशरीरी अ
 अरिहंत ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, ते प्रणमुं गुन सं
 त ॥ २ ॥ कविजन हृदय महीतलें, शारद मात वि
 शाल ॥ वचनामृत वरसे सदा, प्रगट थई उजमाल
 ॥ ३ ॥ मूरख मूंगां बोवडा, अकलविहूणा जेह ॥ त
 स घट नीतरमें वसी, सुरगुरु सम करे तेह ॥ ४ ॥
 परउपगारी मातजी, वाला त्रिपुरा सोय ॥ तेहुं प्रण
 मुं नारती, जिम मुळ वंढित होय ॥ ५ ॥ कोविद के
 शर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल म
 ङ्गीरायनो, पनणुं बिजो उद्वास ॥ ६ ॥ रंग रंगीली
 जनसजा, सांजल वेधक जाण ॥ मधुकरनी परें रस
 लीए, गुणवंत जाव प्रमाण ॥ ७ ॥ सरस नीरस र
 सिया लहे, चातुर वेधक जेह ॥ पण मूरख पशु वा
 पडा, गुं जाणे रस तेह ॥ ८ ॥ सरस निरस मधुक
 र लहे, जे सेवे वनराय ॥ घूण गुं जाणे जीवडो, सू
 कां लकड खाय ॥ ९ ॥ खटपट सरिखा चतुर नर,
 वेधक वचन रसाल ॥ राचे सरस कथा सुणी, विक
 था तजी विचाल ॥ १० ॥ वक्ताने श्रोता सुणी, सा
 हामो साहामी दृष्ट ॥ एक सरीखी जो दुवे, सु
 एतां उपजे मिष्ट ॥ ११ ॥ तेमाटे जावुक तुमें, सां

अनजो बित लाव ॥ पण ते सुणतां मत कगो, अदि
 की किलर व्याव ॥ १२ ॥ नृपने तेढी हरिबल्ले, की
 धी नक्ति विख्यात ॥ ते सुणजो नवियण तुमें, सी की
 निपजे वात ॥ १३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आठे लालनी देशी ॥ तेढी नृपने आगार, जोयण
 देइ सार ॥ आठे लाल ॥ हरिबल्ले कीध पहेरा मणी ॥
 मणि माणक लख लेय, अंग आनूपण देय ॥ आ० ॥
 बोलाव्यो नृप गृह जणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम,
 मंदिर बलियो जाम ॥ आ० ॥ वसंतसिरी मनमें व
 सी ॥ अंगनारूप निहालि, मनमां थइ चकचाल ॥
 आ० ॥ नृप मननी मगली खसी ॥ २ ॥ जीवरह्यो
 लजचाय, जुं मधु खग लपटाय ॥ आ० ॥ काम व
 रें करी जूरियो ॥ कामातुर थयो राय, आकुल व्या
 कुल थाय ॥ आ० ॥ कामज्वरें नृप पूरियो ॥ ३ ॥
 परवश थइ नृप देह, असमंजस बोले तेह ॥ आ० ॥
 विकलमूर्ति परें जयो ॥ खिण बाहिर खिण मांहि, जक
 न पडे खिण क्यांहि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहण बहि
 गयो ॥ ४ ॥ न गमे कुसुमनी सेज, न गमे अंतेउरी
 हेज ॥ आ० ॥ राज काज पण नवि गमे ॥ न गमे पान

तंबोल, न गमे वात टकोल ॥ आ० ॥ अन्न उदक म
 न नवि रमे ॥ ५ ॥ कृत्री परजापाल, मदनवेग म
 ठराल ॥ आ० ॥ वीराधि वीर हतो खरो ॥ मोह बा
 ण लागं अशेष, पडयो गिडंदा पेच ॥ आ० ॥ का
 मिनीयें कस्यो जाजरो ॥ ६ ॥ नृप थयो मूरठा अचे
 त, जाणीयें लाग्यो केत ॥ आ० ॥ सघला सचिवने
 तेडीया ॥ पहेरी नव नवा वेश, धव धव धाड अ
 शेष ॥ आ० ॥ आया मंत्री न जेडिया ॥ ७ ॥ जा
 ण्या जोषी विशेष, पट्टा जे खाता हमेश ॥ आ० ॥
 तेड्या ते वैद राजने ॥ दशो दिशें दोड्या सर्व, जाण
 प्रवीण ते सर्व ॥ आ० ॥ आव्या तेडी लवाजने ॥
 ॥ ८ ॥ नरडा नूवा जेह, कारण काढे तेह ॥ आ० ॥
 आया ते शीश धुणावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, गा
 रुडी करता वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप वखा
 णता ॥ ९ ॥ वीराउला जे कहाय, हनुमंत हाक व
 जाय ॥ आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ जगत
 बेरागी धाय, लांवां टीलां बनाय ॥ आ० ॥ आया
 ते दंत उवासनी ॥ १० ॥ इणि पेरें मलिया लोक, उद
 होभेकारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा करवा नृप त
 णतां निज निज ते कला सर्व, करवा मांमी अगर्व

॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा जणी ॥ ११ ॥ कहे
 एक नाडी देख, नृपने तो रोग अशेष ॥ आ० ॥ दा
 ह ज्वर मूर्च्छा लही ॥ हांकी बोले वैद्य, ठे मुऊ गो
 ली सद्य ॥ आ० ॥ ठत्रीश रोग हणे सही ॥ १२ ॥
 जे हता वैद्य ते सर्व, मनछुं राखता गर्व ॥ आ० ॥
 पाली मठ पोपी रह्या ॥ बहु ते कीध उपाय, पण
 नृपरोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य प्रमुख पोथी बह्या
 ॥ १३ ॥ बोल्या जोपी जाण, नांखे लगन प्रमाण
 ॥ आ० ॥ ग्रह पीडा ठे रायने ॥ ते माटे करो होम,
 जाय ज्युं रोगनो जोम ॥ आ० ॥ गोदान द्यो तुम्हें
 लायने ॥ १४ ॥ जाप जपो सवा लक्ष, जिम ग्रह होवे
 प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी रक्षा करे ॥ बोल्या
 नगतजन एम, मानो ते विष्णु जेम ॥ आ० ॥ हम
 णां नृप मुख उच्चरे ॥ १५ ॥ एक कहे पेटमें नार,
 ठे अजीर्ण आहार ॥ आ० ॥ रेचनी गोली कीजि
 यें ॥ कहे एक गांठनो रोग, पीहो ठहरी योग ॥ आ०
 ॥ चूरण बूकी दीजियें ॥ १६ ॥ जूवा बोले जगीश,
 नृपने जोटिंग खवीस ॥ आ० ॥ वेलावली विलगण
 थड ॥ धूणे धूणावी शीश, पाडे बहुली चीस ॥ आ०
 ॥ वाण उतारे चिंता जड ॥ १७ ॥ मांमथां मांमलां के

य, वाज्यां मांकलां जेय ॥ आ० ॥ पण लेखे को ना
 वियां ॥ जेणें कहुं जे जेम, तेणें कहुं ते तेम ॥ आ० ॥
 पण नृप चित्त न जावियां ॥ १७ ॥ एम अनेक उपा
 य, नलनजा जाण कहाय ॥ आ० ॥ जाणपणुं पट
 की वल्या ॥ विराजजा हता जेह, परबंधी पण तेह
 ॥ आ० ॥ सिद्ध साधक सधला गव्या ॥ १८ ॥ न
 गत संन्यासी कूण, गलिया ज्युं पाणी लूण ॥ आ० ॥
 फोगट गाल फुलावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, वादी
 गर गया ठाण ॥ आ० ॥ जाणपणुं जे हुंलावता ॥
 ॥ १९ ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे शास्त्रविवेक ॥
 ॥ आ० ॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोढ्या ठे रा
 य, तिहांकिण आव्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोड
 तिहां गुणकरु ॥ २० ॥ लाथो नाडी जेद, मंत्री लह्यो ते
 उमेद ॥ आ० ॥ कामज्वरें ते नृप नड्यो ॥ मूरठा
 लह्यो तिण योग, पूरव कर्मना जांग ॥ आ० ॥ काम
 अनल कुमें पड्यो ॥ २१ ॥ जेह ठे नृपने रोग, तेह
 गुं जाणे लोग ॥ आ० ॥ अंतरगतनी कुण जहे ॥
 कामनुं जेहर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥ आ० ॥
 कहो ते रोगने कुण ग्रहे ॥ २२ ॥ जिहांथी प्रगट्युं दुः
 ख, तिहांथी होये सुख ॥ आ० ॥ अगनि बल्यो अग

श्रीहरे ॥ विरहानलनी शोक, जेइने रहि तन व्याप
 ॥ आ० ॥ ते प्रीतल रमणी करे ॥ २३ ॥ इम बिंती
 मनमाहे, तना समझ ठहाहे ॥ आ० ॥ मेहर मंत्री
 इम नरो ॥ नृपने रोग न काय ॥ फोगट कीधा उपा
 य ॥ आ० ॥ जाण प्रवीणने अवगुणो ॥ २४ ॥ आं
 खनुं उपय कान, कीधुं तेम निदान ॥ आ० ॥ सिद्ध
 साधक मूरख मया ॥ अंतरगतनी पीढ, कामज्वर
 नी रीढ ॥ आ० ॥ ते कुणो नचि अटकया ॥ २५ ॥
 जे लहे शास्त्र विचार, होवे जे गुरुमुख सार ॥ आ० ॥
 ते जाणो सयली कला ॥ छुं करे चिकित्सा कर्म, न जा
 ए शास्त्रनो मर्म ॥ आ० ॥ ते करे वाशने धाकजां
 ॥ २६ ॥ सजा विसर्जा ताम, सहुं पोहोता निज धा
 म ॥ आ० ॥ मंत्री हवे वेदुं करे ॥ बीजा उल्लासनी
 ढाल, पहेली कही उजमाल ॥ आ० ॥ लंघिविज
 य इम उच्चरे ॥ २७ ॥ आ० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मेहर मंत्रीसरु, लोकोने दे शीख ॥ नृप
 नी पीढा टालवा, बेगो आइ नजीक ॥ १ ॥ कामा
 तुर नृपने लही, सचिव करे उपचार ॥ राणी सच
 ली तेडीयो, शोल सजी राणगार ॥ २ ॥ रंम जम क

रती आवीउं, रूपें अपरठर सार ॥ मदन तणी जे
 वाटिका, कामीने सुखकार ॥ ३ ॥ आवी नृपना प
 ग तलां, उलासें उल्लास ॥ पवन करे रंजादलें, आ
 जे नेत्र बरास ॥ ४ ॥ पटराणी जे पदमणी, नृपनुं
 नीडी अंग ॥ शयन कछुं घडि दो लगें, उतखो ताम
 अनंग ॥ ५ ॥ कोकशास्त्र तणे वलें, कीधो ए उप
 चार ॥ आंख उघाडी ततखिणें, महिपतियें तिण वार
 ॥ ६ ॥ कामज्वर हलको थयो, पाम्यो चेतन सार ॥
 मेहर मंत्री जस लह्यो; वरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥
 मदनवेग हरख्यो घणुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यो
 मंत्रीसरु, देई बहुलुं मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिव दूरें
 कखा, राख्यो एह प्रधान ॥ मुजने मोहोढो गुण कख्यो,
 दीधुं जीवितदान ॥ ९ ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, म
 हारा दुखनो जाण ॥ में राख्यो तुजने सही, तन मन
 करिने प्राण ॥ १० ॥ तव कहे मंत्री नृप सुणो, हुं
 तुं तुमारो दास ॥ केहशो ते करखुं अमें, तन मन क
 रि एकरास ॥ ११ ॥ पण मुजने साची कहो, ए का
 रण थयुं केम ॥ अंतरगतनी वातडी, जाणी जाए जे
 म ॥ १२ ॥ वगर कहे किम जाणियें, पारका मननी
 वात ॥ तव नृप मंत्रीने कहे, मांमी सघली घात ॥ १३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोष पंखीयां ॥ ए
देशी ॥ नृप कहे साजल मंत्री, कहुं तुज नीपनी ॥ हरि
वल केरे मंदिर, जमतां जे ऊपनी ॥ हरिबल केरी नारि,
वसंतसिरी सदा ॥ प्रीसवा आवी जोजन, में दीठी तदा
॥ १ ॥ रूप अनोपम जाणीयें, अजिनव अपठरी ॥ के
रंजा के उर्वशी, के विद्याधरी ॥ नागकुमारी ए जाणुं
के, लखमी किन्नरी ॥ एहवी रूप निधान में, दीठी ए
सुंदरी ॥ २ ॥ ए रूप आगल बीजी, स्त्रीयो बापडी ॥
मान गुमान ते मूकी, दशो दिशि त्रापडी ॥ रंजा उर्वशी
अपसर, जइ ननमें रही ॥ पद्मइहमें लखमी, रही
अंबुज ग्रही ॥ ३ ॥ नागकुमारी किन्नरी, चूतलें जइ
वसी ॥ बैताढ्यें विद्याधरी, रही जइने स्वसी ॥ जे
रमणीनी उपमा, ते देतां सही ॥ वसंतसिरी को आग
ल, मांनि शकी नही ॥ ४ ॥ ते अंगनानुं रूप, देखि
हुं वश थयो ॥ खटरस जोजन जमतां, ते चूली गयो ॥
मन ललचाणुं मुज, नमर जिम केतकी ॥ जिम मधु ख
ग लपटाय, थयुं तिम एयकी ॥ ५ ॥ कोइक चोवडी
यानी जे, आवी हिये चढी ॥ खिण खिण सांन
रे बीसरे, नही ते अथ घडी ॥ चित्रलिखित जो माव

त, गजथकी उतरे ॥ तो मुऊ हृदयथी वसंत, सिरि ते
 वीसरे ॥ ६ ॥ ते विण जे घडि जाय ते, मास स
 मान ज्युं ॥ मास ते जाणीयें होवें, वरस प्रमाण ज्युं ॥
 सोहविलुखो जीव, फूरे दिन रातडी ॥ साले साल
 समान, खुई निज जातडी ॥ ७ ॥ मत कोशने प्रभु ला
 गो, एकांगी प्रीतडी ॥ वाले सुरंगी देह, पतंग ज्युं
 रीतडी ॥ अगनी जंपापात, करेवी सोहिली ॥ पण वि
 रहानल वाफ, सहेवी दोहिली ॥ ८ ॥ संग्राम करतां
 लागे ते, जलकां सोहिलां ॥ पण ते कामिनी जलकां, ख
 म्बां दोहिलां ॥ जिम रोगी ज्वरयोगथी, सेजें तडफ
 डे ॥ तिम विरही नर काम, ज्वरथी लडथडे ॥ ९ ॥
 चिंता चिंता दोमें, अधिकी कुण वहे ॥ चिंता दहे नि
 जीव, सजीव चिंता दहे ॥ जिहां सुधी ते नयणें न,
 निरखे अति जले ॥ घरनां कारज तिहां सुधी, कांहि न
 ककले ॥ १० ॥ लोनीनी परें जीव, रहे निज ते क
 ने ॥ स्वाधा पिधानी सुध, नही ते जीवने ॥ शूनी
 फरे तरस देह के, मन विण मानवी ॥ लय लागी घ
 णुं जोर जे, ललना अजिनवी ॥ ११ ॥ विरुड विष
 य विकार के, दृष्टि लागे जिका ॥ वीषयीनो दिल वाह,
 जाणे केवली निका ॥ मदिरा पीये जीव, घुमाई ज्युं रहे ॥

विरहनी लीणो जीव, मुंजाइ ह्युं वहे ॥ १२ ॥ जोजो
 नविषां प्रीतडी, लागे जेहने ॥ होये एह दवाज के,
 मानव तेहने ॥ विरहनी वारता वीती, हरी ते जाणगे
 ॥ पण निसनेही मूरख, छुं ते पिठाणगे ॥ १३ ॥ मननी
 लालच रात, दिवस रहे तेहछुं ॥ न गणे सुख दुःख जीव,
 बंधाणो जेहछुं ॥ प्रीतिनो लीणो जीव, पडे ते कूप
 मां ॥ तन धन सोंपे नेही ने, सरवे ते चूपमां ॥ १४ ॥
 रमणी तणां जे नेत्र ते, कल्लाज पंकथी ॥ प्रगटे कंदर्प
 मत्त, वराह निःशंकथी ॥ कामी जन मनवनें, वराह
 ते संचरी ॥ मानलता खिण एकमें, जाये ते चरी ॥ १५ ॥
 कामी जनने काम, सुअर केडें पडे ॥ विरही जनने अह
 निशि, विण खूनें नडे ॥ काम वराह ते कामिनी, संग
 थीं उंसरे ॥ वीरहीजननां मन ते, तव शीतल करे ॥
 १६ ॥ सवल पुरुष गढ कोट ते, जीते पराक्रमें ॥
 कामिनी जीते त्रीजग, एक कटाक्षमें ॥ कामणगा
 री नारी ते, सद्गुने वश करे ॥ रागना लीणा सुरनर, स्त्री
 केडें फरे ॥ १७ ॥ सवला ते नवला थई, स्त्री वश
 रहे वहु ॥ तो माहरो कोण आशरो, मंत्री तुज कहुं ॥
 रे मंत्री तुज आगल, मांमी में कही ॥ वसंतसिरीनुं कार
 ण, ए नीपनुं सही ॥ १८ ॥ जोजन करवा गया तव, ए

फल लाविया ॥ कारण करीने कारण, लोकने लाविया ॥
 करण विंथावतां नाक, विंथावी आवियो ॥ ए ऊखा
 णो लोकमें, साचो करावियो ॥ १९ ॥ ते माटे हवे
 कोइक, उद्यम कीजियें ॥ वसंतसिरीमुख देखि, सु
 धारस पीजियें ॥ जो कोइ विद्या होय तो, पलकमें
 जइ मलुं ॥ राचुं माचुं मन, तिहांथी न नीकलुं ॥ २० ॥
 बुद्धि अकल परपंच, करी कोय केजवे ॥ ठे कोय प्रचु
 नो वाहालो, मुज्जने मेजवे ॥ तन मन करुं खुरवान,
 के जो मुज्जने मजे ॥ आपुं कोडि पसाय, करी नजे नजे
 ॥ २१ ॥ ए अधिकार ते सवलो, मंत्रीयें सांजव्यो ॥ कामा
 तुर थयो राय, ते मंत्रीयें अटकव्यो ॥ वणुं बलीयो
 पण सिंह, अजाडीमें पज्यो ॥ तिम रमणी मोह
 जालमां, नृप पूरो जज्यो ॥ २२ ॥ तो हवे कोइक
 बोल, सुबोल कही नजा ॥ नृपना मनमें स्त्रीनी, फि
 कर काहुं बजा ॥ सवलुं कमल हरो तो, कहुं नृप मा
 नरो ॥ तो शीखामण सवली, जेखें आणरो ॥ २३ ॥
 सांजजजौ नवि आगल, मीठी वारता ॥ सांजजतां
 खुशियाल, श्रोता दिल वारता ॥ बीजा उल्लासनी
 ढाल, ए बीजी पूरी करी ॥ नेहीने मन गमती ए,
 लजियें उजरी ॥ २४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मंत्री नृपने कहे, सानिलो प्रभु महारा
ज ॥ अंतरगतनी जे कही, ते में निसुणी आज ॥
॥१॥ पण ए बात हलकी नहीं, ठे नारे महिनाथ ॥
गणवा दशन यमदंमना, नचहुं नरवी बाथ ॥ २ ॥
तिम ए स्त्रीहुं नेहलो, करवो अति दुर्जन ॥ ठंमो सं
गति एहनी, जुं लहो सुख सुलंन ॥ ३ ॥ जे कीधे
तुमने प्रभु, खामी लागे अपार ॥ बाढ जो गलरो ची
जडां, क्यां होय तास पुकार ॥ ४ ॥ परदुःखनंजन
राजवी, परजन पाले लाड ॥ बाहार जोश्यें जिहां
थकी, तिहां किम कठे धाड ॥ ५ ॥ अणघटती ए बातडी,
किम कीजें प्रभु नाथ ॥ देखी पेंखी बाधना, मुखमें
घालवो हाथ ॥ ६ ॥ वसंतसिरी नारी तणो, जो की
जें प्रतिबंध ॥ ठानी बातो नवि रहे, हिंग तणी जे
म गंध ॥ ७ ॥ पोतानी परणी प्रिया, उपजावे रंग
रेल ॥ जगमें ठे परणी नली, पर परणी बिपवेल ॥ ८ ॥
काणी कोची करवली, काली कुवडी जाण ॥ परणी
जेह पनोतडी, पदमिणी तेह पिठाण ॥ ९ ॥ आप
णी गावडी चंडमा, जे दोही पीवाय ॥ हुं कीजें पर
नी नली, जे दोही नवि जाय ॥ १० ॥ परस्त्री संग

ति जे करे, तेहनां पूरण पाप ॥ ऊप करी बेसे नही,
 न मिटे तास संताप ॥ ११ ॥ घृतकुंज सरिखा नर क
 ह्या, अगनि सरीखी नार ॥ मधु खरडी अतिधार
 ज्युं, तिम स्त्रीतंग विचार ॥ १२ ॥ परनारीना लाज
 ची, जे थया विषयाथंध ॥ नरकनिगोदें रडवज्या,
 सुणजो तास संबंध ॥ १३ ॥

॥ टाज त्रीजी ॥

॥ नणदजननी देशी ॥ राजन हे राजन, रावण स
 रिखो राजवो, जे बलीयो कहवाय ॥ हे राजन ॥ ला
 ख वेहेंतालीश गज तुरी, सेवे सोल सहस राय ॥ हे रा
 जन ॥ १ ॥ धिक धिक काम विडेवना, कामें लुब्धा
 जेह ॥ हे रा० ॥ जस अपजस कांड नवि गणो, न
 गणो सुख दुख तेह ॥ हे रा० ॥ २ ॥ धि० ॥ व
 त्रीश सहस अनेवगो, रुपें अपठर प्राय ॥ हे रा०
 ॥ ते मखीने अवगुणी, रावण सीता हराय ॥ हे
 रा० ॥ ३ ॥ धि० ॥ मम ने लखमण वेदु मली, मंत्री
 कटक अपार ॥ हे रा० ॥ बार वसत लगे आक्रम, जू
 ल्या नर कुंज ॥ हे रा० ॥ ४ ॥ धि० ॥ नीताकारणें
 रावणो, केह सुनट लजाव ॥ हे रा० ॥ अने पण रा
 वण लखा, दम नमक देवाव ॥ हे रा० ॥ ५ ॥ धि० ॥

त्रिजगमें कंटकेश्वरी, नाम धरावतो जेह ॥ हे रा० ॥ चो
 श्री नरकें ते गयो, परस्त्रीनां फल एह ॥ हे रा० ॥
 ॥ ६ ॥ धि० ॥ लंका परलंका करी, निजनारीने लेय
 ॥ हे रा० ॥ निज नगरीयें रघुपति बल्यो, जितना मं
 का देय ॥ हे रा० ॥ ७ ॥ धि० ॥ बाणुं लख मालव
 धणी, जे थयो राजा मुंज ॥ हे रा० ॥ ते पण दासी
 मृणालथी, लुब्धो कामीनि पुंज ॥ हे रा० ॥ ८ ॥
 धि० ॥ ते दासीना संगथी, घर घर मागी नीख ॥
 हे रा० ॥ अंते शूलि रोपण थयो, कामथी लह्यो ए
 शीख ॥ हे रा० ॥ ९ ॥ धि० ॥ लुब्धो झोपदी ऊपरें,
 कीचकें कीयो चूक ॥ हे रा० ॥ घालियो देवल कुंज
 मां, नीमें कीधो चूक ॥ हे रा० ॥ १० ॥ धि० ॥ सर
 सति नामें साधवी, कालिकसूरिनी बेन ॥ हे रा० ॥
 गर्धनिल नृपें तस अपहरी, कीधुं ए कामी चेन ॥
 हे रा० ॥ ११ ॥ धि० ॥ कालिकसूरियें ततखिणें, मे
 ली प्रवल खंधार ॥ हे रा० ॥ गर्धनिल नृप शिर वेदी
 पुं, वाली निज वहेन सार ॥ हे रा० ॥ १२ ॥ धि०
 ॥ इत्यादिक कामीजना, पाय्या दुःख अपार ॥ हे रा०
 ॥ परस्त्री गमन कखाथकी, पडिया नरक मणार ॥
 हे रा० ॥ १३ ॥ धि० ॥ कामिनी जे संसारमां, जां

स्त्री पापनी राश ॥ हे रा० ॥ कामी जनने पाडवा,
 मोहकूपें धखो पाश ॥ हे रा० ॥ १४ ॥ धि० ॥ नय
 णें देखाडी प्रीतडी, बोली मीठ बोल ॥ हे रा० ॥
 प्राण हरी लीयें कामीनां, देखाडी रंग चोल ॥ हे रा०
 ॥ १५ ॥ धि० ॥ आंसूं पाडी नयणथी, दुःख देखाडे
 आप ॥ हे रा० ॥ आ नवमें मुऊ तुम विना, बीजा
 चाडने वाप ॥ हे रा० ॥ १६ ॥ धि० ॥ कडकडता
 करि आकरा, खाये खोटा सुंस ॥ हे रा० ॥ थें पर
 मेसर साचलो, ठेतरे जलजला पुंस ॥ हे रा० ॥ १७ ॥
 धि० ॥ जोलवे जोला जामिनी, राखी ते कूडी बुद्धि ॥
 हे रा० ॥ जडक प्राणी वापडा, माने ते धोलुं दूध ॥
 हे रा० ॥ १८ ॥ धि० ॥ कूड कयन चाले घणुं, स्त्रीनो
 एह सजाव ॥ हे रा० ॥ चरित्र रमे केइ जातिनां, पा
 मी ते निज दाव ॥ हे रा० ॥ १९ ॥ धि० ॥ कूड क
 पटनी उरडी, गोरडी निगुण निटोल ॥ हे रा० ॥ अ
 नया राणी तणि परें, कोइ न राखे तोल ॥ हे रा०
 ॥ २० ॥ धि० ॥ रमणी तणां मन एहवां, जेहवां पाकां वोर
 ॥ हे रा० ॥ वाहिर सुंदर देखणां, मांहे कठिण कवो
 र ॥ हे रा० ॥ २१ ॥ धि० ॥ महिला केरो नेहलो,
 जेहवो संध्या राग ॥ हे रा० ॥ आसो मासनो मेहलो,

तेहवो स्त्रीनो राग ॥ हे रा० ॥ २२ ॥ धि० ॥ स्वारथ
 पहोंचे जिहां लगे, तिहां लगे करे रंग रेल ॥ हे रा०
 ॥ झूठी तन धन हरि लिये, रुठी विपनी बेल ॥ हे रा०
 ॥ २३ ॥ धि० ॥ सुरीकंतायें कंतने, हणियो देई जे
 ॥ हे रा० ॥ नारी छुट होवे सदा, न छुवे करतां केर
 ॥ हे रा० ॥ २४ ॥ धि० ॥ ब्रह्मदत्तने मारवा, लाख
 नां मंदिर कीध ॥ हे रा० ॥ चुल्लणीयें निज पुत्रने,
 स्वहस्ते बन्धि दीध ॥ हे रा० ॥ २५ ॥ धि० ॥
 पायुं रक्त छुजातणुं, खवरावुं उरमांस ॥ हे रा० ॥
 ते जितशत्रुने राणीयें, नाख्यो जलधिमें तास ॥ हे
 रा० ॥ २६ ॥ धि० ॥ नारी न होवे आपणी, वानां
 जो करियें लक्ष ॥ हे रा० ॥ दूधने मांग दो नामिनी,
 देखाडे परतक्ष ॥ हे रा० ॥ २७ ॥ धि० ॥ मोह देखा
 ही दगो करे, स्त्रीनो ठेए ढंग ॥ हे रा० ॥ ते माटे तु
 में राजवी, म करो परस्त्री संग ॥ हे रा० ॥ २८ ॥
 धि० ॥ इण परें नृपने मंत्रीयें, दाख्या केइ दृष्टांत ॥
 हे रा० ॥ पण नृपनुं मन नवि मले, वसंतसिरी चित्त
 थांत ॥ हे रा० ॥ २९ ॥ धि० ॥ मन लागुं जेह उपरें, विसाखुं
 नवि जाय ॥ हे रा० ॥ मोहनी मदिरा ठाकमां, उप
 देश नावे दाय ॥ हे रा० ॥ ३० ॥ धि० ॥ लब्धि वी

जा उल्लासनी, ए कही त्रीजी ढाल ॥ हे रा० ॥ आ
गल नवि तुमें सांजलो, सरस कथा उजमाल ॥ हे रा०
॥ दोहा ॥

॥ बलि मेहर मंत्रीसरु, नृपने दे उपदेश ॥ जाणे
किम करि नृप वले, होवे लाज विशेष ॥ १ ॥ इम जा
णी मंत्री कहे, सांजलो तुमें माहाराज ॥ चिहुं जगमें
हे अति घणी, तुमची महोटी लाज ॥ २ ॥ साचवी
यें जल आपणुं, अणसाचविषुं जाय ॥ नालीकेर
परें साचव्युं, अधिक अधिक जल थाय ॥ ३ ॥ परडुः
ख जंजन राजवी, जगमें इम कहेवाय ॥ परनारी ते
सहोदरु, विरुद एम देवाय ॥ ४ ॥ ते मारग किम मू
कीयें, आपणि जे कुलवट्ट ॥ शील सुरंगुं सेवतां, ल
हियें सुख परगट्ट ॥ ५ ॥ शीलें निध करे, शी
लें शीतल आग ॥ शीलें अरि १, न जाये
सवि जाग ॥ ६ ॥ मनव ॥ गहे
सौभाग्य ॥ शी ॥ ने चि
दौर्भाग्य ॥ ७ ॥ १ ॥ ५ ॥

॥ २ ॥
॥ मदन ॥

॥ ढाल बोथी ॥

॥ बिंदलीनी देशी ॥ एतो शीलनो महिमा म
होटी, सहि नांखे त्रिशलानो ढोटो रे ॥ नरपतिजी
निसुणो ॥ ए तो शीलथी लीज विलास, शीलें पहाँ
चे सयली आश रे ॥ न० ॥ १ ॥ ए तो जे नर शी
लने पाजे, ते आतम जव अजुवाले रे ॥ न० ॥ जे
धरे शीलुं राग, ते पामे जवोदधि ताग रे ॥ न०
॥ २ ॥ ए तो शील ठे कुलनुं आचरण, शील टाले
कर्म आवरण रे ॥ न० ॥ ए तो शील ठे कुलनुं रूप,
शीलें माने सुरनर चूप रे ॥ न० ॥ ३ ॥ ए तो शीलथी
शुक्ल ध्यान, शीलें पामे केवल ज्ञान रे ॥ न० ॥ ए
तो शीलुं रहे एक तान, शिव रमणी दे तस मान
रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ए तो शील ठे गुणनुं निधान, शी
लें पामे स्वर्ग विमान रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें संकट
नांजे, शीलें ते हरि ज्युं गाजे रे ॥ न० ॥ ५ ॥ ए तो
शीलें कुंथर श्रीपाल, तस कोढ गयो ततकाल रे ॥
न० ॥ ए तो शीलें सुदर्शन शेर, शूलि फीटी सिंहा
सन घेर रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ए तो शीलें जंबू स्वामी,
लघुवयमें थयो शिवगामी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें
नेम कुमार, थयो शिवरमणी उरहार रे ॥ न० ॥ ७ ॥

ए तो शीलें मेघकुमार, जेणें ठंढी आठे नार रे ॥
 न० ॥ ए तो शीलें गयसुकुमाल, शिवपदवी लही
 सुरसाल रे ॥ न० ॥ ७ ॥ ए तो शीलें थूलिनइ ना
 म, राख्युं चिहुं जगमें अनिराम रे ॥ न० ॥ ए तो शी
 लें श्रीमद्विनाथ, ए तो सुगतिवधू करि हाथ रे ॥
 न० ॥ ए ॥ ए तो शीलें सीता नारी, करी धीजतां
 शीलें समारी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें सुनडा सुहाडी,
 जेणे चंपा पोल उघाडी रे ॥ न० ॥ १० ॥ ए तो डुपदी पां
 मव केरी, जेणें कौरवें लज्जा उवेरी रे ॥ न० ॥ ए तो
 तेहने शील प्रनावें, सुर सत अष्ट चीर पहेरावे रे ॥
 न० ॥ ११ ॥ ए तो शीलवती सुकुमाल, अहि फीटी
 थइ फुलमाल रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें चंदनवाला,
 वीरें करी जाक जमाला रे ॥ न० ॥ १२ ॥ ए तो इ
 त्यादिक अवदात, कहुं शीलनी केती आख्यात रे ॥
 ॥ न० ॥ जे पाले शील नर नारी, हुं जावं तस बलिहा
 री रे ॥ न० ॥ १३ ॥ कुशीलियो किहां न खटाय, कुक्कर
 ज्युं धक्का खाय रे ॥ न० ॥ कुशीलने काढे कूटी, जिम घर
 मांथी हांमी फूटी रे ॥ न० ॥ १४ ॥ कुशीलनो नावे
 विसास, कुशीलियो फरे थइ दास रे ॥ न० ॥ कुशी
 लियो गति नवि पामे, जाये नरक निगोदने ठामें रे

॥ न० ॥ १५ ॥ कुशीलियो सघले जंमाय, चोविश
 दंमकें दंमाय रे ॥ न० ॥ कुशीलनां कर्म अधोर, न
 वो ज्वे फिरे थई चोर रे ॥ न० ॥ १६ ॥ मंत्र यंत्र नें
 विद्या जेह, कुशीलने न फले तेह रे ॥ न० ॥ सिद्ध
 साधक नाम धरावे, कुशीलने जस कदि नावे रे ॥
 न० ॥ १७ ॥ माहादेव जे देव कहाय, सरगथी मरि
 नरगुं जाय रे ॥ न० ॥ अहिव्यागुं ईश जे लुब्धो,
 तो सहस्रजगो नाम दीधो रे ॥ न० ॥ १८ ॥ कुल
 जलुठ साधु कहातो, गुरु झोहित किम जातो रे ॥
 १९ ॥ ते गयो गणिका संगें, ठही नरकें कुशीलने ठं
 रे ॥ न० ॥ १९ ॥ वर्ष सहस्र ते चारित्र पाज्जी, कुं
 रीकें तप परजाली रे ॥ न० ॥ ते मरीने एकण रा
 नें, जइ बेठो नारकी पातें रे ॥ न० ॥ २० ॥ कुशील
 नी करणी खोटी, करतो फरे नानी महोटी रे ॥ न०
 ॥ कुशीलनुं तप जप फोक, बध बंधन लहे फल रोक
 रे ॥ न० ॥ २१ ॥ स्वदारा दिल नवि श्यावे, कुशीलियो
 उखर खावे रे ॥ न० ॥ ए तो जेहने जे पढी हेवा, तेह
 नी जाए टेव मरेवा रे ॥ न० ॥ २२ ॥ ते माटे तुमें मही
 नाथ, ठंमो परस्त्रीनो साथ रे ॥ न० ॥ कुशीलनुं नाम
 धराशो, लोकोमें हांसुं कराशो रे ॥ न० ॥ २३ ॥ दिल

साबुत राखो राजा, खत्रीवटनी राखो माजा रे ॥ न०
 ॥ ए तो तुमें ठो प्रछुने वाला, इण वातें मत आउ
 काला रे ॥ न० ॥ १४ ॥ ए तो वसंतसिरी जे वा
 ला, तुमें न करो एहछुं चाला रे ॥ न० ॥ जाये जन
 म ते जशने कमातां, पण वार न लागे जश जातां
 रे ॥ न० ॥ १५ ॥ ए तो परदेशी अई बूटे, पण मही
 मां तुम जग खूटे रे ॥ न० ॥ इम मंत्री तें परचावे, प
 ण नृपने दिल कांइ नावे रे ॥ न० ॥ १६ ॥ मंत्रीयें जे
 कही वातो, ते सांजली नृप हुउं तातो रे ॥ न० ॥ तव
 मंत्री थयो खिसियाणो, साहासुं नृप रोपें नराणो रे ॥
 ॥ न० ॥ १७ ॥ हवे सुणजो जे नृप बोले, मंत्री आगल
 पोछुं खोले रे ॥ न० ॥ ए तो बीजा उद्यासनी ढाल,
 कही चोथा लब्धें रसाल रे ॥ न० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी मंत्री तणां, नृपने लागी हिंग ॥
 नूतनराड ते नृप थयो, जाणे लागु विंग ॥ १ ॥ हित
 खामण देवतां, नृपने ऊठी जाल ॥ आगें अहि
 ठेडियो, तिम हुवो नृप विकराल ॥ २ ॥ आगें वा
 नरने वली, विठीयें ॥ ३ ॥ रीने वली,
 श्वाननुं विरुद ते ॥ ४ ॥ उपरें,

कोपाकुल थइ राय ॥ मदनवेग तिहां सचिवगुं, बो
 ल्यो प्रकुटी चढाय ॥ ४ ॥ रे मंत्री हुं जाणतो, तुज
 ने चातुर कोक ॥ वे दाणा तुजमें नही, जे बोले
 ते फोक ॥ ५ ॥ तें किम जाण्या कुंशीलिया, करणी
 हीणा जेह ॥ परस्त्री गमन किया पठें, स्वर्गे पहोता केह
 ॥ ६ ॥ ते सांजल तुजने कहुं, साख तणे अनुसार ॥
 व्रत जांगी ते मुनिवरा, पाम्या जवनो पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जीणा मारुजीरी करहजडी ॥ ए देशी ॥ नूनेता
 कहे सचिवने, सांजल तुं एकंगो यश्ने कान उधाडी हो
 राज ॥ चोविश वर्षे धरे रही, मुनिवर आर्षकुमारें व्र
 तने लाज लगाडी हो राज ॥ १ ॥ ते गयो ज्योति आगा
 रमें, सिद्ध वधूना संगमें जइ सुख नोगवे पूरां, हो
 राज ॥ साख जली तस ए कही, श्रीवसुदेवनी हिंम
 में अक्षर जो तुं सनूरा हो राज ॥ २ ॥ श्रेणिक
 रायनो कुंवरुं, नामें नंदिखेण जे वज्रियो थइ व्रत ली
 नो हो राज ॥ तेणें पण व्रत जांजीने, गणिकागुं घर
 मांनि रह्यो रंग जीनो हो राज ॥ ३ ॥ बार वरस
 सुख नोगवी, अजरामर पद लहियो करणी सहु ज
 ग जाणे हो राज ॥ माहानिशीय जे सूत्रमां, साख

नली जाएजे मंत्री लिखित प्रमाणें हो राज ॥ ४ ॥
 पापी चिताती पुत्र जे, स्त्री हत्या जिणें कीधी महोटी
 कामें व्याप्पो हो राज ॥ ते गयो सुर लोक आठमे,
 साख नली तुं जाएजे श्री योगशास्त्रें उपायो हो राज
 ॥ ५ ॥ आषाढजूति अणगार जे, नाटकणीने साथें
 बार वरस घर मांड्यो हो राज ॥ साख नली तस
 चरित्रमां, ते गयो शिवगति मांहे जाणी जे व्रत खंड्यो
 हो राज ॥ ६ ॥ चंडशेखर विद्याधर, ते निज नगि
 नि साथें निशिदिन रंगें रमतो हो राज ॥ ते लह्यो
 मुगतिवधू प्रिया, श्रीसेतुंजो माहातम साखी ठे मन
 गमतो हो राज ॥ ७ ॥ चक्री नरत नरेसरु, गंगा दे
 वीने घेर रहियो थड सुखवासी हो राज ॥ सहस व
 रस सुख नोगवी, जुवन आरीसामांहे पाम्या ज्ञान
 उद्भासी हो राज ॥ ८ ॥ अष्टापद गिरि उपरें, कृष्ण
 जिणेंसर साथें मुगति पुरीयें पुहता हो राज ॥
 तेनी साख तुं जाएजे, जंबुदीवपन्नतिमांहे अक्षर
 सुहता हो राज ॥ ९ ॥ नामें एलाची जाणीयें,
 नाटकणीनी लारें नटक्यो प्रेम विजुक्षो हो राज
 ॥ केवल रयण ते पामिने, मुगति पुरीमें जश्ने वेगो नि
 र्जय सुधो हो राज ॥ १० ॥ गज सुकुमालिका साधवी,

शक मसक दो नाइ तेहनी बहेन कहाणी हो राज ॥
 बिरकाल सुधी ते साधवी, सारथवाहनी घरणी
 थइ रही उपगार जाणी हो राज ॥ ११ ॥ ते
 थइ आर्या कुशीलणी, अणसण खंमी पद्दोती तेहिज
 जब सुरलोकें हो राज ॥ तेहना परगट अकरा, श्री
 उपदेशनी मालामांहे वांची जोकें हो राज ॥ १२ ॥
 ब्रह्मा ध्यानें चूकव्या, नाटारंज देखांडी रंजार्ये नो
 लव्यो ब्रह्मा हो राज ॥ चिदुंदिशि चवमुख नी
 पनां, गर्दननुं मुख प्रगटनुं पांचमुं उपजे शर्मा हो
 राज ॥ १३ ॥ मारग जातां ब्रह्मार्ये, वनमें दीठी रीं
 ठडी मीठी मनमें लागी हो राज ॥ तेहनुं अनिजाप
 सेवतां, रींठरूपि तें रींठडी पेटें उपनो सागी हो राज
 ॥ १४ ॥ ब्रह्मपुराणें ते ब्रह्माने, परमेसर करि माने
 डनियां एकण ध्यानें हो राज ॥ तारक जग परमेसरु,
 निज पुत्रीनुं विलसे रंगें थइ एक तानें हो राज ॥ १५ ॥
 वमया नारी ठवेखीनें, जटामध्यें ठानी राखी ईश्वरें
 गंगा हो राज ॥ तारक जाणी शंखुने, वरण अद्वार
 जे मानवि रुझने पूजे एकंगा हो राज ॥ १६ ॥ पुत्री
 उखा देखीने, त्रिनेत्री थयो शंकर तिण दिनथी गव
 राणो हो राज ॥ लिंगपूजा थइ तिण दिनथी, लिंग

पुराणें चावो अक्षर ठे सपराणो हो राज ॥ १७ ॥ विष्णु
 पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल अइने लोकमांहे पूजा
 णो हो राज ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, ते ठंमी मही
 यारी राधा साथें गवाणो हो राज ॥ १८ ॥ कुंता पांडु
 नृप तणी, लघुवयमें कुमारी सुरज देवे विलसी हो रा
 ज ॥ करण अयो ते उदरनो, जग चहु ते देवनी सहु जग
 माने उलसी हो राज ॥ १९ ॥ ए अवदात जे में कह्या,
 करमां दीपक लेइ देखी कूप केइ पडिया हो राज ॥ बल
 वंतमांहे शिरामणि, ते सरिखा पण बलिया गलिया
 कमें नडिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण
 आशरो, तिन चुवनमें सर्वने कमें मुक्या चूणी हो
 राज ॥ जे पवनें गज उडिया, तेणे पवनें करी धाई
 मोकरी लेवा पूणी हो राज ॥ २१ ॥ कुगति सुगं
 ति जे पामवी, ते करणी ठे सघली नवितव्यताने हाथें
 हो राज ॥ जे जे समयें प्राणीयें, गुनागुनना बंध
 जे बांध्या ते आवे साथें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र त
 पस्यानो धणी, जितारि नृप जिननो रागी पूरण हु
 तो हो राज ॥ ते मरीने अयो सूअडो, किहां गइ कर
 णी तेहनी तिरियंच गतिमां पहोतो हो राज ॥ २३ ॥
 ॥ ए अधिकार तुं जाणजे, श्री शेत्रुंजा माहात्म मांहे

ठे ए साखी हो राज ॥ करणीनुं कारण को नही,
 नवितव्यतानुं कारण सघले जिन वाणी नांखी हो
 राज ॥ २४ ॥ नवस्थिति पूरी थया विना, उद्यम जीव
 करे पण लेखे कदिय न आवे हो राज ॥ माली सीं
 चे सो गणां, पण तेहनी कतावले कृतु विना फल नवि
 पावे हो राज ॥ २५ ॥ तिम आपणी कतावले, समकि
 त रयण विना किम नवस्थिति पाकी जाय हो
 राज ॥ घणुंथ नूख्यो पण गुं करे, लाख उतावल करी
 ये वे करयी न जमाय हो राज ॥ २६ ॥ तिम इव्य
 क्रियाथी न ऊघडे, नावक्रिया जव न्यंतर प्रगटे तव
 शिव पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि ल
 हूं, तिहां सूधी ते जीवने चिहुं गति कर्म नमावे हो
 राज ॥ २७ ॥ इव्यथी उंवा चरवला, एकठा कीधा जी
 वे मेरु जेवडा ढगला हो राज ॥ तो पण गरज सरी
 नही, नाव विना जे किरिया कीधी दंजी ज्युं बगला
 हो राज ॥ २८ ॥ ते माटे मंत्री तुमें, शील कुशील
 नुं कारण कोइ इहां मत गणजो हो राज ॥ पांचे
 कारण जव मिले, नवितव्यताने जोगें गुनागुन तव
 नणजो हो राज ॥ २९ ॥ एहचो उत्तर मंत्रीने, मद
 नेवेगें दीधो चोखो हाथमें लाडु हो राज ॥ वली

पुराणें चावो अक्षर ठे सपराणो हो राज ॥ १७ ॥ विष्णु
 पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल थइने लोकमांहे पूजा
 णो हो राज ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, ते ठंमी मही
 यारी राधा साथें गवाणो हो राज ॥ १८ ॥ कुंता पांरु
 नृप तणी, लघुवयमें कुमारी सुरज देवे विलसी हो रा
 ज ॥ करण थयो ते उदरनो, जग चहु ते देवनी सहु जग
 माने उलसी हो राज ॥ १९ ॥ ए अवदात जे में कहा,
 करमां दीपक लेइ देखी कूप केइ पडिया हो राज ॥ बल
 वंतमांहे शिरामणि, ते सरिखा पण बलिया गलिया
 कमें नडिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण
 आशरो, तिन चुवनमें सर्वने कमें सुक्या चूणी हो
 राज ॥ जे पवनें गज उडिया, तेणे पवनें करी धाई
 मोकरी लेवा पूणी हो राज ॥ २१ ॥ कुगति सुग
 ति जे पामवी, ते करणी ठे सघली जवितव्यताने हाथें
 हो राज ॥ जे जे समयें प्राणीयें, शुजाशुजना बंध
 जे बांध्या ते आवे साथें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र त
 पस्थानो धणी, जितारि नृप जिननो रागी पूरण हु
 तो हो राज ॥ ते मरीने थयो सूअडो, किहां गइ कर
 णी तेहनी तिरियंच गतिमां पहोतो हो राज ॥ २३ ॥
 ॥ ए अधिकार तुं जाणजे, श्री शेत्रुंजा माहात्म मांहे

ठे ए साखी हो राज ॥ करणीनुं कारण को नहीं,
 जवितव्यतानुं कारण सधले जिन चाणी नांखी हो
 राज ॥ २४ ॥ जवस्थिति पूरी थया विना, उद्यम जीव
 करे पण लेखे कदिय न थावे हो राज ॥ माली सीं
 चे सो गणां, पण तेहनी कतावलें कलु विना फल नवि
 पावे हो राज ॥ २५ ॥ तिम आपणी कतावलें, समकि
 त रयण विना किम जवस्थिति पाकी जाय हो
 राज ॥ घणुंश्च नूख्यो पणं शुं करे, लाख उतांवल करी
 ये वे करयी न जमाय हो राज ॥ २६ ॥ तिम इव्य
 क्रियाथी न कषडे, जावक्रिया जब न्यंतर प्रगटे तव
 शिव पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि ल
 लुं, तिहां सुधी ते जीवने चिहुं गति कर्म जमावे हो
 राज ॥ २७ ॥ इव्यथी उधा चरवलां, एकठा कीधा जी
 वें मेरु जेवडा ढगला हो राज ॥ तो पण गरज सरी
 नहीं, जाव विना जे किरिया कीधी दंजी उषुं धगला
 हो राज ॥ २८ ॥ ते माटे मंत्री तुमें, शील कुशील
 नुं कारण कोइ इहां मत गणजो हो राज ॥ पांचे
 कारण जब मिले, जवितव्यताने जोगें शुनाशुज तव
 जणजो हो राज ॥ २९ ॥ एहवो उत्तर मंत्रीने, मद
 नवेगें दीधो चोखो हाथमें लाडु हो राज ॥ बली

कहे सांजल मंत्रवी, तुज करणी विगतावी ताह्रा का
न उघाडुं हो राज ॥ ३० ॥ लब्धें बीजा उल्लास
मां, मंत्रीने समजाव्यो जलि परें पांचमी ढालें हो
राज ॥ हवे सुणजो नवियण तुमें, आगल शी शी वा
त निपजे ते उजमालें हो राज ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे मंत्री हुं ताह्रां, जाणुं सयल चरित्र ॥ पा
पड खाई पदमशी, तुं थयो महोटी पवित्र ॥ १ ॥
पट्टा खाउं अम तणा, व्यो वलि लोकां लांच ॥ ले
वा देवा मापलां, राखो कूडां साच ॥ २ ॥ कूड कप
ट हृदयें धरी, बोलो मीठा बोल ॥ धोले दिन धूतो
घणुं, राखी कूडां तोल ॥ ३ ॥ परनिंदा करता फरो,
पारकुं ताको बिड ॥ साची जूठी करो घणी, काढो
जुना कुड ॥ ४ ॥ अम उपरालें लोकने, यो लेखणनो
मार ॥ वेरें वींटा परजने, देवो दुःख अपार ॥ ५ ॥
अमें उंसरीयें पापथी, तुमें न उंसरो कोय ॥ मरण
वीक राखो नही, ठाती दृषद जुं होय ॥ ६ ॥ पर
उपदेश देवा घणुं, माहापण राखो ठीक ॥ आप न जा
ये सासरे, दिये परायां शीख ॥ ७ ॥ निज अवगुण
जोवो नही, पर अवगुण तुम लेय ॥ पापनी बांधी

गाँठड़ी, हीमो शीश धरेय ॥ ७ ॥ चंदन नार गर्दन
 शिरें, जाणो लोके दीध ॥ नारोछात्र गर्दन थयो, प
 ए चंदन स्वाद न लीध ॥ ८ ॥ तिम मंत्री तुं जाण
 जे, तुज्जमां एह सजाव ॥ मुज्जवपगार जाण्यो नहों,
 गर्दन सम थयो ठाव ॥ ९ ॥ एह वचन महिपति
 तणां, सांजलि चमक्यो चित्त ॥ मनमां बीनो मंत्र
 बी, राजा केहना मित्त ॥ १० ॥ हित शीखामण दे
 यतां, साहामुं देवे दोष ॥ गोलो गर्दजने हणी, गाम
 छुं राखे रोष ॥ ११ ॥ महिपतिनुं मनं उजखी, बो
 ल्यो मंत्रि तिवार ॥ हा स्वामी तुमें जे कही, मानुं ते
 निरधार ॥ १२ ॥ राजा के परमेसरु, जे बोले ते स
 त्त ॥ एहमें जूठ न संपजे, दोमें ठे दैवत्त ॥ १३ ॥
 मुखयी साकर घालीने, नृपने कखो प्रसन्न ॥ महिपति
 यें पण मंत्रीने, सनमान्यो सुवचन्न ॥ १४ ॥ सिरपा
 व देइ बोलावियो, मंत्रीने निज ठाय ॥ राज काज
 छुन चालवे, मदनवेग तिहां राय ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल ठछी ॥

॥ काविलरो पाणी लागणो, काविल मत चाले ॥
 अथवा, धन मेतारज मुनिवरु ॥ ए देशी ॥ एक दिन
 वेगो मालीये, नृप मदन वेग ॥ वसंतसिरी चित्त

सांजरी, तस ययो उदवेग ॥ १ ॥ धिग धिग काम विट
 बना, मोहें जोवन जागे ॥ ए आंकणी ॥ मोहनी डर्जय
 जीततां, घणुं दोहेलुं लागे ॥ २ ॥ धि० ॥ तिण अवसरें
 एक मेहेतलो, कालसेन ते नामें ॥ नृपने नमि अति
 ठूकडो, वेगो अनिराम ॥ ३ ॥ धि० ॥ मननो मेलो
 मायावियो, मद नखो कंठ सूधी ॥ पण ते सर्प तणी
 परें, माहा डुष्ट कुबुद्धि ॥ ४ ॥ धि० ॥ नगद आसा
 मी ठे घणुं, जाणे जठरनो मेल ॥ चाडी चुंगली क
 री घणी, काढे लोकनां तेल ॥ ५ ॥ धि० ॥ एहवो कु
 बुद्धि मंत्रीसरु, पेगो नृपने कानें ॥ हरिबल केरी वा
 रता, मांमी एक तानें ॥ ६ ॥ धि० ॥ हरिबल कीर्ति
 विस्तरी, नगरी जन मांहे ॥ ते सांजली मन मेंतलो,
 रीशें बळे तांहे ॥ ७ ॥ धि० ॥ अवसर लेइ कालसेन
 ते, नृपकान नंजेखो ॥ डर्जन मुख वाणें करी, नृपनुं
 दिल फेखो ॥ ८ ॥ धि० ॥ लटपट नृप आगें करे, पा
 पी परपंच ॥ हरिबलने उभापवा, मांमयो सूधो स
 च ॥ ९ ॥ धि० ॥ स्वामी शुं जाणो अगो, हरिबलनी
 वातो ॥ नगरजन सहु वश करी, करशे तुम घातो ॥
 ॥ १० ॥ धि० ॥ ठत्रीश राजकुली करे, हरिबलनी
 सेवा ॥ कूडो रचे ठे एक मली, तुमचो राज लेवा ॥

॥ ११ ॥ धि० ॥ चेतहुं होय तो चेतजो, घाट घडी
 थो ठे कणो ॥ परें कहेसो जे कहुं नही, मुणने ते
 कृणें ॥ १२ ॥ धि० ॥ परदेसी अणजाणने, तुमो
 दोत बंधावी ॥ ते किम होये आपणा, सुणो नृपति
 ठायी ॥ १३ ॥ धि० ॥ वसंतसिरी अप्सर समी, हरि
 बलनी ठे लाडी ॥ निज हाथें प्रभुयें घडी, कामिज
 ननी ए वाडी ॥ १४ ॥ धि० ॥ ए स्त्री जेणें दीठी न
 हीं, तस जनम अलेखे ॥ ये हाथे प्रभु पूजीया, ते
 स्त्रीने ए देखे ॥ १५ ॥ धि० ॥ धन्य दिवस धन्य ते
 घडी, धन्य वेला तेह ॥ एहवी स्त्री जेने घरे, तस
 पुण्य विशेष ॥ १६ ॥ धि० ॥ इणि परें हरिवलनी
 करी, चुगली ठल ताकी ॥ मेहेतले छष्ट कुबुद्धियें,
 कांइ बाकी न राखी ॥ १७ ॥ धि० ॥ महिपतियें तें
 सांजली, चमक्यो चित्तमांहे ॥ पगथी मांमी माथा
 जगें, नृप परजल्यो दाहें ॥ १८ ॥ धि० ॥ आगें वेरी
 कर चढयो, बली करयकी तूटो ॥ आगें जुहारीने
 बली, मल्यो साथी जूठो ॥ १९ ॥ धि० ॥ आगें सर्प
 ठंठेडिने, कस्यो पुंठथी वांमो ॥ आगें अग्नि जालमां,
 सिंच्यो घृत मांमो ॥ २० ॥ धि० ॥ तिम नृप हरिवल
 ऊपरें, घणुं रोपें नराणो ॥ रे मंत्री हरिवल हणी;

तस स्त्री घर आणो ॥ ३१ ॥ धि० ॥ तव मंत्री का
 लसेन ते, कहे नृपने वाणी ॥ स्वामी हरिवलने ह
 ऐ, जनमां जाय पाणी ॥ ३२ ॥ धि० ॥ पण एक
 स्वामी उपाय ठे, तुम बुद्धि वतावुं ॥ हरिवलने तुमें
 मोकलो, लंका गढ ठावुं ॥ ३३ ॥ धि० ॥ जलनिधिमें
 जातां थकां, वहेरो एह वोलें ॥ तव नारी तुम मं
 दिरें, आवरो रंगरोलें ॥ ३४ ॥ धि० ॥ ठाकर चाक
 रनी इहां, साची खबर ते पडरो ॥ तुम आणा ते
 शिर धरी, लंका गढ चडरो ॥ ३५ ॥ धि० ॥ ते माटे
 तेडी तुमें, हरिवलने पूठो ॥ एम कही घरे मेंहेंतलो,
 गयो घाली वूठो ॥ ३६ ॥ धि० ॥ लब्धें बीजा उद्धा
 सनी, कही ठछी ढाल ॥ आगल जवि तुमें सांजलो,
 मीठी वात रसाल ॥ ३७ ॥ धि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें नृप मंत्रीसरु, एक मतो करि दोय ॥
 महिपति पहोतो महेजमां, मंत्री गयो घर सोय ॥ १ ॥
 बीजे दिन रवि जगियो, प्रगट्यो राग विजास ॥ शकु
 नियें बांह पसारीयां, कैरव कीध विकास ॥ २ ॥ वा
 ठरुआं बलगां जई, धावाने हर्षेण ॥ दोवा वेसे जा
 मिनी, जेहने ठे घर धेण ॥ ३ ॥ देवल सवले वा

जियां, जालरना जणकार ॥ तास शब्द सुणतां थकां,
 रजनी नावि तिवार ॥ ४ ॥ सुखन बोधी जीवडा, मांमे
 निज खटकर्म ॥ साधूजन मुख मोमती, वांधी हे जि
 नधर्म ॥ ५ ॥ मंगल वाजां वाजियां, वाज्यां गुहिर नि
 शाण ॥ ए करणी परजातनी, जव कगे शुन नाण ॥ ६ ॥
 मदनवेग नृप तिण समे, परखद मेली एकत्र ॥ वेठो
 सिंहासन हसी, माथे धरावी ठत्र ॥ ७ ॥ खटत्रीस
 राजकुली मली, वढवडा सोहे सामंत ॥ शेठ सेना
 पति मंत्रवी, परखद मेलि अत्यंत ॥ ८ ॥ हरिवल
 पण मंत्रीसरु, वेठो नृपनी पास ॥ विरुदावलि नृप
 जन तणी, कविजन बोले उद्वांस ॥ ९ ॥ रंग विनो
 दनी वारता, परखदमें करे सार ॥ तिण अक्सर नृप
 बोलियो, मदनवेग तिणि वार ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ कुंमखडानी देशी ॥ सजा समर्हे नृप कहे रे,
 सांजजो सामंत ॥ सनेहा सांजजो ॥ माहरे काम
 अठे घणुं रे, अप्यवसाय अत्यंत ॥ स० ॥ १ ॥ वैशाख
 शुदि पांचम दिनें रे, लीधुं ठे लग्न विशेष ॥ स० ॥ अंग
 जने परणाववा रे, मांमयो विवाद् विशेष ॥ स० ॥ २ ॥
 उम्मेर मध्ये तुम तणुं रे, काम पडणुं ठे थाज ॥ स० ॥

॥ स्वामी नक्ता जे हुवो रे, ते सारो मुज काज ॥
 स० ॥ ३ ॥ लंका गढ जावुं अबे रे, कहो ते जागो
 कोण ॥ स० ॥ बीडुं ठवो ए माहरुं रे, जे खाता होय जूण
 ॥ स० ॥ ४ ॥ लंकापतिने नोतरी रे, तेडी आवे
 जेह ॥ स० ॥ माहरी रीजें पामरो रे, लाख वधामणी
 तेह ॥ स० ॥ ५ ॥ राय विजीपण तेहगुं रे, माहरे ठे
 बहु नेह ॥ स० ॥ शीघ्र जई लगन दिनें रे, तेडी
 आवो गेह ॥ स० ॥ ६ ॥ जो ममता माहरी करो रे,
 तो मत करजो ढील ॥ स० ॥ शीघ्र अइ बीडुं ग्रही
 रे, पंथें वहो मेली ढील ॥ स० ॥ ७ ॥ इणि परें महिपति
 यें कह्युं रे, सजा समद्व वचन ॥ स० ॥ पण बीडुं
 ग्रहवा नणी रे, कोइ न दीये तन्न ॥ स० ॥ ८ ॥ स
 री मटा मटिनी परें रे, मौन करी रह्या सर्व ॥ स०
 मरण तणी वीकें करी रे, मूक्यो सघने गर्व ॥ स०
 ॥ ९ ॥ अधोदृष्टि करी रही रे, सवली परखदा सो
 य ॥ स० ॥ उंची दृष्टें नवि जुवे रे, लज्जाणा सहु
 कोय ॥ स० ॥ १० ॥ तव कर जोडी मंत्री कहे रे,
 कालसेन ते छुट ॥ स० ॥ स्वामीयें जे कही वारता
 रे, सांजनी दुआ संतुष्ट ॥ स० ॥ ११ ॥ पण विपम
 पंथ आकरो रे, जलधिमें केम जवाय ॥ स० ॥ पग

बटें सिद्ध न संपजें रे, भुजायी न तराय ॥ स० ॥
 १३ ॥ गज पाखर जंबुकशिरें रे, नाखी तुमें राजान
 ॥ स० ॥ ते किम तिणयी कंधरा रे, उंची थावा निदान
 ॥ स० ॥ १३ ॥ मतकोटनी कटि उपरें रे, मूकी
 गोलनी गुण ॥ स० ॥ गात्र विना केम उपडे रे, जे
 करे गजा विदूण ॥ स० ॥ १४ ॥ तिम स्वामी लंका
 गढें रे, शक्ति विना कुण जाय ॥ स० ॥ पूरो पराक्र
 मी जे होवे रे, ते जावा अंगमाय ॥ स० ॥ १५ ॥
 के वहे लंका देवता रे, के विद्याधर होय ॥ स० ॥
 के तपसी साधु जना रे, तो तरे जलनिधि तोय ॥ स०
 ॥ १६ ॥ बीजानो शो आशरो रे, जलनिधिनो लहे ताग
 ॥ स० ॥ दशरथसुत एक सांजल्यो रे, जलधियें वां
 धी पाग ॥ स० ॥ १७ ॥ केवली हरिवलने सुण्यो रे,
 जे वेतो तुम पास ॥ स० ॥ जावे ए लंका गढें रे,
 बीहुं ठवीने उध्वास ॥ स० ॥ १८ ॥ सबल पुरुष ए
 जाणियें रे, एहमां ठे जगदीश ॥ स० ॥ काज तुमा
 रुं सारजो रे, पूरजो मननी जगीश ॥ स० ॥ १९ ॥
 इणि परें कुमति मंत्रियें रे, नृपने विनति कीध ॥
 ॥ स० ॥ सुनट शिरोमणि इण समे रे, दीसे हरिवल
 सिद्ध ॥ स० ॥ २० ॥ ते निसुणी नृप तिण वेला रे,

हरिवलने कहे राय ॥ स० ॥ शीघ्र थई वीडुं ग्रहो
 रे, जिम मुऊ वंठित थाय ॥ स० ॥ ११ ॥ राय बि
 जीपणने जई रे, तेडि आवजो आंहि ॥ स० ॥ मान
 शुं मुजरौ तुम तणो रे, जीवित सूधी उठाहि ॥ स० ॥
 ॥ १२ ॥ तव हरिवल श्रवणें सुणी रे, मनशुं विमा
 से आजें ॥ स० ॥ जो नाकारो इहां करुं रे, तो नर
 हे मुऊ लाज ॥ स० ॥ १३ ॥ लाजें कप्पड पहेरीयें
 रे, लाजें दीजें दान ॥ स० ॥ लाजें पंचमें वेसीयें
 रे, लाजें बाधे मान ॥ स० ॥ १४ ॥ लाजें गढ कोट
 लीजियें रे, लाजें राखीयें सत्त ॥ स० ॥ लाज वधी
 मुऊ चिहुं जगें रे, किम कहुं ना हवे ऊत्त ॥ स० ॥
 ॥ १५ ॥ इणपरें मनमां सोचीने रे, बोव्यो हरिवल
 ताम ॥ स० ॥ लाबुं जइ लंकाधणी रे, तो हुं खरो
 मुऊ स्वाम ॥ स० ॥ १६ ॥ मेजवुं तुम लंकापति रे,
 तो मुऊ देजो शावाम ॥ स० ॥ एम कही वीडुं ग्रही
 रे, हरिवल आव्यो आवाम ॥ स० ॥ १७ ॥ यइ नि
 जपति मुख देखिने रे, वसंतसिरी उजमाल ॥ स० ॥
 बीजा उजासनी ए कही रे, लवियें सातमी दाल १७
 ॥ दोहा ॥

॥ हरिवल कहे निज नागीने, सांजज प्यारी मुऊ ॥

जावुं ने लंका जली, मावुं आया नुक ॥ १ ॥ विर
 पित करी रहेजो तुमें, देजो दान सुपात्र ॥ बीज सुरं
 गुं पालीने, करजो निर्मल गात्र ॥ २ ॥ धरजो ध्यान नव
 पद तणुं, चउद पूरवतुं सार ॥ समझा जिम सांनिध
 करे, थापे शिवसुखकार ॥ ३ ॥ सेवजो गुरु देव एक
 मनै, जेणे वधारी शर्म ॥ कीडीपी कुंजर कछा, उंज
 खावी जिनधर्म ॥ ४ ॥ प्रीतम चचन ते सांजजी, व
 संतसिरी कहे एम ॥ शे कारण जावुं पड़े, ते कहो
 जावुं जेम ॥ ५ ॥ तव मांमी हकिगत कही, प्यारी था
 गल तेह ॥ तिण कारण जावुं पड़े, सांजज तुं ससनेह
 ॥ ६ ॥ पियुनुं गमन तेसांजली, कुमरी यइ दिलगीर ॥ जाणे
 नाइव मेह ज्युं, वरसे आंसु नीर ॥ ७ ॥ कालजेको घाली
 वहो, प्रीतम तुम निसनेह ॥ निशि दिन विरहें तुम
 बिना, बले सुरंगी देह ॥ ८ ॥ सघलुं दुःख खमीयें प्रछु,
 पण विरहो न स्वमाय ॥ विरहानलनी बाफ जे, पियुं
 विण केम उंलाय ॥ ९ ॥ तेमाटे प्रीतम तुमें, मत
 जाउ परदेश ॥ मन किम वहरो मूकतां, मुऊने बाजे
 वेश ॥ १० ॥ नृपनुं कारज पियु तुमें, महोदुं लाव्या
 विंग ॥ लंकापतिनो जाणज्यो, जिहां गयां उंटनां शिंग

॥ ११ ॥ जो प्रितम चालो तुमें, तो मुऊ तेडो संग ॥ टेह
ल करेशुं तुम तणी, जोशुं लंका रंग ॥ ११ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥ तव प्रीतम कहे
सांजल प्यारी, मुऊ तुं ठे मोहनगारी रे ॥ सुंदरी स
सनेही ॥ तुऊ मुख देखि हुं सुख पाउं, तुऊ निशि दि
न चितमें ध्याउं रे ॥ १ ॥ सुं० ॥ प्राणथकी ठे तुं
मुऊ वाहाली, जिम चंडने रोहणी वाहाली रे ॥ सुं० ॥
तुं मुऊ चित्रावेल समानी, तुं मुऊ बुद्धि निधानी रे
॥ २ ॥ सुं० ॥ जव थइ ते प्रभुनी महेरवानी, प्री
तडी तुऊशुं ठानी रे ॥ सुं० ॥ लेख लिखित थयो
तुऊशुं मेलो, थयो संबंध पुण्ये जेलो रे ॥ ३ ॥ सुं० ॥
अहोनिश लालच रहे तुऊ केरी, घणुं घणुं करि कहुं
शुं फेरी रे ॥ सुं० ॥ तुऊने मुकतां मन नथी कहेतो,
पंथें चालतां पग नथी वहेतो रे ॥ ४ ॥ सुं० ॥ पण
शुं करीयें नृपनी सेवा, करवी पडे पेटनी हेवा रे
॥ सुं० ॥ जो नृपनुं कह्युं नवि करियें, तो नृपनो
जश किम वरियें रे ॥ ५ ॥ सुं० ॥ जेहना घरनो को
लियो खावो, तस घरनो धोलो बंधावो रे ॥ सुं० ॥
ए संसारमें रीति ठे सघले, काम कीधे जस वधे स

बसे रे ॥ ६ ॥ सुं० ॥ ते माटे तुं सुंदरी मोरी, मुने
 खाणा दे हवे तोरी रे ॥ सुं० ॥ शीघ्रगतें जई था
 विश बहेलो, नृपतुं लगन ते पहेलो रे ॥ ७ ॥ सुं० ॥
 तव रमणी कहे सांजल प्यारा, तुम हेज जताना
 क्यारा रे ॥ प्रीतम ससनेही ॥ मुज वखतें तुमे सुरप
 ति सरिखा, मळ्या ठो पुण्ये आकर्षा रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥
 जगती जोतां प्रभु तुमें जडिया, सुरमणि सम मुज
 कर चडिया रे ॥ प्री० ॥ सुकृतवद्धि फली सुखदा
 यी, थइ तुमथी साची सगाई रे ॥ ९ ॥ प्री० ॥ में तु
 महुं जे पालव बांध्यो, जीवित सुधी नेहलो सांध्यो
 रे ॥ प्री० ॥ हवे मुज प्रेम पयोधिमें नाखी, केम जा
 उ ठेहलो दाखी रे ॥ १० ॥ प्री० ॥ बसी मुज हृदये
 थया परदेशी, तन मनना सोदागर वेशी रे ॥ प्री० ॥
 नाखी मुजने प्रेमनी फांसी, वेठा चालवा मूकी निरा
 शी रे ॥ ११ ॥ प्री० ॥ मुज सरिखी नारी कां मूको,
 नृप मंत्रीने वयणें कां चूको रे ॥ प्री० ॥ एहवो कृण
 मूरख ठे जांजी, जे पय मूकी पीये कांजी रे ॥ १२ ॥
 प्री० ॥ ते उखाणो प्रभु तुमें मेळ्यो, पठे बीजानो थ
 विहेलो रे ॥ प्री० ॥ में तुमने कहि थागें चितारो,
 नृप जमतां वात संजारो रे ॥ १३ ॥ प्री० ॥ ते फल

उग्यां तुमारां वाव्यां, निज करनां घड्यां ह्मए जाव्यां
 रे ॥ प्री० ॥ ते कारण लंकार्यें जावुं, नृपें कीधुं चूक
 ते चावुं रे ॥ १४ ॥ प्री० ॥ दुर्जन नृप मंत्री पड्यो
 केडें, पण कोइक दिन ते वेडे रे ॥ प्री० ॥ सांजलो
 प्रीतम हुं तुम जांखुं, नीतिशास्त्रमें जे कछुं दाखुं रे ॥
 १५ ॥ प्री० ॥ एतां सूनां कदीय न मूके, जे माह्या
 ते नवि चूके रे ॥ प्री० ॥ स्त्री धन पुत्र जे राज सुहर्म,
 सूनां मूक्यां ए न रहे शर्म रे ॥ १६ ॥ प्री० ॥ ते मा
 टे तुमें सांजलो स्वामी, तुम वीनवुं अंतरजामी रे
 ॥ प्री० ॥ बहुश्रुतने करी वचनें वहीजें, दुर्जनथी
 दूर रहाजें रे ॥ १७ ॥ प्री० ॥ निज नारीने साथें
 लीजें, पीयु प्रेम सुधारस पीजें रे ॥ प्री० ॥ कामिनी
 जाणे कंथ विदूणी, जेम दीमे जांगी दूणी रे ॥ १८ ॥
 प्री० ॥ कंत विना नारी नवि शोजे, पग पग लहे दो
 प ते ठोजे रे ॥ प्री० ॥ कंथ विना स्त्री दीन समान,
 जिहां जाय त्यां न लहे मान रे ॥ १९ ॥ प्री० ॥
 पियु विण स्त्रीने मंदिर मांहे, वडी जंप वले नहिं
 क्यांहे रे ॥ प्री० ॥ पियु विण पहरेवा जे शणगारा,
 ते तो लागे जाणे अंगारा रे ॥ २० ॥ प्री० ॥ पियु
 डा विण ते मुखनी नेज, जाणे लागे कौव्यच रेज

रे ॥ प्री० ॥ केइ लाख लाख मंदिर जन नरिया, केइ
 कौडि सखि परवरीया रे ॥ २१ ॥ प्री० ॥ पण ते प्रि
 य विण न लागे नीका, जिम घृत विण नोजन फी
 कां रे ॥ प्री० ॥ धन्य ते नारीनो अवतार, जस मं
 दिर रहे नरतार रे ॥ २२ ॥ प्री० ॥ ज्ञा अवगुण तु
 में मुजमें दीठा, विण खुनें बहो थइ धीठा रे ॥ प्री० ॥
 तुमथी तिरिपंच पंखी रुडां, दूरें न रहे स्त्रीथकी खडा
 रे ॥ २३ ॥ प्री० ॥ चार पहोरनो रह्यो जो अंतर, तो
 फूरे खग निरंतर रे ॥ प्री० ॥ तो केम तुमें निसनेही
 थावो, निज स्त्री विण लंका जावो रे ॥ २४ ॥ प्री० ॥
 के शुं माहरो मोह उतारी, नौतन कोइ नारी संजारी
 रे ॥ प्री० ॥ के शुं लंका मसलुं काढी, जाउं परणवा
 दूजी लाढी रे ॥ २५ ॥ प्री० ॥ तुम चित्तनी पियु कं
 ल नवि सृजे, ए तो केवली विण कुण बूजे रे ॥ प्री० ॥
 तो हवे तुमने वेगला न मूकुं, निज स्वामीनी सेवा न
 चूकुं रे ॥ २६ ॥ प्री० ॥ जो मुजने साथें नवि तेडो,
 पण हुं किम मेलिश केडो रे ॥ प्री० ॥ कायानी ठाया
 पेरें चलगी, केम रही शकुं तुमथी अलगी रे ॥ २७
 ॥ प्री० ॥ एणी पेरें नारी प्रेम विलुधी, करी विनति

पियुने सूधी रे ॥ प्री० ॥ बीजा उद्धासनी आठमी दा
लें, कही लब्धि रंग रसालें रे ॥ प्री० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिवल कहे नारीने, सांजल तुं गुण गेह ॥
प्राणजीवन मुज तुं अठे, हुं केम देश ठेह ॥ १ ॥ पाल
व बांधी ताहरो, डर्मन केम थवाय ॥ राखुं जो वहे
रो तुज्यकी, तो मुज प्रभु डहवाय ॥ २ ॥ ते किम
हुं करुं सुंदरी, तुज्यी दिल बदलाय ॥ देखी पेखी म
द्विका, जीवति केम गलाय ॥ ३ ॥ पण कोय दैवना
योग्यी, पूरव नव मेलाप ॥ अणचिंतित जो स्त्री
मले, तो तस करवुं माफ ॥ ४ ॥ तुज्यी उपर वट थइ,
नवि नांगुं तुज आण ॥ ठेह न दाखुं तुज नणी, जगे
पन्निम जाण ॥ ५ ॥ साथें तुजने तेडतां, नथी पूरव तुं
गुज ॥ स्त्री ते पग बंधण अठे, पंथें हुं कहुं तुज ॥ ६ ॥
मत जाणे तुं मन्नमें, प्रीतम देशे ठेह ॥ एकज मास
ने अंतरे, आविश हुं ससनेह ॥ ७ ॥ ते माटे थिर चित्त
करी, रहेजो थइ सावधान ॥ दान सुपात्रें पोखजो, धर
जो अरिहंत ध्यान ॥ ८ ॥ शीख नलामण इणि पेरें,
वसंतसिरीने दीध ॥ लंका गढ जावा नणी, हरिवल
सुदूरत लीध ॥ ९ ॥ चैत्र शुदि एकम दिनें, शुन

कारी नृगुवार ॥ रमणीने राजी करी, हरिवल चा
 ले तिवार ॥ १० ॥ तव कुमरी कहे कंथने, वरसति
 आंसु धार ॥ पियुजी पूरण प्रीतडी, मत मूको
 विसार ॥ ११ ॥ मंदिर एकलां नवि गमे, सूतां सूनी
 सेज ॥ अचधी उपर आवशो, तो जाणवुं तुम हेज ॥
 ॥ १२ ॥ प्राणवधन नहि वीसरो, अथ घडी आत
 मराम ॥ शीघ्रगते तुम आवजो, करीने रूडां काम
 ॥ १३ ॥ प्रीतमजी तुमें सिद्ध करो, बड जुं विस्तर
 जोह ॥ वंवर केरां वृद्ध जुं, थडथी तुमें फलजोह ॥
 १४ ॥ इस आशिष ते देसने, बोलाव्यो जरतार ॥ हरि
 वल पण शिख मांगवा, पहातो नृप दरवार ॥ १५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥ नृपने
 जइ प्रणिपत कीधी रे, सहु साथनी आगना लीधी रे
 ॥ हवे हरिवल लंकायें चाले रे, नृप जन बहु बोलावा
 हाले रे ॥ १ ॥ शकुने पण बांदिज दीधी रे, लीधी वाट लं
 कानी सीधी रे ॥ घणी नूयें बोलावी बलिया रे, नृप
 मंत्री दो हर्षे जलिया रे ॥ २ ॥ पय मंजारी देखी जुं
 हरखे रे, तिम महीपति मनमें वरजो रे ॥ जाणे नृ
 प चिंतवुं थाजो रे, मुळ वसंतसिरी घेर आजो रे ॥

३ ॥ जे कहेजो ते विध करशुं रे, मनवंछित सुख ते
 वरशुं रे ॥ एम चिंतवी नृप घरे आवे रे, निज मन
 शुं बुझि उपावे रे ॥ ४ ॥ मन गमता मीठा मेवा रे,
 जेह खाता लागे हेवा रे ॥ ५ ॥ डारख रायण आंवा केलां
 रे, दीठां दाढ गले तिण वेला रे ॥ ५ ॥ वेअ वदाम नि
 मजां पिस्तां रे, सुख देतां न लागे सस्तां रे ॥ इत्यादि
 क मेवा वारु रे, मेले वसंतसिरीनी सारु रे ॥ ६ ॥ करे
 मिशरीना पकवान्नरे, वेठा जोग लिये जगवान रे ॥
 दूध पेंडाने घृत पूर रे, चढे खातां दांते शूर रे ॥ ७ ॥
 सिंह केसरीया ने जलेवी रे, खातां नूर वधे ते सतेवी रे ॥
 एम सुखडी मेली ताजी रे, जिम वसंतसिरी होवे रा
 जी रे ॥ ८ ॥ चुवा चंदन अरगजा ताजां रे, सुखमू
 लां अंतर जाजां रे ॥ ९ ॥ सुगंध ड्य अणायां रे, श
 तपाक ते तेल वणायां रे ॥ १० ॥ तिल मात्र जो व
 खें लगावे रे, चिहुं दिशि परिमल पसरवे रे ॥
 जाणे सुगंधपुरी वसाई रे, जोगी जनने सुख दाई रे
 ॥ १० ॥ एणी पेरें सुगंधी चूवा रे, सींसा जरिया
 नव नवा जूवा रे ॥ नृप जाणे कुमरी रीजे रे, मुक्त
 कारज शीघ्र ते सीजे रे ॥ ११ ॥ बहु नारे चीर अ
 णावे रे, जरतारी शालु मगावे रे ॥ कसवी मशरु एक

तारी रे, पंचरंगी मसजर जारी रे ॥ १३ ॥ हेम ग्यण
 में घाट सुघाट रे, मेले आनूपणना थाट रे ॥ रम
 णीना जे गुंगारा रे, नृप मेले ते श्रीकारा रे ॥ १३ ॥
 एणी पेरे सामग्री मेली रे, नरी ठावमें सघली नेली
 रे ॥ ते उपर उठाड ढांकी रे, करी मुझ को न जाय
 जांखी रे ॥ १४ ॥ हवे दासी जे चतुरा माही रे,
 कामी जनने मूके जे वाही रे ॥ तेहने तेडी नृप नां
 खे रे, निज चित्तनी वारता दाखे रे ॥ १५ ॥ तुमें
 जावो हरिबल गेहें रे, जिहां वसंतसिरी ठे नेहें रे ॥
 जइने तुमें ठाव ए सूपो रे, कहेजो नृपें मूकी ए चूपो
 रे ॥ १६ ॥ सुजलित बचनें करी कहेजो रे, तेहनुं म
 न वश करी लेजो रे ॥ घणी शी रे जनामण दीजें रे,
 तस अमृतफलरस लीजें रे ॥ १७ ॥ ते बात बधाम
 णी बहेली रे, लेई आवजो दी ठतां पहेली रे ॥ एम
 शीख जनामण दीधी रे, दोय दासीने विदाय कीधी
 रे ॥ १८ ॥ दासी पण ठाव ने लेई रे, पहोती हरिब
 ल घेरें वेई रे ॥ जिहां बेठी हरिबल नारी रे, मूकी ठा
 व ते आगल सारी रे ॥ १९ ॥ कहे दासी मधुरी
 वाणी रे, नृप मूकी ए तुमने जाणी रे ॥ तुम उपर
 ठे घणो नेह रे, घणुं शुं कहियें गुणगेह रे ॥ २० ॥

जिण दिनथी तुम घेर आवा रे, तिण दिनथी तुमें
 दिल नावा रे ॥ जलां नोजन जव तुमें प्रीस्यां रे,
 तिण वेलाथी नृप दिल हींस्यां रे ॥ ११ ॥ देखी तु
 मची सुघडा रे, नृप चाहे तुमने सदा रे ॥ ए कला
 लच रहे तुम केरी रे, जिम लोनीने नाणा केरी रे ॥
 १२ ॥ तुम विरहें करी नृप जूरे रे, राज काज ते मू
 क्यां दूरें रे ॥ जेम योगी प्रभुने ध्यावे रे, तेम नृप
 तुम नाम जपावे रे ॥ १३ ॥ इम राखे एकंगी तुम
 गुं रे, मन मेल करो तुमें नृपगुं रे ॥ सरिखा सरि
 खो मव्यो जोडो रे, नृपगुं तुमें तान म तोडो रे ॥
 १४ ॥ बाइ तुम मोहोटी पुण्या रे, नृपगुं अइ प्री
 त सगा रे ॥ ए वात विधातायें मेली रे, जाणे पय
 मां साकर चेली रे ॥ १५ ॥ तुमें जो कहो सारंगनय
 णी रे, नृप आवे तुम घरे रयणी रे ॥ इण वातें जा
 न ठे तुमने रे, राजी करी वोलावो अमनै रे ॥ १६ ॥
 एम दासीनी सांजली वाणी रे, तव कुमरी रोपें जरा
 णी रे ॥ जिम लागे विंढीनो चटको रे, तिम कुमरी
 ने लागे नटको रे ॥ १७ ॥ हवे सुणजो कुमरी व्या
 पे रे, जेर सुखडी दासीने आपे रे ॥ एतो बीजा उ
 द्वासनी ढाल रे, लब्धें कही नवमी रसाल रे ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमरी कोपें करी, दे दासीने मार ॥ निं
 दे तिम जीवित लगें, गडदा पाटु प्रहार ॥ १ ॥ ना
 ठी जीवित लेइने, चतुरा माही जेह ॥ नृप आगल
 आवी कहे, सघली मांमी तेह ॥ २ ॥ नासंत नू
 नारे थइ, केती कहुं माहाराज ॥ लहेणोथी देणे प
 डी, ए फल लखुं तुम काज ॥ ३ ॥ स्वामी तुम प
 रसादथी, जडियो कुंदीपाक ॥ साजी हलदर सेवणुं,
 तव होशे तन चाक ॥ ४ ॥ स्वामी हरिवलनी प्रिया,
 दीठी वडी कुपात्र ॥ जाणे कौअचवेजडी, घर सर
 खी नही यात्र ॥ ५ ॥ ते माटे प्रभुजी सुणो, ए नावे
 तुम हाथ ॥ एहथी मनहुं बाल जो, कर जोडी कहुं
 नाथ ॥ ६ ॥ एह वचन दासी तणां, सांजलि नृप
 बलजाय ॥ हा हा में ए खुं कखुं, इम नृप धोखो क
 राय ॥ ७ ॥ शी मनमें धारी हूती, देवें शी करी वा
 त ॥ नृप कन्या परसादथी, व्याघ्रें द्विज नद्धात ॥ ८ ॥
 जाणुं हतुं वश आवरो, हरिवल केरी नारि ॥ पण
 साहामुं इणि नारियें, उताखुं नृपवारि ॥ ९ ॥ हाणि
 अने हांसी वडू, थइ नृप चिंते एम ॥ एह दुख के
 हने दाखवुं, होतें दाखो जेम ॥ १० ॥ इम नरपति

फूरण करे, सांजलि दासी वेण ॥ ते दिन क्यारें आ
 वशे, देखुं ते स्त्री नेण ॥ ११ ॥ वलि बीजी फरि
 मोकलुं, जेह विचक्षण होय ॥ दृषद सरीखा मान
 वी, निजवी आणे सोय ॥ १२ ॥ तव पटराणी नि
 जप्रिया, प्रीतिमती गुण गेह ॥ तेहने तेडी नृप क
 हे, सांजल तुं ससनेह ॥ १३ ॥ कारज एक तुमशुं
 अढे, सुगुण जही कहुं तुझ ॥ हरिबल केरी जे प्रिया,
 मेलव आणी गुझ ॥ १४ ॥ तव राणी कहे कंतने,
 सांजलजो महिनाथ ॥ प्रीति वधारी पलकमें, जेइ
 सोंपुं तुम हाथ ॥ १५ ॥ एम कही ऊठी तुरत, वीडुं
 ठवि तिण वार ॥ चाली हरिबल मंदिरें, राणी जेइ प
 रिवार ॥ १६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सूरती महिनानी देशी ॥ हवे कुमरी अमरी प
 रें, बेठी महोल मजार ॥ निज सखीयांचुं परवरी,
 करती केलि अपार ॥ तिण अवसर नृपराणी रे, जे
 गुणखाणी रे सार ॥ आवती दीठी रे मीठीयें, वसंत
 सीरीयें तिवार ॥ १ ॥ कुमरीयें जाण्युं जे में हणी, दा
 सीने काढी रे सोथ ॥ क्रोध वशें जे में हणी, तेहनी
 आवी ए जोथ ॥ खीज्यो नृप तव जाणी रे, सूकी ए

राणीने धाय ॥ इम कुमरी मन चिंतवी, लटपट
 मांमथो उपाय ॥ २ ॥ तव कुमरी सनमुख जइ. रा
 णीने जीडी रे साथ ॥ अंगोअंग मलीने रे, चरणे
 नमे सहु साथ ॥ आगत स्वागत राणीनी, कुमरीयें
 कीधी रे जोर ॥ राणीतुं मन रीजवे, वसंतसिरी ति
 ए ठोर ॥ ३ ॥ चंडवदनी दो वेठी रे, वातें एकण था
 न ॥ जाणे स्वर्गथी कतरी, रंजा उरवशी मान ॥ रूप
 अनूपम वेहुनां, हुं करुं केतां वखाण ॥ जाणे कंद
 र्प वाडीयें, प्रगटी पुण्य प्रमाण ॥ ४ ॥ एहवी ए राज
 कुमारी रे, प्यारी दो गुणवंत ॥ सरखा सरखी रे
 जोडी, मलि करी वातडी संत ॥ वसंतसिरी छुन सुं
 दरी, कहे पटराणीने आज ॥ जलें रे पधाखां राणी
 जी, कोडी सुधाखां रे काज ॥ ५ ॥ तुम आवे अममं
 दिर, पावन हुवोजी चंग ॥ अम सरिखुं जे काम हु
 वे, ते कहो जी सुरंग ॥ तव राणी कहे कुमरीने, ठे
 एक तुमशुंजी काम ॥ वहिन करीने थापवा, आवी
 तुं गुणधाम ॥ ६ ॥ एम कहीने रे आपे रे, नवलखो
 नवसरो हार ॥ वली वीजां बहु मूलां, नूपण आपें
 श्रीकार ॥ तव कुमरीयें जाणुं जे, राणीयें मांमथो
 जी पास ॥ जो नवि राखुं तो आगल, होवे महो

ठो विनाश ॥ ७ ॥ नृपनी राणीने डुहवतां, पूखे
 नहि इण ठाम ॥ ते जाणीने कुमरीयें, नूपण रा
 ख्यां जी ताम ॥ मुखनी मिठाशें करी कहे, कुमरी
 राणीने नेह ॥ बहेन करीने थापो, ते अमें जाणुं जी
 तेह ॥ ८ ॥ ते मत जाणजो राणीजी, वसंतसिरी जे
 जोलाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवनें करी मो
 लाय ॥ उगमणी दिशि मूकी जो, ऊगे पङ्क्तिम जाण ॥
 ससिहर जो अग्नि ऊरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥
 पण गुं करीयें राणी जी, अंतें तुमगुंजी काम ॥ नृपने
 जो अमें डुहवीयें, तो वली फेडेजी ठाम ॥ ते जाणी
 अमें राखीयें, राणीजी तुमगुं प्यार ॥ आजथी रा
 खीयें तुमगुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक
 सांनजो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत
 लीधुं ठे सुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप ठे एक
 मासनुं, ते जव पूरूं रे आय ॥ तव नरपतिनी राणी
 जी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम सत्य राखवा
 कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो रा
 खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित अइ राणी
 ए, सांनली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुज आव्या
 नो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही

कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अशन वसन करी
 रीऊवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृ
 पने, शीघ्र बधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृ
 प तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें,
 मांमधुं महोटे मंमाण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुम
 री मलशे सुजाण ॥ तिहां लगे नाथजी वेठा, प्रभुनुं
 नजन करेय ॥ निश्चें मलशे कुमरी, जीवने धैर्य धरे
 य ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांनली, वाणी नृप ह
 रखंत ॥ नाग्य दिशा मुऊ जागी, नांगी नावठ प्रां
 त ॥ नृपना मनमें गंग, तरंग ज्युं चलव्यो रंग ॥ जा
 एो माणवुं मासने, अंतरे कुमरीवुं चंग ॥ १५ ॥
 सागर पळ्योपमनां जे, कहां महोटां रे थाय ॥ ते
 सरखा पण जीवने, जोगवतां बढी जाय ॥ तो वुं
 इणमें मासनुं, जावुं केतिक वार ॥ आजने काल क
 रंतां, बहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा
 वासमें, मदनवेग वल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थ
 इ, ज्युं मद पीध विलास ॥ आशायें जीव जीवाडवा,
 जीव रुले संसार ॥ पण चवळख जोजन लगे, नर
 बहे आशा मजार ॥ १७ ॥ आशा अंबर जेवढी, क
 हे डुनियां सहु कोय ॥ आशायें इमां अनल तणां,

ते पण वृद्ध होय ॥ तिम ए नरपति आशामें, ठू
 ले दिन ने रात ॥ वसंतसिरीतुं ध्यान, धरे ते उठी
 प्रजात ॥ १७ ॥ आंगुलीना वेढा गणे, निशिदिन
 मासना दीह ॥ आशा पासमें विचरे, नरपति जेह
 अवीह ॥ प्रीतिमती पट्टराणीयें, प्रीति वधारी रे जे
 ह ॥ नृपती रे मननी डुविधा, दूर विदारी तेह ॥ १८ ॥
 नृप राणी दो रंग, विनोदमें काढे रे दीह ॥ राजनां का
 ज सधारे, मदनवेग ते सिंध ॥ वसंतसिरी पण पोता
 ने, मंदिरे करे गहगाट ॥ निज सखीयां गुं परवरी, नि
 जपतिनी जोइ बाट ॥ १९ ॥ हवे सुण जो नवियण तु
 में, जे धई आगज वान ॥ हग्विज चाव्यो लंकायें,
 ते सुणजो अवदान ॥ बीजा उद्धामनी पनणी, पूरण
 दसमी ठाज ॥ जाम्बवतणे अनुमानें, लब्धि कही
 उज्जमान ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृप आणा जेडे, हग्विज चाव्यो लंक ॥ वि
 षम पंच जे आकरो, ते कापे निजंक ॥ १ ॥ निगि
 वर महोटां वाटां, विकटां वाटां जेह ॥ मानवनां नि
 जो पण नदी, ते पण चतरे तेह ॥ २ ॥ लंकी गहरी
 वनतणी, विहुं दिनि वंजनि जाज ॥ गहवाट जे

वनलता, तिणमें बहे अजमाल ॥ ३ ॥ नाथ सिंहने
 चीतरा, अजगर महोटा व्याल ॥ अष्टापद बलि गज
 घटा, देता मृग अरि फाल ॥ ४ ॥ नूत प्रेतने व्यंतरा,
 जोटिंग मोहोटा खवीस ॥ हरिवलने ठगवा जणी,
 पाडे महोटी चीस ॥ ५ ॥ पण ते मन वीये नही, ठा
 ती बज्रसमान ॥ लोह पंजर सम चालतो, धरतो
 अरिहंत ध्यान ॥ ६ ॥ सूपडकन्ना हयमुहा, बलि
 इकटंगा जेह ॥ काला हवसी कावरा, हरिवल निर
 खे तेह ॥ ७ ॥ अजबगुल मेहरी घणी, निरखे ठा
 मो ठाम ॥ ऊडपी छे नर पंखमें, सेवे तेहगुं काम
 ॥ ८ ॥ एहवि अटवि उजाडमां, हरिवल चाव्यो जाय ॥
 ध्यान धरे नवपद तणुं, जेहथी विघन पुजाय ॥ ९ ॥
 देश नगर जोतो थको, पुर पाटण केइ गाम ॥ धरती
 केइ उलंघतो, थाव्यो दरिया ठाम ॥ १० ॥ जाणे
 थापाढो गाजतो, गाजतो चाडव मास ॥ तिम गळ्ळा
 रव जलनिधि, करतां दीगो तास ॥ ११ ॥ कालामंवर
 उघली, जलना लोट चलंत ॥ जाणे हिमाला टूक ज्युं,
 जल कछोल करंत ॥ १२ ॥ जोजन एसी सहस्सनो,
 कोरण विघेपें जेण ॥ लवणनिधीनी वेल ते, सगरें
 आणी तेण ॥ १३ ॥ जल जेहवा मघा घणा, दीसे नव न

वरूप ॥ बाघ सिंह जलमाणसां, जलमें देखे सरूप
॥ १४ ॥ एहवो लवणसमुद्र ते, देखी कंफे काय ॥
हरिबल पगलुं जल नणी, देतां सग पच थाय ॥ १५ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ हरिबल
मनमें चिंतवे रे, शो हवे करुं उपाय ॥ सहस ऐसी जोय
ए जलनिधि रे, पृथुल उंमो देखाय ॥ १ ॥ प्रभुजी ते केम
मुऊथी तराय ॥ पगवट पण न जवाय ॥ प्र० ॥ भुज बलें
पण न तराय ॥ प्र० ॥ तो लंका केम हलाय रे ॥ प्र० ॥ ते ॥
एआंकणी ॥ जलना लोढ बहे घणा रे, श्यामला जल ऊ
जास ॥ ज्वाला बडवानल तणी रे, निकसे प्रबल आ
काश ॥ २ ॥ प्र० ॥ न बहे पंखी मानवी रे, न बहे तारु
ऊहाज ॥ मारग को दीसे नहिं रे, नवि दीसे किहां
पाज रे ॥ ३ ॥ प्र० ॥ शीतल पवन बहे घणो रे, जा
णो शीतल हेम ॥ थरहर कंफे देहडी रे, खडहडे अस्थि
सेम रे ॥ ४ ॥ प्र० ॥ एहवो खारो सागरु रे, उठले जलें
असमान ॥ ते देखी धीवर घणुं रे, झरप्यो गइ तस
शान रे ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जो फरी पाठो घर नणी रे, जाउं तो न
रहे मान ॥ वीडुं ठवी हुं आवियो रे, कीधुं अजायुं
कास रे ॥ ६ ॥ प्र० ॥ नागें ग्रही ज्युं ठुंदरी रे, मूकें

तो अंध थाय ॥ नरुणपी जीव संहरे रे, ए दृष्टांत बनाय
 रे ॥ ७ ॥ प्र० ॥ बली चरकलीयें ग्रहं रे, मुखमां चण्डिपुं
 वोर ॥ आधुं पातुं न कतरे रे, करे पस्तावो जोर
 ॥ ८ ॥ प्र० ॥ इम धीवर फूरे घणुं रे, सागर कांते उना
 य ॥ धीवरें जाणुं आवी बन्यो रे, बाध न दीनो
 न्याय रे ॥ ९ ॥ प्र० ॥ किहां गयो माहरो इण समे
 रे, प्राणवध्न मुज इष्ट ॥ समखां सार करे घणुं रे,
 टाले सघलां रिष्ट रे ॥ १० ॥ प्र० ॥ इम चिंतवतां तत
 खिणें रे, आव्यो सागर देव ॥ कहे सुर शी तुं चिंता
 करे रे, मूकुं जंका तुज हेव रे ॥ ११ ॥ प्र० ॥ शुं वठ
 तुजने इहां कणे रे, आवहुं थयुं हो केम ॥ सुर कहे
 कहो मुज मांनिने रे, जाणुं जाये जेम रे ॥ १२ ॥ प्र० ॥
 तव हरिवल कहे देवने रे, सांजलो तातजी मुज ॥
 नृप हेतें वीहुं ठवी रे, आव्यो कहुं हुं तुज रे ॥ १३ ॥
 प्र० ॥ ते सांजली जलपति थयो रे, देव स्वरूपी अ
 श्व ॥ हरिवल ते अश्वें चढी रे, जलधि तरी लह्यो विश्व
 रे ॥ १४ ॥ प्रभुजी जज्ञे आव्या तुमें नाथ ॥ सुर तरुनी
 ग्रही नाथ ॥ प्र० ॥ मुज शरण थयो तुम हाथ ॥ प्र० ॥ तव
 हुं थयो महोटो सनाथ रे ॥ प्र० ॥ १५ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ जं
 का वागमें मूकीने रे, देव थयो परगट ॥ काम पडे तुं सं

नारजे रे, मुऊने करी गहगट्ट रे ॥ १६ ॥ ॥ प्र० ॥ एम
 कहीने सुर गयो रे, पढोतो ते निज ठाम ॥ हरिबल
 लंका देखीने रे, मनमें लह्यो आराम रे ॥ १७ ॥ प्र० ॥
 तेजें जलामल जलकती रे, हेममय लंका पीठा ॥ जेहवी
 जनमुखें सांजली रे, तेहवी नजरें दीठ रे ॥ १८ ॥
 प्र० ॥ नंदन वन सम वाटिका रे, देखी ययो सुप्रस
 न्न ॥ परिमल पसख्यो चिहुं दिशें रे, कुसुम तणां जि
 हां वन्न रे ॥ १९ ॥ प्र० ॥ चंपा गुलाब ने केतकी रे,
 मोगरा मालती जेह ॥ जाणे सुरवाडी फुली रे, हरिबल
 निरखे तेह रे ॥ २० ॥ प्र० ॥ अंब कदंब ने सुरतरु रे,
 सुरलता मोहन वेल ॥ हेम रजतनी उषधी रे, पस
 री चिहुं दिशें रेल रे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ नागरवल्ली झा
 खना रे, मांमवा अति सोहंत ॥ केलि जंवैरी फालसां
 रे, दाडिम पक्क मोहंत रे ॥ २२ ॥ प्र० ॥ जातीफ
 ल जावंतरी रे, तज ने तमाल ते पत्र ॥ एके तरुअरें नी
 पजे रे, चातुरजातक तत्र रे ॥ २३ ॥ प्र० ॥ देव कु
 सुम ने एलची रे, सुंदर केसर ठोड ॥ निमजां पिस्तां
 चारोली रे, बेय वदाम अखोड रे ॥ २४ ॥ प्र० ॥
 पूगी श्रीफल सेजडी रे, सीताफल सह तूत ॥ खार
 क रायण करमदां रे, लिंबू जांबू जूत रे ॥ २५ ॥ प्र०

इम अनेक ते जातिनी रे, वणसइ नार अटार ॥
 जोगी जनने कारणे रे, प्रगट थई संसार रे ॥ १६ ॥
 प्र०॥ बापी कूप सरोवरु रे, जरियां अमृततोय ॥ हंस
 चकोर ने सारसा रे, जलकीडा करे सोय रे ॥ १७॥
 प्र०॥ इम हरिवल जोतो वहे रे, लंकावन सुरसाल ॥ ल
 ङ्घि बीजा उध्वासनी रे, पनणी इग्यारमी ढाल रे ॥ १८॥

॥ दोहा ॥

॥ लंकापरिसर वाटिका, सोहे अति रमणीक ॥
 जाणे नंदनवन तणी, जगिनी प्रगटि नजीक ॥ १ ॥
 कनक रयणमें जलकता, महोटा मेहेल अत्यंत ॥
 खंमोखली जलशुं नरी, कारिज तिम उठलंत ॥ २ ॥
 नर नारी विद्याधरी, किन्नर अप्सर बाल ॥ सरखे स्वरे
 टोलें मली, गावे गीत रसाल ॥ ३ ॥ मधुरी ध्वनि आ
 राममें, यइ रहि ठामो ठाम ॥ हरिवल ते श्रवणें सुणी,
 मगन थयो अनिराम ॥ ४ ॥ मानव जब जलें में लह्यो,
 जलें लह्यो गुरु उपदेश ॥ सागरदेव पसायथी, लंका
 दीति विशेष ॥ ५ ॥ वन उपवन जोतो थको, हरिवल
 हर्षे कलोल ॥ आव्यो अतिही चुंपशुं, लंकागढनी
 पोल ॥ ६ ॥ साव सोवनमय दुर्ग ते, उपे मणिमय
 शीर्ष ॥ जाणे चूरमणी करे, उपे कंकण नीर्ष ॥ ७ ॥

एहवो वप्र विराजतो, नगरी राखण चंग ॥ जाणे जंबु
 द्वीपनो, जगती कोट उत्तंग ॥ ८ ॥ इणिपरें डिंगनो
 दुर्ग ते, निरखी हरखित होय ॥ पेसारो पुरमें करे,
 शुन लगनें करि जोय ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ उढणीनी देशी ॥ सासु काठा हे गहुं पीसाय,
 आपें न जाशो हेमाल ते सोय नारी जणे ॥ १ ॥ देशी ॥
 पेठो डिंगतणी वर पोले, निरखे रे हाट मंदिर बहु ॥
 सहु कोय सुणो ॥ जाणे दक्षिण उत्तर उल, जुवनपति
 मंदिर सहु ॥ २ ॥ स० ॥ ए तो साव सोवनमय थंज,
 कनक रयणमें मालीयां ॥ स० ॥ तेजें जाफजमाल,
 अचंच दीसे मोतिनां जालियां ॥ ३ ॥ स० ॥ जाणे
 नजथी दिनकर सार, आवी घर घर प्रगटीया ॥ स० ॥
 नवि दीसे तिमिर लगार, उद्योत सघले उलटीया ॥ ४ ॥
 स० ॥ एतो कोरणी धोरणी जोर, जाणे देवपुरी
 वसी ॥ स० ॥ सोहे राय विनीषण ठोर, राज करे मन
 उद्धसी ॥ ५ ॥ स० ॥ वसे वसती वरण अढार, राक्षस
 रूपें मानवी ॥ स० ॥ एतो न गणे नहु अजहु, एवी
 लंका जाणवी ॥ ६ ॥ स० ॥ घोडा गज रथ ने सुख
 पाल, राज्य मारगमें वहे घणा ॥ स० ॥ देखे महोटा

नव नवा ख्याल, हास्य कुतूहल नही मणा ॥ ६ ॥
 स० ॥ जोतो इणि परें नगरी मजार, हरिबल आगल
 संचरे ॥ स० ॥ दीतुं तव एक तेज जंमार, सुंदर मं
 दिर जलि परें ॥ ७ ॥ स० ॥ सोहे सुंदर पोल प्रकार,
 रमणिक दृष्टे देखे सही ॥ स० ॥ पण देखे ते शून्य
 आगार, माणस को दीसे नही ॥ ८ ॥ स० ॥ ए तो तव
 तिहां अचरिज देखि, पेगोहे मंदिर पोलमें ॥ स० ॥ जंखां
 निरखे रयण विशेष, उरा उरी उलमें ॥ ९ ॥ स० ॥ इम जो
 तो सातमी जूमि, हरिबल चढीयो चूपगुं ॥ स० ॥ जाणे
 स्वर्गविमाननी जूमि, रचना ते दीठी रूपगुं ॥ १० ॥
 ॥ स० ॥ तिहां निरखे अचरिज एक, दिंमोजा स्याट
 सोहामणी ॥ स० ॥ तेह उपर सूती विवेक, सुंदर
 स्त्री रलियामणी ॥ ११ ॥ स० ॥ जाणे देही कुंकुम
 वर्ण, अपसर सम करी उपती ॥ स० ॥ पण दीसे ते
 मृतक समान, चेतन रहित ते द्योतती ॥ १२ ॥ स० ॥
 चिंते हरिबल निरखि रे तास, विस्मय पाग्यो मन्नमें ॥
 स० ॥ एसो दीसे देव अन्यास, सास नही ए तन्नमें
 ॥ १३ ॥ स० ॥ इम चिंतवी धीवर धिंग, थरहुं पर
 हुं विलोक्तां ॥ स० ॥ दीठी तुंवढी जल जरी चंग,
 स्याट तले लही टोक्तां ॥ १४ ॥ स० ॥ तिणें तुंवीनुं

जल लेय, हांठयुं स्त्रीतन ऊपरें ॥ स० ॥ ऊठी ततखि
 ए लज्जा धरेय, हिंमोला खाटथी सूपरें ॥ १५ ॥ स० ॥
 मढी चिंतवे चित्त मजार, ए शुं कौतुक नीपनुं ॥ स० ॥
 ए तो थइ नवजोवन नारि, मनोहर ज्युं तेज दीपनुं
 ॥ १६ ॥ स० ॥ दीसे रंजा उर्वशी रूप, कामिनी
 काम जगावती ॥ स० ॥ मोहे सुर नर किन्नर
 नूप, कामी जन मन जावती ॥ १७ ॥ स० ॥ इम
 अचिरज लहिने तास, पूठे हरिबल उल्लसी ॥ स० ॥
 किम रहे तुं शून्य आवास, एकली शवपणें वसी ॥
 ॥ १८ ॥ स० ॥ किहां गया तुज सयण संबंध, मात
 पितादिक ताहरां ॥ स० ॥ तव कहे अबला प्रबंध,
 सांजलो पंथी साहरा ॥ १९ ॥ स० ॥ जलें आव्या
 तुम इहां स्वामि, उपगारी दीसो जला ॥ सोय नारी
 जणे ॥ बेसो आसन्न शुन ठाम, कहुं तुमने सघली कला
 ॥ २० ॥ सो ॥ इहां राय बिनीषण सार, राज करे लंका
 धणी ॥ सो ॥ वाडी ठे तस वृद्ध श्रीकार, वल्लज ते नृप
 ने घणी ॥ २१ ॥ सो ॥ तेह वाडीनो एरखवाल, नीम
 नामें आरामी अठे ॥ सो ॥ हुं तुं तेहनी पुत्री जी
 वाल, कुसुमसिरी मुज नाम ठे ॥ २२ ॥ सो ॥ जव हुं
 थई जोवनवेश, तव मुज जनक चिंता करे ॥ सो ॥

कुण बरडो ए पुण्य निशेष, अद्भुतनिशि इम विंता धरे
 ॥ २३ ॥ सो० ॥ तव तिहां एक जोपी जाण, फिरतो
 ते आब्यो मंदिरे ॥ सो० ॥ पूठे तेहने पिता गुण
 ख्याण, तेही जई घर अंदरे ॥ २४ ॥ सो० ॥ जुठ
 जोपी ज्योतिष जोय, कहो मुजने तुमैं दुःख स्वसे ॥
 सो० ॥ जिम मुज मन वंठित होय, मुज पुत्री वर कु
 ण होशे ॥ २५ ॥ सो० ॥ तव जोपी कहे वनपाल,
 सांजलो जोपयी हुं कहुं ॥ सो० ॥ तुम पुत्रीनो तो मही
 पाल, पति होशे गुणवंत लहुं ॥ २६ ॥ सो० ॥ तव
 हरख्यो पिता मनमांहे, सांजली जोपी वयणडां ॥
 सो० ॥ दीधुं जोपीने दान उद्याह, मूठ नरी छुन रय
 णडां ॥ २७ ॥ सो० ॥ इम कही गयो जोपी थान,
 वंठित दान ते लेईने ॥ सो० ॥ चिंते जनक ए पुत्री
 निधान, गुं करुं परने देईने ॥ २८ ॥ सो० ॥ राखुं
 मुज घर पुत्री रतन, परणी हुं थावं नरपती ॥ सो० ॥
 लोनी जंपट थइ एक मन्न, वात करी इण डुरमती
 ॥ २९ ॥ सो० ॥ मुज जनकीयें जाणी वात, फिट फि
 ट कख्यो मुज तातने ॥ सो० ॥ लागी वज्र समान
 नो घात, जाल चढी कमजातने ॥ ३० ॥ सो० ॥
 पंथी सांजलो मोहनी जाल, महोटी ए निपनी कार

मी ॥ सो० ॥ ए तो बीजा उछासनी ढाल, लब्धियें
जाखी बारमी ॥ ३१ ॥ सो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलिकहुं पंथी सांजलो, महारा तातनां चिन्ह ॥
न्याय करे जइ नृपकने, माली नीम अदीन ॥ १ ॥
कहो स्वामी जे करपणी, मसकत करी निषाय ॥ ते
कण फलने करपणी, जोगवे के न जोगाय ॥ २ ॥
तव नरपति कहे मालिने, जे करे मसकत अंग ॥ ते
कण फल सुखें वावरे, न्यायी अइ ते अजंग ॥ ३ ॥ ए
हवो न्याय ठरावियो, मालियें परपद मांह ॥ पंचनी
साखें ए न्यायनुं, लिखित कहुं ते उठाह ॥ ४ ॥ तेह
लिखत लेई करी, आव्यो जनक ते गेह ॥ वात जही
मुज जनकियें, मौन धरी रहि तेह ॥ ५ ॥ तव मु
ज जनक संबंधियें, जाण्यो महोदो अन्याय ॥ गृह मू
की तव निकसियां, वसियां बीजे जाय ॥ ६ ॥ तिण
दिनथी गृह शून्यमें, मुजने राखे तात ॥ मृतकसमा
न करी वहे, मंत्रवज्रें ते प्रजात ॥ ७ ॥ सारो दिन
वाडियें रहे, करे ते बननुं काज ॥ नृपने फल फुल दे
इने, आवे मुजकने सांज ॥ ८ ॥ तुंवी जल लेई करी,

भांटे मुऊ तनु जाम ॥ चेतन लहि जायुं तदा, करे
मुऊ जनक ए काम ॥ ए ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ मुजरो व्योने हे जालिम जाटणी ॥ ए देशी ॥
॥ सांजजो पंथी माहरे तातनी, कहुं करणी वली एक ॥
पूर्वे पण एक उतुं देइनें, कीधो न्याय विवेक ॥ १ ॥
भैयांसनाथ झयारमा, तेहने जे वारे कहाय ॥ पर
जापति नामें राजवी, भिणवा राणी सुहाय ॥ २ ॥
सां० ॥ तेहनी कूखें पुत्री उपनी, पदमिनी रूप अ
त्यंत ॥ अनुक्रमें थइ नव यौवना, कामिनी काम ल
हंत ॥ ३ ॥ सां० ॥ ते परजापति पुत्रीनुं, दीतुं रूप
सरूप ॥ जाण्युं ए फल बीजे जायशे, नोगवशे अन्य
नूप ॥ ४ ॥ सां० ॥ तो ए पुत्री माहरे राखवी, नहि
देवं बीजे ए क्यांह ॥ पंचमें न्याय करावीने, परण्यो
पुत्री बघाह ॥ ५ ॥ सां० ॥ पंचनी साखें ए सही
करुं, मेली परखदा सार ॥ जिम मुऊ लोकमें नवि हु
वे, निंदा विकथा लगार ॥ ६ ॥ सां० ॥ इम जाणी
नृप तिणि वेलमां, मेलवी पंच समरु ॥ पूठे परजा
पति परजने, करो न्याय विचरु ॥ ७ ॥ सां० ॥ जे
बीज यावे चाडी खेतमें, ते श्रुतसमे फल देय ॥

ते फलने मसकतीनो धणी, जोग लीये के नवि
 लेय ॥ ७ ॥ सां० ॥ तव ते बोली परजा एकमते,
 सांजलो नाथजी एम ॥ जे फल बावे ते फल बीजने,
 जोग ते नवि लीए केम ? ॥ ८ ॥ सां० ॥ पंच मलीने
 जे करी थापना, ते उठापी न जाय ॥ स्थिति ठे अ
 नादि ए कालनी, एहवो ते न्याय ठराय ॥ ९ ॥ सां० ॥
 तव परजापति हरखिने, लोधुं पुत्री लगन ॥ परख्यो
 ते निज पुत्रीने, यइ रह्यो तेशुं मगन ॥ १० ॥ सां० ॥
 तेहनी कूखें जी ऊपनो, हरि ते नामें त्रिष्ट ॥ श्रीजिन
 वीरनो जीव ते, जाणे सयल ते शिष्ट ॥ ११ ॥ सां० ॥
 त्रेशठ शिलाका चरित्रमें, ते तेहनो अधिकार ॥ ते न्या
 यधारी लंकापति, कने जइ चढ्यो दरवार ॥ १२ ॥
 सां० ॥ ए करणी माहारा तातनी, में कही पंथिजी
 तुम्म ॥ लालची लोनी जे लंपटी, न बजे ते कदि
 जुम्म ॥ १३ ॥ सां० ॥ माहरो तात ते लालची, अहनि
 श राखे निराश ॥ दुःखदायी दुःख देयतां, तेहने यया खट
 मास ॥ १४ ॥ सां० ॥ कहुं ए पंथी दुं हवे केहने, नाखुं मो
 होटो निशास ॥ आजयी बीजे मासडे, वररो मुजने उ
 द्दास ॥ १५ ॥ सां० ॥ माहारा मननी पंथी में कही,
 सवली मांझीने गुज ॥ जनें तुमें आव्याजी मंदिरें, तु

ख शाता थइ मुऊ ॥ १४ ॥ सांजलो पंथी जीवन मा
 हरा ॥ ए आंकणी ॥ कुसुमसिरी कहे सांजलो, पंथी क
 रुणा कपाल ॥ जाग्य बली में तुम्ह ऊजख्या, साहसिक
 महोटा मयाल ॥ १५ ॥ सां० ॥ सघली वार्ते पूरा जा
 णीने, में तुम्ह जाल्यो जी हाथ ॥ दुःखनिधि पार उ
 तारवा, जलें आब्या तुम्हें नाथ ॥ १६ ॥ सां० ॥
 मन ललचाणुं तुम देखतां, जिम मन केतकी अंग ॥
 वे कर जोडीने वीनबुं, मुऊने परणो सुरंग ॥ १७ ॥ सां० ॥
 ॥ सूरज चंड साखें करी, परणी पूरो जी जाड ॥ नि
 ज नारीने सुख देयतां, शो ते चढाबुं जी पाड ॥ १८ ॥
 सां० ॥ माहरे वखतें तुम्हें आणीया, ताणी पुण्य
 विशेष ॥ ते हुं टाली ते किम टलुं, लखीया पानें जे
 लेख ॥ १९ ॥ सां० ॥ इणि परें वयण वेधालुयें, कु
 मरीयें नारयां जे घाण ॥ वेधक वारों ते वेधियो, हरि
 बल चतुर सुजाण ॥ २० ॥ सां० ॥ परण्यो तेह कु
 सुमसिरी, हरिवल पाम्यो ते चेन ॥ जाणो परण्यो बीजी
 अप्सरा, वसंतसिरीनी ते चेन ॥ २१ ॥ सां० ॥ लंका
 धणीने तेढवा, मछी बीहुं ठवेय ॥ गढदो ते गुण आ
 वियो, लोक ठखाणो कहेय ॥ २२ ॥ सां० ॥ माली
 जीमो जोतो रह्यो, परण्यो पुत्रीने कोय ॥ नुतयां जो

षी कोली जम्या, ए उखाणो ते होय ॥ १६ ॥ सां० ॥
 सिंहनो नद्ध ते जंबुकें, कदो ते केम कराय ॥ कलिंगमहो
 दुं कीडी मुखें, कदो ते केम समाय ॥ १७ ॥ सां० ॥
 हरिवल केरा जे नाग्यमें, कुसुमसिरी लखी जेह ॥ मा
 जीने किम मोलवे, लख्या विधातायें जेह ॥ १८ ॥
 सा० ॥ हरिवल पुण्यना जोगथी, पाम्यो मंगलमाल ॥
 लब्धि वीजा उद्धासनी, पनणी तेरमी ढाल ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमरी कहे कंतने, निसुणो प्राणाधार ॥ आ
 पण वहियें वे जणां, जिहां ठे निज आगार ॥ १ ॥
 सांजें माली आवरो, आखें पडरो जूण ॥ आपण वे
 दुने दूवरो, तो ते राखरो कूण ॥ २ ॥ तव हरिवल क
 हे नारिनें, सांजल प्यारी मुज ॥ लंकापतिने तेडवा,
 आव्यो तुं कहुं तुज ॥ ३ ॥ विशाला पुरनो धणी, मद
 नवेग ते नाम ॥ अंगजने परणाववा, मेले नृप अजि
 राम ॥ ४ ॥ वैशाखे सितपंचमी, लीधां लगनज जेह ॥
 सयला देशना राजवी, तिण दिन मिलरो तेह ॥ ५ ॥
 तव वीशालानो धणी, बोव्यो सजा समद्ध ॥ को ठे लं
 का रायने, तेडी आवे विचद्ध ॥ ६ ॥ तव तिहां को
 इ न बोझियो, बीडुं न ठवे कोय ॥ तव तुज नाग्यव

लें करी, बीडुं में बड्युं सोय ॥ ७ ॥ ते नृप आणा
 सेइने, हुं आव्यो हुं आहि ॥ लंकापति तेडघा विना,
 किम जवराए त्यांहि ॥ ७ ॥ कुसुमसिरी वलतुं कहे,
 सांनलो महारी वात ॥ लंकापति मदिरा वशें, उंधमें
 केइ युग जात ॥ ८ ॥ ते सांधो किम वाज्जो, आप
 ए जावुं गेह ॥ लंकापति कने जायवुं, कठिण कहुं
 तुम्हें एह ॥ १० ॥ जो प्रीतम मुंजने कहो, जावुं बी
 जीपण पास ॥ देवनमी एक खड्ग ठे, लावुं ते जइ तास ॥

॥ ढाल चवदमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ तव हरिवल कहे ना
 रीने रे, जाठ उतावलां त्यांहि ॥ मोमन प्यारी ॥ ला
 वजो तुमें संजारीने रे, खड्ग जे चंडहास आंहि ॥
 ॥ मो० ॥ १ ॥ लावो लावो रे सुगुण जई लावो, तुमें ढोल
 म करशो क्यांहि ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ वैशाख शुदि दि
 न पंचमी रे, लगन उपर जवराय ॥ मो० ॥ तो गणो मु
 जने साचमें रे, मदनवेग ते राय ॥ २ ॥ मो० ॥ ते
 सहिनाणी खड्गनी रे, लंकाधणीनी जेह ॥ मो० ॥
 लाज वधे निज वर्गनी रे, ते विधे लावजो तेह ॥
 ॥ ३ ॥ मो० ॥ पण शिर वदलामी चढे रे, जगमें हां
 सुं होय ॥ मो० ॥ सेहणेनी देणे पडे रे, ते मत कर

जो कोय ॥ ४ ॥ मो० ॥ करतां होय ते कीजियें रे,
 अवर न कीजें कग्ग ॥ मो० ॥ मुंफरी रहे सेवालमां
 रे, ऊंचा रह्या दो पग्ग ॥ ५ ॥ मो० ॥ ते मत करजो
 कामिनी रे, सांजलि ते दृष्टांत ॥ मो० ॥ इम शीखाम
 ए स्वामीनी रे, धारी ते चितमें खांत ॥ ६ ॥ मो० ॥
 हवे कुमरी गई तिहां कणो रे, राय विनीषण ज्यांहि
 ॥ मो० ॥ जर निझमें सूतो लह्यो रे, मदिरा ठाकनी
 मांहि ॥ ७ ॥ मो० ॥ कल विकल करीने ग्रह्युं रे, खड्ग
 जे ठे चंडहास ॥ मो० ॥ जात बलत कोणो नवि
 लह्युं रे, आवी प्रीतम पास ॥ ८ ॥ मो० ॥ व्यो
 स्वामी आ खड्गनी रे, जे कहि सहिनाणी एह ॥
 मो० ॥ देवनमी खड्ग स्वर्गनी रे, उजखे मढी विशे
 ह ॥ ९ ॥ मो० ॥ हवे सामग्री दंपती रे, मेजवे जावा
 गेह ॥ मो० ॥ सार रयण ते सोंपती रे, पिपुने जे
 कोश जरेय ॥ १० ॥ मो० ॥ तुंदी जलसायें ग्रही रे,
 दंपती बाव्यां दोय ॥ मो० ॥ आव्यां जे लंका बही
 रे, लहे मनोवन्तित सोय ॥ ११ ॥ मो० ॥ समग्रो
 सागर देवता रे, मढीयें अई उजमाल ॥ मो० ॥ आ
 व्यो सुर पण देवता रे, करुणावंत कपाल ॥ १२ ॥
 मो० ॥ किहां मूकुं हवे ठुक्रने रे, सुर बांज्यो ततका

॥ १३ ॥ मो० ॥ मूको सामी मुझने रे, निल नगरी वि
 ॥ १४ ॥ मो० ॥ चम्प चढावी दो जणा रे, मू
 ॥ १५ ॥ मो० ॥ चिंतयुं होगे तुम तणुं
 ॥ १६ ॥ मो० ॥ एम क
 ॥ १७ ॥ मो० ॥ मन
 ॥ १८ ॥ मो० ॥ गमरीनी जे डाटिका रे, तेहमे वतारो की
 ॥ १९ ॥ मो० ॥ दैयनि करे गदगटिका रे, जाणे मनो
 ॥ २० ॥ मो० ॥ द्ये माली संप्या समे रे,
 ॥ २१ ॥ मो० ॥ दय्या खाली दृष्टि
 ॥ २२ ॥ मो० ॥ शिपां गठे प्यारी,
 ॥ २३ ॥ मो० ॥ पुत्री न हीरी हुं नर
 ॥ २४ ॥ मो० ॥ दयिनी
 ॥ २५ ॥ मो० ॥ दयिनी
 ॥ २६ ॥ मो० ॥ दयिनी
 ॥ २७ ॥ मो० ॥ दयिनी
 ॥ २८ ॥ मो० ॥ दयिनी
 ॥ २९ ॥ मो० ॥ दयिनी
 ॥ ३० ॥ मो० ॥ दयिनी

नूनि पड्या दोय हाथ ॥ ३१ ॥ कि० ॥ जोतो रोतो
 ते वल्यो रे, आव्यो ते निज घेर ॥ कि० ॥ पुत्री विर
 हैं ते चल्यो रे, शुं हवे करुं ते पेर ॥ ३२ ॥ कि० ॥
 पुत्री तुंबी गत थइ रे, जाणे गइ रण खेत ॥ रंमानी
 रंमा गई रे, टपसुं पण गइ लेत ॥ ३३ ॥ कि० ॥ रां
 क तणे घरे सुरमणी रे, रहे कहो केती वार ॥ कि० ॥
 पूरव नवनी वेरणी रे, दे गइ महोठो खार ॥ ३४ ॥
 कि० ॥ पुत्री परणें जाणतो रे, पामशुं महोठुं राज ॥
 कि० ॥ होंश घणी मन आणतो रे, माणशुं पुत्री रा
 ज ॥ ३५ ॥ कि० ॥ तेहमें एके न संपजी रे, फोक
 फजेती कीध ॥ कि० ॥ देवना मनमां शी नजी रे,
 एको वात न सीध ॥ ३६ ॥ कि० ॥ पण पुत्री पर
 घरें जई रे, वसति जाणे संसार ॥ कि० ॥ एक
 एकने देइ वरे रे, पुत्री पर घर वार ॥ कि० ॥ ३७ ॥
 ते में खोटी आदरी रे, लोचें खोयो कार ॥ कि० ॥ तो
 किम आवे पाधरी रे, लोप्यो म्हें व्यवहार ॥ ३८ ॥
 मो० ॥ नीतिनी चाल में नवि गणी रे, कीधो अनीति
 विचार ॥ मो० ॥ तो किम रहे ए पदमणी रे, रांक घरे
 मुऊ सार ॥ ३९ ॥ मो० ॥ जेहनो संबंध ते ले गयो
 रे, ठाना करीने लोच ॥ मो० ॥ जे आबुं हतुं ते थयुं रे,

जो हवे करवो शोच ॥ ३० ॥ मो० ॥ मालीयें एम
 मन वालीयुं रे, जावीनो ग्रहो पत्र ॥ मो० ॥ आ
 तम कुल संजालीयुं रे, काढी नारवुं शत्र ॥ ३१ ॥
 मो० ॥ सगां संबंधि नारीने रे, रीश उतारी तास
 ॥ मो० ॥ मालियें वात विसारीने रे, तेढी आव्यो
 आवास ॥ ३२ ॥ मो० ॥ सघला वियोग ते जांगियां
 रे, उपन्यो रंग रसाल ॥ मो० ॥ पूरव सुरुत जागीयां
 रे, जांगीया दुःख जंजाल ॥ ३३ ॥ मो० ॥ हवे हरिव
 लनी जे थइ रे, सांजलो पुण्यविशाल ॥ मो० ॥ बीजां
 उध्वासनी ए कही रे, लव्हें चौदमी ढाल ॥ ३४ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिवल रजनीसमे, बाडियें कीधुं ठाम ॥
 कुसुमसिरी मूकी तिहां, पद्मोतो ते निजधाम ॥ १ ॥
 वसंतसिरी पेहेली प्रिया, जोवं तेहनुं चरित्र ॥ मुंज
 कपर पण केहवुं, राखे मनह पवित्र ॥ २ ॥ इम जा
 णी निज मंदिरें, आव्यो रजनी मध्य ॥ तस्करनी
 परें सांजले, देई कान ते शुद्ध ॥ ३ ॥ तिण अवसर
 जे विरहिणी, वसंतसिरी ते बाल ॥ पीयु नाव्यो मा
 संतरें, तेहनी थइ चकचाल ॥ ४ ॥ तव एक पंखी
 सूवटो, पाव्यो ठे घरमांहि ॥ तस आगल कहे विरह

एणी, वसंतसिरी जे उठांदि ॥ ५ ॥ रे पंखी मुज पीयु
 डो, गयो लंका गुन काज ॥ अवधि कही एक मास
 नी, ते थइ पूरी आज ॥ ६ ॥ केशरजख पिया कह
 चले, ठाम गयंदजखमांदि ॥ जलजख रयण पोका
 रियो, मो जख जावत नांदि ॥ हजीअ लगण आव्यो
 नही, नाव्यो को संदेश ॥ नाह नितुर मेहेली गयो,
 मुजने वाले वेश ॥ ७ ॥ तो दीहा किम निर्गमुं, किम
 करि राखुं शील ॥ मदनवेग ते नूधणी, केडें पडियो
 कुशील ॥ ८ ॥ आज लगण तो माहरुं, में पण राख्युं
 एह ॥ पण ते अवधि पूरी थइ, कुमति चूकरो ते ॥
 शुक्रवाक्यं ॥ दधिसूता सुत तासरिपु, ता त्रिय वा
 हनाहार ॥ सो सुंदर तुजमें नहिं, कीधो कौन वि
 चार ॥ ९ ॥ ते माटे तुं सूडला, जा मुज प्रीतम पा
 स ॥ संदेशो मुज घरतणो, जइने कहेजे तास ॥ १० ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ विंजाजीनी ए देशी ॥ सुडाजी हो अमीरस पा
 उ तुजनें रे ॥ सु० ॥ चखवुं दाडिम झारव ॥ सूडा
 सयण वारु ॥ ए आंकणी ॥ सुडा० ॥ चांच जरावुं
 चूरमे रे ॥ सु० ॥ देउं वली आंबा सारव ॥ सु० ॥
 ॥ १ ॥ सु० ॥ संदेशो मुज दाखवी रे ॥ सु० ॥ मेल

व तुं मुऊ जीव ॥ सु० ॥ सु० ॥ गाइश हुं गुण ताह
 रा रे ॥ सु० ॥ जीवित सुधी सदीव ॥ सु० ॥ १ ॥
 ॥ सु० ॥ दूधें जरीश तुऊ पेटने रे ॥ सु० ॥ देश क
 हीश ते जांच ॥ सु० ॥ सु० ॥ जे हुं बोलुं ते सही
 रे ॥ सु० ॥ मानजे करीने साच ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु० ॥
 हुं कर जोडी वीनबुं रे ॥ सु० ॥ सांजल माहरी
 वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ सघला पंखीमें कही रे ॥ सु० ॥
 उत्तम ताहरी जात ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सहु पंखी
 शिरसेहरो रे ॥ सु० ॥ तुं ठे चतुर सुजाण ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ रूपें तुं रलियामणो रे ॥ सु० ॥ मीठी ता
 हरी वाण ॥ सु० ॥ ५ ॥ सु० ॥ लीली ताहरी पांख
 डी रे ॥ सु० ॥ चांच राती तुऊ चंग ॥ सु० ॥ सु० ॥
 रूडी ताहरी थांखडी रे ॥ सु० ॥ राती केशू रंग ॥
 ॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सोने मढाबुं चांचडी रे ॥ सु० ॥
 दूधें पखाबुं पंख ॥ सु० ॥ सु० ॥ हार वबुं गले मो
 तीनो रे ॥ सु० ॥ लाख टकानो थटक ॥ सु० ॥ ७ ॥
 ॥ सु० ॥ विरहिणी नारी तुं देखीने रे ॥ सु० ॥ दया
 धरे मनमांहे ॥ सु० ॥ सु० ॥ संदेशो मुऊ नाहने
 रे ॥ सु० ॥ तुं जइ कहेजे उठांहे ॥ सु० ॥ ८ ॥ सु० ॥
 मानिश तुऊ उपगारडो रे ॥ सु० ॥ थाइश नही गुण

चोर ॥ सु० ॥ सु० ॥ कीधो गुण जाणे नही रे ॥
 ॥ सु० ॥ माणस नही ते ढोर ॥ सु० ॥ ए ॥ सु० ॥
 ऊठीने तुं पंखीया रे ॥ सु० ॥ तुं मत करजे ढील ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहेजे मुऊ संदेशडो रे ॥ सु० ॥
 जिहां होये नाह रंगील ॥ सु० ॥ १० ॥ सु० ॥ अब
 ला तुऊ घर एकली रे ॥ सु० ॥ ठे विरहिणीने वेश
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ फुरि फूरि ऊंखर थइ रे ॥ सु० ॥ थइ
 नारी नरवेश ॥ सु० ॥ ११ ॥ सु० ॥ प्रीतमना विर
 हाथकी रे ॥ सु० ॥ मुउ न दीसे कोय ॥ सु० ॥ सु० ॥
 पण तंबोली पान ज्युं रे ॥ सु० ॥ दिन दिन पीजां
 होय ॥ सु० ॥ १२ ॥ सु० ॥ पियु विरहें करि नारियें रे
 ॥ सु० ॥ तजियां तेल तंबोल ॥ सु० ॥ सु० ॥ खाणां
 पीणां पहेरणां रे ॥ सु० ॥ तजीयां सखीशुं टकोल
 ॥ सु० ॥ १३ ॥ सु० ॥ पियु विण शणगार पहेरतां
 रे ॥ सु० ॥ लागे अंगारा समान ॥ सु० ॥ सु० ॥ चं
 दन चूवा अंगीठियो रे ॥ सु० ॥ नागिणी नागर पान
 ॥ सु० ॥ १४ ॥ सु० ॥ पियु विरहें घडी मासडो रे ॥
 ॥ सु० ॥ मास ते वरसज होय ॥ सु० ॥ सु० ॥ खिण
 घरमें खिण आंगणें रे ॥ सु० ॥ पियु विण ए गति
 जोय ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ नयणें नावे निझडी रे

॥ सु० ॥ नावे न अन्न ने पान ॥ सु० ॥ सु० ॥ नाह
 विना घेली जगुं रे ॥ सु० ॥ कहीये कैतु सयाण ॥
 ॥ सु० ॥ १६ ॥ सु० ॥ पूरव पापना योगधी रे ॥
 ॥ सु० ॥ पामी स्त्री जमवार ॥ सु० ॥ सु० ॥ जरजो
 बन पियु घर नही रे ॥ सु० ॥ तस एलें गयो अव
 तार ॥ सु० ॥ १७ ॥ सु० ॥ ए मंदिर ए मालियां रे
 ॥ सु० ॥ पियु विना शून्य आगार ॥ सु० ॥ सु० ॥
 रस कस खारां जेरशां रे ॥ सु० ॥ लागे ते चित्त
 मजार ॥ सु० ॥ १८ ॥ सु० ॥ यौवन करवत धार जुं
 रे ॥ सु० ॥ विरहिणी नारीने रोष ॥ सु० ॥ सु० ॥
 नाहविहूणी कामिनी रे ॥ सु० ॥ पग पग पामे ते
 दोष ॥ सु० ॥ १९ ॥ सु० ॥ कालजे कठं मेली गयो
 रे ॥ सु० ॥ निशिदिन रही ते धुखाय ॥ सु० ॥ सु० ॥
 नेह सुधारस सिंचिने रे ॥ सु० ॥ उलवे पियु घर आ
 य ॥ सु० ॥ २० ॥ सु० ॥ ते दिन क्यारें देखवुं रे ॥
 ॥ सु० ॥ करस्यां मननी रे वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ प्राण
 जीवन मुज देखीने रे ॥ सु० ॥ कीजें शीतल गात्र ॥
 ॥ सु० ॥ २१ ॥ सु० ॥ दिनकर पहेजां जगते रे ॥ सु० ॥
 जो प्रीतम घरे थाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ तो माणसनी
 उजमें रे ॥ सु० ॥ जीववुं ते जुगताय ॥ सु० ॥ २२ ॥

॥ सु० ॥ जो कदि नाव्यो जगते रे ॥ सु० ॥ तो जइ गि
 रिजंपाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ पेट कटारी खाइ मरुं रे ॥
 ॥ सु० ॥ के मरुं सही विष खाय ॥ सु० ॥ १३ ॥
 ॥ सु० ॥ कंत विना गुं जीवुं रे ॥ सु० ॥ कंत विना
 किगुं हेज ॥ सु० ॥ सु० ॥ कंत विना गुं मालवुं रे ॥
 ॥ सु० ॥ कंत विना शी सेज ॥ सु० ॥ १४ ॥ सु० ॥
 दुःख जर ठाती फाटती रे ॥ सु० ॥ रही नथी शकती
 गेह ॥ सु० ॥ सु० ॥ विरहानलनी बाफमां रे ॥ सु० ॥
 दाजी रही गुं तेह ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ विरहिणी
 एम बिलपे घणुं रे ॥ सु० ॥ वसंतसिरी ससनेह ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ नयणें आंसू रेडती रे ॥ सु० ॥ जा
 ए ज्युं नाइव मेह ॥ सु० ॥ १६ ॥ सु० ॥ वसंतसि
 री एम पाठवे रे ॥ सु० ॥ गुकने संदेशा जिवार ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ नारीनुं दुःख सांजली रे ॥ सु० ॥
 बोव्यो मन्ही तिवार ॥ सु० ॥ १७ ॥ सु० ॥ खोलो
 कमाड सहेलीयां रे ॥ सु० ॥ सूकी मननी राड ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ उलखियो पति आवियो रे ॥ सु० ॥
 हर्षे उघाड्यां कमाड ॥ सु० ॥ १८ ॥ सु० ॥ निजप
 तिनुं मुख देखतां रे ॥ सु० ॥ कामिनि हर्षे जराय ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ हर्षे विनोद जे उपनो रे ॥ सु० ॥ पु

स्तकें लखियो न जाय ॥ सु० ॥ १९ ॥ सु० ॥ वेधकने
 मन बलही रे ॥ सु० ॥ ए पंचदशमी ढाल ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ लब्धे बीजा उल्लासनी रे ॥ सु० ॥ कही शुन
 रंग रसाल ॥ सु० ॥ ३० ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे प्रीतम घरे आवतां, बाध्यो नवलो नेह ॥
 मुह माग्या पासा ढल्या, अमियें वूठा मेह ॥ १ ॥
 नव पल्लव थइ अंगना, वसंतसिरी गुणगेह ॥ प्रेम
 सरोवर जीजतां, वानो बधियो देह ॥ २ ॥ दंपति दो
 रंगें मल्यां, सुख नर कीधी वात ॥ डःख दोहग दूरें गयां,
 प्रगटी ते सुख शात ॥ ३ ॥ कहे नारी पियु सांजलो,
 धुरयी कहूं ससनेह ॥ तुमें चाल्या लंकाजणी, पाठ
 ल बीती जेह ॥ ४ ॥ मैं तुमने पहेलां कही, ते सं
 नारो नाथ ॥ नृपने मंदिर दाखव्युं, दीपक लेइ निज
 हाथ ॥ ५ ॥ ते बात आवी आगलें, जब तुमें चा
 ल्या लंक ॥ तय नृप मुऊ केडें पड्यो, जाणीने निःशं
 क ॥ ६ ॥ मेहेमंतो कवट थइ, गज शिर नाखे धूल ॥
 तिम नृप दासी मोकली, करवा मुऊ अनुकूल ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ एतो नयहीरो मोती अजब बन्यो ॥ ए देशी ॥

एतो दासी मुज कने मोकली, एतो छेइ नूखण साच ॥
 साहेव मोरा हे ॥ एतो चूवा रे चंदन अरगजा, एतो सीं
 सा जरिया काच ॥ सा० ॥ १ ॥ सांजलो प्रीतम मा
 हरा ॥ एतो देवा मुजने लांच ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥
 ॥ एतो मीठी साकर सूखडी, एतो मीठा मेवा डाख
 ॥ सा० ॥ एतो ठाव जरी वली मोकली, एतो मीठी
 आंवा साख ॥ सा० ॥ २ ॥ सां० ॥ एतो जरतारी साजू
 जजा, एतो आण्यां नव नवां चीर ॥ सा० ॥ जाणे
 बाधा सुरनारी तणा, एतो सोहे तेजमें हीर ॥ सा० ॥
 ॥ ३ ॥ सां० ॥ इत्यादिक छेइ जेठणां, एतो मूक्यां
 चेटी साथ ॥ सा० ॥ कहे चेटी मुज आवीने, तुम
 जेठ करे नूनाथ ॥ सा० ॥ ४ ॥ सां० ॥ एतो दासी कहे
 वली मुजने, तुमें सांजलो हरिवल नार ॥ सा० ॥
 एतो नृप राखे तुम ऊपरें, एकंगो थइ वणो प्यार ॥
 सा० ॥ ५ ॥ सां० ॥ एतो जे दिन तुम बरे आविया, ए
 तो जोजन करवा सार ॥ सा० ॥ एतो ते दिनथी
 तुमें चित्त वस्यां, मनथी न विसारे लगार ॥ सा० ॥
 ॥ ६ ॥ सां० ॥ एतो ते दिनथी तुमने वणूं. मित्रवा
 नी राखे हूं ॥ सा० ॥ एतो एहमें जूठ न जाणजो,
 तुम सत्य करि कहूं सूं ॥ सा० ॥ ७ ॥ सां० ॥ एतो

तव समजी हुं चित्तमां, नृप जाण्यो लंत कुजात ॥
 सा० ॥ एतो पियु मुऊरीश चढी घणो, उठीने में दीधी
 लात ॥ सा० ॥ ८ ॥ सां० ॥ एतो कुंदीपाक कखो घणो, करे
 जीवित सुधी याद ॥ सा० ॥ एतो नाठी दासी नृप
 कने, जइ कीधी ते फरियाद ॥ सा० ॥ ९ ॥ सां० ॥ एतो
 सांनजी नृप बिलखो थयो, एतो समजी रह्यो मनमां
 हि ॥ सा० ॥ एतो बलि राणीने मोकली, छेइ चूख
 ए सार उठाह ॥ सा० ॥ १० ॥ सां० ॥ एतो तव में थ
 वसर उंलख्यो, एतो राणीने राजी कीध ॥ सा० ॥
 एतो कपटें मासनो वायदो, करी राणीनें शीख में
 दीध ॥ सा० ॥ ११ ॥ सां० ॥ एतो आज ते मास
 पूरो थयो, एटले तुमें आव्या घेर ॥ सा० ॥ एतो फ
 लीया मनोरथ माहरा, मुऊ बाधी पुण्यनी शेर ॥
 सा० ॥ १२ ॥ सां० ॥ एतो पियु तुम मंदिर आव
 ते, मुऊ शीयल रखुं अखंम ॥ सा० ॥ एतो नृपति रह्यो
 हवे फूजतो, पडि तेहना मुखमें खंम ॥ सा० ॥ १३ ॥
 सां० ॥ एतो इत्यादिक पियु आगलें, कही रमणीयें
 मांमी वात ॥ सा० ॥ एतो हरिवर्ले सघलुं सांनजी,
 गुण लीयो स्त्रीनो विख्यात ॥ सा० ॥ १४ ॥ सां० ॥ हवे
 हरिवल कहे निज प्यारीने, तुऊ बेहेन ठे चाडी मझ

॥ सा० ॥ एतो लंकागढथी लावियो, एतो परणी म
 होटी सलज्ज ॥ सा० ॥ १५ ॥ सां० ॥ तव वसंतसि
 री हरखित थइ, जलें आवी माहारी वेहेन ॥ सा० ॥
 एतो वारे वासे पामशुं, गुण महोटी थयो सुख चेन
 ॥ सा० ॥ १६ ॥ सां० ॥ हवे वसंतसिरी सहेलीशुं, गइ वा
 डीयें तेडवा तेह ॥ सा० ॥ कुसुमसिरी निज वेहेनने, घणे
 हेतें लावी गेह ॥ सा० ॥ १७ ॥ सां० ॥ एतो वसंतसिरी
 ने पाय पडी, दीधो कुसुमसिरीयें लाग ॥ सा० ॥
 नखने मांस ज्युं प्रीतडी, तिम बिहुने थयो एक राग
 ॥ सा० ॥ १८ ॥ सां० ॥ एतो दोगुंडुक सुरनी परें, दो
 नारीशुं जोगवे जोग ॥ सा० ॥ एतो हरिबल जीव दया
 थकी, सुख पाम्यो पुण्य संयोग ॥ सा० ॥ १९ ॥ सां० ॥
 एतो इणिपरें जे दया पालशे, एतो सांजली गुरु उपदेश
 ॥ सा० ॥ एतो हरिबलनी परें पामशे, एतो जवोजव सुख
 विशेष ॥ सा० ॥ २० ॥ सां० ॥ एतो सोहम शुद्ध
 परंपरा, तस गादीयें हीर सूरिंद ॥ सा० ॥ एतो सा
 ह अकब्बर बूजवी, एतो मेलव्यो सुकृत वृंद ॥ सा० ॥
 ॥ २१ ॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य पंमित सोहता, धर्म
 विजय कविराय ॥ सा० ॥ एतो तस शिष्य धनदुर्ष
 जग जयशे, एतो पंमित मांहे सराय ॥ सा० ॥ २२ ॥

॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य कुशल विजय गणि, गणि
 कमल विजय तस प्रात ॥सा०॥ एतो तस शिष्य ल
 क्मीविजय कवि, एतो ज्ञान क्रियामें सरात ॥ सा०
 ॥ २३॥सां० ॥ एतो तस शिष्य केशर अमर दो, एतो
 जगमां कर्म क्षिपंत ॥ सा० ॥ एतो सूरज चंद्र तणी
 परें, दोय बंधव तेज दीपंत ॥ सा० ॥ २४ ॥ सां०॥
 एतो तस पद पंकज किंकरु, एतो लब्धिविजय उ
 जमाल ॥सा०॥ शोले ढालें पुरो कखो, एतो बीजो उ
 द्भास रंजाल ॥सा०॥ २५॥सां०॥ इति श्रीजीवदयापरे
 हरिवलमहीरासे लंकागमनागमनसंबंधः संपूर्णः॥२॥
 ॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामयमें प्रभु, मगन रहे निशिदीप्त ॥
 केवलज्ञान प्रकाशयी, देखे विश्व जगीश ॥ १ ॥ ज्यो
 तिवधूना संगमें, निशिदिन रह्यो लपटाय ॥ तस पद
 पंकज हुं नमूं, वामानंदनराय ॥ २ ॥ वचनामृत
 रस वरसती, कविमन महितल जेह ॥ नवपद्मव क
 विने सदा, करती माता तेह ॥ ३ ॥ चरण कमल नमूं
 तेहनां, वाला त्रिपुरा सोय ॥ गुण गातां ध्यातां सदा,
 मुज मन वंदित होय ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना,
 चरण कमल नमि तास ॥ तस सान्निध्य हरिवल तणो;

पनणुं त्रीजो उद्धास ॥ ५ ॥ उत्तमना गुण गावतां,
 होवे उत्तम आप ॥ खाइनी खेलें नावतां, जाये मल
 संताप ॥ ६ ॥ धर्मना रसिया जे हरो, ते सुणरो एक
 मन्न ॥ धर्म कथा गुण लेयने, मानरो ते दिन धन्न
 ॥ ७ ॥ नारे करमी बापडा, शुं जाणे ते धर्म ॥ अवगुण
 जे निंदा करे, साहमुं बांधे कर्म ॥ ८ ॥ ते माटे नावुक
 तुमें, अवगुण मत व्यो कोय ॥ कीजें व्यवसाय धर्म
 नो, तेहमें खोट न होय ॥ ९ ॥ इम जाणी तुमें सांन
 जो, हरिवल केरुं चरित्र ॥ धर्मकथा सुणतां अकां,
 आतम होवे पवित्र ॥ १० ॥ हवे सुणजो नविका तमें,
 हरिवल केरी ख्यात ॥ लंका जइ आव्या पठी, शी शी
 निपजी वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ थारा मोहोला ऊपर मेह, ऊबूके वीजली ॥ हो लाल
 ऊबूके वीण ॥ ए देशी ॥ हवे हरिवल पहेरे वेश ते, जाणी
 प्रेह्णनो हो लाल के ॥ जाणी प्रेह्णनो ॥ दूरथी आवतो
 जाणे, नरेश ते लेह्णनो हो ॥ नरेण ॥ एहवो वेश व
 णाय, प्रजातें निकल्यो होण ॥ प्रजाण ॥ लोकनी दृष्टें
 जणाय, ते हरिवल अटकल्यो होण ॥ तेण ॥ १ ॥ चढुटे
 वहेतां जुहार, जुहार ते सहु करे होण ॥ जुण ॥ ह

खिलने मनोहार, करे सहु नली परें हो० ॥ क० ॥
 इम करतां दरवार, ते मांहे आवियो हो० ॥ ते० ॥ जिहां
 बेठी परखव त्यांहे, उघांहे जावियो हो० ॥ उ० ॥ १॥
 नृपजन आदि परज, ते ऊठी सहुं मली हो० ॥ ते० ॥
 एक नृप विना बीजी परज, ते मनमें थड रली हो० ॥
 ॥ ते० ॥ पूठे मांहोमांहे, ते कुशलनी वारता हो० ॥
 ते० ॥ पाठो उत्तर हरिवल, दे दिल धारता हो० ॥ दे० ॥ ३॥
 प्रगटी होलीनी जाल ते, नृपना मन्नमें हो० ॥ नृ० ॥
 लागी अंगो अंग, अंगीठी तन्नमें हो० ॥ अं० ॥ बलि
 मंत्री कालसेननुं, कालजुं नीकळ्युं हो० ॥ का० ॥ श्याम
 वंदन थयुं तास, ज्युं श्याम नाजन तजुं हो० ॥ ज्युं० ॥ ४॥
 जाणे जहाज निमळ, थयुं दरिया वखें हो० ॥ थ० ॥
 तिम हरिवलने देखि, दो नृप मंत्री लचे हो० ॥ दो० ॥
 कारीमो रंग देखाडी, कहे मुखथी घणुं हो० ॥ कहे० ॥
 हरिवल देइ आदर, दे नृप वेसणुं हो० ॥ दे० ॥ ५॥ आ
 गत स्वागत कीध, घणी हरिवल तणी हो० ॥ घ० ॥
 पूठे सोज समाचार, नृप हरिवल नणी हो० ॥ नृ० ॥
 कही हरिवल तुमें लंका, गढ नणि किम गया ॥ हो० ॥
 ग० ॥ राय विनीपण केरा, समाचार किम थया हो० ॥
 स० ॥ ६॥ तव हरिवल ते खडग, करे लेइ नेटणुं ॥ हो० ॥

क० ॥ राय बिजीषणो मोकव्युं, ए तुम चेटणुं हो०
 ॥ ए० ॥ हवे हरिबल कहे सांजलो, स्वामी तुम नणुं
 हो० ॥ स्वा० ॥ लंका गढना समाचार, श्या कहुं तुम
 घणुं हो० ॥ श्या० ॥ ७ ॥ विकटा मारग आटां, कांटा ते
 घणा हो० ॥ कां० ॥ पंथें वहेतां आकरो, लाग्यो नही
 मणा हो० ॥ ला० ॥ इम करतां दुःख सहेतां, पूगो जल
 निधी हो० ॥ पू० ॥ कालामंवर जल नखां, खारो जलोदधी
 हो० ॥ खा० ॥ ७ ॥ लांबो पहोलो सहस, इसी योजन
 कह्यो हो० ॥ इसी० ॥ ते परमाणें महोढो, सागर
 जल जह्यो हो० ॥ सा० ॥ नाना महोढा मगर,
 मळ ते दीसता हो० ॥ म० ॥ वाघने सिंहने रूपें, दीसे
 हिंसता हो० ॥ दी० ॥ ७ ॥ चिहुं दिशिमें जल पूरी, दीसे
 वसुमती हो० ॥ दी० ॥ माणस पंखीमात्र न, दीसे ए
 क रती हो० ॥ दी० ॥ जलना लोढ चले ते, हिमा
 ला टूक ज्युं हो० ॥ हि० ॥ उठलें जल असमान,
 शिखा चढे हूं कहुं हो० ॥ शि० ॥ १० ॥ जाणे
 अघाढो मेह, ज्युं दरियो गाजतो हो० ॥ ज्युं० ॥ शूर
 सुजटनां मान, ते दूरें जांजतो हो० ॥ ते० ॥ एहवो
 जलधि नयंकर, देखी विहामणो हो० ॥ दे० ॥ जल
 में पगलुं देतां, मन धूज्यो घणो हो० ॥ म० ॥ ११ ॥

पण भुं करीये स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥
 कठिण कछुं तिहां मन, संनारी रामने हो० ॥ सं० ॥
 पाहुं केस बलाय जे, कामें नीकल्यो हो० ॥ के० ॥
 ॥ जे० ॥ मरण कबूल कछुं पण, पाठो नवि टल्यो
 हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना जे बोल, ते गजदंत
 नीसखा हो० ॥ ते० ॥ ते पाठा किम उंसरे, पंचमें
 उच्चखा हो० ॥ पं० ॥ पंचनी साखें बोल, जे बोली
 यो ते टले हो० ॥ जे० ॥ ते नरनारी जीवतां, मूथ्यां
 मां जले हो० ॥ मु० ॥ १३ ॥ वयण चूकां ते मान
 बी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥ इहजव परजव
 कार, गयो तस जिन जणे हो० ॥ ग० ॥ इम जाणीने
 स्वामी, तुमारा काजने हो० ॥ तु० ॥ बाढ्यो जलमें
 जीव, कठिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ बलिं
 एक हरिबल कौतुक, नी नृप आगलें हो० ॥ नी० ॥
 कल्पित वात करी कहे, ते सहु सांजले हो० ॥ ते० ॥
 जलमें गयो ज न आधो, ते हुं मन संवरी हो० ॥
 ते० ॥ तव एक राखस आव्यो ते, साहामो जल तरी
 हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥ कंचो तो जाणीये सप्त ए, ता
 ड प्रमाण ज्युं हो० ॥ ता० ॥ लांबो होठ ते जाणी
 ये, वंशसमान ज्युं हो० ॥ वं० ॥ दंता लोढा ताल;

करे करी कलमली हो० ॥ क० ॥ अवली सवली दो
 ट, दीये धसी जलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाणे
 आंखो दो उंमी, चूंमी मुंगर दरी हो० ॥ चूं० ॥ मांछुं
 महोदुं ते जाणीयें, हलपले धूंसरी हो० ॥ ह० ॥ मा
 ये कावरा केश, ते जाणीयें जांखरां हो० ॥ ते० ॥
 दंताली समा दांत, ते विरला आकरा हो० ॥ वि०
 ॥ १७ ॥ ताडसमा दो हाथ ते, राखस झोहना हो०
 ॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीयें, पावडा लोहना
 हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणियें उंमो, कूवो फूडनो
 हो० ॥ कू० ॥ थंन समान दो चरण ते, राखस नूं
 मनो हो० ॥ ते० ॥ १८ ॥ काल कंकाल समान, न
 थंकर नैरवो हो० ॥ न० ॥ जाणे यमनो बंधव, प्रग
 टयो अग्निनवो हो० ॥ प्र० ॥ क्रोधानलनी जाल ते,
 मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्टहास,
 ते कर दो पढाडतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मुआ
 साप ज्युं गंध, गंधाय डुर्वातनो हो० ॥ गं० ॥ उ
 दरथी निकले आहार जे, ते दिन सातनो हो० ॥ ते० ॥
 एहवो विहामणो राक्षस, ते साहामो मल्यो हो०
 ॥ ते० ॥ एक तो जलधि बीजो, राक्षस देखी बल्यो हो०
 ॥ रा० ॥ २० ॥ म्हें तव जाणियो जूनो, पूर्वज आवियो

॥ हो० ॥ पू० ॥ विवानीयब्रो, धर्घरणो जगादियो हो०
 ॥ घ० ॥ राज्यतुं काम सधावा में, तव बुद्धिकरी हो० ॥
 में० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो, राखसने भ्दें फरी हो० ॥
 रा० ॥ ११ ॥ आवो मामा जुहार, नाणेज तुमने करे हो०
 ॥ जा० ॥ द्यो अनेदान ते मामा, नाणेजने नलि परें
 हो० ॥ जा० ॥ स्वामी तुम्ह प्रसादयी, बुद्धि ए ठकली हो०
 ॥ बु० ॥ राजी ययो तव राखस, वाणी सुणी नली हो०
 ॥ वा० ॥ १२ ॥ पूढे राखस नाणेज, तुं इहां किहां थ
 की हो० ॥ तुं० ॥ किम तुं आव्यो जलधिमें, ते मुऊ
 कहे वकी हो० ॥ ते० ॥ तव हरिबल कहे मामा,
 मुऊ लंका तणो हो० ॥ मु० ॥ दाखवो मारग माह
 रे, काम ठे तिहां घणो हो० ॥ का० ॥ १३ ॥ जाबुं
 ठे नृप कारज, शीघ्र वतावलो हो० ॥ शी० ॥ तव रा
 खस कहे नाणेज, दीसे तुं वावलो हो० ॥ दी० ॥
 मीयां वावे चावे, चणा तुं ए नबुं हो० ॥ चा० ॥ श्यो
 तुऊ थाशरो नाणेज, लंकामें जवुं हो० ॥ लं०
 ॥ १४ ॥ चूसी ले तुऊ राखस, धोले दी ठतां हो० ॥
 धो० ॥ किम तुऊ पूरवें नाणेज, लंका गढ जतां हो०
 ॥ लं० ॥ जेहंथी निपजे काम, ते तेह करी शके हो०
 ॥ ते० ॥ बांध्यो गढो खाइ, बुधां त्यां बहु वके हो०

॥ बु० ॥ १५ ॥ चमक्यो चित्तमें स्वामि उखाणो सांजली
 हो० ॥ उ० ॥ घर सरखि नहि यात्र, ए वात में अ
 टकली हो० ॥ ए० ॥ तव में पूढ्युं स्वामी, राखसने
 ते बलि हो० ॥ रा० ॥ मुऊने बतावो मामा, लंका
 कूंची गली हो० ॥ लं० ॥ १६ ॥ किणिविधें मामा
 जवाये, लंका गढ हुं लहुं हो० ॥ लं० ॥ तव राखस
 कहे नाणेज, सांजली हुं कहुं हो० ॥ सां० ॥ त्रीजा
 उद्धासनी ढाल, ए पहेली उच्चरी हो० ॥ ए० ॥ लब्धि
 कहे नवि सांजली, आगें उजम धरी हो० ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राखस कहे मन्त्रिने, सांजली तुं नाणेज ॥
 जो जावुं तुऊ लंकमें, तो करि कहुं ते हेज ॥ १ ॥
 अगनी तुऊ काया दही, कर तुं रक्षा हब ॥ ते रक्षा
 पडी लेइने, सोपुं लंका तब ॥ २ ॥ इणिविधि तुं
 लंका लहे, बीजी विधि नवि कांय ॥ जो तुऊ बलें
 लंका गयो, तो तुऊ राक्षस खाय ॥ ३ ॥ राक्षस वय
 ए ते सांजली, में धायुं मनमांहि ॥ जीवित जो बाहायुं
 करुं, तो पण न रहे कांहि ॥ ४ ॥ रमणी राज्य ने रु
 डि ते, तन धन जे बलि प्राण ॥ एतां करे अलखाम
 णां, वाक्यवठलना जाण ॥ ५ ॥ ते जाणी तुम कार

जे, कीधु मरण कबूल ॥ इंधण काष्ठ मेली करी, करवा
 मांमहुं खल ॥ ६ ॥ चिता रची दोयजण मिली,
 कीधो अग्नि प्रगट्ट ॥ सलगाडी चय चिहुं दिगो, प्रगटी
 जाल त्यां जट्ट ॥ ७ ॥ तिण विचमें तुम किंकरें, जे
 पापात ते कीध ॥ देह दही तुम कारणों, करवा काज
 प्रसिद्ध ॥ ८ ॥ सामधर्मि यज्ञे प्रभु, कीधी काया
 होम ॥ घृत मयहुं ते परजली, जालज कठी धोम ॥
 ॥ ९ ॥ तेहनी जे रक्षा यज्ञ, बांधी पोटकी ठार ॥
 राखस ले गयो लंकमें, करवा मुज उपगार ॥ १० ॥
 राखस ते लेइ पोटकी, नृप नजरें करि नेट ॥ राय
 विजीपणें पूठियुं, शी करि तें ए नेट ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ जटियाणीनी देशी ॥ हवे राखस कर जोडी हो
 कहे थालस ठोडी रायने, ए तो लंकापति अवधारं ॥
 हुं जब सायर कंठें हो उपकंठें ठेक ते जायने, मुज
 बलियो आगार ॥ हवे ॥ १ ॥ तव एक पंथी बेठो
 हो में दीगे निग्रंथी पणो, ए तो सायर पेले पार ॥
 हुं गयो जब ते साहामो हो ते पण कहि मामो
 नणो, तुमें थावो मामा जुहार ॥ हवे ॥ २ ॥ में
 पण पूठियुं तेहने हो तुं केहने नरोसे इहां रह्यो, तव

बोव्यो पंथी सार ॥ राय विनीषण केरुं हो ठे सरणु
 जलेरुं मुज कछुं, ए तो जाणेज बोव्यो विचार ॥
 ॥ हवे० ॥ ३ ॥ तुम दरिसणनो अर्थी हो करि कर
 थी ठारनी पोटकी, मुज बांधी दीधी एह ॥ कहे रा
 खस तुम सयणे हो तुम नयणे मूकि ए पोटकी,
 ए तो जेट करी में तेह ॥ हवे० ॥ ४ ॥ इम राखस
 गयो कहिने हो ए तो वहीने फरी निज थानकें, तव
 चिंतवे विनीषण चित्त ॥ विस्मय पाग्यो मनमें हो
 राय जनमें ठोडी जाणके, ए तो राखसनी पोटकी
 दीत ॥ ५ ॥ एम हरिवल कहे नृपने हो घणे
 यत्नें नस्म करें ग्रही, मुज ठांटे अमृत तोय ॥ ए
 आंकणी ॥ विद्यावले करी शुद्धो हो मुज कीधो जी
 वतो देखतां, तिणे दीधो फरि अवतार ॥ सनमान्यो
 मुने स्वामी हो घणुं अंतरजामी पेखतां, मुज कीधो
 बहु उपगार ॥ ए० ॥ ६ ॥ लंकापति मुज पूठे हो
 ए गुं ठे तें काया दही, मुज मांमी कहो विरतांत ॥
 तव में लंकापतिने हो कहि यतनें मांमीने सही, एतो
 आपणा घरनी वात ॥ ए० ॥ ७ ॥ वीशालापुर नग
 री हो ठे सवरी सघला देशमें, ए तो महोटी पुण्य
 पवित्र ॥ मदनवेग त्यां राया हो सुखदाया सघला

नरेशमें, ए तो सोहे प्रजामें उत्र ॥ ए० ॥ ७ ॥ अंग
 जने परणावा हो जस पावा चिहुं दिशिमें प्रभु, एतो
 मांझो उहव रंग ॥ तिण कारण नृप मेले हो मन
 नेले सघलाञ्छं विभु, एतो तेडी ते आमंग ॥ ए० ॥
 ॥ ८ ॥ तेणें तुम आमंत्रवा हो ए तो मंत्रवा हर्ष हि
 ये धरी, तिणे तेडवा मूक्यो मुज ॥ ते माटे तुमें वे
 ला हो ए तो लगननी पहेला परवरी, तुमें आबोज्युं
 पडे स्रुज ॥ ए० ॥ १० ॥ तव लंकापति बोळ्यो हो मन
 खोजी कहे मुज आगजें, तुं सांनल पंथी सुजाण ॥
 में किम तिहां अवराय हो न जवराये निज जागजें,
 तो किम याय प्रयाण ॥ ए० ॥ ११ ॥ ते माटे
 तुमें कहेजो हो मुज मुजरो लेजो दिन प्रतें, तिहां
 वेठा विशाला मळ ॥ खड्गनी आ सहनाणी हो गुण
 खाणी मूकी तुम प्रतें, ए तो सघले कामें सकळ ॥
 ॥ ए० ॥ १२ ॥ एम कहिने विनीपणें हो मुने नृप
 ण देइ जडावनां, वली पूत्री पण मुज दीध ॥ तुम
 परसादे सांइ हो प्रभु मुज अंतर सांइ जावना,
 मुज कीधी विनीपणें रुद्ध ॥ ए० ॥ १३ ॥ घणे आमं
 घरें करीने हो जस वरीने मुज बोलावियो, निज पुत्री
 सहित महाराज ॥ वजि निज मेयक सायें हो ए

तो मूकी हाथे नलावियो, मुऊ लंकापति शुन आ
 ज ॥ ए० ॥ १४ ॥ विद्यावले पंथ काप्यो हो सुख
 व्याप्यो पलकमें ठूकडे, एतो जब थइ प्रचुनी लहेर ॥
 रजनी मध्य प्रदीपें हो निज नगरी समीपें रुंखडे, ए
 तो मूकी बलिया घेर ॥ ए० ॥ १५ ॥ हुं पण मंदिर आ
 यो हो सुख पायो प्रचुनी महेरथी, हुंतो जे गयो बीडुं ठ
 वेय ॥ फलि मुऊ चाकरी लंका हो देइ मंका आयो तुम
 लहेरथी, हुं तो लंकालाडी लेय ॥ ए० ॥ १६ ॥ ए सहना
 णी खड्गनी हो जे निपनी सर्गनी तुम नणी, एतो मूकी
 विनीषणें साच ॥ बलि तुमने कर जोडी हो मान
 मोडी प्रणिपत करी घणी, तुम सपगो कह्यो ए मुख
 वाच ॥ ए० ॥ १७ ॥ ए सहनाणी देखी हो मुने
 पेखी आव्या जाणजो, एतो अमने विवाहमांहि ॥
 बलि तुम सेवक जांखे हो मुख वचनें दाखे ते मा
 नजो, तुम मदनवेग उछांहि ॥ ए० ॥ १८ ॥ इणि प
 रें व्यतिकर सघलो हो नृप आगल मांमि परगलो, ए
 तो सपगो मञ्जि कहेय ॥ ते नृप सांजली वाणी हो मन
 जाणी हरिबल अटकल्यो, ए तो साहस धैर्य धरेय ॥
 ए० ॥ १९ ॥ सघली परषदा निशुणि हो मन हर
 णि सांजली वातडी, ए तो हरखित परषद होय ॥ ध

न्य करणी हरिवलनी हो गयगमणि लंका जातडी, ए
 तो परणी आणी सोय ॥ ए० ॥ २० ॥ नृप पण थं
 यो मन राजी हो शुन देइजाजी वयामणी, ए तो ह
 रिवल कीय प्रसन्न ॥ घणे आसंवरें करीने हो हरिव
 लने काथ पहेरामणी, ए तो मूक्यो निज आसन्न ॥
 ए० ॥ २१ ॥ गोखें वेठी देखे हो पियु आचतो पेखे
 रंगगुं, थइ नारी दो उल्लास ॥ दंपतीनी दो दृष्टि हो थइ
 सुधादृष्टि चंगुं, ए तो पहोती सयली आश ॥ ए० ॥
 ॥ २२ ॥ हवे हरिवल मतवालो हो ए तो दो गोरीनो
 नाहलो, ए तो सुख विलसे संसार ॥ प्रेम सुधारस
 प्यालो हो एतो पियुने वालो वाहलो, ए तो सफल करे
 अवतार ॥ ए० ॥ २३ ॥ जुवो जविया प्राणी हो मन
 जाणी जीव कगारीयो, एक जलचर जीव जो मद्य
 ॥ तो तस पुण्य प्रनावें हो शुन नावें जनम सुधारि
 यो, जह्यो मद्यी लब्धि सुलब्ध ॥ ए० ॥ २४ ॥ हुं बलिहा
 री तेहने हो ठे जेहने लेश्या धर्मनी, तस होवे सुर
 नर दास ॥ त्रिजा उल्लासनी पूरी हो बीजी ढाल स
 नूरी मर्मनी, ए तो पनणी लब्धि सुवास ॥ ए० ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें हरिवल नारीनी, डुविधा मूकी दूर

॥ जाग्यो जव मंदिर धणी, लाज्यो चोर मजूर ॥ १ ॥
 तिम नृप समजी मन्नमें, हरिबलशुं करे प्यार ॥ हरि
 बल पण सेवा करे, नृपनी ते दरबार ॥ २ ॥ हरिब
 लनी थइ वातडी, नगरि विशाला मज्झ ॥ लंका लाडी
 लावियो, परणी लज्ज सुलज्ज ॥ ३ ॥ ते वातो श्रव
 णें सुणी, कालसेन परधान ॥ परजले मनमें पापी
 यो, हरिबल सुणि जस वाण ॥ ४ ॥ दिनकर देखी घूक
 ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं,
 त्युं बले सचिव ते जोर ॥ ५ ॥ पण शुं करे पड्यो
 एकलो, जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीहा पाधरा,
 तस अरि अंधज होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ वांसे थ
 यो, हरिबलने ते छुष्ट ॥ ठल ताके ठलवा नणी,
 कालसेन उच्चिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन वेठो मालीये, मद
 नवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवियो, वेठो प्रण
 मी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन की
 राड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ ९ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इण सरोवरीयांरी पाल, आंवा दोय राउला ॥ ल
 लना ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबलनां वयण, वखाण ते
 नृप करे ॥ ल० ॥ खागी त्यागी निकलंक के, शूर सु

जट सरे ॥ ल० ॥ जो परधान ते एकलो, लंका गढ
 गयो ॥ ल० ॥ मादहं काज सुधारवा. बली नरुम थ
 यो ॥ ल० ॥ १ ॥ काढयो आपणो दो जणों, मलीने
 स्त्रीवती ॥ ल० ॥ टाढे पाणीयें वेगली, खस काढी ह
 ती ॥ ल० ॥ पण ते साहामुं लाढी, लंका लेइने ॥ ल० ॥
 आव्यो आपणो मंदिर, मंका देइने ॥ ल० ॥ २ ॥ तो में
 जाण्यो ए पूरण, जाग्य बली घणो ॥ ल० ॥ जामा
 ता थइ. आव्यो ए, लंका गढतणो ॥ ल० ॥ जाव्यो
 सहनाणी खड्गनी, नृपबुं मत करी ॥ ल० ॥ लंका
 पतिनी माहरी, दो राखी सरनरी ॥ ल० ॥ ३ ॥
 बुद्धि अकल परपंच ए, में दीतो सही ॥ ल० ॥ मद
 नवेगें मंत्रि आगल, वात ए सवि कही ॥ ल० ॥ काल
 सेनने पगथी, मांमी माथा जगें ॥ ल० ॥ प्रगटी जा
 ल ते सांजली, जागी थंगो थंगें ॥ ल० ॥ ४ ॥ बोव्यो
 मंत्री ताम, कहे रीजें बली ॥ ल० ॥ जलि तुम अ
 कल जे नरपति, हखिलनी कली ॥ ल० ॥ शुं तुमें
 जाणो स्वामी, ए धूरतनी कला ॥ ल० ॥ मानो स
 घलुं धोलुं ते, दूध करी जला ॥ ल० ॥ ५ ॥ मारे
 निंग अस्वंधने, अणघडीयां बली ॥ ल० ॥ गजनुं
 कलिंग तेमांहे, गज तेरनी कली ॥ ल० ॥ अंधे दी

तो चंड, अमासनी रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिवल
 नी ए मानजो, नृप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ शुं
 जाणी प्रभु वयण, वखाण करो तुमें ॥ ल० ॥ ए दं
 जीनां सयल, चरित्र लहुं अमें ॥ ल० ॥ जे परदेशी
 लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ नाटक चेटक जाणे,
 वादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट परपंच,
 करी कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कडीयें
 कडी मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फरे अइ ठेल
 सा ॥ ल० ॥ मोडा मोडी करे घणा, धोवी बेलसा ॥
 ॥ ल० ॥ ८ ॥ बेसी परजमें वातो, करे महोटी करी ॥
 ॥ ल० ॥ मिंगे मिंग चलावे ते, लोक जाणे खरी ॥
 ॥ ल० ॥ साची जूठी करे ते, मुखें न लगाडीयें ॥
 ॥ ल० ॥ श्वान बोलाव्युं चाटे ते, वदन बिगाडीयें ॥
 ॥ ल० ॥ ए ॥ ते माटे तुमें स्वामि, सही करी मान
 जो ॥ ल० ॥ कपटीमां शिरदार ए, हरिवल जाणजो
 ॥ ल० ॥ किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥
 ॥ ल० ॥ अणमलती ए वात, घडी एणें बुत्रिका ॥ ल० ॥
 ॥ १० ॥ ए तो कोशक धूर्त, पणे करी वातडी ॥ ल० ॥
 परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम जातडी ॥ ल० ॥ ना
 म लिये निज आप, वधारवा अणघडी ॥ ल० ॥

किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥ ११ ॥
 शी दुनियामें खोट, पडी हती पुरुपनी ॥ ल० ॥ लं
 कापतियें कीध, सगाइ ए पुरुपनी ॥ ल० ॥ नवकुल
 नाग विहेद, गया जब महितलें ॥ ल० ॥ आव्युं का
 कीडाने, राजसरे ते अणमिलें ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उ
 खाणो सांचली, नृप तुमें धारजो ॥ ल० ॥ तिम ह
 रिवलनी वातो ए, साची ठारजो ॥ ल० ॥ जो लंका
 पति केरो, जमाइ साचो हरो ॥ ल० ॥ तो तुम
 नोतरी मंदिरें, जमवा तेडरो ॥ ल० ॥ १३ ॥ तेहने
 मिशें जइ आपणें, नारी दो जोइयें ॥ ल० ॥ उत्तम
 मध्यमनी गति, दो कुल सोहियें ॥ ल० ॥ इणि परें
 मंत्रियें नृपना, कान जंजेरीया ॥ ल० ॥ नृपना मन
 ना कपाय, छुजंग ठंठेरीया ॥ ल० ॥ १४ ॥ जूठ कु
 बुद्धी मंत्रीयें, चकमक पाडीयो ॥ ल० ॥ हरिवल उ
 पर देपनो, सिंह जगाडीयो ॥ ल० ॥ इणि परें मंत्रि
 यें हरिवल, नी कुबुद्धियें ॥ ल० ॥ नृप मन फेरव्युं जा
 ए, हरिवल रुद्धियें ॥ ल० ॥ १५ ॥ इम नृप मंत्री
 दो जण, मलि गोमो रचे ॥ ल० ॥ जमण मिशें दो
 नारीने, जोया नृप लचे ॥ ल० ॥ एहवो संकेत करे
 जिहां, नृप मंत्री मली ॥ ल० ॥ तिण अवरसर तिहां

आव्यो, अजाणे हरिवली ॥ ल० ॥ १६ ॥ आगत
 स्वागत हरिवल, नी ते नृप करे ॥ ल० ॥ बांढ पसारी
 आवो, आघा आसण धरे ॥ ल० ॥ वेठा एकण गा
 दीयें, हरिवल नृप जिहां ॥ ल० ॥ मुखथी साकर
 घोलतो, बोव्यो मंत्री तिहां ॥ ल० ॥ १७ ॥ हवे करे
 मंत्री हरिवलनी, खुश मशकरी ॥ ल० ॥ हरिवल
 हर्षे एहवी, बोली उच्चरी ॥ ल० ॥ कहो हरिवल
 तुमें लंका, लाडी लाविया ॥ ल० ॥ राय बिजीषण
 केरा, जमाई जाविया ॥ ल० ॥ १८ ॥ पण एक नो
 तरुं तेहनुं, तुम कने मागीयें ॥ ल० ॥ लेखावटनी
 जागति, ते नवि जांगीयें ॥ ल० ॥ लाखनी बगसिस
 कोडि, हिसाब न चूकीयें ॥ ल० ॥ ठे संसारमां री
 ति ए, ते किम मूकियें ॥ ल० ॥ १९ ॥ गडदानो पण
 जाग, नथी कोइ मूकता ॥ ल० ॥ तो किम मूकचुं जम
 ण, अमारुं ठतावतां ॥ ल० ॥ वाइना कात्यामां जा
 ग ते, कोइनो पाड ठे ॥ ल० ॥ इम हरिवलने मंत्री,
 कहे हस्त चाड ठे ॥ ल० ॥ २० ॥ इणि परें हास्य कु
 तूहल, नी करी मंत्रीयें ॥ ल० ॥ समज्यो मनमां
 हरिवल, सांजली गंत्रीयें ॥ ल० ॥ पापी कुमति मं
 त्रीयें, चकमक जेरियो ॥ ल० ॥ जमण तणो मिश

काही, नृपने जंजेरियो ॥ ल० ॥ २१ ॥ एहेवा दुष्ट
 कुबुद्धि ते, कां जर्गे अवतखा ॥ ल० ॥ यमने मंदिरें
 कां न, गया जे गलि जखा ॥ ल० ॥ परनिंदा करता
 फरे, दुष्ट सुसाधनी ॥ ल० ॥ खावे उखर निंदकी,
 काक जुं वाधनी ॥ ल० ॥ २२ ॥ तप जप क्रिया क
 ष्ट, करे जे निंदकी ॥ ल० ॥ ते मरि जाये नरग, नि
 गोवें ए वकी ॥ ल० ॥ जारे कर्मी जीव, कहा ए जि
 नवरें ॥ ल० ॥ इह जव परजव सुखने न, देखे नली
 परें ॥ ल० ॥ २३ ॥ पारकां विष् जूवे ते, निंदकी
 वोकडा ॥ ल० ॥ देवकीवंशें ते कपजे, ए फल रोक
 डां ॥ ल० ॥ समजू यज्ञे जीव, करे निंदा पारकी ॥
 ॥ ल० ॥ ते जीवने किम लेती नथी, चंमा वारकी ॥
 ॥ ल० ॥ २४ ॥ इम हरिबल मन समजी, खुणस रा
 खी रह्यो ॥ ल० ॥ खेलणुं दाव ते अवसर, थावे जे
 लह्यो ॥ ल० ॥ गुडथी मरे जे जीव ते, विपथी न
 मारीयें ॥ ल० ॥ ए वखाणो लोक, कहे ते संचारियें
 ॥ ल० ॥ २५ ॥ इम धारी मनमांहि ते, हरिबल वो
 लीयो ॥ ल० ॥ व्यो प्रभु लंकाजोनन, वचन ए खो
 लीयो ॥ ल० ॥ नगरि समेत जे परखद, लेइ पथा
 रजो ॥ ल० ॥ करणुं टहेल ते सगति, सारु अवधा

रजो ॥ ल० ॥ १६ ॥ इम कही नृपने प्रणमी, हरि
वल उठीयो ॥ ल० ॥ पण हवे नृपने मंत्रीने, जगदीश
रूठीयो ॥ ल० ॥ त्रीजा उल्लासनी ठाल ए, त्रीजी प्र
री थई ॥ ल० ॥ लब्धि कहे जवि सांजलो, जे आगे
जई ॥ ल० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिवल घरे आवियो, बेठी नारी दोय ॥
आवतो दीगो नाहने, ऊठी प्रणमे सोय ॥ १ ॥ निश
जर वेठां रंगमें, दंपति करे कल्लोल ॥ प्रेम सरोवर
जीलतां, निगमे राति टकोल ॥ २ ॥ हरिवल कहे प
टनारीने, सांजल प्रिया मुळ वात ॥ लंका लाडी ले
हणुं, ते नृप मागे लांच ॥ ३ ॥ पंच समद्धें मंत्रीयें,
माग्युं चोजन सार ॥ तव हुं नृपने नोतरी, आव्यो
हुं आगार ॥ ४ ॥ तव पटनारी कंतने, कहे पियु सां
जल मुळ ॥ एक वार नृप तेडतां, लाज वली नही
तुळ ॥ ५ ॥ नकटी देवी देवळें, सरड पूजारो जेम ॥
लोक उखाणो जे कहे, प्रीतम ठो तुमें तेम ॥ ६ ॥
वलि शी शक तुम धाड्यो, प्रीतम बीजी वार ॥ ते हुं
इम जाणुं अबुं, शान गइ तुम सार ॥ ७ ॥ देखी पे
खी कूपमें, दीपक जेइ पडो हब ॥ नृप मंत्री मीतुं

बने, ते तमें मानो सब ॥ ७ ॥ मीठा बोला मान
 बी, केम पतीजां जाय ॥ नीलकंठ मधुरं लवे, साय
 सपुष्टो खाय ॥ ८ ॥ तेहनी ने ए जातडी, नृप मंत्री
 दो लंठ ॥ चूक करी तुमने प्रभु, करशे स्त्री दो जंम
 ॥ ९ ॥ ते माटे स्वामी तुमें, म करो कोइ विसास ॥
 एतां कबहि न धीरियें, जो वंठो तन आश ॥ १० ॥
 जेप छुजंगम जामिनी, महंत ने नूपाल ॥ ए पांचने जे
 धीरशे, ते नर पामशे काल ॥ ११ ॥ यम वेश्या दा
 सी नदी, अग्नि जूझारी काल ॥ ए साते नही आप
 णां, प्रीतम निज संजाल ॥ १२ ॥ तव प्रीतम बलतुं
 कहे, हरिलंकी निमुणोह ॥ जो मुऊ दीहा पाधरा,
 छुं नृप करशे तेह ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रीतमसेंती वीनवे ॥ अथवा हो मत बोले सा
 जनां ॥ ए देशी ॥ हारे लाल एहवो जबाप ते धीवरें,
 वसंत सिरीने दीध ॥ मोरालाल ॥ नोजननी जे जो
 श्यें, मेली सामग्री सुसिद्ध ॥ मोरा लाल ॥ १ ॥ सार
 निपाई रसवती, जेहवी कही सूर्यपाक ॥ मो० ॥ एक
 जो कवल तेपेटमां, उतरे तो चढी रहे ठाक ॥
 ॥ मो० ॥ २ ॥ हारे लाल सागर देव पसायथी,

नोतखां नगरी लोक ॥ मो० ॥ नृपने पण दिखे
 नोतरुं, श्रीफल लेइ करे ढोक ॥ मो० ॥ सा० ॥
 ॥ ३ ॥ हां० ॥ शाला करि चउ चिहुं दिशें, पंचरंगी
 बनात ॥ मो० ॥ जरतारी मेरा किया, केडें बांधि क
 नात ॥ मो० ॥ सा० ॥ ४ ॥ हां० ॥ नर नारीनी पांत
 मां, मांमया सोवन आल ॥ मो० ॥ रतन कचोलां
 शाकनां, मांमया जाक ऊमाल ॥ मो० ॥ सा० ॥ ५ ॥
 ॥ हां० ॥ कुमर कुमारी पांतमां, तिहां पण मांमया
 आल ॥ मो० ॥ बारें दरवाजे जइ, तंडुल ठवे उज
 माल ॥ मो० ॥ सा० ॥ ६ ॥ हां० ॥ जोजन वेलाने
 समे, हरिबलें तेडां कीध ॥ मो० ॥ राउ राणा नग
 री जना, बेठी पांत प्रसिद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ ७ ॥
 ॥ हां० ॥ ठयल ठबीला ठोगालुआ, रसिया वालम
 जेह ॥ मो० ॥ जांग अमल चढाश्ने, खाश्म फेरा
 तेह ॥ मो० ॥ सा० ॥ ८ ॥ हां० ॥ प्रीसे पांतें प्रीस
 णां, सुखडी एकविश जाति ॥ मो० ॥ मेवा मीठी
 जातना, प्रीसे पांतिमां खांति ॥ मो० ॥ सा० ॥ ९ ॥
 ॥ हां० ॥ घेवर पेंडा मोतीया, कसमसीया कर्णसाई
 ॥ मो० ॥ ऊरमरीया सिंह केसरी, लाखणसाइ स
 वाई ॥ मो० ॥ सा० ॥ १० ॥ हां० ॥ सिरा सुंहाजी

लापशी, गुंदबडा गुंदपाक ॥ मो० ॥ मर्कि लप्तेवी दे
 समी, मेहेसु पतासां आक ॥ मो० ॥ सा० ॥ ११ ॥
 ॥ हां० ॥ व्यंजन केही जातिनां, खारां खाटां तिरक
 ॥ मो० ॥ खडका ने ब्रडका घणा, हिंग वधाखा
 हविस्व ॥ मो० ॥ सा० ॥ १२ ॥ हां० ॥ मांहोमांहि
 ते एकमना, मांने रसिया वाद ॥ मो० ॥ श्रवला
 सबला जूफता, करे ते जोजन स्वाद ॥ मो० ॥ सा० ॥
 ॥ १३ ॥ हां० ॥ शूर सुजट रण खेतमें, ज्युं लडे कर
 ता चोट ॥ मो० ॥ तिम रसिया लडे जोजनै, कर
 मुखशुं करे दोट ॥ मो० ॥ सा० ॥ १४ ॥ हां० ॥
 शाल दाल ने धृतसरा, चाली ज्युं नदीनीक ॥ मो० ॥
 रसिया राजन जन जम्या, स्वादे करीने ठीक ॥ मो० ॥
 ॥ सा० ॥ १५ ॥ हां० ॥ सारनी नीपाइ रसवती, जे
 हमां कांइ नवि दुःख ॥ मो० ॥ नगरी जन सहुको
 जमी, काढी सघली नूख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १६ ॥
 ॥ हां० ॥ कपूर कस्तूरी वासिया, जलशुं करे मुख
 शु६ ॥ मो० ॥ पान सोपारी एलची, तंबोल दे मन
 शु६ ॥ मो० ॥ सा० ॥ १७ ॥ हां० ॥ पहेरामणी सहु
 ने करी, नर नारी विस्तार ॥ मो० ॥ मुझानी करी द
 हिणा, वरताव्यो जयकार ॥ मो० ॥ सा० ॥ १८ ॥

॥ हां० ॥ जशपडहो वजडावियो, नगरीमांहे विख्या
 त ॥ मो० ॥ वातडी चाली चिहुं दिशें, हरिखल केरी
 ख्यात ॥ मो० ॥ सा० ॥ १९ ॥ हां० ॥ हवे सुणजो
 रसीया तुमें, जमता जे थइ वात ॥ मो० ॥ नृपने
 प्रिसवा नारी दो, आवी शोजित गात ॥ मो० ॥ सा०
 ॥ २० ॥ हां० ॥ नृप जमतां नूली गयो, निरखी दो
 स्त्री रूप ॥ मो० ॥ विकलेंडिय थयो राजवी, पडियो
 मोहने कूप ॥ मो० ॥ सा० ॥ २१ ॥ हां० ॥ काम
 ज्वर व्याप्यो घणो, नृपने तेह अथाह ॥ मो० ॥ नृ
 प जाणे दो कर ग्रही, ले जाउं मंदिरमांह ॥ मो० ॥
 ॥ सा० ॥ २२ ॥ हां० ॥ मूर्च्छागत थयो राजवी, मोह
 बाण लागां असेच ॥ मो० ॥ विषयारसने कारणें,
 पडियो गडदापेच ॥ मो० ॥ सा० ॥ २३ ॥ हां० ॥
 नृपने घाली पालखी, ले गया निज दरबार ॥ मो० ॥
 जाणें जमने मंदिरें, नृप गयो जाणे संसार ॥ मो० ॥
 ॥ सा० ॥ २४ ॥ हां० ॥ पूरव जवनी वेरणी, वसंत
 सिरी दो नारि ॥ मो० ॥ चित्त हलुं हरिणाहीयें, नृ
 पनुं उताळुं वारि ॥ मो० ॥ सा० ॥ २५ ॥ हां० ॥ वैद्य
 वोलाव्या तिहां कणें, पकडी जुए वांह ॥ मो० ॥ वै
 द्य विचारा शुं करे, करक ते कालजामांह ॥ मो० ॥

। सा० ॥ २६ ॥ हां० ॥ आय ठपाय करे घणा, टे
 ही न लागे कोय ॥ मो० ॥ जेणें वीधी वेदना, दूर
 हरेणो सोय ॥ मो० ॥ सा० ॥ २७ ॥ हां० ॥ जो जो
 हरणी करमनी, नृप थयो ते असराल ॥ मो० ॥
 श्रीजा वज्रासनी ए कही, लव्ये चोथी ढाल ॥ मो० ॥
 । सा० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणा जोपी जाण जे, परवंधी कहे आय ॥ मु
 व पोयां दूरें रक्षां, जोर न चाल्युं कांय ॥ १ ॥ तिण
 उमे मेहर मंत्रवी, फरि कीधो उपचार ॥ कोकशास्त्र
 एणें बलें, नृपने कखो करार ॥ २ ॥ मेहरमंत्री जस्त
 तह्यो, नगरी विशाला मज्जा ॥ वाह वाह सहु को क
 ३, मंत्री महोटा सकज्जा ॥ ३ ॥ मेहर चिंते चित्तमें,
 नृपने न बली शान ॥ न बले ज्युं खटमासनी, पांथ
 ४ पूंठडी श्वान ॥ ४ ॥ बली केताइक दिन गया, नृ
 ५ ने करतां केलि ॥ बली नृप कामें व्यापियो, वसंत
 ६ श्रीनी चढि वेलि ॥ ५ ॥ तिण अवसर नृप मंत्रीने,
 ७ ढेढायो ते छुष्ट ॥ ते पण आव्यो नृप कने, काल
 ८ तेन ते छुष्ट ॥ ६ ॥ प्रणमी नृपने मंत्रवी, वेगो पासें
 ९ रज्जिक ॥ नृप कहे मंत्री आगलें, सांजल मंत्री ठीक ॥

॥ ७ ॥ प्यारी प्राण ते ले गइ, पिरसण आवि जिवा
 र ॥ तन मन सुध जुली गयो, मंत्री देखत वार ॥
 ॥ ८ ॥ मन लाग्युं ते ऊपरें, जिम मन केतकी चंग ॥
 तिम मंत्री तुं जाणजे, रह्यो मुज जिउ तस संग ॥ ९ ॥
 लागी लगन ललना तणी, शुं कहुं मंत्री तुज ॥
 लालच रहे मुज तेहनी, सुण तुं मंत्री गुज ॥ १० ॥
 ते माटे मंत्री तुमें, कोइक करो विचार ॥ बल बल
 कल ते केलवी, मेलवो ते दो नार ॥ ११ ॥ मानिश
 तुज उपगारडो, आइश नही गुण चोर ॥ जीवित
 सूधी ताहरी, अहनिश राखिश होर ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ठोगलो ॥ मा
 रुजी ॥ ए देशी ॥ हवे बोव्यो मंत्री ताम, कुटिल का
 लसेन ते ॥ साहेवजी ॥ तुमें सांजलो स्वामी नाथ,
 प्रजाना पाल ते ॥ साहेवजी ॥ प्रभु शुं तुमें एहने ते
 डी, आघो गुण करो ॥ सा० ॥ निज घरनुं सवहुं
 सोंपी, आपोपुं शुं वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गर्दजने
 जिम, गुरव रंगी दैववो ॥ सा० ॥ तिम हरिवलने प्र
 भु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ वलि गर्दज पासं
 शालि, जेजाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ दूध

ने व्याल, उबेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमैं इणि
 परें राजन साबो, उखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदे
 शी अजाण ते दुर्जन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥
 ए तो बेरी तुमचो प्रगट्यो, रुधिरने शोपवा ॥ सा० ॥
 तुम हृदये नारीनी जाल ते, घाली दोपवा ॥ सा० ॥
 ॥ ३ ॥ ए तो ते माटे प्रभु, जगतो बैरी ठेदीयें ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो काल कंटकने ठेदतां, धर्म न वेदीयें
 ॥ सा० ॥ ए तो शुं तुमैं स्वामी, मोठे लगाडो एहने ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो कपटीमां शिरदार, में दीगो तेहने ॥
 ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए तो कपटें करीने काढी, लाव्यो
 नारी दो ॥ सा० ॥ वली लाव्यो अखूट खजानो, धू
 ती सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो जाणजो स्वामी मद्दो
 टो ठे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम आगें मारे मिं
 ग, असंबंध जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु तुमैं मा
 नी साची, जाणि सवी कही ॥ सा० ॥ पण हूं जाणुं
 इणो कल्पित, वात करी सही ॥ सा० ॥ ए तो एहनां
 शो विश्वास, करो तुमैं राजवी ॥ सा० ॥ ए तो एह
 ना स्वाधामां पाणी, न मागे ते मानवी ॥ सा० ॥ ६ ॥
 ए तो शी लंका शी लंका, गढना नाथनी ॥ सा० ॥
 ए तो समुद्र जळपी जावुं, ते सुदकल साथनी ॥ सा० ॥

ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाठो नावतो ॥ सा० ॥
 ए तो महोटा मगरमड्ड, मुखें गली जावतो ॥ सा० ॥
 ॥ ७ ॥ तव आपणुं नाथजी महोदुं, जोर ते फावतुं
 ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थावत, सघलुं
 जावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने
 आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंडहास्य, खड्ग दो
 लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यो धा
 इने, रोटी ले गयो ॥ सा० ॥ बली काकतालीनो
 न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो
 जाणजो हरिवल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम
 आगल फूव्यो ए वृद्ध, चोलो मोमर थइ ॥ सा० ॥
 ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने सूकीयें, स्वामी यमवरे ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो काढीयें आनड ठेट ते, दूरें जली परें
 ॥ सा० ॥ ए तो हवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धें चाल
 शो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, साथें
 मालशो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांजन,
 मंत्री माहरी ॥ सा० ॥ हवे आज पठें कदि आप
 न, लोपुं ताहरी ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात करी
 तें, मंत्री ते खरी ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेठी माहरे,
 मनडे सहचरी ॥ सा० ॥ ११ ॥ पण ते हवे मंत्री

वात, पड़ो कोइ अतिनयी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं
 जेहवी कार्य, सीजे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरि
 लनो जे शय्य ठे, ते कादो परो ॥ सा० ॥ ए तो आप
 ए मंदिर रामा, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥
 तब मंत्री बोळो नृपने, प्रणमी डुट ते ॥ सा० ॥
 एह वातहुं बीहुं ठवुं हुं, हुं थइ पुष्ट ते ॥ सा० ॥
 तुम बुद्धि वताहुं सामी, एहवी दिल ठरे ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो जे बलवी नवि सीजे, काम ते कल
 करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हवे ते माटे तुमें सजा, मध्यें
 चेसीने ॥ सा० ॥ तुमें यम नोतरवा हरिबल, मूको बिह
 तिने ॥ सा० ॥ जब बीहुं ठवशे हरिबल, ते चित्त राखणुं ॥
 सा० ॥ तब वाली जाली खाख, करीने नाखणुं ॥
 सा० ॥ १४ ॥ विण पश्ये आपणि दूर, विराध ते जा
 यशे ॥ सा० ॥ तब शशिवयणी मृगनयणी, आप
 णी आयशे ॥ सा० ॥ नवि शोने वायस कंठें, रयण
 नो हार ते ॥ सा० ॥ ए तो ठे तुम लायक नाथजी,
 नारि श्रीकार ते ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन हरख्यो महि
 पति मंत्रिनी, वाणी सांजली ॥ सा० ॥ ए तो जली
 बुद्धि वताइ ते, सुखदायीमां जली ॥ सा० ॥ इम दो ज
 ए मलीने परठ, कखो नृप मंत्रीयें ॥ सा० ॥ यम नो

तरवानो मिश करि, हरिवल यंत्रीयें ॥ सा० ॥ १६ ॥ इ
 म दुर्मति दीधि नृपने, काल सेन ते ॥ सा० ॥ हरि
 लने चुकवा दो जन, रहे लय लीन ते ॥ सा० ॥ पण
 एतुं न जाणे मूरख, दो जण खूट ते ॥ सा० ॥ किए ठा
 णे कियो कडणे, वेसरो ऊंट ते ॥ सा० ॥ १७ ॥ जीवलालचि
 यो थइ आकरि, बांधी मोहनी ॥ सा० ॥ कोडा कोडी साग
 र सत्त्वर, लहे दुःख सोहनी ॥ सा० ॥ लाख चोराशी
 जीवा जोनिमें, जीव ते बहु रजे ॥ सा० ॥ पण तो
 हि पाप नोगवतां, साटुं नवि वजे ॥ सा० ॥ १८ ॥
 ए तो काटें काट वजे जिम, लोहने जाजनें ॥ सा० ॥
 तेस जीवने कर्म कर्म, बधे सूसाजने ॥ सा० ॥ ए तो पर
 निंदा परशोह, करे जे आकरा ॥ सा० ॥ तेणें दीधां
 शिवपद वारणें, आडां जांखरां ॥ सा० ॥ १९ ॥ ए तो
 कंचन कामिनी ए दो, सारु बापडा ॥ सा० ॥ जीव
 बांधे निकाचित कर्म, गजनीनां कापडां ॥ सा० ॥ जी
 व जटके वार अनंती, नरक निगोदमां ॥ सा० ॥ ए
 तो सुखा वाडर थइ फरे, गज ते चौदमां ॥ सा० ॥
 २० ॥ ए तो कंचन कामिनी सारु, जीव चंनाव ते ॥
 सा० ॥ ए तो इहजव पगजव चोर, थइ दंमाव ते ॥
 सा० ॥ जिन मीनी देखे दूध, न देखे मांगडी ॥ सा०

॥ તિમં જીવ ન દેસે કરણી, આગેં અધલાકડી ॥
 સાળા ૨૧ ॥ ઇમ જાણતો જીવ ચેતે નહિં, કર્મના જોર
 થી ॥ સાળા ॥ એ તો જ્ઞાન ક્રિયા દો નવિ ગમે, કર્મ કરો
 રથી ॥ સાળા ॥ ઇમ મંત્રી વાંધે નિકાચિત, કર્મને કાલ
 તે ॥ સાળા ॥ એ તો હરિવિલ અપર દેપ, ધરે ચંમાલ તે ॥
 સાળા ॥ ૨૨ ॥ વિણ રુને મંત્રિ વાંસે થયો, દીશાશૂ
 લ તે ॥ સાળા ॥ પણ નૃપ મંત્રીનાં મુખમેં, પડશે ધૂલ
 તે ॥ સાળા ॥ કોઈ વાતેં પાપી વીહે નહી, મંત્રી વ્યાલ
 તે ॥ સાળા ॥ પણ અંતેં જાતાં વહેશે, પાણી ઢાલ તે
 ॥ સાળા ॥ ૨૩ ॥ એ તો સાહિબને ઘરે જોતાં, લેખું એક
 ઠે ॥ સાળા ॥ રૂઢી જૂંમીનો જોનારો, પ્રજૂ નેક ઠે ॥ સાળા
 એ તો કાલ પ્રસ્તાવને યોગેં, કરણી સંજાલશે ॥ સાળા ॥
 તવ દૂધને જલનો વેહરો, કરિ દેસાડશે ॥ સાળા ॥ ૨૪ ॥
 એક સમકિત વિના જે જીવને, ઘોર અંધાર ઠે ॥ સાળા
 નિશિ દિન ઘન ઘાતી કર્મનો, જર્મ વધાર ઠે ॥ સાળા
 પુદ્ગલ પરાવર્તન કાલ, થનંતો તે કરે ॥ સાળા ॥
 જપ તપ ક્રિયા કષ્ટ કરે તે, સવિ નિઃફલ ચરે ॥ સાળા
 ॥ ૨૫ ॥ જેહને ઘટ અંતર સમકિત, કેરી જ્યોતિને ॥
 સાળા ॥ તસ અનુજવ મુસ્મણિ ચંઠિત, મુલ્ય ઓત ઠે
 ॥ સાળા ॥ તસ જાગેં જ્યોતિ સરૂપીનું, રૂપ તે ઓજાવે ॥

सा० ॥ चिदानंद ते आनंदमें लहे, शिव सुख जिन
 लखे ॥ सा० ॥ १६ ॥ जेहनी करणी शुन महोटी, ठे
 संसारमें ॥ सा० ॥ तस वास कह्यो जगवानें, सुख आ
 गारमें ॥ सा० ॥ ए तो ढाल कही शुन पांचमी, त्री
 जा उद्धासनी ॥ सा० ॥ ए तो लब्धि कहे जवि सुण
 जो, आगें सुवासनी ॥ सा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इण परें परठ करी जलो, नृप मंत्री जण दोय ॥
 पहोता निज निज मंदिरें, चूप धरी मन सोय ॥
 ॥ १ ॥ बीजे दिन नृप मंत्रियें, किधी कचेरी सार ॥
 चामर ठत्र विराजते, वेगो तखत उदार ॥ २ ॥ ठ
 त्रिश राजकुली मली, वड वडा ते सामंत ॥ खान
 उमराव ते आविया, परखदमें माहंत ॥ ३ ॥ ह
 खिल पण तिहां आवियो, वेगो नृपनी संग ॥ एक
 ण गादी विराजता, जाणे शशि रवि चंग ॥ ४ ॥
 हवे नृप तेडुं मोकले, वणिकनें घर घर सार ॥ महा
 जन समसत मेलियां, मूकी निज तलार ॥ ५ ॥ वड व
 खती व्यवहारिया, माही माना जेह ॥ माही मति ठे
 जेहनी, मलिया ते गुणगेह ॥ ६ ॥ दानें मानें आगला,

बीसता जडधार ॥ धनद जेहारी सारिखा, राखे मड
 व्यवहार ॥ ७ ॥

॥ टाल ठठी ॥

॥ लूहारण जायो दीकरो ॥ सोजागी हे ॥ आयो मास
 वसंत के ॥ लाल सोजागी हे ॥ ए देशी ॥ माहाजन
 साथें सहू मली ॥ सो० ॥ पहेरी जला शणगार के
 ॥ ला० ॥ निज निज घरनां जेटणां ॥ सो० ॥ ले आ
 या दरवार के ॥ ला० ॥ १ ॥ श्रीवंत श्रीमंत सातशें
 ॥ सो० ॥ शंकर शंखु सगाल के ॥ ला० ॥ सूरचंद
 सूरु सूरजी ॥ सो० ॥ सोजागी सुंदर साल के ॥
 ॥ ला० ॥ २ ॥ मानो मीठो मालजी ॥ सो० ॥ मा
 एक मोतीलाल के ॥ ला० ॥ जेठो जगसी जीवणो
 ॥ सो० ॥ जगजीवन जगमाल के ॥ ला० ॥ ३ ॥
 थानो थोण थारु ॥ सो० ॥ जाणो नीमो नया
 न के ॥ ला० ॥ कीको केशव करमसी ॥ सो० ॥ क
 ल्याण करमी कान के ॥ ला० ॥ ४ ॥ दूदो देवो देव
 सी ॥ सो० ॥ दीपो दानो दयाल के ॥ ला० ॥ प्रेमो
 प्रेमजी पेमसी ॥ सो० ॥ पुरो ने पुण्य पाल के ॥
 ॥ ला० ॥ ५ ॥ नेणो नेणसी नागजी ॥ सो० ॥ ना
 थो नथमल नील के ॥ ला० ॥ रेवो रवजी रंगजी ॥

॥ सो० ॥ रांको रंगो रंगील के ॥ ला० ॥ ६ ॥ बाघो
 वेलो बालजी ॥ सो० ॥ वीरो ने वीरचंद के ॥ ला० ॥
 हेमो हीरो हर्षसी ॥ सो० ॥ हंसो ने हरचंद के ॥
 ॥ ला० ॥ ७ ॥ गोडीदास गलालजी ॥ सो० ॥ गांगो
 ने गोपाल के ॥ ला० ॥ गणजी गणेश ने गांगजी ॥
 ॥ सो० ॥ गोविंद गोरो गलाल के ॥ ला० ॥ ८ ॥ ख
 वो खीमो खेमजी ॥ सो० ॥ खागोने खुशाल के ॥
 ॥ ला० ॥ तारो तुलशी त्रीकमो ॥ सो० ॥ त्र्यंबकने
 त्रिभुवन के ॥ ला० ॥ ९ ॥ शिवो सेवक श्यामजी ॥
 ॥ सो० ॥ शामो ने शिवचंद के ॥ ला० ॥ सारो शिव
 शी शामजी ॥ सो० ॥ साचो साकर वृंद के ॥ ला० ॥
 ॥ १० ॥ इत्यादिक व्यवहारिया ॥ सो० ॥ मलिया
 माहाजन साथ के ॥ ला० ॥ नेट नली नृपने करी ॥
 ॥ सो० ॥ वेठा प्रणमी नाथ के ॥ ला० ॥ ११ ॥ इणि
 परें सद्गु नगरी जना ॥ सो० ॥ मेढ्या वर्ण अठार के
 ॥ ला० ॥ बेठी परखद सद्गु मली ॥ सो० ॥ नृपने
 करीने जुहार के ॥ ला० ॥ १२ ॥ हवे नृप अवसर
 जोइने ॥ सो० ॥ बोळो वयण विचर के ॥ ला० ॥
 बीहुं यम आमंत्रवा ॥ सो० ॥ मूके पंच समर के
 ॥ ला० ॥ १३ ॥ रे सामंतो सांनजो ॥ सो० ॥ बीहुं

ग्रहो तुम एह के ॥ ला० ॥ यमने नीतरुं देइने ॥
 ॥ सो० ॥ तेडी आवां तेह के ॥ ला० ॥ १४ ॥ वेशा
 ख शुदि पांचम लगें ॥ सो० ॥ तेडी लावे जेह के ॥
 ॥ ला० ॥ माहरी रीऊ ते पामरो ॥ सो० ॥ मनोवं
 ठित ससनेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते माटे वीडुं ग्रहो
 ॥ सो० ॥ जेहमां होवे साच के ॥ ला० ॥ जीवित
 लगें हुं तेहनी ॥ सो० ॥ पालीश सुपरें वाच के ॥
 ॥ ला० ॥ १६ ॥ इम नृप वाणी सांजली ॥ सो० ॥
 सजा थई बिलक के ॥ ला० ॥ परपद मौन करी
 रही ॥ सो० ॥ जाणे तेलमें बूडी मद्ध के ॥ ला० ॥
 ॥ १७ ॥ निज निज मुख सामुं जुवे ॥ सो० ॥ परपद
 थइ मन नूर के ॥ ला० ॥ उपडे को नहिं जीनडी ॥
 ॥ सो० ॥ जाणे गले देवाणो सिंदूर के ॥ ला० ॥
 ॥ १८ ॥ परपद जाणे मन्त्रमें ॥ सो० ॥ ए छुं घोळ्यो
 राय के ॥ ला० ॥ देखी पेखी यम घरें ॥ सो० ॥ क
 हो किम तिहां जवराय के ॥ ला० ॥ १९ ॥ सहि
 तो ए परजले सहि ॥ सो० ॥ नृपनी दृष्टि फरेय के
 ॥ ला० ॥ लूंटी धनने लेयजो ॥ सो० ॥ यमनुं मसलूं
 करेय के ॥ ला० ॥ २० ॥ आगें तो नृप जाणतो ॥
 ॥ सो० ॥ मिनि कंकण पहेखां केदार के ॥ ला० ॥

पण काम पडे मीनी मुंषकने ॥ सो० ॥ मुठने मिश
 करे संहार के ॥ ला० ॥ ११ ॥ ए दृष्टांत ते नृपें क
 खो ॥ सो० ॥ मांढयो बिडानो ए पास के ॥ ला० ॥
 कोइकनी ते फरी दिशा ॥ सो० ॥ लुसी मुसी लेगे
 तास के ॥ ला० ॥ १२ ॥ इम समजी मनमें रही ॥
 ॥ सो० ॥ सद्गु परजा मौन धरेय के ॥ ला० ॥ स्व
 र्ग मटा मट जोइ रही ॥ सो० ॥ पण उत्तर कोइ न
 देय के ॥ ला० ॥ १३ ॥ तव नृप बोळ्यो धरकीने ॥
 ॥ सो० ॥ ए तो लमणे नृकुटी चढाय के ॥ ला० ॥
 ग्रास खाउं तुमें अम तणा ॥ सो० ॥ हवे वेठा कान
 ढलाय के ॥ ला० ॥ १४ ॥ जो अम ग्रासनो खप क
 रो ॥ सो० ॥ तो तुमें ग्रहो वीडुं एह के ॥ ला० ॥
 नहितर को मारग ग्रहो ॥ सो० ॥ अन्य मूलकनो
 होय जेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ इणि परें नरपति बोलि
 यो ॥ सो० ॥ अरकी परखद त्यांहि के ॥ ला० ॥ चम
 क्यां सद्गुनां शीश ते ॥ सो० ॥ नृप मूकरो ठे यम
 ज्यांहि के ॥ ला० ॥ १६ ॥ मावित्र ये दुःख ठोरुने ॥
 ॥ सो० ॥ कहो तस कुण राखणहार के ॥ ला० ॥
 वाड जो गलगे चीनडां ॥ सो० ॥ किहां होवे तास
 पुकार के ॥ ला० ॥ १७ ॥ हवे सुणजो नवियण

तुम ॥ सो० ॥ जे बोलगे मंत्री काल के ॥ ला० ॥
 ए कहि लखि ठही सही ॥ सो० ॥ ए तो ब्रीजा उवा
 सनी ढाल के ॥ ला० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्सर लहि कालसेन ते, बोल्यो तव कर जोडि ॥
 अरज सुणो प्रभु माहरी, कहुं तुम आलस ठोडि ॥
 ॥ १ ॥ यम नोतरवा नाथजी, बीडुं ग्रहावो जेह ॥
 देखत भरवा कुण ग्रहे, मरणनुं बीडुं एह ॥ २ ॥
 बोरनुं बीट जे नवि लहे, भुं जाणो ते यम्म ॥ गज
 पाखर जंबुकशिरें, नाखी स्वामिः तुम्म ॥ ३ ॥ देव
 रूप जे मानवी, ठे तेहनां ए काम ॥ भुं जाणो शश
 कीडलां, यम राजानुं ठाम ॥ ४ ॥ आगे काम सुधा
 रियां, लंका केरां जेह ॥ ते जाशे यम तेडवा, हरि
 बल ठे गुणगेह ॥ ५ ॥ साहासिक शिरोंमणी, सघ
 ले कामें सज्ज ॥ वीखल केरो पुत्रडो, ते करशे तुम
 कज्ज ॥ ६ ॥ इणि परें परखद देखतां, महा डष्ट ते काल ॥
 शीशयी चरण उतारीने, दूर रह्यो ते व्याल ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ काली ने पीली वादली राजिंद ॥ ए देशी ॥ हवे हरि
 बलने नृप कहे, लाला सांनल जीवन शुद्ध ॥ यमरा

जाने तेडवा, लाला सोंपुं ए बीडुं तुऊ ॥ १ ॥ पंथी
 डा रे यमपंथ पंथें वहे तुं वेगें हो प्यारा लाल ॥ ए
 आंकणी ॥ माहरुं काज सुधारवा, लाला तुऊ विण
 बीजुं न कोय ॥ स्वारथीया सहु को मव्या, लाला
 रोटीतोडा तुं जोय ॥ २ ॥ पं० ॥ जगदीश जेहमें साच
 ठे, लाला पाले ते निजवेण ॥ परडुःख नांगे जे पल
 कमें, लाला साचा कहियें ते सेण ॥ ३ ॥ पं० ॥ वयण
 विलुद्धां मानवी, लाला अगनी ऊंपे समशान ॥ दो पखें
 उऊल दाखवा, लाला तन मन करे खुरवान ॥ ४ ॥
 पं० ॥ शिर उठे एक वयणथी, लाला रूडी नूमी गाल ॥
 सुख दुःख न गणे मन्नमें, लाला वयण तणा प्रति
 पाल ॥ ५ ॥ पं० ॥ श्रेणिक ज्युं वयणें करी, लाला पर
 णावी निज धीय ॥ मेतारज मातंगने, लाला कीधो
 जमाइ जीय ॥ ६ ॥ पं० ॥ तेमाटे हरिवल तुमें, लाला
 बीडुं ग्रहो ए पान ॥ वैशाख शुदि पांचम लगें, लाला
 तेडी यम घरे आण ॥ ७ ॥ पं० ॥ इम नृपवाणी सां
 नली, लाला हरिवल चिंते ताम ॥ जो नाकारो हुं
 करुं, लाला तो न रहे मुऊ मान ॥ ८ ॥ पं० ॥ जा
 मगरी सलगाडीने, लाला डुष्ट रह्यो ते दूर ॥ नरी
 गोलिमें कोश ते, लाला नाखी नृपनी हजूर ॥ ९ ॥

॥पं०॥ कोइक जवनो नीमज्यो, लाला मंत्री बैरी व्या
 ल ॥ मरणहुं बीहुं ग्रहावतां, लाला कीधो महोटी जंजा
 ल ॥ १० ॥ पं०॥ तो शुं थयुं प्रभु माहरो, लाला जो
 ठे पाथरो तेह ॥ तास पसायें कालने, लाला जीव
 थी टालुं ठेह ॥ ११ ॥ पं० ॥ तो मुजरो खरो माह
 रो, लाला जग सर चाले वात ॥ महिपी नीत ते म
 हिपीने, लाला पाईने करुं ख्यात ॥ १२ ॥ पं० ॥
 एम विचारी चित्तमें, लाला हरिवल उठ्यो त्यांहि ॥
 नृपने प्रणमी हाथहुं, लाला बीहुं ग्रथुं ते उघांहि ॥
 ॥ १३ ॥ पं०॥ तव परजा कर जोडीने, लाला विनवे
 त्यां महिनाथ ॥ हरिवलने उगारीयें, राज ठांह करी
 दो हाथ ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम वयण वि
 शेषें मानो हो राज प्राणाधार ॥ एआंकणी ॥ कटकी
 कीडी उपरें, राज तृण पर ज्युं कूठार ॥ ते उखा
 णो नाथजी, राज मेलो ते निरधार ॥ १५ ॥ रा०॥ ए
 परदेशी प्राहुणो, राज आब्यो वायु जकोल ॥ आप
 णी नगरी जमाडीने, राज देखाज्यो रंग चोल
 ॥ १६ ॥ रा० ॥ ते नरने किम दूवियें, राज गुण ग
 ण रयण करुं ॥ देव करीने पूजीयें, राज होवे जान अ
 खंम ॥ १७ ॥ रा०॥ ते माटे तुमें नाथजी, राज दी

जे वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मा
 गे एतुं मान ॥ १७ ॥ रा० ॥ ए बीडुं यमदूतनुं, राज
 यो बीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे वांढरो, राज
 कररो काज ते सोय ॥ १८ ॥ रा० ॥ परियागतना
 माल जे, राज खाता हरो तुम जेह ॥ ते किम पा
 ठा देयरो, राज काम पडे पग तेह ॥ १९ ॥ रा० ॥
 तव नृप रीप चढाइने, राज वोव्यो नृकुटी चढाय ॥
 रहो अणवोली परज ते, राज समजो नही तुम
 कांय ॥ २० ॥ रा० ॥ तव परजा ठानी रहि, राज
 समजो ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कोपियो, रा
 ज सुगुणने कररो आंहि ॥ २१ ॥ रा० ॥ ये नृप
 पर्जने शीखडी, राज करतो क्रोध अपार ॥ आव्यो
 चांपलदे शिरें, राज मालव केरो नार ॥ २२ ॥ रा० ॥
 ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ वि
 लखी यइने परज ते, राज उठी मन उलजाय ॥
 ॥ २३ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे चाचरें, राज मलीयां
 लोक अनेक ॥ टोन्नें टोन्नें महु मली, राज करतां
 वात विवेक ॥ २४ ॥ रा० ॥ कहे केतांइक मानवी,
 राज नृप विगड्यो स्त्री देख ॥ राखे हग्विल उपरें,
 राज ते जानचथी देख ॥ २५ ॥ रा० ॥ कहे केता

एक भेंटलो, राज काजसेन विनिष्ट ॥ साची जूती ते
 करे, राज काग परे ते उचिष्ट ॥ २७ ॥ रा० ॥ नृप
 मंत्री दो पापीया, राज मदोटा दीठा कुजात ॥ हरि
 बलने दुःख देयगे, राज युग लगे रहेगे वात ॥ २८ ॥
 रा० ॥ इणि परे साजन सहु मजि, राज वार्ता थोकें
 थोक ॥ करता हाहारच करे, राज सघली नगरीनां
 लोक ॥ २९ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु ते पाधरो, राज
 मदगे दुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज
 बीजा वध्यासनी ढाल ॥ ३० ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिवलने नृप कहे, सांजल तुं मुज जीव ॥
 पंथ ग्रहो यम राजनो, पदोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥
 तव हरिवल बोव्यो हति, सांजलो स्वामी खल ॥
 कामें शे ते आवगे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम
 तुम कारजमें प्रभु, पाठो देगे कूण ॥ दशरा अश्व न
 दोडियो, कुण देगे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो
 हगे, ते तुम करगे काम ॥ ढील रखे तुम जाणता,
 धीरज धरजो स्वाम ॥ ४ ॥ एम कही वठयो तुरत, हरि
 वल करी प्रणाम ॥ वीढुं ग्रही यमदूतहुं, आव्यो ते
 निज धाम ॥ ५ ॥ निज नारी दो आगलें, हरिवलें मागी

शीख ॥ यमने नोतरवा जणी, जाबुं ठे सहि श्व ॥६॥
 नृपतुं कारज साधवा, बीडुं ग्रहं ठे एह ॥ यम तेडी
 नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें
 शीख द्यो, तुमें ठो चहुं दोय ॥ होजे मेलो पुण्यशी,
 लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अतूं,
 तुम दो नारी हव ॥ दान सुपात्रें पोपजो, करजो
 पुण्य कयव ॥ ९ ॥ देव गुरु ममरी सदा, धरजो नव
 पद ध्यान ॥ पूजा नक्ति प्रनावना, करजो रहि साव
 धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जि
 नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पद दो, राखजो निज ग
 ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख नजामण इणि परें, निज ना
 रीने कीथ ॥ पंथ जणी संवाहिने, गमन जणी पग
 दीथ ॥ १२ ॥ पियुनां वयण ने मांजनी, नारी दो अकु
 लाय ॥ जाणे रंजा दनि पडी, निम नारी मृर्चाय ॥ १३ ॥
 ॥ दान आवमी ॥

॥ राम जणे हनि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन जदि
 नारी तदा, पल्लव पियुनो ने माही ने ॥ गदगद कंठ
 खरें करी, कद्वे नारी अहि बांदी ने ॥ गृहमें गद्दो तुमें
 ठाढ़ ने, स करो मरणनो गद ने, ठो प्रानम मुख वा
 द ने, जीने जीवन लाद ने, दोवे ज्युं नारी उवाह

रे, होवे गजवनो घाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥ १ ॥
 ॥ प्रीतम प्यारा रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ नाह वि
 दूणी ते नारीने, न गमे वात सोद्याह रे ॥ जीवित सुधी
 धखती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें
 दाह रे, विरहनी फाल असाह रे ॥ पीडे मदन अ
 थाह रे, न रही शके ते क्यांह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए
 सुख मंदिर मालियां, जरियां ठे धन धान्य रे ॥ कंत
 विना ते कामिनी, जाणे अलूणुं ते धान रे ॥ न
 दिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या
 काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे, इम स्त्री
 विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥ प्री० ॥ दे दोष कुमरी दो दे
 वने, श्यो लुफ कीधो अपराध रे, विण खूने मुज कंत
 ने, यमगृह भूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध
 रे, काढि ते को जवनी दाध रे, पाडे वियोग अगाध
 रे, पीडे संतने साध रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने मुख म
 हिंपुत्री पडो, जेह पाडे ठे वियोग रे ॥ गण्या दिनमां
 ते नाथजी, कां नथी लेतो बलिजोग रे, जाये सघ
 जाना रोग रे, जांगे मनना ते सोग रे, जाणे ज्युं सघ
 जा ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते विजोग
 णी, पामे दुःख अपार रे ॥ विरहानलनी ते वाफ

मां, सीजी रहे तनसार रे, होवे ववूलाकार रे, खावे
 आवे ते ठार रे, जावे कोने आगार रे, नव दे शकुन
 श्रीकार रे, धिग ते स्त्री अवतार रे, जीवती निधन
 ते नार रे ॥ ६ ॥ प्री० ॥ विरहिणी नारीने कंतनुं,
 ध्यान रहे तस जीव रे ॥ तंडुलमञ्ज परें कर्मने, बांधे
 निकाचि सदीव रे, शमतारस नवि पीव रे, मोहनी
 कर्म अतीव रे, जीवतो दुर्जन आजीव रे, चिन्ह
 ए विरही लहीव रे ॥ ७ ॥ प्री० ॥ एणि परें प्यारी कं
 तने, कहे वाणी ससनेह रे ॥ नयणें जलधर वरसती,
 जाणे नाइव मेह रे, रहो प्रीतम तुमें गेह रे, म दहो
 सुरंगी देह रे, जोगवो तन धन एह रे, पामी पुण्यनी
 रेह रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥ हरिजल कहे दोय प्यारीने,
 नांखी अमृत वाण रे ॥ म करो मन कोइ सोच
 ना, तुमें ठो जीवन प्राण रे, आंखनी कीकी समान
 रे, पण ठे नृपनी ते आण रे, बीडुं ग्रहं में ते जाण
 रे, होवे ज्युं कोडि कव्याण रे, तुमें ठो वरना मंमाण
 रे, म करो खांचा ए ताण रे, अमें तुं पंथी केकाण रे,
 करवुं बीत्र प्रयाण रे ॥ ९ ॥ सांजन गोरी रे मा
 हरी ॥ ए आंकणी ॥ एम कही मही चालीयो, गो
 ती मूझी ते नार रे, नृपनुं वयण ते पाजवा, आथ्यो

वहि दरवार रे, नृपने कीध जुद्धार रे, कहे मछी ति
 णि वार रे, करो तुमैं चिता तैय्यार रे, म करो ढील
 लगार रे, सुणी नृप चित्त मजार रे, पाम्यो हपै अपा
 र रे, तेढाव्यो ते तलार रे, चिता विरचावी सार रे ॥
 ॥ १० ॥ सां० ॥ हरिवल बले नृप कारणें ॥ ए आंक
 णी ॥ अगर चंदन कारना, रचना चयनी ते कीध
 रे ॥ सुगंध ड्य ते होमतां, नृप करे मनोरथ लीध
 रे, जाणो रमणी ने रिद्ध रे, प्रचुर्ये मुजने ते दीध रे,
 थइ मुज पुण्यनी वृद्ध रे, आजयी वंछित सिद्ध रे ॥
 ॥ ११ ॥ ह० ॥ हरिवल चय सुधी आवीयो, पहेरी
 बल विशाल रे ॥ अंगें नृपण शोचतां, पहेखां जाक
 जमाल रे, कीधां तिलक ते जाल रे, करमां श्रीफल
 जाल रे, जोवे मनुष्यनी माल रे, प्रगटी चयनी ते जा
 ल रे, दीसंती महा विकराल रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ ति
 ण समे सागर देवता, हरिवल समरे ते चित्त रे ॥ तत
 द्रुण जलनिधि नाथजी, आव्यो सुपरें करि हीत रे,
 जाण्यां सयल चरित्त रे, बोख्यो सुर थइ मित्त रे, हरि
 वल मननो पवित्त रे, राखजे अविचल चित्त रे ॥
 ॥ १३ ॥ ह० ॥ एम कही सुर ते समे, हरिवल सम
 कछु रूप रे ॥ नृपजन आदि ते देखतां, वेगो चयमें ते

चूप रे, जन सहु देखे सरूप रे, जलतो मढी अनूप
 रे, हरख्यो मंत्री ते चूप रे, पण ते पडियो नवकूप
 रे ॥ १४ ॥ ह० ॥ हरिबल बलतो जन देखिने, सब
 ला थया दिलगीर रे ॥ हा हा करता ते मानवी, रोवे
 आक्रंद वीर रे, नयणें वहे नदी नीर रे, वहियां जल
 निधितीर रे, सज्जन मन लहे पीर रे, न रह्यां मन
 कोइनां धीर रे ॥ १५ ॥ ह० ॥ होमी काया ते जालमें,
 चरणथी शीश सराड रे ॥ त्रट त्रट त्रटके तन चा
 मडी, कट कट कटंते हाड रे, नट नट नटके ते ना
 ड रे, हरखे नृपने किराड रे, रोवे मृग वनजाड रे,
 रोवे पंखी पहाड रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ हरिबल बलता
 नी जाल ते, लागी ननलगें चोट रे ॥ श्याम थयुं नज
 ते थकी, दीमे कालो ते थोट रे, रविरथने पण दांटे रे,
 दीधी जाजें ते जोटे रे, थयो रवि आकरो जोटे रे, वरुणें
 अरुणनो उंटे रे, वरुने अगनीनो गोटे रे, थयो ते
 दिनथी तपकोटे रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ इणि परें वैक्रिय
 रूप ते, हग्गिबलहुं करी त्यांहि रे ॥ कागिमो हग्गिबल
 जानियो, जोतां विण एकमांहि रे, नरुम करी
 सहु नाही रे, जन कहे मांहो मांहि रे, थयो अक
 राकर त्यांहि रे, रवेवुं न पटे ते त्यांहि रे, देखत अ

न्याय थाहि रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ नरुम अइ जे चिता
 तणी, ठांटी जलहुं ते लाय रे ॥ जलशरणे करी
 नरुम ते, हरल्या मंत्रीने राय रे, काढहुं शय्य ते प्राय
 रे, रमणी रिद्ध दो आय रे, हवे मुज वंठित थाय
 रे, बाहवा मंत्रीनुं नाय रे, जनी तें बुद्धि उपाय रे, इम
 जपतां घर आय रे, आनंद अंग न माय रे ॥ १८ ॥
 ह० ॥ फिट फिट करे नृप मंत्रीने, सघला नगरीनां
 जोय रे ॥ अमरपटो कोण लावियो, आखरं भरहुं
 सहु कोय रे, गुंलेइ जाशो ते दोय रे, थिर धन रामा
 नवि होय रे, जाहुं मूकीने सोय रे, गुं कीधुं ते जोय
 रे, एम कहे लोक सकोय रे ॥ १९ ॥ ह० ॥ पुरजन
 सहु वल्यां मंदिरें, मुखमें अंगुलि देय रे ॥ धर्मीजन
 धर्म रागथी, हरिलनुं दुःख लेय रे, कीधा उप
 वास ते केय रे, व्रत पञ्चत्काण धरेय रे, केहि जप
 माला जपेय रे, कर्मना बंध कटेय रे, वंठित सुख
 लहेय रे ॥ २० ॥ ह० ॥ सागरदेवें मया करी, हरि
 वल कीधो अलोप रे ॥ जइ मूक्यो निजमंदिरें, जिहां
 ठे नारी दो जोप रे, हरखी नारी दो चूप रे, विरहा
 नलनी गइ हूंफ रे, अयुं मन शीतल कूप रे, दंपति

(१६८)

इन्द्र ज्युं ऊप रे, त्रीजा उद्धासनी चूँप रे, आठमी
 दान अन्नूप रे, लब्धि कहि निर्वाणरूप रे ॥२१॥ह॥
 ॥ दोहा ॥

॥ दाहा ॥
 ॥ तटिनीनाथनो नाथजी, मनहुं थइ सुप्रसन्न ॥
 हरिबल मूकी मंदिरे, पढोतो निज आसन्न ॥ १ ॥
 जो जो नवियां पुण्यथी, हरिबल केरी ख्यात ॥ देवों
 परदेशें चली, प्रबल ए पुण्यनी वात ॥ २ ॥ दया
 सहित पुण्य जे करे, पामी मनु अवतार ॥ इह नव
 परजव सुख घणां, पामे ते निरधार ॥ ३ ॥ नेद कहा
 नव पुण्यना, गाणंगसूत्र मजार ॥ इव्य नावथी सां
 धतां, लहियें सुख संसार ॥ ४ ॥ अन्न उदक वस्त्र
 सयण जे, शाला धर्म विशाल ॥ नमवुं मण वय
 कायथी, ए नव पुण्य रसाल ॥ ५ ॥ जस घर पुण्य
 सखायी ठे, तस घर लीलविलास ॥ शक्रपरें थइ नोमवें,
 रमणि रुद्रि सुवास ॥ ६ ॥ इम जाणी नाविक तुमें नि
 सुणी पुण्य प्रनाव ॥ हरिबलनी परें साधजो. प्रगटे
 पुण्यरो नाव ॥ ७ ॥ ते नावें वेसी करि, तरीयें जा
 दधितीर ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, तेहमें करीवें
 शीर ॥ ८ ॥ परतख देखो पारिखुं, लोक कहे आख
 नावखपणुं, इज पामे परजान ॥ ९ ॥

॥ દાલ નવમી ॥

॥ માહારી સહિરે સમાણી ॥ એ દેશી ॥ પાંચે જેવું
 દાન પ્રકાશ્યું, કેવલીયું જે આશ્યું રે ॥ નવિ તે પુણ્ય
 કહિયું ॥ સાતે સ્વેત્રું જે ઇચ્છ વાવે, સુરુત કરાણી
 ઠપાવે રે ॥ ૧ ॥ જ૦ ॥ શ્રીજિન મંદિર ધિંચ જરાવે,
 પુસ્તકે જ્ઞાન લખાવે રે ॥ જ૦ ॥ સાહામીવઘલ
 નાવ ધરીને, જે કરે ચાહ કરીને રે ॥ ૨ ॥ જ૦ ॥
 શ્રીજિનકેરી નક્તિ કરેવા, ડુઃરુત પાપ હરેવા રે ॥ જ૦ ॥
 વધ વંધનાદિક જીવ ઠોડાવે, કરુણા આણી નાવે
 રે ॥ ૩ ॥ જ૦ ॥ શેત્રુંજાદિક તીરથ જાત્રા, જે કરે
 નિર્મલ ગાત્રા રે ॥ જ૦ ॥ પરિયાગતનાં નામ રચાવે,
 સંઘવી તિલક ધરાવે રે ॥ ૪ ॥ જ૦ ॥ તપ જપ સં
 યમ જ્ઞાન ક્રિયા દો, પાલે કરિ મરિયાદો રે ॥ જ૦ ॥
 નય વિવહારથી વ્રત પચ્ચસ્કાણ, જે કરે ચતુર સુજાણ
 રે ॥ ૫ ॥ જ૦ ॥ ઇત્યાદિક શુન કરાણી નાંચી, સ
 ઘલી એ પુણ્યની સાચી રે ॥ જ૦ ॥ ઇચ્છથી નાવથી જે
 કરે કરાણી, તે નરે પુણ્યની નરણી રે ॥ ૬ ॥ જ૦ ॥
 ઇચ્છ સ્તવથી વારમે સ્વર્ગે, ડપજે સુર ડપવર્ગે રે ॥ જ૦ ॥
 નાવ સ્તવથી કેવલ નાણી, થઈ વરે મુક્તિ તે પ્રાણી
 રે ॥ ૭ ॥ જ૦ ॥ ઇચ્છથી આશી પળે જે કરાણી,

जे वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मा
 ने एतुं मान ॥ १७ ॥ रा० ॥ ए बीहुं यमदूतने, राज
 द्यो बीजाने जोय ॥ तुम सुखने जे वांछगे, राज
 करगे काज ते सोय ॥ १८ ॥ रा० ॥ परियागतना
 माल जे, राज खाता हगे तुम जेह ॥ ते किम पा
 ठा देयगे, राज काम पडे पग तेह ॥ १९ ॥ रा० ॥
 तव नृप रीष चढाश्ने, राज वोढ्यो नृकुटी चढाय ॥
 रहो अणवोली परज ते, राज समजो नदी नृप
 कांय ॥ २० ॥ रा० ॥ तव परजा ठानी रहि, राज
 समजो ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कांपियां, ग
 ज सुगुणने करगे आंहि ॥ २१ ॥ रा० ॥ ये नृप
 पर्जने शीखडी, राज करतो क्रोध अपार ॥ अपार
 चांपलदे शिरें, राज मालव केगे नार ॥ २२ ॥ रा० ॥
 ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ वि
 लखी थश्ने परज ते, राज नृप मल दलपय ॥
 ॥ २३ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे चाचगे, राज मली
 लोक अनेक ॥ टोले टोले सहु मली, राज मली
 वात विवेक ॥ २४ ॥ रा० ॥ कहे केनांइक मली,
 राज नृप विगड्यो नृप देख ॥ मली दलपय मली,
 राज नृप विगड्यो देख ॥ २५ ॥ रा० ॥ कहे केनांइक मली,

इक मेंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ सांची जूठी ते
करे, राज काग परें ते उखिष्ट ॥ १४ ॥ रा० ॥ नृप
मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीठा कुजात ॥ हरि
वलने दुःख देयज्ञे, राज युग लगें रहेज्ञे वात ॥ १५ ॥
रा० ॥ इणि परें साजन सद्गु मलि, राज वार्ता थोकें
थोक ॥ करता हाहारव करे, राज सघली नगरीनां
लोक ॥ १६ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु ठे पाधरो, राज
मटज्ञे दुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज
त्रीजा उद्धासनी ढाल ॥ १७ ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिवलने नृप कहे, सांजल तुं मुज जीव ॥
पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥
तव हरिवल बोळ्यो हसि, सांजलो स्वामी खूज ॥
कामें शे ते श्यावज्ञे, शिवने न चढे फूज ॥ २ ॥ तिम
तुम कारजमें प्रभु, पातो देज्ञे कूण ॥ दशरा ग्रथ्व न
दोडियो, कुण देज्ञे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो
हज्ञे, ते तुम करज्ञे काम ॥ दीज रखे तुम जाणता,
धीरज धरजो स्वाम ॥ ४ ॥ एम कही उठयो तुरत, हरि
वल करी प्रणाम ॥ बीहुं ग्रही यमदूतनुं, श्याव्यो ते
निज धाम ॥ ५ ॥ निज नारी दो श्यागले, हरिवले मागी

जे वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मा
 ने एतुं मान ॥ १८ ॥ रा० ॥ ए बीडुं यमदूतनुं, राज
 यो वीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे वांढरो, राज
 कररो काज ते सोय ॥ १९ ॥ रा० ॥ परियागतना
 माल जे, राज खाता हरो तुम जेह ॥ ते किम पा
 ठा देयरो, राज काम पडे पग तेह ॥ २० ॥ रा० ॥
 तव नृप रीष चढाश्ने, राज बोव्यो नृकुटी चढाय ॥
 रहो अणबोली परज ते, राज समजो नही तुम
 कांय ॥ २१ ॥ रा० ॥ तव परजा ठानी रहि, राज
 समजो ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कोपियो, रा
 ज सुगुणने कररो आंहि ॥ २२ ॥ रा० ॥ ये नृप
 पर्जने शीखडी, राज करतो क्रोध अपार ॥ आय्यो
 चांपलदे शिरें, राज मालव केरो नार ॥ २३ ॥ रा० ॥
 ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ वि
 लखी थश्ने परज ते, राज उठी मन उज्जयाय ॥
 ॥ २४ ॥ रा० ॥ चढुटे चढुटे चाचरें, राज मनीयां
 लोक अनेक ॥ टोलें टोलें सहु मनी, राज कर्ता
 वात विवेक ॥ २५ ॥ रा० ॥ कहे केतांजक मानवी,
 राज नृप विगड्यो स्त्री देख ॥ राखे हखिल दारें,
 राज ते लालचथी धेप ॥ २६ ॥ रा० ॥ कहे केतां

इक मेंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ सांची जूठी ते
करे, राज काग परें ते वज्रिष्ट ॥ २३ ॥ रा० ॥ नृप
मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीठा कुजात ॥ हरि
वलने दुःख देयगे, राज युग लगें रहेगे बात ॥ २४ ॥
रा० ॥ इणि परें साजन सहु मलि, राज वार्ता थोकें
थोक ॥ करता हाहारव करे, राज सघली नगरीनां
लोक ॥ २५ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु ठे पाधरो, राज
मटगे दुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज
त्रीना वज्रासनी ढाल ॥ २६ ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिवलने नृप कहे, सांजल तुं मुज जीव ॥
पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥
तव हरिवल बोव्यो हति, सांजलो स्वामी सूल ॥
कामें शे ते आवगे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम
तुम कारजमें प्रभु, पाठो देशे कूण ॥ दशरा अथव न
दोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो
हरो, ते तुम करगे काम ॥ ढीज रखे तुम जाणता,
धीरज धरजो स्वाम ॥ ४ ॥ एम कही उठयो तुरत, हरि
वल करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूतनुं, आथ्यो ते
निज धाम ॥ ५ ॥ निज नारी दो आगलें, हरिवलें मागी

जें वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु बीजने, राज मा
 ने एतुं मान ॥ १७ ॥ रा० ॥ ए बीजुं समस्तुं, राज
 द्यो बीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे बांजने, राज
 कररो काज ते सोय ॥ १८ ॥ रा० ॥ पणियादना
 माल जे, राज खाता हगे तुम जेद ॥ ते हिम अ
 ठा देयरो, राज काम पडे पग नेद ॥ १९ ॥ रा० ॥
 तव नृप रीप चढाझे, राज बांज्यां नृकुटी नदरा ॥
 रहो अणवोली परज ते, राज समको नरी सु
 कांय ॥ २० ॥ रा० ॥ तव परजा नानी गदि, राज
 समजी ते मनमांहि ॥ विण मृदे नृप कोपियो, राज
 ज सुगुणने कररो आंदि ॥ २१ ॥ रा० ॥ ते नृप
 पर्जने शीखडी, राज कानो कोय अणव ॥ राज
 चांपलदे शिरें, राज मानव केरो नारा ॥ २२ ॥ रा० ॥
 ए उखाणो दाखवी, राज दर्जने कीय विद्वान ॥
 लखी अझे परज ते, राज नरी नन परजान ॥
 ॥ २३ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे नदरा, राज नरी
 लोक अनेक ॥ दोने दोने नन नरी, राज नरी
 वात विवेक ॥ २४ ॥ रा० ॥ दोने दोने नन नरी, राज नरी
 राज नृप विनय्यां नरी देव ॥ राज नरी नन नरी
 राज ते जानवडी देव ॥ २५ ॥ रा० ॥ दोने दोने नन नरी, राज नरी

एक मंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ साची जूवी ने
 करे, राज काग परें ते उमिष्ट ॥ २३ ॥ रा० ॥ नृप
 मंत्री दो पापीया, राज मद्रोटा दीठा कुजात ॥ हरि
 बलने दुःख देयजे, राज पुग लगे रंहेजे नात ॥ २४ ॥
 रा० ॥ इणि परें साजन सद्गु मलि, राज वार्ता थोकें
 थोक ॥ करता हाहारव करे, राज सघली नगरीनां
 लोक ॥ २५ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु ठे पाथरो, राज
 मटजे दुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज
 प्रीजा उज्जासनी ढाल ॥ २६ ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिवलने नृप कहे, सांजल तुं मुळ जीव ॥
 पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥
 तव हरिवल वोळो हसि, सांजलो स्वामी खूज ॥
 कामें शे ते आवजे, शिवने न चढे फूज ॥ २ ॥ तिम
 तुम कारजमें प्रभु, पाठो देशे कूण ॥ दशरा थश्व न
 दोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो
 हजे, ते तुम करजे काम ॥ ढीज रखे तुम जाणता,
 धीरज धरजो स्वाम ॥ ४ ॥ एम कही उठयो तुरत, हरि
 वल करी प्रणाम ॥ वीडुं ग्रही यमदूतनुं, व्याव्यो ते
 निज धाम ॥ ५ ॥ निज नारी दो आगलें, हरिवलें मागी

शीख ॥ यमने नोतरवा नणी, जावुं ठे सहि श्व ॥ ६ ॥
 नृपनुं कारज साधवा, बीडुं ग्रहं ठे एह ॥ यम तेडी
 नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें
 शीख द्यो, तुमें ठो चक्रु दोय ॥ होशे मेलो पुण्यथी,
 लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अतूं,
 तुम दो नारी हब ॥ दान सुपात्रें पोषजो, करजो
 पुण्य कयब ॥ ९ ॥ देव गुरु समरी सदा, धरजो नव
 पद ध्यान ॥ पूजा नक्ति प्रनावना, करजो रहि साव
 धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जि
 नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पद दो, राखजो निज गु
 ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख जलामण इणि परें, निज ना
 रीने कीध ॥ पंथ नणी संवाहिने, गमन नणी पग
 दीध ॥ १२ ॥ पियुनां वयण ते सांजली, नारी दो अकु
 लाय ॥ जाणो रंजा ढलि पडी, तिम नारी मूर्च्छाय ॥ १३ ॥
 ॥ ढाल आठमी ॥

॥ राम नणो हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन लहि
 नारी तदा, पध्दव पियुनो ते साही रे ॥ गदगद कंठ
 स्वरें करी, कहे नारी ग्रहि वांही रे ॥ गृहमें रहो तुमें
 ठाह रे, म करो मरणनो राह रे, ठो प्रातम सुख ठा
 ह रे, लीजें जोवन लाह रे, होवे ज्युं नारी उहाह

रे, होवे गजबनो धाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥ १ ॥
 ॥ प्रीतम प्यारा रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ नाह वि
 दूणी ते नारीने, न गमे वात सोछाह रे ॥ जीवित सुधी
 धखती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें
 दाह रे, विरहनी जाल असाह रे ॥ पीडे मदन अ
 थाह रे, न रही शके ते क्यांह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए
 सुख मंदिर मालियां, जरियां ठे धन धान्य रे ॥ कंत
 विना ते कामिनी, जाणे अछूणुं ते धान रे ॥ न
 दिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या
 काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे, इम स्त्री
 विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥ प्री० ॥ दे दोष कुमरी दो दे
 वने, इपो लुज कीधो अपराध रे, विण खूने मुज कंत
 ने, यमगृह मूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध
 रे, काढि ते को जवनी दाध रे, पाडे वियोग अगाध
 रे, पीडे संतने साध रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने मुख म
 हिपुत्री पढो, जेह पाडे ठे वियोग रे ॥ गण्या दिनमां
 ते नाथजी, कां नथी खेतो बलिजोग रे, जाये सघ
 जाना रोग रे, जांगे मनना ते सोग रे, जाणे ज्युं सघ
 ला ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते निजोग
 णी, पामे दुःख अपार रे ॥ विरहानजनी ते वाफ

शीख ॥ यमने नोतरवा जणी, जावुं ठे सहि इख ॥६॥
 नृपतुं कारज साधना, बीडुं ग्रहं ठे एह ॥ यम तेडी
 नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें
 शीख द्यो, तुमें ठो चक्रु दोय ॥ होगे मेलो पुण्यशी,
 लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अवं,
 तुम दो नारी हह ॥ दान सुपात्रें पोपजो, करजो
 पुण्य कयह ॥ ९ ॥ देव गुरु समरी सदा, धरजो नव
 पद ध्यान ॥ पूजा नक्ति प्रभावना, करजो रहि साव
 धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जि
 नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पद्म दो, राखजो निज गु
 ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख जलामण इणि परें, निज ना
 रीने कीध ॥ पंथ जणी संवाहिने, गमन जणी पग
 दीध ॥ १२ ॥ पियुनां वयण ते सांजली, नारी दो अकु
 लाय ॥ जाणो रंजा ढलि पडी, तिम नारी मूर्छाय ॥ १३ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ राम जणो हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन जहि
 नारी तदा, पछव पियुनो ते साही रे ॥ गदगद कंठ
 स्वरें करी, कहै नारी अहि बांही रे ॥ गृहमें रहो तुमें
 ठाह रे, झकरो मरणनो राह रे, ठो प्रातम सुख ठा
 ह रे, लीजें जोवन लाह रे, होवे ज्युं नारी उहाह

रे, होवे गजबनो दाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥ १ ॥
 ॥ प्रीतम प्यारा रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ नाह वि
 दूणी ते नारीने, न गमे वात सोढाह रे ॥ जीवित सुधी
 धखती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें
 दाह रे, विरहनी जाल असाह रे ॥ पीडे मदन अ
 थाह रे, न रही शके ते क्याह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए
 सुख मंदिर मालियां, जरियां ठे धन धान्य रे ॥ कंत
 विना ते कामिनी, जाणे अछूणुं ते धान रे ॥ न
 विये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या
 काननुं थान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे, इम स्त्री
 विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥ प्री० ॥ दे दोप कुमरी दो दे
 वने, श्यो तुज कीधो अपराध रे, विण खूने मुज कंत
 ने, यमगृह मूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध
 रे, काढि ते को जवनी दाध रे, पाडे वियोग अगाध
 रे, पीडे संतने साध रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने मुख म
 हिपुत्री पडो, जेह पाडे ठे वियोग रे ॥ गण्या दिनमां
 ते नायजी, कां नथी छेतो बलिजोग रे, जाये सव
 लाना रोग रे, जांगे मनना ते सोग रे, जाणे ज्युं सव
 ला ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते विजोग
 णी, पामे दुःख अपार रे ॥ विरहानलनी ते वाफ

शीख ॥ यमने नोतरवा जणी, जावुं ठे सहि ॥
 नृपनुं कारज साधवा, बीडुं ग्रहं ठे एह ॥ य
 नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते म
 शीख द्यो, तुमें ठो चहु द्यो ॥ होरो मेलो
 लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सों
 तुम दो नारी हब ॥ दान सुपात्रें पोषजो,
 पुण्य कयब ॥ ए ॥ देव गुरु समरी सदा, धर
 पद ध्यान ॥ पूजा नक्ति प्रनावना, करजो रहि
 धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो
 नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पद दो, राखजो नि
 ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख जलामण इणि परें, नि
 रीने कीध ॥ पंथ जणी संवाहिने, गमन जणी
 दीध ॥ १२ ॥ पियुनां वयण ते सांजली, नारी दो
 लाय ॥ जाणो रंजा ढलि पडी, तिम नारी मूर्खाय ॥
 ॥ ढाल आवसी ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन
 नारी तदा, पछव पियुनो ते साही रे ॥ गदगद
 स्वरें करी, कहै नारी ग्रहि वांही रे ॥ गृहमें रहो
 ठाह रे, स करो मरणनो राह रे, ठो प्रातम सुख
 ह रे, लीजें जोवन लाह रे, होवे ज्युं नारी उह

बहि दरबार रे, नृपने कीध जुहार रे, कहे मन्त्री नि
 लि वार रे, करो तुमैं चिता तेज्यार रे, म कगे दीन
 लगार रे, सुणी नृप चिन मजार रे, पाम्यो हरे अपा
 र रे, तेंढाव्यो ते तलार रे, चिता विरचानी सार रे ॥
 ॥ १० ॥ सां० ॥ हरिवल बने नृप कारणें ॥ ए आंक
 णी ॥ अगर चंदन काठना, रचना चयनी ते कीध
 रे ॥ सुगंध इव ते दोमतां, नृप करे मनोरय लीध
 रे, जाणे रमणी ने रिख रे, प्रनुयें मुजने ते दीध रे,
 यइ मुज पुण्यनी रुख रे, आजयी बंठित सिख रे ॥
 ॥ ११ ॥ ह० ॥ हरिवल चय सुधी आवीयो, पहेरी
 वस्त्र विशाल रे ॥ अंगें नृपण शोजतां, पहेस्यां जाक
 जमाल रे, कीधां तिलक ते जाल रे, करमां श्रीफल
 जाल रे, जोवे मनुष्यनी माल रे, प्रगटी चयनी ते जा
 ल रे, दीसंती महा विकराल रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ ति
 ण समे सागर देवता, हरिवल समरे ते चित्त रे ॥ तत
 क्षण जलनिधि नाथजी, आव्यो सुपरें करि हीत रे,
 जाण्यां सयल चरित्त रे, बोव्यो सुर थइ मित्त रे, हरि
 वल मननो पवित्त रे, राखजे अविचल चित्त रे ॥
 ॥ १३ ॥ ह० ॥ एम कही सुर ते समे, हरिवल सम
 कखुं रूप रे ॥ नृपजन आदि ते देखतां, वेगो चयमें ते

चूप रे, जन सहु देखे सरूप रे, जलतो मल्ली अनूप
 रे, हरख्यो मंत्री ते नूप रे, पण ते पडियो नवकूप
 रे ॥ १४ ॥ हण ॥ हरिवल बलतो जन देखिने, सध
 ला थया दिलगीर रे ॥ हा हा करता ते मानवी, रोवे
 आक्रंद वीर रे, नयणें वहे नदी नीर रे, वहियां जल
 निधितीर रे, सज्जन मन लहे पीर रे, न रह्यां मन
 कोइनां धीर रे ॥ १५ ॥ हण ॥ होमी काया ते जालमें,
 चरणथी शीश सराड रे ॥ त्रट त्रट त्रटके तन चा
 मडी, कट कट कटंते हाड रे, नट नट नटके ते ना
 ड रे, हरखे नृपने किराड रे, रोवे मृग वनजाड रे,
 रोवे पंखी पहाड रे ॥ १६ ॥ हण ॥ हरिवल बलता
 नी जाल ते, लागी नचलगें चोट रे ॥ श्याम थयुं नच
 ते थकी, दीसे कालो ते धोट रे, रविरथने पण दोट रे,
 दीधी जालें ते जोट रे, थयो रवि आकरो जोट रे, वरुणें
 जो उट रे, वरसे अगनीनो गोट रे थयो ते
 तपकोट रे ॥ १७ ॥ हण ॥ ५ ॥ क्रिय

न्याय थाहि रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ जस्म थइ जे चिता
 तणी, ठांटी जलखुं ते लाय रे ॥ जलशरणें करी
 जस्म ते, हरख्या मंत्रीने राय रे, काढ्युं शल्य ते प्राय
 रे, रमणी रिह दो आय रे, हवे मुऊ वंठित थाय
 रे, बाहवा मंत्रीनुं नाय रे, जजी तें बुधि उपाय रे, इम
 जपतां घर आय रे, आनंद अंग न माय रे ॥ १८ ॥
 ह० ॥ फिट फिट करे नृप मंत्रीने, सघजा नगरीनां
 जोय रे ॥ अमरपटो कोण लावियो, आखरं मरखुं
 सहु कोय रे, खुंजेइ जाशो ते दोय रे, थिर धन रामा
 नवि होय रे, जावुं मूफीने सोय रे, खुं कीधुं ते जोय
 रे, एम कहे लोक सकोय रे ॥ १९ ॥ ह० ॥ पुरजन
 सहु वल्यां मंदिरें, मुखमें अंगुलि देय रे ॥ धर्माजन
 धर्म रागथी, हरिवलनुं दुःख जेय रे, कीधा उप
 वास ते केय रे, व्रत पञ्चकाण धरेय रे, केहि जप
 माला जपेय रे, कर्मना बंध कटेय रे, वंठित सुख
 लहेय रे ॥ २० ॥ ह० ॥ सागरदेवें मया करी, हरि
 वल कीधो थलोप रे ॥ जइ मूक्यो निजमंदिरें, जिहां
 ठे नारी दो जोप रे, हरखी नारी दो चूप रे, विरहा
 नलनी गइ हूँफ रे, थपुं मन शीतल कूप रे, दंपति

(१६८)

इंद्र ज्युं ऊप रे, त्रीजा उद्धासनी चूंप रे, आठमी
ढाल अनूप रे, लब्धि कहि निर्वाणरूप रे ॥ ११ ॥ हण ॥
॥ दोहा ॥

॥ तटिनीनाथनो नाथजी, मनगुं थइ सुप्रसन्न ॥
हरिवल मूकी मंदिरे, पहोतो निज आसन्न ॥ १ ॥
जो जो नवियां पुण्यथी, हरिवल केरी ख्यात ॥ देशें
परदेशें चली, प्रवल ए पुण्यनी वात ॥ २ ॥ दया
सहित पुण्य जे करे, पामी मनु अवतार ॥ इह नव
परनव सुख घणां, पामे ते निरधार ॥ ३ ॥ जेद कह्या
नव पुण्यना, ठाणंगसूत्र मजार ॥ इव्य नावथी सां
धतां, लहियें सुख संसार ॥ ४ ॥ अन्न उदक वस्त्र
सयण जे, शाला धर्म विशाल ॥ नमवुं मण वय
कायथी, ए नव पुण्य रसाल ॥ ५ ॥ जस घर पुण्य
सखायी ठे, तस घर लीनविजास ॥ शक्रपरें थइ नोगवे,
रमणि रुद्धि सुवास ॥ ६ ॥ इम जाणी नाविक तुमें, नि
सुणी पुण्य प्रनाव ॥ हरिवलनी परें साधजो, प्रगटे
पुण्यरो नाव ॥ ७ ॥ ते नावें बेसी करि, तरीयें नव
दधितोर ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, तेहमें करीयें
जीर ॥ ८ ॥ परतस देखां पारिवुं, लोक कहे आख्या
त ॥ पोतानुं परतखपाणुं, दल पामे परजान ॥ ९ ॥

॥ દાહ નવમી ॥

॥ માદારી સહિરે સમાણી ॥ એ દેશી ॥ પાંચે જે
 દાન પ્રકાર્યું, કેવલીયેં જે આર્યું રે ॥ નવિ તે પુણ્ય
 કહિયે ॥ સાતે સ્વેત્રેં જે ઇચ્છ્યા વાવે, સુકૃત કરણી
 ઉપાવે રે ॥ ૧ ॥ જ૦ ॥ શ્રીજિન મંદિર વિંચ જરાવે,
 પુસ્તકેં જ્ઞાન લેવાવે રે ॥ જ૦ ॥ સાદામીવ ઘડલ
 જાવ ધરીને, જે કરે ચાહ કરીને રે ॥ ૨ ॥ જ૦ ॥
 શ્રીજિનકેરી નક્તિ કરેવા, કુઠ્ઠ પાપ હરેવા રે ॥ જ૦ ॥
 વધ વંધનાદિક જીવ ઠોઢાવે, કરુણા આણી જાવે
 રે ॥ ૩ ॥ જ૦ ॥ શેષુંજાદિક તીરથ જાત્રા, જે કરે
 નિર્મલ ગાત્રા રે ॥ જ૦ ॥ પરિયાગતનાં નામ રચાવે,
 સંઘરી તિલક ધરાવે રે ॥ ૪ ॥ જ૦ ॥ તપ જપ સં
 યમ જ્ઞાન ક્રિયા દો, પાલે કરિ મરિયાદો રે ॥ જ૦ ॥
 નય વિવહારથી વ્રત પચ્ચસ્કાણ, જે કરે ચતુર સુજાણ
 રે ॥ ૫ ॥ જ૦ ॥ ઇત્યાદિક શુજ કરણી જાંચી, સ
 ઘલી એ પુણ્યની સાચી રે ॥ જ૦ ॥ ઇચ્છથી જાવથી જે
 કરે કરણી, તે જરે પુણ્યની જરણી રે ॥ ૬ ॥ જ૦ ॥
 ઇચ્છ સ્તવથી વારમે સ્વર્ગે, ઉપજે સુર ઉપવર્ગે રે ॥ જ૦ ॥
 જાવ સ્તવથી કેવલ નાણી, થઈ વરે મુક્તિ તે પ્રાણી
 રે ॥ ૭ ॥ જ૦ ॥ ઇચ્છથી આશી પાળે જે કરણી,

કરે તે લહે રિઠ્ઠ રમણી રે ॥ જ૦ ॥ જૈ કરે જાવથી
 કરણી નિરાશી, હોવે તે જ્યોતિવિલાસી રે ॥ ૭ ॥
 જ૦ ॥ પુણ્યથી હરિ હર સુર નર ઇંદા, હલધર ચક્રી જિ
 ણંદા રે ॥ જ૦ ॥ ત્રિશઠ શલાકા પુરુષ કહાવે, ઉત્તમ પ
 દવી પાવે રે ॥ ૮ ॥ જ૦ ॥ તે જવ સિદ્ધિ જિનવર
 જાંચે, શિવ પદનાં સુખ ચાચે રે ॥ જ૦ ॥ દેવ દા
 નવ પણ સદુ વશ આવે, અરિયણ સવિ ગલિ જાવે
 રે ॥ ૯ ॥ જ૦ ॥ અષ્ટ માહા જય કદિય ન દેચે, નિ
 ર્જય સઘલે ચેચે રે ॥ જ૦ ॥ ઈતિ ઉપડવ રોગ ન હો
 વે, પાતક સઘલાં ચોવે રે ॥ ૧૦ ॥ જ૦ ॥ પંચમે સ
 ઘલે બોલ સુબોલા, વાધે જસતરુ મોલા રે ॥ જ૦ ॥
 સૂત્ર સિદ્ધાંતમે ઠે નર ચાવા, દુઝા તે પુણ્યરા નાવા
 રે ॥ ૧૧ ॥ જ૦ ॥ તે નાવાથી જવોદધિ તરીયા, ઉપ
 શમ રસથી જરીયા રે ॥ જ૦ ॥ અન્યંતરની ગાંઠ વિઠો
 ડી, શિવરમણી વરી દોડી રે ॥ ૧૨ ॥ જ૦ ॥ સ
 કોડી સાધર્મી જમાડી, સમકિત શુદ્ધ જગાડી રે ॥
 જ૦ ॥ શ્રી જરતેસરદર્પણ ગેહેં, કેવલ લહ્યું તે
 નેહેં રે ॥ ૧૩ ॥ જ૦ ॥ કયવન્નો વન્ની ધન્નો વચાણ્યો,
 શાલિજ્ઞ જોગી જાણ્યો રે ॥ જ૦ ॥ તે પણ દાન
 પ્રજાવથી તરિયા, સંજમ નારી વરિયા રે ॥ ૧૪ ॥

॥ ज० ॥ इत्यादिक अवदात सुणीने, नवि व्योते गु
 षु चूणीने रे ॥ ज० ॥ तुमें पण इणिपरें सूत्र सिद्धा
 तें, नवियां चढशो विख्यातें रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ गुरु
 उपदेश सुणीने नवियां, जुत हरिवल चित्तमें ठवि
 यां रे ॥ ज० ॥ तो ते जीवदयाने प्रजावें, मन वं
 ङित फल पावे रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ जीवदयाथी दधि
 पति मलियो, दुःख दोजागथी टलीयो रे ॥ ज० ॥
 रमणि कृद्दिनो थयो जुगतारी, चिहुं दिहों लाज वधा
 री रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ धीवर जातमां थयो अवतारी,
 थयो शुद्ध समकित्तधारी रे ॥ ज० ॥ गुरु उपदेशें
 जीवदयाथी, थयो जिनधर्ममां हाथी रे ॥ १९ ॥ ज० ॥
 देव प्रजावें नृपजन दृष्टी, वांधी ज्युं करी सुष्टी रे ॥
 ॥ ज० ॥ कारिमो हरिवल जलतो देखाडी, निजगृह
 मूक्यो उपाडी रे ॥ २० ॥ ज० ॥ गुप्त रहे निज ना
 री दो संगें, सुख विलसे ते थनंगें रे ॥ ज० ॥ निज
 मंदिरमें साते खेत्र, वावरे इव्य सुपात्रें रे ॥ २१ ॥
 ॥ ज० ॥ नृपजन जाणे मघी न जीवे, यममंदिर
 जइ रीवे रे ॥ ज० ॥ पण हरिवलने पुण्य प्रमाणें,
 जन सहु नयरी वखाणे रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ हवे तुमें
 सुणजो आगल प्राणी, वारता थमिय समाणी रे ॥

करे ते लहे रिद्ध रमणी रे ॥ न० ॥ जे करे नावथी
 करणी निराशी, होवे ते ज्योतिविलासी रे ॥ ७ ॥
 न० ॥ पुण्यथी हरि हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जि
 एंदा रे ॥ न० ॥ त्रिशठ शलाका पुरुष कहावे, उत्तम प
 दवी पावे रे ॥ ए ॥ न० ॥ ते नव सिद्धि जिनवर
 नांखे, शिव पदनां सुख चाखे रे ॥ न० ॥ देव दा
 नव पण सहु वश आवे, अरियण सवि गलि जावे
 रे ॥ १० ॥ न० ॥ अष्ट माहा नय कदिय न देखे, नि
 र्जय सघले चेखे रे ॥ न० ॥ ईति उपड्व रोग न हो
 वे, पातक सघलां खोवे रे ॥ ११ ॥ न० ॥ पंचमे स
 घले बोल सुबोला, वाधे जसतरु मोला रे ॥ न० ॥
 सूत्र सिद्धांतमें ठे नर चावा, दुष्टा ते पुण्यरा नावा
 रे ॥ १२ ॥ न० ॥ ते नावाथी नवोदधि तरीया, उप
 शम रसथी नरीया रे ॥ न० ॥ अन्यंतरनी गांठ विठो
 डी, शिवरमणी वरी दोडी रे ॥ १३ ॥ न० ॥ स
 वा कोडी साधर्मी जमाडी, समकित शुद्ध जगाडी रे ॥
 ॥ न० ॥ श्री नरतेसरदर्पण गेहें, केवल लह्युं ते
 नेहें रे ॥ १४ ॥ न० ॥ कयवन्नो वली धन्नो वखाण्यो,
 शालिन्नो नोगी जाण्यो रे ॥ न० ॥ ते पण दान
 प्रनावथी तरिया, संजम नारी वरिया रे ॥ १५ ॥

॥ न० ॥ इत्यादिक अनदात सुणीने, नवि व्यो ते गु
 ण सुणीने रे ॥ न० ॥ तुमें पण इणपरें सूत्र सिद्धां
 ते, नवियां चढशो विख्यातें रे ॥ १६ ॥ न० ॥ गुरु
 उपदेश सुणीने नवियां, जुठ हरिवल चित्तमें ठवि
 यां रे ॥ न० ॥ तो ते जीवदयाने प्रनावें, मन वं
 तित फल पावे रे ॥ १७ ॥ न० ॥ जीवदयाथी दधि
 पति मलियो, दुःख दोनागथी टलीयो रे ॥ न० ॥
 रमणि कृद्दिनो थयो छुगतारी, चिहुं दिज्ञें लाज बधा
 री रे ॥ १८ ॥ न० ॥ धीवर जातमां थयो अवतारी,
 थयो छुद्ध समकितधारी रे ॥ न० ॥ गुरु उपदेशें
 जीवदयाथी, थयो जिनधर्ममां हाथी रे ॥ १९ ॥ न० ॥
 देव प्रनावें नृपजन दृष्टी, बांधी ज्युं करी सुष्टी रे ॥
 ॥ न० ॥ कारिमो हरिवल जलतो देखाडी, निजगृह
 मूक्यो ठपाडी रे ॥ २० ॥ न० ॥ गुप्त रहे निज ना
 री दो संगें, सुख विलसे ते अजंगें रे ॥ न० ॥ निज
 मंदिरमें साते खेत्रें, वावरे इव्य सुपात्रें रे ॥ २१ ॥
 ॥ न० ॥ नृपजन जाणे मछी न जीवे, यममंदिर
 जइ रीवे रे ॥ न० ॥ पण हरिवलने पुण्य प्रमाणें,
 जन सहु नयरी वखाणे रे ॥ २२ ॥ न० ॥ हवे तुमें
 सुणजो आगल प्राणी, वारता अमिय समाणी रे ॥

करे ते लहे रिद्ध रमणी रे ॥ ज० ॥ जे करे जावथी
 करणी निराशी, होवे ते ज्योतिविलासी रे ॥ ७ ॥
 ज० ॥ पुण्यथी हरि हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जि
 एंदा रे ॥ ज० ॥ त्रिशठ शलाका पुरुष कहावे, उत्तम प
 दवी पावे रे ॥ ए ॥ ज० ॥ ते नव सिद्धि जिनवर
 नांखे, शिव पदनां सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ देव दा
 नव पण सद्गु वश आवे, अरियण सवि गलि जावे
 रे ॥ १० ॥ ज० ॥ अष्ट माहा जय कदिय न देखे, नि
 र्जय सघले चेखे रे ॥ ज० ॥ ईति उपड्व रोग न हो
 वे, पातक सघलां खोवे रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ पंचमे स
 घले बोल सुबोला, वाधे जसतरु मोला रे ॥ ज० ॥
 सूत्र सिद्धांतमें ठे नर चावा, दुष्टा ते पुण्यरा नावा
 रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ ते नावाथी नवोदधि तरीया, उप
 शम रसथी जरीया रे ॥ ज० ॥ अन्यंतरनी गांठ विठो
 डी, शिवरमणी वरी दोडी रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ स
 वा कोडी साधमी जमाडी, समकित शुद्ध जगाडी रे ॥
 ॥ ज० ॥ श्री नरतेश्वरदर्पण गेहें, केवल लह्युं ते
 नेहें रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ कयवन्नो वली धन्नो वखाण्यो,
 शालिज्ज चोगी जाण्यो रे ॥ ज० ॥ ते पण दान
 प्रजावथी तरिया, संजम नारी वरिया रे ॥ १५ ॥

॥ अथ चतुर्थे उद्घासः प्रारब्धते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामय चंद ज्युं, सोहे शांति जिणंद ॥
 दुःख तिमिर दूरें हरे, देवे मन सुख रुंद ॥ १ ॥ तस
 पदपंकज हुं नमुं, नित्य उठी परजात ॥ केवल कमला
 पामियें, देखियें विश्व विख्यात ॥ २ ॥ सुखदायी वर
 सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन घटमें
 चंद ज्युं, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ३ ॥ ते बाला त्रिपुरा
 नमुं, बिनबुं बे कर जोडि ॥ मुऊ मन मंदिरमें बसी,
 पूरो वंछित कोडि ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना,
 चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल मछी रायनो, प
 नणुं चोथो उद्घास ॥ ५ ॥ वेधक रसिया जे हुबो, ते
 सुणजो इक मन्न ॥ हरिबल गुण सुणतां थकां, होवे
 पावन कन्न ॥ ६ ॥ हवे नृप जाणे मन्नमें, हरिबल
 कीधो ठार ॥ कान्धुं शब्द जीवित लगें, उपनो हूपे
 अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुऊ अपठरा, प्रभुयें दीधी
 हठ ॥ तो हुं जइ सफलुं करुं, मुऊ जीवित सुकयष्ट
 ॥ ८ ॥ इम जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय ॥
 यज्जी सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ९ ॥
 को नवि जाणे राजमें, तिम चाव्यो धरी आश ॥ रज

॥ न० ॥ पुण्य प्रजावथी अतिहे विशाला, होशे मंग
लमाला रे ॥ १३ ॥ न० ॥ शुद्ध परंपर सोहम स्वा
मा, दुआ मुक्त अंतरजामी रे ॥ न० ॥ तस पाटें गु
रु हीर सूरिंदा, उपजे तेज दिणंदा रे ॥ १४ ॥ न० ॥
तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, निशिदिन नरे पुण्य
उरी रे ॥ न० ॥ तस शिष्य धनहर्ष ज्ञानना दरि
या, कवि जनमें अनुसरिया रे ॥ १५ ॥ न० ॥ तस
शिष्य कुशलविजय कविराया, जैनमारग दीपाया
रे ॥ न० ॥ तस लघु बंधव आझाकारी, कमलविज
य जयकारी रे ॥ १६ ॥ न० ॥ तस शिष्य लक्ष्मी
विजय गुणगेही, श्रुत चारित्रना नेही रे ॥ न० ॥ तस
शिष्य केशर अमर दो चाता, पंमित जनने विख्याता
रे ॥ १७ ॥ न० ॥ तस पद किंकर लब्धि कहावे, ह
रिवलना गुण गावे रे ॥ न० ॥ उत्तम नरना ते गुण
गातां, बांधियें पुण्यना खातां रे ॥ १८ ॥ न० ॥ त्रीजो
उल्लास कस्यो ए पूरो, नव ढालें ते सनूरो रे ॥ न० ॥
लब्धें कही ए वारता मीठी, जेहवी शास्त्रमां दीठी
रे ॥ १९ ॥ न० ॥ इति श्री जीवदयापरे हरिवलत्र
रित्रे पुण्याधिकारे तृतीय उल्लासः संपूर्णः ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्थ उद्धासः प्रारब्धते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामय चंद ज्युं, सोहे शांति जिणंद ॥
 दुःख तिमिर दूरें हरे, देवे मन सुख छंद ॥ १ ॥ तस
 पदपंकज हुं नमुं, नित्य उठी परजात ॥ केवल कमला
 पामियें, देखियें विश्व विख्यात ॥ २ ॥ सुखदायी वर
 सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन घटमें
 चंद ज्युं, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ३ ॥ ते बाला त्रिपुरा
 नमुं, बिनहुं बे कर जोडि ॥ मुऊ मन मंदिरमें बसी,
 पूरो वंछित कोडि ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना,
 चरण कमल नमि तास ॥ हरिवल मल्ली रायनो, प
 नहुं चोथो उद्धास ॥ ५ ॥ वेधक रसिया जे हुवो, ते
 सुणजो श्क मन्न ॥ हरिवल गुण सुणतां थकां, होवे
 पावन कन्न ॥ ६ ॥ हवे नृप जाणे मन्नमें, हरिवल
 कीधो ठार ॥ काढ्युं शल्य जीवित लगें, उपनो हर्ष
 अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुऊ अपठरा, प्रभुयें दीधी
 हठ ॥ तो हुं जइ सफलुं करुं, मुऊ जीवित सुकयठ
 ॥ ८ ॥ इम जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय ॥
 वज्जी सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ९ ॥
 को नवि जाणे राजमें, तिम चाल्यो धरी थाश ॥ रज

नी थइ घडि दो समे, पहोतो मन्ही आवास ॥ १० ॥ दू
 रथी नूधणी आवतो, वसंतसिरीयें दीठ ॥ शान करी
 निजकंतने, हरिबलगृहमें पइठ ॥ ११ ॥ एटले महिपति
 आवियो, दो नारीनी पास ॥ कुमरी तव उठी तुरत,
 आसन आप्युं तास ॥ १२ ॥ आगत स्वागत घणि
 करी, मुखथी साकर घोल ॥ कर जोडी दो उनी रही,
 कारिमो करी रंगचोल ॥ १३ ॥ कामिनी कहे महि
 नाथने, केम पथाखा स्वाम ॥ ते कारण मुऊने कहो,
 खोली मन अजिराम ॥ १४ ॥ हमणां पियु गयो य
 स घरे, राखवो लोकाचार ॥ अथ्यवसाय जे मन त
 णा, कही पहोंचो दरबार ॥ १५ ॥ मुऊ मंदिर स्वामी
 तुमें, आव्या ठो महाराय ॥ पण मोशीने घर बाध
 लो, कहो ते केम समाय ॥ १६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ तव हरखित थइ रा
 बोळ्यो ते ॥ विषयी ॥

॥ १७ ॥

तुमची नावे जोड ॥ वि० ॥ तुम सुयडाइ देखीने रे,
 वाध्यो मोद्रनो ठोड ॥ ३ ॥ वि० ॥ ते दिनथी नवि
 बीसरो रे, दो नारी तुमें चित्त ॥ वि० ॥ जीव रहे चरणां
 बुजें रे, तुमचे अविहड हीत ॥ ४ ॥ वि० ॥ लुं धरे
 ध्यान जोगीसरा रे, तिम धरुं तुमचो ध्यान ॥ वि० ॥
 सास वसासमें सांजरो रे, शत वार तुम गुण ध्यान ॥
 ५ ॥ वि० ॥ ते गुणनो लीनो थको रे, आब्यो तुं
 धरी हूँश ॥ वि० ॥ एहमां जूठ न जाणजो रे, सत्य
 फडुं तुम संस ॥ ६ ॥ वि० ॥ कांइ न करशो शोचना
 रे, चतुर तुमें गुणधाम ॥ वि० ॥ वाणी सुधारस सां
 जली रे, धो मन सुख अजिराम ॥ ७ ॥ वि० ॥ तन
 धन जीवन पामीने रे, लीजें मनुजव लाह ॥ वि० ॥
 पामी अवरसर चूलशे रे, तस रहेशे दिल दाह ॥ ८ ॥
 वि० ॥ यौवनवय सुख पामीने रे, जे नही माणो पूर ॥
 वि० ॥ वननां कुसुम तणी परें रे, ते रहेशे मन पूर ॥
 ९ ॥ वि० ॥ जीवित सखी तुम तणुं रे, पालवुं निशिदिन
 वेण ॥ वि० ॥ हरिबलनी परें राखवुं रे, तन मन क
 रीने सेण ॥ १० ॥ वि० ॥ तुम अम वक्षें कोइ वातनो
 रे, वहेरो न राखियें कोय ॥ वि० ॥ मुळ मन प्राणनि
 कुंजमें रे, राखुं तुमने दोय ॥ ११ ॥ वि० ॥ माहारी

ठती जे राजनी रे, आजयी सौंपी तुम्ह ॥ वि० ॥
 जो तुमें आपशो हेतुं रे, ते सही जमहुं अम्ह ॥ १३ ॥
 वि० ॥ कोइ बातें डहुं नही रे, माहरी करीने जी
 ह ॥ वि० ॥ सबहुं कमल ह्वै धरी रे, नाव रह्यो
 मुज गीह ॥ १३ ॥ वि० ॥ इम नारी दो आगलें रे,
 नृप कहे सूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर यइ आकल्यो
 रे, खोई सयली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम
 विटंबना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर
 नारी आगलें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥
 ॥ वि० ॥ कामें केइ नर ठेतखा रे, कहेतां नावे पार ॥
 ॥ वि० ॥ काम वगें मज कूपकें रे, पड्यो लजितांग
 कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवगें ययो नारकी रे,
 सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य प्रहासाकारणें रे,
 पडोतो इगीया पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें
 ईश्वर रे, नाच्या ते निःशंक ॥ वि० ॥ काममां बूझ्या
 बापडा रे, कुण ते गंक ने ढीक ॥ १८ ॥ वि० ॥ उनम
 सध्यम नीनसां रे, गावे ते पण काम ॥ वि० ॥ नर
 नारीनां जोडजां रे, गावे उडव ताम ॥ १९ ॥ वि० ॥
 कामिनी कामना कूपमें रे, बूझ्यो महु संसार ॥
 ॥ वि० ॥ केवलरूपाने खोनवा रे, दीगो कामकुमार

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीजणा
 रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, ख
 ली चवद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ वलि जुठ श्रेणिक
 रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते
 वीरनी चेलकी रे, वली ठत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥
 समवसरणें अशुचिता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥
 वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस ताम ॥ २३ ॥
 ॥ वि० ॥ मत को कोइ नेतुं गयो रे, म करो निंद
 कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विषयन
 संझा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस थ
 खना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लह
 ते प्राणीया रे, जीवे एकेंद्रि मजार ॥ २५ ॥ वि० ॥
 कामिनी रस त्यागलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥
 तो शो भदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥
 ॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवने रे, जे रह्या क
 मथी दूर ॥ वि० ॥ हुं वज्रहारी तेहनी रे, प्रण
 चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोया उद्यासनी ए कर्ह
 रे, पूरण पहेत्री टाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे नदि
 सांजतो रे, वोजे दो कुमरी बाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

(१७६)

तती जे राजनी रे, आजयी सौपी तुम्ह ॥ वि० ॥
जो तुमें आपशो हेतुं रे, ते सही जमहुं अम्ह ॥ ११ ॥
वि० ॥ कोइ बातें डहवुं नही रे, माहरी करीने जी
ह ॥ वि० ॥ सवलुं कमल हृदें धरी रे, जाव रह्यो
मुऊ गीह ॥ १२ ॥ वि० ॥ इम नारी दो आगलें रे,
नृप कहे सूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकल्यो
रे, खोई सघली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम
विटंबना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर
नारी आगलें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥
॥ वि० ॥ कामें केइ नर ठेतखा रे, कहेतां नावे पार ॥
॥ वि० ॥ काम वरों मल कूपकें रे, पज्यो लजितांग
कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवरों थयो नारकी रे,
सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य प्रहासाकारणें रे,
पहोतो दरीया पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें
ईश्वरु रे, नाच्या ते निःशंक ॥ वि० ॥ काममां वृज्या
बापडा रे, कुण ते शंक ने ठीक ॥ १८ ॥ वि० ॥ उनम
मध्यम गीतमां रे, गावे ते पण काम ॥ वि० ॥ नर
नारीनां जोडलां रे, गावे उज्जव ठाम ॥ १९ ॥ वि० ॥
कामिनी कामना कूपमें रें, वृज्यो सहु संसार ॥
॥ वि० ॥ केवलरयणने खोजवा रे, दीगें कामकुमार

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीलणा
रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, ख
ली चउद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ बलि जुठ श्रेणिक
रायतुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते
वीरनी चेलकी रे, बली ठत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥
समवसरणें अद्युचिता रें, यइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥
वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तसं ताम ॥ २३ ॥
॥ वि० ॥ मत को कोइ नेतुं गयो रे, म करो निंदा
कोय ॥ वि० ॥ अस थावर सवि जीवने रे, विपयनी
संझा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस था
खना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही
ते प्राणीया रे, जीवे एकेंडि मजार ॥ २५ ॥ वि० ॥
कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे यइ दास ॥ वि० ॥
तो शो मदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥
॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवने रे, जे रह्या का
मथी दूर ॥ वि० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं
चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोया वज्रासनी ए कही
रे, पूरण पहेजी ढाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे नवि
सांनजो रे, बोले दो कुमरी वाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीलणा
 रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, ख
 ली चउद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ बलि छुठ श्रेणिक
 रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते
 वीरनी चेलकी रे, बली ठत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥
 समवसरणें श्रुचिता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥
 वीरें दीधी देशना रे, मन थाण्यां तस ताम ॥ २३ ॥
 ॥ वि० ॥ मत को कोइ नेतुं गयो रे, म फरो निंदा
 कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विषयनी
 संझा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस धा
 खना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही
 ते प्राणीया रे, जीवे एकेंडि मजार ॥ २५ ॥ वि० ॥
 कामिनी रस थागलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥
 तो शो मदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥
 ॥ वि० ॥ धन धन ते जय्य जीवने रे, जे रह्या का
 मथी दूर ॥ वि० ॥ हुं वज्रिहारी तेहनी रे, प्रणमुं
 चढते सूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोथा उछासनी ए कही
 रे, पूरण पहेली टाल ॥ वि० ॥ लखि कहे जवि
 सांचनो रे, बोले दो कुमरी बाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

ठती जे राजनी रे, आजथी सोंपी तुम्ह ॥ वि० ॥
 जो तुमें आपशो हेतुं रे, ते सही जमहुं अम्ह ॥ १२ ॥
 वि० ॥ कोइ बातें डहवुं नही रे, माहरी करीने जी
 ह ॥ वि० ॥ सबहुं कमल हृदें धरी रे, नाव रह्यो
 मुऊ गीह ॥ १३ ॥ वि० ॥ इम नारी दो आगजें रे,
 नृप कहे मूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकलौ
 रे, खोई सयली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम
 विटंवना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर
 नारी आगजें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥
 ॥ वि० ॥ कामें केइ नर ठेतया रे, कहेतां नावे पार ॥
 ॥ वि० ॥ काम वजें मज कूपकें रे, पड्यो ललितांग
 कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवजें थयो नारकी रे,
 सोनी नुवनकुमार ॥ वि० ॥ हाम्य प्रदासाकारणें रे,
 पडोतो दगीया पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें
 ईश्वर रे, नाच्या ते निःजंक ॥ वि० ॥ काममां वृज्या
 बापडा रे, कुण ते गंक ने दीक ॥ १८ ॥ वि० ॥ ननम
 नथ्यम नीतनां रे, गावे ते पण काम ॥ वि० ॥ नर
 नारीनां लोडनां रे, गावे उडव नाम ॥ १९ ॥ वि० ॥
 कामिनी कामना कृपमें रे, वृज्यो सहु संतार ॥
 ॥ वि० ॥ केवजमणने खोनया रे, दीजें कामकुमार ॥

॥ २० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीजणा
रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, ख
ली चवद हजार ॥ २१ ॥ वि० ॥ बलि जुठ श्रेणिक
रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते
वीरनी चेलकी रे, बली ठत्रीश हजार ॥ २२ ॥ वि० ॥
समवसरणें अशुचिंता रे, थइ ते जाणी ताम ॥ वि० ॥
वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस वाम ॥ २३ ॥
॥ वि० ॥ मत को कोइ नेतुं गयो रे, म करो निंदा
कोय ॥ वि० ॥ त्रस्त थावर सवि जीवने रे, विषयनी
संझा होय ॥ २४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस धा
खना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही
ते प्राणीया रे, जीवे एकेंडि मजार ॥ २५ ॥ वि० ॥
कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥
तो शो मदनवेगनो रे, आशरो कहीयें तास ॥ २६ ॥
॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवने रे, जे रह्या का
मयी दूर ॥ वि० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं
चढते खूर ॥ २७ ॥ वि० ॥ चोथा उल्लासनी ए कही
रे, पूरण पहेली ढाल ॥ वि० ॥ लव्हि कहे नवि
सांजलो रे, बोले दो कुमरी वाल ॥ २८ ॥ वि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी वाणी सांजली, बोली कुमरी ताम ॥ ए शुं
 बोल्या नाथजी, असमंजस विण काम ॥ १ ॥ महो
 टी मतिना ठो धणी, ए शी कीधि अकल ॥ विण तेडे
 स्वामी तुमें, आव्या अइ वेकल ॥ २ ॥ एम न कीजें
 नाथजी, ठोकरवाली मत्त ॥ विण कहे कोइ गेहमें,
 नवि पेसीजें ऊत्त ॥ ३ ॥ ए तो काम ठे लंवनुं, जेहमें
 नांगे नार ॥ ते करणी एहवी करे, करवा नरगमे
 सार ॥ ४ ॥ परणी घरणी जे दुवे, तेहने चढावो पाड
 ॥ खाशे ते खमशे प्रभु, रहेवा द्यो ए लाड ॥ ५ ॥
 परडुःख नंजन राजवी, ए ठे तुम्ह विरुद्ध ॥ परनारी
 सहोदरु, ते किम ठंमो हृद ॥ ६ ॥ बुं परजा अमें तुम
 तणी, बेटा बेटा समान ॥ अण घटती ए वातडी,
 केम करो राजान ॥ ७ ॥ बाहार जोश्यें जिहांथकी,
 तिहांथी आवे धाड ॥ कहो ते कुण आगल
 कहे, जे निज दुःखनी राड ॥ ८ ॥ आवला जाणी ए
 कली, जाण्युं ते माखी मर ॥ शुं जाणीने आवी
 या, लेवा रमणी रुद्ध ॥ ९ ॥ कंत विहूणी कामिनी,
 जाण्युं ते महिराण ॥ पण मुज मनडुं हाथ ठे, तेणें
 बुं सपराण ॥ १० ॥ लोक उखाणो पण कहे, जो होय

हैयुं हाथ ॥ काम दुवे तो चिहुं दिगें, जश्यें धिंगा
 साथ ॥ ११ ॥ एक तो माहरा कंतने, भूक्यो जम घर
 अऊ ॥ बली छुं करवा आवीया, यइ नकटा निर्लज्ज
 ॥ १२ ॥ तुमें तो महारा तात-ठो, एवा म कहो बोल ॥
 सो बातें एक बातडी, सती न चूके तोल ॥ १३ ॥
 एहवां बयण ते सांजली, प्रगटी नृपने जाल ॥ क्रोधा
 नलनी बाफमां, सीजि गयो ततकाल ॥ १४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ तुं तो पाथरुं बोल शीपाइडा ॥ ए देशी ॥ तव
 खी ज्यो नृप नराडो, जिम आगें हाथी हराडो, घोव्यो
 थइ लाडो रे, दो कुमरीछुं रोप धरी खरो ॥ तुमें सांजलो
 दोय सहेली, तुम लेखवुं मोहनवेली, चालो थइ वे
 हेली रे, मुऊ मंदिर महेल भूकी परो ॥ १ ॥ तुमें पा
 थरुं बोलो राजनजी, तुमें बांकुं म बोलो राजनजी,
 नारी पीयारी रे, राजनजी थाहरी को नही ॥ सेना
 विहूणी जाणी, पण मनथी तुं सपराणी, जांखे इम
 वाणी रे, दो कुमरी नृपने मुखें रही ॥ २ ॥ तु ॥
 तुम मन तो रहेरो दूरें, थम जाणुं थाशे सचूरें, जांखे
 मद पूरें रे, नृप कामातुर थइ घणो ॥ नृप आकुल व्या
 कुल थाय, जिम जल विना मठ तडफाय, देखी तव

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी वाणी सांजली, बोली कुमरी ताम ॥ ए शुं
 बोल्या नाथजी, असमंजस विण काम ॥ १ ॥ महो
 टी मतिना ठो धणी, ए शी कीधि अकल ॥ विण तेडे
 स्वामी तुमें, आव्या अइ वेकल ॥ २ ॥ एम न कीजें
 नाथजी, ठोकरवाली मत्त ॥ विण कहे कोइ गेहमें,
 नवि पेसीजें ऊत्त ॥ ३ ॥ ए तो काम ठे लंगुं, जेहमें
 नांजे नार ॥ ते करणी एहवी करे, करवा नरगमे
 सार ॥ ४ ॥ परणी घरणी जे दुवे, तेहने चढावो पाड
 ॥ खाशे ते खमशे प्रभु, रहेवा द्यो ए लाड ॥ ५ ॥
 परदुःख जंजन राजवी, ए ठे तुम्ह विरुद्ध ॥ परनारी
 सहोदरु, ते किम ठंमो हृद ॥ ६ ॥ बुं परजा अमें तुम
 तणी, बेटा बेटा समान ॥ अण घटती ए वातडी,
 केम करो राजान ॥ ७ ॥ वाहार जोइयें जिहांथकी,
 तिहांथी आवे धाड ॥ कहो ते कुण आगल
 कहे, जे निज दुःखनी राड ॥ ८ ॥ आवला जाणी ए
 कली, जाण्युं ते माखी मर ॥ शुं जाणीने आवी
 या, लेवा रमणी रुद्ध ॥ ९ ॥ कंत विहूणी कामिनी,
 जाण्युं ते महिराण ॥ पण मुऊ मनडुं हाथ ठे, तेणें
 बुं सपराण ॥ १० ॥ लोक उखाणो पण कहे, जो होय

तव में ए दाऊ कांढी परी ॥ ७ ॥ तु० ॥ मुऊ आगल
 हवे किहां जाशो, तुम करणी तुमेंहिज पाशो, मा
 क घणुं थाशो रे, जिम तस्कर संधि मुखें ग्रहे ॥
 जो मुऊने करशो राजी, तुम राखिश अहोनिश ता
 जी, रहेशो तुमें गाली रे, अगंजी मुऊ चित्तछुं वहे ॥
 ॥ ८ ॥ तु० ॥ अहि आगें मेडकुं जेतें, हरि आगें मृग जाय
 केते, जाय कहो केतें रे, दाऊ आगें चडकली दोडीने ॥ ति
 म तुमेंहीज नामिनी चोली, तुमें रहेशो आंख्यो चोली,
 जाशो किहां रोली रे, मुऊ आगलें छिग ते ठोडीने ॥
 १० ॥ तु० ॥ तव कुमरी जांखे बोल, नृप दीसो ठो फूटा
 ढोल, निगुण निटोल रे, बडा दीसो ठो कोइ तुमें ॥ क
 हे कुमरी रीपें जंजेरी, जिम कूदे कछी वखेरी, नाखुं
 नस बेरी रे, नरपतिजी हुं अवला अमें ॥ ११ ॥
 तु० ॥ के छुं नृप हियडो फूटो, के छुं तुम जगदीश रू
 ठो, के छुं कांइ खूटो रे, तुम सासोसास हतो जिके
 ॥ तुमें छुं नृप आप बखाणो, तुमें अवलाछुं मत
 ताणो, अवलायी जाणो रे, केइ हाखा नर बलीया
 तिके ॥ १२ ॥ तु० ॥ तुमें सुणो परदेशो राजा, जे
 हनी हती महोटी माजा, तेहनी ते नार्या रे, खरीकं
 तोयें नख देइ हण्यो ॥ बली जितशत्रु महिनाय, हतो

परजनी महोटी आथ, राणीयें जरी वाथ रे, पियु ना
 ख्यो जलनिधिमें सुख्यो ॥ १३ ॥ तु० ॥ ए तो इत्या
 दिक नर बलीया, पण नारी आगलें गलीया, तो गुं
 तमें बलीया रे, अम आगल नरपति गुं वको ॥ अम च
 रित्रथी को नवि जीत्यो, त्रीजगने नारख्यो चीतो, सु
 र नर खूतो रे, स्त्री आगल को नवि जक्यो ॥ १४ ॥
 ॥ तु० ॥ सिद्ध साधक जे होय जाण, तेहनां
 अमें चुकहुं वाण, एकादश गुणवाणें रे, अमें पाहुं
 तिहांथी नरनणी ॥ अमें जातें हुं स्त्री नूंमी, अमें
 चालती नरकनी कूंमी, हुं अमें हूंमी रे, ए तो चाल
 ती नव दंमक तणी ॥ १५ ॥ तु० ॥ तेमाटें नृप तु
 म आखुं, अमें कूहुं कदिय न नांखुं, चपटीमें नाखुं
 रे, उमाडी खोखुं नहि जडे ॥ अमें सतीय न चुकुं वाहुं,
 अमें दीगो ते आ राहुं, बीजो न चाहुं रे, नरपतिजी
 सुरगिरि जो पडे ॥ १६ ॥ तु० ॥ तुम करहुं होय
 ते करजो, धन लेई पोतुं जरजो, पण में तुम बर
 ज्यो रे, ए तो पहेजां दाम्नी आवी दती ॥ तब में तस
 काढी कूटी, जिम बरखी दाम्नी फूटी, दाम्नीने में
 लुंटी रे, में सूकी तुम बर दी वने ॥ १७ ॥ तु० ॥
 तुम अतिबल म्याननां नावो, तुम बल तुम स्त्रीने

बाँधी, बाँधी मूठी राखो रे, नरपतिजी मत नेटो को
 ने ॥ तुम कुल मालादार्ये चालो, जिम मुमें मंदिरमा
 मालो, मूको तुमें ख्यालो रे, नरपतिजी परखी जांझे
 ॥ १७ ॥ तुं० ॥ तव सांनजी नरपति कोप्यो, को
 धारुण अग्रिम रोप्यो, कामें करी लोप्यो रे, नृप निर
 हानल दाजी गयो ॥ तव नृपनी दुर्मति हाली, मुख
 कुमरीने कर जाल, कीधी नृपें काली रे, दो कुमरीगुं
 घेरी थयो ॥ १८ ॥ तुं० ॥ तव कुमरी रोपें दायी,
 नृपने तिहां काढ्यो बाँधी, जकढबंघ बाँधी रे, नृप
 नारख्यो वंधे मस्तकें ॥ ये गडदा पादु प्रहार, करे मुद्द
 गरना प्रहार ॥ दासी मली मारे रे, ए तो नृपने जयड
 जस्त के ॥ १९ ॥ तुं० ॥ नृप पाडे बहुली चीस, कहै
 तोयां मुख जगदीश, कुमरी ते रोपें रे, ए तो नृपना
 पाड्या दांतडा ॥ बली त्रोडे नृपनी मूठ, फल छेतो
 जा तुं छुछ, कुमरी दो पूने रे, नृप किहां गयुं बल
 तुम जातडा ॥ २० ॥ तुं० ॥ ए तो कुमरीयें नृपने
 रांक, कखो पूरो कुंदीपाक, काने पडी धाक रे, सुन
 कारें नृप चढ्यो देडकी ॥ कुमरी हणो नृपने तमाचे,
 तेतो हरिबल केरी साचें, गारुडीथी नाचे रे, ए तो
 फणिधर माथे देडकी ॥ २१ ॥ तुं० ॥ नृपने कखो

घणो उपसर्ग, नृप जाणो पडीयो नर्ग, स्त्रीजन ते वर्गे
 रे, नृपपाणी उताछुं खरुं ॥ कहे कुमरी कर जोडी, नृप
 बोव्यो मान संकोडी, मूको मुज ठोडी रे, हुं आज
 यी अनीति नहिं करुं ॥ तु० ॥ इम करतां थयो प
 रजात, जाणी धीवरें सघली वात, मञ्जीनी जाती रे,
 हुं पाम्यो स्त्री मरयादनी ॥ ए तो चोथा उल्लासनी
 मीठी, कही शास्त्रमें जेहवी दीठी, लब्धि लखी चीछी
 रे, कही बीजी ढाल संवादनी ॥ ३३ ॥ तु० ॥ इति
 ॥ दोहा ॥

॥ इम करतां ते प्रह थयो, वाज्यां मंगल तूर ॥
 जलरिना जणकार तिम, प्रगट्या उगते सूर ॥ १ ॥
 दीन वचन नरपति कहे, कुमरीने कर जोड ॥ हुं अ
 पराधी तुम तणो, तुं मुज बंधन ठोड ॥ २ ॥ हुं सूरख
 तुमछुं थयो, सतीछुं घाली वाथ ॥ जेहवी करि ते
 हवी लही, वृद्ध पणानी आय ॥ ३ ॥ जाणछुं तो घणी
 ए थइ, कीजें करुणा सार ॥ गुप्त पणे जाउं गृहे, जि
 म रहे लोकाचार ॥ ४ ॥ वांको चुंको हुं हतो, पड्यो
 कुबुद्धि क्षेत्र ॥ कुंदीपाक देइ खरो, कीथो पाधरो नेत्र ॥
 ५ ॥ सतीयोने दुःख दाखवी, जे कीथो अपराध ॥
 ते तुमें खमजो मातजी, हुं हुं तुम सुत साथ ॥ ६ ॥ इत्या

विक वचनें करी, रीजवी कुमरी दोय ॥ बंधनेथी जो
 छ्यो परो, मदनवेग नृप सोय ॥ ७ ॥ गुप्त पणे नृ
 प तिहां थकी, आव्यो निज गृह मय ॥ मुख पो
 थावी आवियो, निगुण थइ निर्लज्ज ॥ ८ ॥ जिम
 कोठीमें मुख घालीने, रोवे तस्कर मात ॥ तिम नृप
 रोवे मन्त्रमें, जे लह्यो प्रह्वन्न घात ॥ ९ ॥ जाण्युं हतुं
 सुख मालगुं, दो प्यारीनी साय ॥ लेणेथी देणे पडी,
 खाली पडी जरी बाय ॥ १० ॥ जे नर मूरख वापडो,
 देखी परायो माल ॥ लेवा जाये दोडीने, ते थाये पै
 माल ॥ ११ ॥ ते करणी नृपने थइ, मनमें रहियो
 पूर ॥ मुख दीवाली दाखवे, बहे मन होलीपूर
 ॥ १२ ॥ रमणीथी मन वालीयुं, मूकी ममता दूर ॥
 राज काज नृप चालवे, दिन दिन चढते नूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ धण समरथ पियु नानडो ॥ ए देशी ॥ हवे कुम
 री दो कंतने, कहे कर जोडी सुणो सुलतान ॥ सजनी
 नृपने काढयो कूटीने, जिम हांकोटी काढे श्वान ॥ १ ॥
 सांजजो प्रीतम माहरा, तुम परसादें बाध्युं जोर ॥
 ठिक पाट्टना प्रहारथी, मजबुत काढयो ज्युं करी ढोर ॥
 २ ॥ सां० ॥ जीवित जगें नृप जाणशे, खटकशे निशि

घणो उपसर्ग, नृप जाणे पडीयो नर्ग, स्त्रीजन ते वर्गे
 रे, नृपपाणी उताखुं खरुं ॥ कहे कुमरी कर जोडी, नृप
 बोव्यो मान संकोडी, मूको मुज ठोडी रे, हुं आज
 थी अनीति नहिं करुं ॥ तुण ॥ इम करतां थयो प
 रनात, जाणी धीवरें सघली वात, मल्लीनी जाती रें,
 हुं पाम्यो स्त्री मरयादनी ॥ ए तो चोथा उल्लासनी
 मीठी, कही शास्त्रमें जेहवी दीठी, लब्धि लखी चीछी
 रे, कही बीजी ढाल संवादनी ॥ ३३ ॥ तुण ॥ इति
 ॥ दोहा ॥

॥ इम करतां ते प्रह थयो, वाज्यां मंगल तूर ॥
 जलरिना जणकार तिम, प्रगट्या उगते सूर ॥ १ ॥
 दीन वचन नरपति कहे, कुमरीने कर जोड ॥ हुं अ
 पराधी तुम तणो, तुं मुज बंधन ठोड ॥ २ ॥ हुं मूरख
 तुमशुं थयो, सतीशुं घाली वाथ ॥ जेहवी करि ते
 हवी लही, वृद्ध पणानी आय ॥ ३ ॥ जाणशुं तो घणी
 ए थइ, कीजें करुणा सार ॥ गुप्त पणे जाउं गृहे, जि
 म रहे लोकाचार ॥ ४ ॥ वांको चुंको हुं हतो, पड्यो
 कुबुद्धि क्षेत्र ॥ कुंदीपाक देइ खरो, कीधो पाथरो नेत्र ॥
 ५ ॥ सतीयोने दुःख दाखवी, जे कीधो अपराध ॥
 ते तुमें खमजो मातजी, हुं हुं तुम सुत साथ ॥ ६ ॥ इत्या

ज्योति निवास ॥ ११ ॥ सां० ॥ नर नारी सोहे सत्यथी,
 सत्यथी माने सहु संसार ॥ सत्यथी चूके जे मानवी,
 नव दंभक लहे ते निरधार ॥ १२ ॥ सां० ॥ शिरनामें
 लखे कागलें, साडी चम्मोतेर आंक जे दोय ॥ तेहमें पण
 जन पंमितें, सत्य ठराव्युं लोकमे जोय ॥ १३ ॥ सां० ॥
 सत्य मत ठोडे मित्र तुं, चोगडे लह्मी चोगणी होय ॥
 सुख दुःख रेखा दो कर्मनी, टाले पण न टले होय ॥
 १४ ॥ सां० ॥ इण परें पण लौकिक मत्तें, सत्यथी पामे सु
 खनी रेख ॥ मानवी चूके जो सत्यथी, तो जहे दुःख
 नी रेखा देख ॥ १५ ॥ सां० ॥ सतीया सत्त न ठोडीयें,
 सत्त ठोडे पत जाय ॥ सत्तनी वांधि लह्मी ते, आवे
 सन्मुख धाय ॥ १६ ॥ सां० ॥ नृदेव नामें द्विज थ
 यो, तेणें न मूक्युं सत्य लगार ॥ दश दोकडा नृप
 दानथी, सत्यथी लह्यो ते अखुट जंभार ॥ १७ ॥
 ॥ सां० ॥ धण कण कंवर पामीयें, ते पण सत्य
 तणो परजाव ॥ मनवंठित महिजा मिले, सतिय
 शिरोमणि शुद्ध सुजाव ॥ १८ ॥ सां० ॥ शोल सती
 थइ मोटकी, ते पण अध्यापी गवराय ॥ सत्य जो राखे
 आपथी, जिनवर ते पण सूत्रें चढाय ॥ १९ ॥ सां० ॥
 त्रेशठ शिलाका पुरुष ते, सत्यवादी थया थाडो थने

दिन कालजे साल ॥ निराशी यइ दीन ते मारनी,
 पूंजी ले गयो माल ॥ ३ ॥ सां० ॥ साजी हलदर फट
 कडी, सेववी पडरो मास बे चार ॥ मम्मइ अरोलीयो,
 खाओ त्यारें थारो करार ॥ ४ ॥ सां० ॥ इत्यादिक
 श्रवणें सुणी, हरिबल नारीनां करय वखाण ॥
 सुकुलीणी साची तुमें, पणधारी में दीठी सुजाण ॥ ५ ॥
 सांजलो प्यारी माहरी ॥ ए आंकणी ॥ तुमें ठो आत
 म जीवन प्राण ॥ आंखनो कीकी ठो तुमें, तुमें ठो
 महोटां घरनां मंमाण ॥ ६ ॥ सां० ॥ कुलवधूनां
 ए चिन्ह ठे, पियुशुं राखे मनह पवित्त ॥ कष्ट पडे कै
 इ जातिनां, तो पण सतीय न मूके सत्त ॥ ७ ॥
 सां० ॥ सत्य वडुं संसारमां, सत्यथी वरओ जग ज
 लधार ॥ सत्यथी पृथिवी थिर रहे, धूतारी रहे सत्य
 आधार ॥ ८ ॥ सां० ॥ सुरगिरि पण रहे सत्यथी,
 सत्यथी शशि रवि चाले आकाश ॥ पृथिवी पण फ
 ले सत्यथी, वणसइ नार अठार उल्लास ॥ ९ ॥
 सां० ॥ वणज व्यापार चाले बहु, हुंमी चाले देश
 प्रदेश ॥ ते पण सत्यथी जाणजो, त्रिजग कहुं सत्य
 विशेष ॥ १० ॥ सां० ॥ केवली केवल सत्यने, त्रिगडे वे
 सी करेय प्रकाश ॥ धर्मनुं मर्म ते सत्य ठे, सत्यथी पामे

॥ सां० ॥ ए मुझयें कामिनी, कालने धायातुं ते का
म ॥ काल जूंनो ते संसारमां, कालयो विगढे केहिनां
ठाम ॥ २९ ॥ सां० ॥ इम जाणी हरिबल तिहां, स
मखो सागरसुर उलमाल ॥ लब्धि कहे गुन सत्यनी,
चोथा उवासरनी प्रीजी ढाल ॥ ३० ॥ सां० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल हरखें करी, समखो सागर देव ॥
ते पण ततखिण आचियो, कहो वध किम समरेव ॥
॥ १ ॥ तव हरिबल कर जोडिने, सुरने कहे सोछांह ॥
कालसेन कम जातिने, यो तुमैं अग्रिमांह ॥ २ ॥
शब्य काढो प्रभु माहरुं, जिम लहुं सुख नरपूर ॥ वि
ए खूने मुजने नडे, तेहने टालो दूर ॥ ३ ॥ हरिब
लनी वाणी सुणी, थयो तव सुर परसन्न ॥ हरिबल
केरी कांतिमें, संक्रम्यो सुर तस तन्न ॥ ४ ॥ दिव्यां
वर पहेरी करी, पहेरी नूपण चंग ॥ दिव्य रूप हरि
बल तणुं, कीधुं सुरसम अंग ॥ ५ ॥ हरिबल पासैं
सुर करे, वैक्रिय बीजुं रूप ॥ नज मारगयकी उतरी,
आवि दो जेटे नूप ॥ ६ ॥ चमत्कार चित्तमें लही,
हरबल परखद सार ॥ हरिबलने देखी तिहां, मजिया
वांह पसार ॥ ७ ॥ नृप मंत्रीने प्रगटीधुं, महोदुं ॥

॥ ३॥ इयं स्त्रीया। प्राणो त्वमे, सखजो पुमो सख्य नि
 देव ॥ ३० ॥ स्त्री० ॥ इति यो अग्निर्वै नाग्निने, सख्य
 सख्यो यो हृदये ॥ कानिनी दो सखियन करी, दंपती
 सोहीमो सखियन ॥ ३१ ॥ स्त्री० ॥ सुखे समर्थे देव
 नी रहे, निज मंदिर मोह न्याद ॥ दो मुंदक सुनी
 सो, पंद विरद सुख न्याय न्याद ॥ ३२ ॥ स्त्री० ॥
 निज मंदिर मोह न्याद, जव थयो पुण्य एक मान ॥
 तव हृदये निज निज, निकटुं निजसे मनने स
 खिय ॥ ३३ ॥ स्त्री० ॥ सुखे न जरी जीवटी, करी
 सखी तव मोह न न्याद ॥ ३४ ॥ स्त्री० ॥ कानिनी न

मुजने जीवित दीध हे ॥ २४ ॥ रं० ॥ आगत सागत
 घणि करी, मुजने ते धर्मराज हे ॥ सोऊ समाचार
 तुम तणा, पुढे ते यमराज हे ॥ २५ ॥ रं० ॥ तव
 में तिहां कर जोटीने, यमने करि अरदास हे ॥ आब्यो
 हुं एक राजयी, तेढवा तुम उखास हे ॥ २६ ॥ रं० ॥
 विशाला पुरनो धणी, मदनवेग ते राय हे ॥ अंग
 जने परणाववा, उंछव महोटी कराय हे ॥ २७ ॥
 ॥ रं० ॥ देश देशाउरि राजवी, मेलगे महोटा राज
 न्न हे ॥ वैशाख छुद्रि पांचम दिनें, परणगे पुत्र रत
 न्न हे ॥ २८ ॥ रं० ॥ ते माटे तुम तेढवा, मूक्यो ठे
 मुज आज हे ॥ तुम आवे प्रभु जगधणी, वधगे म
 होटी लाज हे ॥ २९ ॥ रं० ॥ इणि परें अरज ते सां
 नली, बोखो यम ततकाल हे ॥ चौथी चौथा उछा
 सनी, लन्धि कही ए ढाल हे ॥ ३० ॥ रं० ॥ इति ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हरखित यह यमराजजी, बोखो मुखयी मि
 ष्ट ॥ यम कहे हरखिल तुम धणी, ठे मुज मननो
 इष्ट ॥ १ ॥ पण तुम नृप मुज मंदिरें, जो आवे इक
 वार ॥ त्यार पनें मुज आवबुं, यागे तव निरधार ॥ २ ॥
 अचली गंगा जो बहे, तो मुजयी अवराय ॥ डुनियां

॥ रं० ॥ दो मंत्री यमरायना, काल अने माहाकाल
 हे ॥ चित्र विचित्र दो दफतरी, पुण्य पाप लिखत
 विशाल हे ॥ १५ ॥ रं० ॥ दुनीयां जे करणी करे,
 सुकृत दुःकृत देख हे ॥ चित्र विचित्र ते मांमिने, दा
 खवे यमने लेख हे ॥ १६ ॥ रं० ॥ ते करणी यम
 देखीने, दो दुनियाने शीख हे ॥ सुकृतने सुख दाखवे,
 दुःकृतने दे नीख हे ॥ १७ ॥ रं० ॥ ईति उपड्व जगतने,
 मर्कीना जे रोग हे ॥ काल डकाल ते जे पडे, ज्वरना
 मेलवे जोग हे ॥ १८ ॥ रं० ॥ पूर्वज व्यंतरी व्यंतरा,
 वलगे ते सनमुख हे ॥ ए सवि करणी यम तणी, ड
 नियां जे लहे दुःख हे ॥ १९ ॥ रं० ॥ रूसे जो यम
 जगतने, दाखवी नारकी घात हे ॥ तूसे तो यम ने
 हगुं, आपे ते सुख शात हे ॥ २० ॥ रं० ॥ जोरो घ
 णो यमराजनो, कहेतां नावे पार हे ॥ यमनो वि
 चार विशेष ठे, जगवतीमांहे विस्तार हे ॥ २१ ॥
 ॥ रं० ॥ लौकिकने मते जे सुणो, तेह में दीगो सत्य
 हे ॥ तेह सन्नामें हुं गयो, यमने करी प्रणिपत्य हे ॥
 ॥ २२ ॥ रं० ॥ ततखिण यमें मुज उजख्यो, अवधि
 ज्ञानें सार हे ॥ देव शक्ति करी मुजने, फरी दीयो
 अवतार हे ॥ २३ ॥ रं० ॥ नौतन काया माहरी,

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ फतमलनी देशी ॥ नरपति सांजलो माहरी चा
 ए, आसोमह्व वेधक कहे ॥ न० ॥ ठे जगमें यमराण,
 त्रिजग आणा शिर वहे ॥ १ ॥ न० ॥ तेणें मुऊ तु
 म संग, भूक्यो तुम आमंत्रवा ॥ न० ॥ राखी मने बहु
 रंग, चालो तुमें स्वर्ग पंत्रवा ॥ २ ॥ न० ॥ ठे मनमें घणी
 होंश, मिलवा तुम यम नाथने ॥ न० ॥ दीधा ठे घणा
 खंस, वेगें पधारो लेइ साथने ॥ ३ ॥ न० ॥ मंत्रि प्र
 मुख परिवार, तुम नगरीमें जे होवे ॥ न० ॥ व्यो
 तुम साथ विस्तार, सुरलोक नर नारी जोवे ॥ ४ ॥
 न० ॥ तुम मन वंछित होय, रमणी रुद्धि दो पावशो
 ॥ न० ॥ अजरामर पद जोय, सो पण लहेशो जो
 आवशो ॥ ५ ॥ न० ॥ म करो ढील लगाव, शीघ्र
 याव तुमें नूथणी ॥ न० ॥ यम नृप तुमगुंजी प्यार,
 राखे ठे एकंगो तुम जणी ॥ ६ ॥ न० ॥ इणिपरें
 सुर ते वदंत, हरखिल शाखा नेदथी ॥ न० ॥ सांजली
 मन हरखंत, यमना संदेशा उमेदथी ॥ ७ ॥ न० ॥
 धन घडी धन मुऊ दीस, यमगुं थयो मुऊ नेहलो ॥
 ॥ न० ॥ सज थइ विशवावीश, यम कने जावें जो
 वेहलो ॥ ८ ॥ न० ॥ पूठी यमने संदेश, मननी व्रान्ति

माने मुजने, करि परमेसर ठाय ॥३॥ तेमाटे हरिवल
 तुमें, कहेजो नृपने एम ॥ एक वार मुज मंदिरें, आवो
 ज्युं करि तेम ॥ ४ ॥ जो सेवक साचो हुवे, तो ले
 नगरी साथ ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, मदनवेग महि
 नाथ ॥ ५ ॥ मुज मंदिरनी रसवती, कबुल करेशो
 आय ॥ तव तुम मंदिर चाहिने, आवीशुं अमें धाय ॥
 ॥ ६ ॥ एह संदेशो अम तणो, हरिवल कहेजो तु
 म्म ॥ तुम नृपने अम तेडवा, मूकुं ए नृत्य अम्म
 ॥ ७ ॥ वलि तुमें शाता पूठजो, कहेजो अम्म जु
 हार ॥ जो आशा करो अम तणी, आवजो सर्ग मजार
 ॥ ८ ॥ एम कही सनमानिने, पहेरावी शणगार ॥ वो
 लावी अमने वव्या, यमराजा हितकार ॥ ९ ॥ देव प्र
 नावें ततखिणें, जोतां एक पलक्क ॥ तुम पासें अमें
 आविया, जोई सर्ग हलक्क ॥ १० ॥ यमनृपनो ए नृत्य
 ठे, आसोमह नामें सनूर ॥ आमंत्रण करवा जणी
 आव्यो तुम्म हजूर ॥ ११ ॥ इणिपरें हरिवलें मांफीने
 कह्या संदेशा जाम ॥ मदनवेग राजी थयो, ते निसुर्ण
 अनिराम ॥ १२ ॥ तिणे अवसर तक जोश्ने, सुरने
 कीधी शान ॥ सुर वोव्यो जमनो थइ, सांजलो तुम
 राजान ॥ १३ ॥

मक करतां रें एम, नागर जन सद्गु संचर्यां ॥ न० ॥
 हरिवल ने सुर तेम, ते पण सार्थें नीसखा ॥ १७ ॥
 ॥ न० ॥ तिल जेटलो नहि माग, एटली मांथाता म
 ली ॥ न० ॥ चय सुंधी पामी ते जाग, तव हरिवल
 मन अटकली ॥ १८ ॥ न० ॥ मंढीयें जाणी ते वातं,
 सही तो ए नृप कांठे चढे ॥ न० ॥ अंतेवरी पण
 साथ, ते पण जइ वासैं चढे ॥ २० ॥ न० ॥ बीजा
 नगरजन सर्व, ते पण नृपनी केडें चढे ॥ न० ॥ तव
 होवे पापनुं पर्व, घोर करणी वहु जव नढे ॥ २१ ॥
 ॥ न० ॥ हरिवल चिंते रे ताम, ठे मुज वयरी जे
 माहरे ॥ न० ॥ बीजानुं शुं काम, काम ठे एकनुं मा
 हरे ॥ २२ ॥ न० ॥ देवं उपाडी तास, चिता अग्नीनी जा
 लमां ॥ न० ॥ निकले जमनो पास, एठ जायें यम
 शालमां ॥ २३ ॥ न० ॥ चिंतवी इम अजेदान, देवं
 नृपादिक जंतुने ॥ न० ॥ गुरु उपदेशने मान, जी
 वित देवं बीजा संतने ॥ २४ ॥ न० ॥ इम जाणी
 ततकाल, सलगाडी चिंता तिण समे ॥ न० ॥ नज
 लमें प्रगटी त्यां जाल, देखत कायर मन जमे ॥ २५ ॥
 ॥ न० ॥ नृप कहे करी शणगार, वाजित्र महोटे
 वाजते ॥ न० ॥ पेसे ते अगनी मजार, तव हरिवल

टालुं परी ॥ न० ॥ यमशुं वधारी नेह, अमरपणुं ते
 लहुं खरी ॥ ए ॥ न० ॥ नगरमां पडहो वजाय,
 घरोघर लोकने नोतखां ॥ न० ॥ नर नारी हर्ष नराय,
 यमघर जावाने परवखा ॥ १० ॥ न० ॥ निर्धन वि
 रहिणी नार, वालरंमादि दो नागिया ॥ न० ॥ जाणे जम
 दरवार, जाइने अश्यें सोनागियां ॥ ११ ॥ न० ॥ वां
 जीया वांढा वेकार, दुःखीया स्त्री सुत कारणें ॥
 ॥ न० ॥ ते पण उमह्या अपार, जावाने यम वा
 रणें ॥ १२ ॥ न० ॥ रोगीने दुःखीया जेह, जुला दू
 टा ने पांगला ॥ न० ॥ कोढीया काजा तेह, काणा कां
 चा ने आंधजा ॥ १३ ॥ न० ॥ बाल तरुण जे वृद्ध,
 सज्ज अयां मोकरी मोकरी ॥ न० ॥ अमर पदवी पर
 सिद्ध, जे आवो यमने नोरो करी ॥ १४ ॥ न० ॥ इक
 शकनी माहोमांहे, उपरा उपर पडी बहे ॥ न० ॥
 जावाने स्वर्ग उवाह, जमण लाडु खावा गह गहे ॥
 ॥ १५ ॥ न० ॥ इलिपरें नगरीनां लोक, यमनणी
 जावाने हलफले ॥ न० ॥ नृप पण यम सारु लोक,
 जेइने नृप पण नीकले ॥ १६ ॥ न० ॥ अंतेशरी पण
 साय, नृप संगें करी परवरी ॥ न० ॥ जेटवा ते य
 मनाय, ठत्रीश नृपकुली संचरी ॥ १७ ॥ न० ॥ थक

मजार ॥ जलो कही इण नाकरिये, आणी मन उप
मार ॥ ७ ॥ तव नरपति कहे मंत्रिने, सांजल तुं कालसे
न ॥ जमदरवारें जायवा, शीघ्र पाउं तुम तेण ॥ ८ ॥

॥ ढाल ठी ॥

॥ नयन हमारे लालनां ॥ ए देशी ॥ तव हरखित
मंत्री थयो, सांजलि नृपनी यात ॥ सनेही ॥ यमने मं
दिर जायवा, थयो वत्सुक हरखात ॥ स० ॥ त० ॥ १ ॥
जाणे मंत्री मन्त्रमें, तूठा मुज नगवान ॥ स० ॥ यम
मंदिर हुं जाइने, मागुं वंठित दान ॥ स० ॥ त० ॥ २ ॥
राजी करुं श्राद्धदेवने, जटपट करी गुण गेह ॥ स० ॥
थमर पटोलेचं मागीने, रमणी रुद्धि सुदेह ॥ स० ॥
त० ॥ ३ ॥ इणपरें मंत्री आलोचीने, सज्ज थयो ति
णिवार ॥ स० ॥ कर जोडी कहे रायने, मंत्री वयण
उदार ॥ स० ॥ त० ॥ ४ ॥ यमनो जे पडिहार ठे, ते
आवे मुज साथ ॥ स० ॥ तो जइ यमने जेटीयें, न
रीयें वंठित बाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ५ ॥ तव नृप कहे
पडिहारने, मुज मंत्रीछे संग ॥ स० ॥ सर्ग सुवन पद
दाखवा, मेलवो यमनो रंग ॥ स० ॥ त० ॥ ६ ॥ करी
प्रणिपत माहरी तिहां, करजो मुज अरदास ॥ स० ॥

कहो तो ठही अस्वारीगुं, आवुं तुमचे विसास ॥
 ॥ स० ॥ त० ॥ ७ ॥ कहो तो सहु नगरी तणो, सब
 जो आवे साथ ॥ स० ॥ यम राजाने जेढवा, आवे
 विशालानाय ॥ स० ॥ त० ॥ ८ ॥ इणपरें विनती
 माहरी, यम नृपने करेय ॥ स० ॥ शीघ्रगतें तुम आ
 वजो, यमनी रजा जेय ॥ स० ॥ त० ॥ ९ ॥ तव सु
 र कहे ते राखने, जती कट्टी नुमें गुज ॥ स० ॥ मुज
 त्वासी यमनायने, मेजवुं मंत्री नुज ॥ स० ॥ त० ॥
 ॥ १० ॥ एम कही पडिहार ते, मागी नृपनी शीख
 ॥ स० ॥ वेगो अगनी जाजमां. महु जन देखत
 शिख ॥ स० ॥ त० ॥ ११ ॥ मंत्री पण काजमेन ते,
 नृपने कीथ जुहार ॥ स० ॥ नगरी जन सहु साथने,
 प्रणमी करे मनुहार ॥ स० ॥ त० ॥ १२ ॥ वेगो च
 यनी जाजमां, मंत्री पण नेणिवार ॥ स० ॥ गुर
 लगे काजमेन ते, मंत्री वली ययो वार ॥ स० ॥ त० ॥
 ॥ १३ ॥ नगरी जन सहु देखतां, मंत्री गुर ययो
 ॥ स० ॥ त० ॥ १४ ॥ नगरी जन सहु देखतां, मंत्री गुर ययो

दो घड़ी चौ घड़ी, मंत्रीनी जोई वाट ॥ स० ॥ हजीय
 लगण आव्यो नही, नृप कहे शो थयो घाट ॥ स० ॥
 ॥ त० ॥ १६ ॥ तव हरिबल कहे नूपने, गुं कहो स
 मजू थाय ॥ स० ॥ जे गयो यमने मंदिरें, ते किम
 आवे धाय ॥ स० ॥ त० ॥ १७ ॥ जे गयां मडदां
 मशाणमां, ते जो जीवतां थाय ॥ स० ॥ तो पाठो
 मंत्री इहां, आवे तुमचे पाय ॥ स० ॥ त० ॥ १८ ॥
 शी हवे एहनी चिंता करो, म करो मंत्रीनी तांत ॥
 ॥ स० ॥ करणी जेहवी इणें करी, तेहवो जह्यो ते
 घात ॥ स० ॥ त० ॥ १९ ॥ विण खूने तुम मंत्रवी,
 लीधी माहरी केड ॥ स० ॥ तव में दीधो ए अग्रिमें,
 यम मिशें ए करि जेड ॥ स० ॥ त० ॥ २० ॥ बली
 तुमने इणें कुमतियें, तुमचां जंगव्यां हाड ॥ स० ॥
 दांत पडाव्या जे तुम तणा, ते तुम मंत्रीनो पाड ॥
 ॥ स० ॥ त० ॥ २१ ॥ ए गुण मंत्री तुम तणा, हुं
 करुं केतां बखाण ॥ स० ॥ इष्ट कुबुद्धि जे हतो, ते
 हनां में काढ्यां प्राण ॥ स० ॥ त० ॥ २२ ॥ एहनो
 धोखो मत करो, राखो मन नृप गोर ॥ स० ॥ मूक्यो
 में नारकी पांतिमां, सातमी जे कही घोर ॥ स० ॥
 ॥ त० ॥ २३ ॥ जे जेहवी करणी करे, तेहवी जहे

(३०३)

फलपत्य ॥ स० ॥ उंकण चुंकणनी परें, मेळ्यो उखा
णो सत्य ॥ स० ॥ त० ॥ १४ ॥ कुण राणा कुण दूवला,
करणी सारु होय ॥ स० ॥ कुगति सुगति लहे कर
णीयें, उत्तम मध्यम जोय ॥ स० ॥ त० ॥ १५ ॥
इणिपरें नरपतिजी तुमें, जो करशो अन्याय ॥ स० ॥
तो तुमची गति इणि परें, होशे वाउकी राय ॥ स० ॥
॥ त० ॥ १६ ॥ इणिपरें वाणी सांजली, चमक्यो न
रपति चित्त ॥ स० ॥ सांजल रे नीत नाटिका, जाणी
मह्नीनी रीत ॥ स० ॥ त० ॥ १७ ॥ मंत्रीनी लइ नस्म
ते, जल शरणें करी राय ॥ स० ॥ हरिवल कहे नृप
पुर तणी, जाय अलाय बलाय ॥ स० ॥ त० ॥ १८ ॥ इम
कहि नृप मंदिरें, वलियो ते सहिपाल ॥ स० ॥ लब्धि कही
ठळी मर्मनी, चोथ्या उल्लासनी ढाल ॥ स० ॥ त० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नूपादिक नगरी जना, सहु समज्या मनमांहि ॥
ए करणी हरिवल तणी, जाणी सघले त्यांहि ॥ १ ॥
जली थई नावठ गई, विण उषधें विराध ॥ हरिवल
केरा धर्मथी, हवे थइ सुख समाध ॥ २ ॥ इम कहेतां
नगरी जनां, वलीयां निज घर लोक ॥ हरिवल साचो
हीरलो, पुण्य तणो ए थोक ॥ ३ ॥ कालसेन कुपा

अमे, शायो हरिवर्ले त्रीप ॥ जन दिये रंग नथामणां,
 घर घर धृतना दीप ॥ ४ ॥ सर्ग नरग हुनियां मुखें,
 नाखे सघली घात ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेह
 बी बहे ख्यात ॥ ५ ॥ ज्ञानी तो कहे ज्ञानथी, देखी
 स्वर्ग ने नर्ग ॥ पण कहे लोक मतें करि, करणीयें नर्ग
 ने सर्ग ॥ ६ ॥ सागरदेव पसायथी, कीधुं जाणुं का
 म ॥ हरिवल चरित्र ते देखिने, लाज्यो नरपति ताम
 ॥ ७ ॥ तंव हरिवल कहे रायने, म करो मनमें सो
 च ॥ तुम मंत्री ते कुमतियें, तुमचो कराव्यो लोच ॥
 ॥ ८ ॥ लंकायें मुज मोकल्यो, वज्रि मूक्यो यम घेर ॥
 तुमें चुक्या मुज नारीगुं, तव में करि ए पेर ॥ ९ ॥
 तुम मंत्रीनी संगतें, करता तुमें पण साथ ॥ पण में
 राख्या जीवता, करुणा आणी नाथ ॥ १० ॥ ए गुण
 जेजो माहरो, जीवित सूधी चूप ॥ एम कही हरिव
 ल तिहां, आव्यो निज घर चूप ॥ ११ ॥ वसंतसिरी
 कुसुमसिरी, दो प्यारी गुणवंत ॥ पिशु मुखचंद विलो
 कतां, दो कुमरी हरखंत ॥ १२ ॥ सुख विलसे संसा
 रमां, टाली सघलां शय्य ॥ करणी करे जिन धर्मनी,
 हरिवल मढी अगील ॥ १३ ॥ परतख देखी पारखुं,
 हरिवल केरो धर्म ॥ पुरजन सद्गु धर्मो थया, टाली

मिथ्या जर्म ॥ १४ ॥ नरपति पण मन लाजियो, जे
निज कीधां चरित्र ॥ ते देखी धोखो करे, नरपति म
नशुं विचित्र ॥ १५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ महिपति नांखे प
रजने रे, बेगो ते निज धाम ॥ साजन सांजलो रे ॥
हा हा में ए गुं कछुं रे, अणघटतुं ए काम ॥ १ ॥ सा०
॥ गुणवंत ले गुण धाम, मूकी आमलो रे ॥ ए आं
कणी ॥ किया जवनी मोहनी रे, जागी इण जव मां
हि ॥ सा० ॥ ए नारीथी दुःख लह्युं रे, विण कामें
निरुह्वाहि ॥ २ ॥ सा० ॥ तन धन खोयां नृप कहें
रे, खोइ नारीथी लाज ॥ सा० ॥ वात चलावी चिहुं
दिशें रे, वाजते ढोल आवाज ॥ ३ ॥ सा० ॥ पूरव
जवनी वैरिणी रे, पोष्युं वयर विशेष ॥ सा० ॥ जेह
वी करणी में करी रे, तेहवी लही तस रेख ॥ ४ ॥
सा० ॥ दोष नही को एहनो रे, ठे सघलो मुऊ दोष
॥ सा० ॥ पी पाणी घर पूठीने रे, शो तस करवो शोष
॥ ५ ॥ सा० ॥ कुलमर्यादा मूकीने रे, खोटी में मागी जी
ख ॥ सा० ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गण्यां रे, कोनी न
मानी शीख ॥ ६ ॥ सा० ॥ पारकी मति हुं चाली

यो रे, मेढ्यां कुकर्मनां धूल ॥ सा० ॥ कोडीनी गरल
 सरी नही रे, नृप करे नाबी धूल ॥ ७॥ सा० ॥ मुकु
 धरे ठे ठती पदमणी रे, राणी रूप निधान ॥ सा० ॥
 ते मूकी होंशी पयो रे, उल्लर करवा निदान ॥ ८ ॥
 सा० ॥ ठे स्त्री अणुचिनी कोयली रे, मल मूत्र जरियां
 गात्र ॥ सा० ॥ चारे द्वार चहो रह्यां रे, पहेखां दिसै
 सुपात्र ॥ ९ ॥ सा० ॥ अण बोलाव्यां सुंदरु रे, दीसै
 ढांक्यां रतत्र ॥ सा० ॥ काम पडे चटकी चहे रे, वि
 चक विचाही तत्र ॥ १० ॥ सा० ॥ जागे योचन योचने रे,
 बाघे कामनुं जोर ॥ सा० ॥ सिद्ध साधक कुण सुर
 नरा रे, जोवे अंगनां ठोर ॥ ११ ॥ सा० ॥ पंचास्ति
 कायमें पण कह्यां रे, जिनवरें कामनां वाण ॥ सा०
 ॥ तो मानवनुं शुं गजुं रे, कामें मनावी आण ॥ १२ ॥
 सा० ॥ धिग धिग काम विटंबना रे, कामें लाज गमा
 य ॥ सा० ॥ कामें खोवे मालने रे, कामें गीत गवाय
 ॥ १३ ॥ सा० ॥ वध बंधन कामें लहे रे, कामें उं
 चा टंगाय ॥ सा० ॥ कामें दंभ जरे सही रे, कामें हां
 सी कराय ॥ १४ ॥ सा० ॥ कामज्वरें बलतो रहें
 रे, तनयी क्षीण ते थाय ॥ सा० ॥ भात पितादिक
 नवि गणो रे, न गणो कामांध कांय ॥ १५ ॥ सा० ॥

चीती हरो ते जाणरो रे, जे करे परस्त्रीनो संग ॥
 सा० ॥ ते होरो खेरु विकारछुं रे, खोई तन मन रंग ॥
 १६ ॥ सा० ॥ शी मुऊने ए उपनी रे, पडवा नारकी
 कुंम ॥ सा० ॥ धिग धिग माहरी बुद्धिने रे, जे थयो
 व्यसनी जुंम ॥ १७ ॥ सा० ॥ धन हरिवलनी बुद्धिने रे,
 दीधुं जीवित दान ॥ सा० ॥ अजर प्यालो इण जीरव्यो
 रे, दीठो वडो सावधान ॥ १८ ॥ सा० ॥ जो कोपे
 मुऊ उपरें रे, तो करे मंत्रीनी रीत ॥ सा० ॥ राज ली
 ये मुऊ एकलो रे, तो शी रहे परतीत ॥ १९ ॥ सा०
 ॥ में महारे हाथे करी रे, करणी खोटी कीध ॥
 सा० ॥ नीति मारग लोपी करी रे, हरिवलने डुःख
 दीध ॥ २० ॥ सा० ॥ ते किम सांइ सांसहे रे, जे
 हुं चाव्यो अनीत ॥ सा० ॥ तो शीखामण नली ज
 डी रे, कदि नहि विसरे चित्त ॥ २१ ॥ सा० ॥ अव
 गुण उपर गुण करे रे, ते तो हरिवल एक ॥ सा० ॥
 मुऊने राख्यो जीवतो रे, दयावंत विवेक ॥ २२ ॥
 सा० ॥ सुगुण पुरुष में दीठडो रे, हरिवल साहस
 धीर ॥ सा० ॥ उपगारी शिरसेहरो रे, वीर शिरोम
 णि वीर ॥ २३ ॥ सा० ॥ धन हरिवलना तातने
 रे, धन हरिवलनी मात ॥ सा० ॥ कृत्रिवंशमां दी

पतो रे, मुजट शिरोमणि जात ॥ २४ ॥ सा० ॥
 धन धन ते गुरुदेवने रे, जेणें वताव्यो धर्म ॥ सा०
 ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, जे राखी मुज शर्म ॥ २५
 ॥ सा० ॥ इम हरिविलना गुण स्तवे रे, परजामें मद
 नवेग ॥ सा० ॥ तोल वधाखो माहरो रे, हरिविलखुं
 करि नेग ॥ २६ ॥ सा० ॥ तो हुं पुत्री माहरी रे,
 परणाखुं गुन काज ॥ सा० ॥ कर मूकामण वली दीखुं
 रे, महीयल महोदुं राज ॥ २७ ॥ सा० ॥ गुण
 उशीगण एथइ रे, हुं हवे थावुं निःपाप ॥ सा० ॥ पठें
 हुं संयम आवरुं रे, ज्युं मटे जवनो संताप ॥ २८ ॥
 सा० ॥ एता दिन नूलो जम्यो रे, विण दर्शन मुज
 जीव ॥ सा० ॥ हवे करणी एहवी करुं रे, जिम ल
 हुं सुख सदीव ॥ २९ ॥ सा० ॥ इम आलोचना
 परजमें रे, कीधी ते महिपाल ॥ सा० ॥ चोथा उ
 छासनी ए कही रे, लब्धि सातमी ढाल ॥ ३० ॥ सा० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ इणिपरें नृप आलोचनी, आलोयां निज पाप ॥
 हलुआकर्मी नृप थयो, करवा शिव मेलाप ॥ १ ॥
 जिहां सुधी अज्ञानतम, व्यापी रखुं घटमांहि ॥ ति
 हां सुधी ते जीवडो, पाम्यो ज्ञान न क्यांहि ॥ २ ॥ स

हज गुणो जग जीवने, आवे शुद्ध स्वभाव ॥ तव घट
 में दर्शन रवि, प्रगटे तेज प्रभाव ॥ ३ ॥ तव ठंमे अ
 ज्ञान तम, प्रगटे ज्ञान उद्योत ॥ अष्ट करम दल ठे
 दिने, जइ नखे ज्योतिमें ज्योत ॥ ४ ॥ हवे करणी करं
 धर्मनी, ठेहडो समारं शुद्ध ॥ वणकर पण ते वल्ल
 नो, ठेहडो समारे शुद्ध ॥ ५ ॥ इम जाणी हरिवल
 प्रत्ये, तेडाव्यो नृत्यपास ॥ हरिवल पण तिहां आवीयो,
 ततखिण नृप आवास ॥ ६ ॥ अरधुं आसन आपीने,
 कर जोडी कहे नाथ ॥ अरज सुणो एक माहरी, ह
 रिवल ठो तुमें आय ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ हांजी रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ हांजी हरि
 बलप्रत्ये हवे नृप कहे, तुमें सांजलो गुणधि अगाध ॥
 तोरी बलिहारी रे हरिवल माहरा ॥ ए आंकणी ॥ हांजी
 हुं खूनी थयो तुम तणो, मुज खमजो ते अपराध
 ॥ १ ॥ तोण ॥ हांजी लांवां जाखां शा करुं, हुं तो हुं
 तुम नवोनव चोर ॥ तोण ॥ हांजी में तुमहुं एहवी
 करी, तिण नही मुज सातमी ठोर ॥ २ ॥ तोण ॥
 हांजी विषयारसनो लोखुपी, थयो ते ठती वस्तें उ
 लूक ॥ तोण ॥ हांजी लंकागढ यमने धरे, में मूक्या

तुम करो चूक ॥ ३ ॥ तो० ॥ हांजी ए पातक किहो
 बूढस्यां, में कीपो जेह अन्याय ॥ तो० ॥ हांजी ते
 रखे रोप चिनें धरो, तुम कहुं तुं गोद धिताय ॥ ४ ॥
 तो० ॥ हांजी हुं तुम खामुखां थयो, मत राखजो
 अंतर वेर ॥ तो० ॥ हांजी इम नृप कहे, हरिबल तु
 में, मुज वपर राखजो महेर ॥ ५ ॥ तो० ॥ हांजी
 तव हरिबल नृपने कहे, तुमें ए गुं बोल्या नाथ ॥
 तोरी धजिहारी रे नरपति माहरा ॥ ए आंकणी ॥
 हांजी हुं सेवक हुं तुम तणो, मुज तुमें गो महोटी
 आय ॥ ६ ॥ तो० ॥ हांजी माहरे तुमहुं को नही,
 कांही अंतरगतमें द्वेष ॥ तो० ॥ हांजी तुम मंत्री काल
 सेन जे, तेणे जंजेखो तुम ठेक ॥ ७ ॥ तो० ॥ हांजी
 तुम अम यचें विगताविने, तुम कुमतियें घाली राइ
 ॥ तो० ॥ पण जेहवी करी तेहवी जह्यो, बल्यो जीव
 तो तेह किराड ॥ ८ ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम हवे कोइ
 वातनो, मत राखोजी अंतर कोय ॥ तो० ॥ हांजी
 तुम अम जीवडो एक ठे, ए तो देखत ठे तन दोय
 ॥ ९ ॥ तो० ॥ हांजी मिथ्याडुःकृत मुजयकी, तुमें
 मानजो नृप करि साच ॥ तो० ॥ हांजी राग द्वेष
 योग्यी, जेह वांध्यां निकाचित वाच ॥ १० ॥

हांजी इत्यादिक वचनें करि, हांजी हरिवलें खामणां की
 ध ॥ तोण ॥ हांजी अन्यो अन्य राजी थया, नृप हरिवल
 दोय प्रसिद्ध ॥ ११ ॥ तोण ॥ हांजी हवे हरिवल प्रत्ये नृप
 कहे, तुमें सांनलो मुऊ अरदास ॥ तोण ॥ हांजी मुऊ
 पुत्री जयसुंदरी, तुम पालव बांधुं उज्जास ॥ १२ ॥ तोरी
 बलिहारी रे हरिवल माहरा रे ॥ ए आंकणी ॥
 हांजी कर मूकामण में दीयुं, वली मुऊ नगरीनुं राज
 ॥ तोण ॥ हांजी आण मनावो तुम तणी, मुऊ म
 होटी वधारो लाज ॥ १३ ॥ तोण ॥ हांजी एम कहिने
 ततखिणें, हांजी मेली परखद त्यांह ॥ तोण ॥ हांजी
 पंचनी साखें मञ्जीने, करे तिलक ते नृप उज्जाह ॥
 ॥ १४ ॥ तोण ॥ हांजी गुन चोघडीयुं जोइने, करि
 आपना गवरीपुत्र ॥ तोण ॥ हांजी धवल मंगल वज
 डावीयां, करपीडन करवा सूत्र ॥ १५ ॥ तोण ॥ हांजी
 गुन लगनें गुन मुहूरतें, हरिवलने नृप पद दीध ॥
 ॥ तोण ॥ हांजी पद महोत्सव अतिही करे, जिम
 जाणे लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ तोण ॥ हांजी नगर
 विशाला साचली, शणगारी थइ उजमाल ॥ तोण ॥
 जाणे स्वर्गपुरी आवी वसी, ए तो तेजें जाकज्जमाल
 ॥ १७ ॥ तोण ॥ हांजी स्वयंवर मंमप रोपीने, नृप

बेशनां तेडां कीध ॥ तो० ॥ हांजी सोवनमय चोरी
 रची, वर कन्या वरवा सुसिद्ध ॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी
 वाजिंत्र महोटे वाजते, हांजी वाजते यंत्र मृदंग ॥
 ॥ तो० ॥ हांजी तत येइ नटुया नाचता, हांजी
 करता नवनवा रंग ॥ १८ ॥ तो० ॥ हांजी सोनागिणी
 साहेलीयो, मली सरखा सरखी वाल ॥ तो० ॥ हांजी
 कोकिल स्वरे करी सोहली, जलां गावे गीत रसाज
 ॥ १९ ॥ तो० ॥ हांजी ते गीत नादना स्वादधी, रहे
 थंजी अमर विमान ॥ तो० ॥ हांजी इणि परें नारी
 टोलें मली, ए तो गावे रूप निधान ॥ २० ॥ तो० ॥
 हांजी मंगल वाजां वाजते, हांजी गाजते गुहिर
 निशाण ॥ तो० ॥ हांजी इण आमंवरें धीवरु, च
 ढ्यो परणवा चतुर सुजाण ॥ २१ ॥ तो० ॥ हांजी
 अजवेला जानी थया, हांजी जाणीयें देवकुमार ॥
 तो० ॥ हांजी हरिवलने परणाववा, हांजी आव्या
 नृप दरवार ॥ २२ ॥ तो० ॥ हांजी घणे आमंवरें सो
 हता, हांजी करता नृत्य हजार ॥ तो० ॥ हांजी जीव
 दयाना प्रजावधी, ठवे तोरण हरिवल सार ॥ २३ ॥
 ॥ तो० ॥ हांजी प्रीतिमती पट्टरागिणी, तीर धूसरें
 पोखे जमाइ ॥ तो० ॥ हांजी चोरीमां पवरावीयां,

हांजी इत्यादिक वचनैं करि, हांजी हरिबलैं खामणां की
 ध ॥ तो० ॥ हांजी अन्यो अन्य राजी थया, नृप हरिबल
 दोय प्रसिद्ध ॥ ११ ॥ तो० ॥ हांजी हवे हरिबल प्रत्यैं नृप
 कहे, तुमें सांनलो मुऊ अरदास ॥ तो० ॥ हांजी मुऊ
 पुत्री जयसुंदरी, तुम पालव बांधुं उछास ॥ १२ ॥ तोरी
 बलिहारी रे हरिबल माहरा रे ॥ ए आंकणी ॥
 हांजी कर मूकामण में दीयुं, वली मुऊ नगरीनुं राज
 ॥ तो० ॥ हांजी आण मनावो तुम तणी, मुऊ म
 होटी वधारो लाज ॥ १३ ॥ तो० ॥ हांजी एम कहीने
 ततखिणें, हांजी मेली परखद त्यांह ॥ तो० ॥ हांजी
 पंचनी साखें मञ्जीने, करे तिलक ते नृप उछाह ॥
 ॥ १४ ॥ तो० ॥ हांजी गुन चोघडीयुं जोशने, करि
 आपना गवरीपुत्र ॥ तो० ॥ हांजी धवल मंगल वज
 डावीयां, करपीडन करवा सूत्र ॥ १५ ॥ तो० ॥ हांजी
 गुन लगनैं गुन मुहूरतैं, हरिबलने नृप पद दीध ॥
 ॥ तो० ॥ हांजी पद महोत्सव अतिही करे, जिम
 जाणे लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ तो० ॥ हांजी नगरी
 विशाला साचली, शणगारी थइ उजमाल ॥ तो० ॥
 जाणे स्वर्गपुरी आवी वसी, ए तो तेजैं जाकजमाल
 ॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी स्वयंवर मंमप रोपीने, नृप

नवेग ॥ हरिवलने राज्ये ठवी, प्रवज वधास्यो नेग ॥
 ॥ ६ ॥ हरिवल पण सुख नोगवे, पाजे राज्य अखं
 म ॥ आण मनावी त्रिहुं दिशें, छजवलि नीम प्रवं
 म ॥ ७ ॥ हवे नृप जामाता कने, ससरो मागे शी
 ख ॥ जो स्वामी राजी हुवो, तो हुं जेहुं दीख ॥
 ॥ ८ ॥ निज आत्मने तारवा, लेहुं संयमनार ॥ शिव
 रमणीछं नेहलो, करवा थयो दुशियार ॥ ९ ॥ एम
 कही नृप सज थयो, चढते ते परिणाम ॥ दीक्षा
 महोत्सव छुन करे, हरिवल तव गुणधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ अमदावादना खेळ्या रे, वालम आवजो रे ॥
 ए देशी ॥ संयमनारी वरवा रे, नृप मन उद्धस्यो रे ॥
 पापस्थान अढारथी रे, नृप दूरें खस्यो रे ॥ आणी
 समता जाव रसाल, राणी पण थइ साथें विशाल ॥
 पंचम गतिने हेतें रे, संयम आदरे रे ॥ १ ॥ साते
 क्षेत्रं नावें रे, धन बहु वावरे रे ॥ निर्मल चित्त थइने रे,
 सुकृत करणी आचरे रे ॥ समकित निर्मल छुइ करेय,
 प्रवचन रचना चित्त धरेय ॥ घणो आमंवरें आवे रे,
 सुविहित गुरु कने रे ॥ २ ॥ बाह्यानिंतर केरा रे, मल
 सवि ठांमिया रे ॥ परमात्मने गेहें रे, संकेत मांमिया

(१११)

वर कन्या कर मेलाइ ॥ १५ ॥ तोण ॥ हांजी पा
वांथी दोयना, हांजी फेरा फेरव्या चार ॥ तोण ॥
जी वर कन्यायें आरोगीयो, हांजी सुंदर मिठो कंसा
॥ १६ ॥ तोण ॥ हांजी जयसुंदरी परणावीने, ह
लने दीधुं राज ॥ तोण ॥ हांजी पायक सत लक्ष
श्वनी, ठकुराइ दीधि समाज ॥ १७ ॥ तोण ॥ हांजी
जो नवियां पुण्यथी, लहि मढी सुकृत माल ॥ तो
हांजी चोथा उद्गासनी ए कहि, गुन लब्धें आव
ढाल ॥ १८ ॥ तोण ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनवेग हरखें करी, कीथो उद्यव सार ॥ स
रुपुं सामदुं, वरमे ज्युं जज्ञधार ॥ १ ॥ जसपडहो व
डावियो, नगरी जमाडी मार ॥ हरिवलने राजें ठग्य
वरत्यो जय जयकार ॥ २ ॥ वंदीजन मूक्या परा, व
ली मन उगगार ॥ आसीजन तृपता कसबा, दानें दे
कार ॥ ३ ॥ पद मद्दोवव अतिहे कसबा, राखी जुगल
रजात ॥ हरिवल जे राजा श्रयो, चाली चिटुं दि
वात ॥ ४ ॥ नगरी जन सहु दरखीयां, जय श्र
हरिवल गय ॥ देज देगाचरि जेठणां, जे आवे नृ
वाय ॥ ५ ॥ इणिये पद मद्दोवव करी, जे नृप म

हरिवल पुरजना रे ॥ इणि परें करता स्तवना अपार,
 कृषिजन प्रणमी निज आगार ॥ हरिवल राजा
 आदि रे, सहु बांदी बल्या रे ॥ ७ ॥ हवे कृषि म
 दनवेगजी रे, गुरुसंगें जणे रे ॥ चौद पूर्वना अर्थ रे,
 विचार ते संधुणे रे ॥ पाले पूरा पंचाचार, चाले
 सूया नय व्यवहार ॥ दंपति दोघे साचां रे, जिन म
 तमें वहे रे ॥ ८ ॥ अथ्यातमपुर सुंदर रे, निरखी तिहां
 रहे रे ॥ विवेक तणां जे मंदिर रे, महोटां गह गहे
 रे ॥ तेहमें कीधो दो जणें वास, करे तिहां वेठां ज्ञान
 अन्यास ॥ ज्ञान ने दरिसण चरणगुं रे, रहे जीनां थकां
 रे ॥ ९ ॥ ध्यान सुतखतें वेठां रे, दो वखतें इक
 मनां रे ॥ समकित ठत्र धरावि रे, हरखें दो जणां रे ॥
 सोहे चामर श्रुत चारित्र, पाले महोटां थाठ मावि
 त्र ॥ धर्म सजा दश मेले रे, सत्य दरवारमां रे ॥ १० ॥
 संपम हाथी गुज मन रे, घोडा दीपता रे ॥ अष्टक
 रमना दलनें रे, वेगें जीपतां रे ॥ शीजांगरथ गुज
 महा गुणवंत, संवर सुजट सुतेज अनंत ॥ मदन
 वेग जे कृषिने रे, दरवारें ठाजता रे ॥ ११ ॥ नेद वि
 ज्ञाननी घंटा रे, बांधी न्यायनी रे ॥ खीर ने नीर
 ज्युं रे, न्याय करे संजायनी रे ॥ सातमे गुणठाणे

चित्त लाय, मारग श्री जिनकल्पी धराय ॥ जीवनो
 कारिमो जगडो रे, मिटाड्यो खिए एकमां रे ॥ १३ ॥
 तेरमे गुणठाणे रे, सजोगीयें आविया रे ॥ शुक्ल
 ध्यानमे दंपति रे, दोइ ते नावियां रे ॥ तव तिहां पा
 म्यां केवल नाण, तीन चुवनमें थयां ते जाण ॥ के
 वल महोव्व महोदुं रे, इंशदि सवला करे रे ॥ १४ ॥
 वारे परपदा मेजी रे, दे धर्म देशना रे ॥ कोइ नय्य
 जीवने दीधी रे, समकित वासना रे ॥ तास्यां नवोदधि
 थी केइ जीव, ज्योति बधूयुं प्रीति अतीव ॥ दंपति दोयें
 वणाइ रे, केवल नाणथी रे ॥ १५ ॥ विगमा जिनने
 वारें रे, मदनरूपि रायजी रे ॥ वसुधा पावन करता
 रे, फरे सुखदायजी रे ॥ आयु वरप तेत्रीश हजार,
 पाजी पूरुं दंपति सार ॥ दोस्रेजी गुणयोगें रे, दो
 सुगति गयां रे ॥ १६ ॥ जनम मरणना जय सवि रे,
 दूरें ठंमिया रे, शिवग्मणिना संगमें रे, निशिदिन मं
 मिया रे ॥ चौद चुवननां नाटक चंग, निरखे ज्युं
 करजल रेह सुरंग ॥ लोक अजोकनं अंतें रे, जावे
 तिहां ग्दी रे ॥ १७ ॥ जो जो नवियां आगें रे, श्री
 करणी हती रे ॥ मोद नृप जोरें शिल्लदी रे, मानी न
 सो रती रे ॥ नेहना पणी यड वेता निठ, निन नृप

નમે માનીતા કીધ ॥ એ સર્વિ ગુણ તુમ ભેજો રે, નવિ
 સમકિત તણા રે ॥ ૧૮ ॥ સમકિત રચણ છે જગમે
 રે, જનને તારવા રે ॥ નવિકંજીવને નિમી રે, વંઠિત
 સારવા રે ॥ નારણ્યુ એ સમકિત પરમ નિધાન, મુગતિ
 વધૂનું દાતા નિદાન ॥ જિનવરે નારણ્યુ સઘણે રે, સૂત્ર
 સિદ્ધાંતમાં રે ॥ ૧૯ ॥ એહવા ગુણ તુમે જાણી રે,
 સમકિત ધારજો રે ॥ નિંદા વિકથા પરની રે, દૂર
 નિવારજો રે ॥ જ્યું લહો નવિયાં સમકિત છુદ્ધ, જો
 જંગદીશ દે તુમને છુદ્ધ ॥ તો સહશઠ બોલે કરીને રે,
 સમકિત ધારજો રે ॥ ૨૦ ॥ નવિકંજીવને સમકિત
 રે, જીવનું મૂલ છે રે ॥ સમકિતધારી જીવને રે, શિવ
 અનુકૂળ છે રે ॥ ઇમ કહે લલ્લિવિજય ઝજમાલ,
 ચોથા ઝઘાસની નવમી ઢાલ ॥ હલુવા કર્મો જીવ
 તે રે, વચણ એ માનશે રે ॥ ૨૧ ॥ ઇતિ ॥

॥ દોહા ॥

॥ હવે સુણજો નવિચણ તુમે, હરિવલ કેરી વાત
 ॥ વીશાલા પુર નયરનું, વિલસે રાજ વિરખ્યાત ॥ ૧ ॥
 વારે દરવાજે પ્રવલ, માંમી દાનની શાલ ॥ નમ્ર
 બુનૂદિત જીવને, દેવે દાન વિશાલ ॥ ૨ ॥ નવ નેદે
 જે પુણ્ય છે, સૂત્ર તણે અનુસાર ॥ જન્મ સફલ કરવા

चित्त लाय, मारग श्री जिनकल्पी धराय ॥ जीवनो
 कारिमो जगडो रे, मिटाज्यो खिए एकमां रे ॥ १३ ॥
 तेरमे गुणठाणे रे, सजोगीयें आविया रे ॥ शुक्ल
 ध्यानमे दंपति रे, दोइ ते जावियां रे ॥ तव तिहां पा
 म्यां केवल नाण, तीन जुवनमें थयां ते जाए ॥ के
 वल महोत्तव महोटुं रे, इंझादि सघला करे रे ॥ १४ ॥
 वारे परषदा मेली रे, दे धर्म देशना रे ॥ कोइ नव्य
 जीवने दीधी रे, समकित वासना रे ॥ ताखां नवोदधि
 श्री केइ जीव, ज्योति वधूगुं प्रीति अतीव ॥ दंपति दोयें
 वणाइ रे, केवल नाणथी रे ॥ १५ ॥ विशमा जिनने
 वारें रे, मदनरूपि रायजी रे ॥ वसुधा पावन करता
 रे, फरे सुखदायजी रे ॥ आयु वरप तेत्रीश हजार,
 पाली पूरुं दंपति सार ॥ शैलेशी गुणयोगें रे, दो
 मुगति गयां रे ॥ १६ ॥ जनम मरणना नय सवि रे,
 दूरें ठंमिया रे, शिवरमणिना संगमें रे, निशिदिन मं
 मिया रे ॥ चौद जुवननां नाटक चंग, निरखे जुं
 करजल रेह सुरंग ॥ लोक अलोकने अंतें रे, जावे
 तिहां रही रे ॥ १७ ॥ जो जो नवियां आगें रे, शी
 करणी हती रे ॥ मोह नृप जोरें शिखडी रे, मानी न
 को रती रे ॥ तेहना धणी अइ वेठा सिद्ध, तिन जुव

लो ॥ ३ ॥ न० ॥ करटी काला मद मत, वाला फूल
 ता रे लो, जाणिये टुक हिमाला लो ॥ न० ॥ चैत
 रे केशु रंग, नवेछु फूलता रे लो, सोहे सिंदूरें गुंडाला
 लो ॥ ४ ॥ न० ॥ घुघर घंटा रण ऊण, घंटा वाजता
 रे लो, गाजता थंवर सूर्यी लो ॥ न० ॥ एहवा संख्या
 ता गण्य नवि, जाता सावता रे लो, गज घंटा श्रेणि
 बिलुखी लो ॥ ५ ॥ न० ॥ रवि रथना जुं वाजी,
 ताजी वेगना रे लो, ठाजे हरिबल धारा लो ॥ न० ॥
 करे खुडताला पद पड, ताला मेघना रे लो, अगणित
 अथ अंपारा लो ॥ ६ ॥ न० ॥ बहेल सुखासन
 मानुं, सुरासन ताकडा रे लो, एहवा रथ रदियांला
 लो ॥ न० ॥ रण सुनटाला जे मठ, राजा बांकडा रें
 लो, एहवा अगणित पाला लो ॥ ७ ॥ न० ॥ सुरप
 ति सरिखी हरिबल, हरखी ग्रामनी रे लो, नोगवे रा
 ज्यनी लीला लो ॥ न० ॥ अपठर वरणी पियु मन,
 हरणी कामिनी रे लो, बिलसे शोलखें वाला लो ॥
 ८ ॥ न० ॥ वज्रीश बक्षा नाटक, सुधा स्वादना रे
 लो, होवे रंग रंगाला लो ॥ न० ॥ गुणिजन गाता
 कवि जन, माता उलादना रे लो, बोले विरुद बडाला
 लो ॥ ९ ॥ न० ॥ हरिबल केरी अतिही, नजेरी विस्त

नणी, मांमयो सत्रुकार ॥ ३ ॥ साते खेत्रे वावरे, के
 इ जख धननी कोड ॥ चैत्य करावे जिन तणां, मांमि
 स्वर्गशुं होड ॥ ४ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें, जिहां
 सुधी आणा राय ॥ मारी शब्द को उच्चरे, तो ते खूनी
 थाय ॥ ५ ॥ विण खूनें को जीवने, को न उपाडे श
 ख ॥ कीडी कुंजर आपणां, सम करी लेखवे तत्र ॥
 ६ ॥ इणि परें हरिवल राजवी, पाळे राज्य अखंम ॥
 परजाने इंडु समो, अरिमन नीम प्रवंम ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मारुजी साथीडा साथें धण रे, हाथें मद पियो
 रे लो, मारो माणिगर मारुलो ॥ ए देशी ॥ नवियां
 नगरी विशाला जाक, जमाला सोहती रे लो, मानुं
 कैलासपुरी लो ॥ न० ॥ सोहम वासीनी परें
 खासी, सोहती रे लो ॥ ठकुराइ उषे सनूरी लो ॥
 १ ॥ न० ॥ पुण्य प्रजावें जावें, जोगवे राजने रे लो;
 हरिवल जाग्य विशाला लो ॥ न० ॥ सुजस वरवा प
 रजने, करवा साजने रे लो ॥ प्रगटयो परम कृपाला
 लो ॥ २ ॥ न० ॥ शोलशें देशें पुण्य, विशेषें मही
 यें रे लो, साथ्या देश हठीला लो ॥ न० ॥ अनमी
 राया तैह, नमाया हवियें रे लो, हुता जे मुठाला

रनां, दिठां महोटां मंमाण ॥ जाणे स्वर्गपुरी वसी, आ
 वीने इण ठाण ॥ ९ ॥ वाढी महोळें मलपति, फुलि
 चिहुं दिशि वनराय ॥ जाणे वन नंदननी वहेनडी,
 आय वसी इण ठाय ॥ १० ॥ इणिपरें सेना मंत्रवी,
 देखत हर्षित होय ॥ पेसारो पुरमें कखो, वेजा शुन
 घडि जोय ॥ ११ ॥ नगरी सखरी जोचतां, आवा
 ते दरवार ॥ हरिवल नृपने जेटिया, उपनो हर्ष
 अपार ॥ १२ ॥ हरिवल सुरपति सारिखो, वेगो धरावी
 ठत्र ॥ मंत्रीपण प्रणिपत करी, दीधो नृप कर पत्र ॥ १३ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ शेवुंजानो वासी साहेव, माहारे दिल वस्यो
 रे ॥ मोरा साहेवा ॥ आदिजिन करुं रे जूहार ॥ ए
 देशी ॥ कागल देइ हर्ष धरे चित्तुं रे ॥ मोरा साहिवा ॥
 एतो विनवे मंत्री विशेष ॥ तेढ्या तुमने मुख्या अ
 मने हेतुं रे ॥ मो० ॥ तुमचे ससरेजीयें लेख ॥ १ ॥
 कागल ० ॥ ए आंकणी ॥ निशिदिन तुमचो राखे म
 मचो मल्या तणो रे ॥ मो० ॥ तुम ससरोजी नृपाल ॥
 दरिस्तण दीजें पावन कीजें आंगणो रे ॥ मो० ॥ तुम
 ची सासुनो रुपाल ॥ २ ॥ का० ॥ ससरो जमाई आनंद
 पाई एकठा रे ॥ मो० ॥ येसी करो रंग रोज ॥ नेह सुधा

रस वरसे पावस गह्वटा रे ॥ मो० ॥ उपजे ज्युं रंगचो
 ल ॥ ३ ॥ का० ॥ अमचो स्वामी तुम शिर नामी प्रेम
 शुं रे ॥ मो० ॥ कहुं मुख वचनें एम ॥ तेमाटे स्वामी
 अंतरजामी नेगशुं रे ॥ मो० ॥ पाउ धरो धरी प्रेम ॥
 ॥ ४ ॥ का० ॥ ससरो ने सासु नही कांहि फासु था
 वती रे ॥ मो० ॥ आब्या विना प्राणाधार ॥ पं
 जर तिहां ठे जीव इहां ठे जावथी रे ॥ मो० ॥ इणि
 परें राखे ठे प्यार ॥ ५ ॥ का० ॥ तेमाटे तुमने कहुं
 शुं प्रभुने घणुं करी रे ॥ मो० ॥ दंपति अइ एक रंग ॥
 वेगा थाउ वार म लाउ सहचरी रे ॥ मो० ॥ व्यो
 सेना तुम संग ॥ ६ ॥ का० ॥ इणि परें सयणा मंत्री
 वयणां सांजली रे ॥ मो० ॥ हरख्यो हरिवल ताम ॥
 कागल वांची मनमां माची मन रली रे ॥ मो० ॥
 सेना सजि अजिराम ॥ ७ ॥ का० ॥ तिहांथी मंत्री
 उठयो मंत्री शीघ्रथी रे ॥ मो० ॥ आब्यो ते कुमरी
 पास ॥ तातनो मंत्री उंजख्यो यंत्री अग्रथी रे ॥
 ॥ मो० ॥ वसंतसिरीयें उद्गास ॥ ८ ॥ का० ॥ म
 लवा ऊठी कुमरी वूठी नयणथी रे ॥ मो० ॥ हर्षनां
 आंसू जोर ॥ जनकने द्वी परें मलियां जलि परें स
 यणथी रे ॥ मो० ॥ मंत्री कुमरी समोर ॥ ९ ॥ का० ॥

बेलि एकांतें कुमरी खातें पृथ्वी रे ॥ मो० ॥ कुशल
 खेमनी रे चात ॥ मात पितानां सुख शाता जे
 ठती रे ॥ मो० ॥ ते कहो मुऊ अचदात ॥ १० ॥ का० ॥
 तव मंत्री जंपे पत्र समप्यो तांतनो रे ॥ मो० ॥ वलि
 मुखयी कहे एम ॥ ठे बहु तुमहुं मलवा मनहुं
 मातनो रे ॥ मो० ॥ चातक जलवर जेम ॥ ११ ॥
 ॥ का० ॥ सो वातें एकण वातें मानजो रे ॥ मो० ॥
 जंतुठ ठे तुम संग ॥ मत जाणो काचुं सहि करि
 साचुं जाणजो रे ॥ मो० ॥ तुम आवे होशे रंग ॥
 ॥ १२ ॥ का० ॥ एहवो उत्तर मंत्री पडुंत्तर दीधलो
 रे ॥ मो० ॥ हरखी कुमरी ताम ॥ सचिवने राजी
 कुमरीयें मांजी कीधलो रे ॥ मो० ॥ देइ वधामणी
 उदाम ॥ १३ ॥ का० ॥ दंपति दोइ सुहूरत जोइ
 हरखणुं रे ॥ मो० ॥ शोलशें राणी समेत ॥ सत
 राने मलवा संगपण कलवा हपणुं रे ॥ मो० ॥
 उमाह्या जनमनें खेत ॥ १४ ॥ का० ॥ श्री
 पति नामें वणिक सुधामें मळीने रे ॥ मो० ॥ राख्या
 जे पूर्वे ते जाण ॥ तेहने तेडी पूर निगेडी लळीने
 रे ॥ मो० ॥ सोपी कखो कुछ दिवाण ॥ १५ ॥ का० ॥
 जरतारी मेरा अतिही घणोरा सोहता रे ॥ मो० ॥

ताण्या तंबू जडाव ॥ रवि शशी सरखा निरखी हरखा
 मोहता रे ॥ मो० ॥ देखी तंबू बणाव ॥ १६ ॥ का० ॥
 गज रथ घोडा सुनट सजोडा साबता रे ॥ मो० ॥ शण
 गाख्या जाड्व रंग ॥ वहेल सुखासण जाणे सुरासण
 फावतां रे ॥ मो० ॥ इम सजी सेना चंग ॥ १७ ॥ का० ॥
 पंचरंगी नेजा नजना ठेजा जोवता रे ॥ मो० ॥ रो
 प्या नेजा उत्तंग ॥ पवनें फरके सुरपति धमके हो
 नता रे ॥ मो० ॥ देखी जंफा अमंग ॥ १८ ॥ का० ॥
 गवरीजाया मेंदी रंगाया दीपता रे ॥ मो० ॥ कन
 कमें जडीया शिंगाल ॥ घूघरमाला धमके रढाला
 जीपता रे ॥ मो० ॥ सुरधोरी सुकमाल ॥ १९ ॥
 ॥ का० ॥ इणिपरें सेन्या मानवसेना राखता रे ॥
 ॥ मो० ॥ मढीयें सजि सेना उदाम ॥ हरिवल राजा
 चढतरि वाजां वाजते रे ॥ मो० ॥ चाव्या जनमनी
 जूम ॥ २० ॥ का० ॥ ससरानो मंत्री पुण्यपवित्री
 नेयता रे ॥ मो० ॥ ले चाव्यो दंपति सार ॥ शीघ्र प्र
 याणें थाउ निशाणें देयता रे ॥ मो० ॥ आव्या ज्यां
 परणी नार ॥ २१ ॥ का० ॥ ते वन देखी दंपति ह
 रखी दीधला रे ॥ मो० ॥ मेरा ते वनमांही ॥ किया
 उतारा जीमण सारां कीधलां रे ॥ मो० ॥ चउरंगी

सेना उछाहि ॥ ११ ॥ का० ॥ प्यारि परंपे पियुने
 जंपे हेतनी रे ॥ मो० ॥ वाणीयें बीनवे चूप ॥ इंदुरी
 सम नाम रहे तिम बेतनी रे ॥ मो० ॥ नगरी व
 सावो चूप ॥ १३ ॥ का० ॥ श्रीजिनमंदिर अतिही
 सुंदर चोपछुं रे ॥ मो० ॥ करो इहां तीरथ ताम ॥
 जे मुंज परणी ते करो करणी रूपछुं रे ॥ मो० ॥
 जिम रहे जगमें नाम ॥ १४ ॥ का० ॥ तव ते मञ्जी
 प्यारी सुलझी वयणथी रे ॥ मो० ॥ समखो त्यां सा
 गर देव ॥ गुणनो रागी पुण्यविजागी सयणथी रे ॥
 ॥ मो० ॥ आव्यो सुर ततखेव ॥ १५ ॥ का० ॥ सुर
 कहे शाने तेडो माने ते कहो रे ॥ मो० ॥ जे होय
 मननी हूव ॥ तव कहे हरिबल दाखो सुरबल मन
 वहो रे ॥ मो० ॥ नगरी वसावो खूब ॥ १६ ॥ का० ॥
 तव तिहां नाकी वाकि न राखी पलकमें रे ॥ मो० ॥
 वासी त्यां नगरी विस्तार ॥ गढ मढ मंदिर पोलछुं
 सुंदर हलकमें रे ॥ मो० ॥ रचना कीध अपार ॥
 ॥ १७ ॥ का० ॥ श्रीमुनि सुव्रत त्रीजग उद्धृत सो
 हती रे ॥ मो० ॥ विव. ठव्युं करि चैत ॥ दंपति दोनी
 मूरति कीनी मोहती रे ॥ मो० ॥ पूर्वे जे लखुं देवत
 ॥ १८ ॥ का० ॥ सन बेलाउल डिंग ने देउल देखिने

रे ॥ मो० ॥ दंपति थयां उजमाल ॥ चोथा उद्धासनी
 प्रेम प्रकाशनी पेखिने रे ॥ मो० ॥ कहि लब्धिये
 अग्यारमी ढाल ॥ १९ ॥ का० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव जोयण लांबी वसी, पहोली योजन बा
 र ॥ जाणुं लंकानी बहेनडी, वसी इहां वनह मजा
 र ॥ १ ॥ सजल सरोवर जल नखां, वाडी तिम लह
 कंत ॥ जाणुं सुरवाडी इहां, प्रगट थइ महकंत ॥
 ॥ २ ॥ पटराणीना नामनी, वासी नगरी सार ॥ व
 संतपुरी नामें जली, चावी थइ संसार ॥ ३ ॥ इणि
 परें नगरी वासिने, हरिवल राजी कीध ॥ पहोतो ते
 निज थानकें, जलधी नाथ प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ वसंत
 सिरीना सचिवने, सोंपी नगरी तास ॥ केताई दिन
 तिहां रही, आगल चाब्या उद्धास ॥ ५ ॥ दल वाद
 ल हरिवल तणुं, चाबे ज्युं जलपूर ॥ धरणी तजथी
 सलसब्यो, शेषनाग जयनूर ॥ ६ ॥ के शुं लेगें लंकने,
 के शुं लेगें स्वर्ग ॥ के शुं लेगें जगतने, इम जाणे ज
 नवर्ग ॥ ७ ॥ इणिपरें हरिवल राजवी, चाब्यो अति
 ही चूष ॥ सीमाडाना जे धणी, आवी नमिया चूष
 ॥ ८ ॥ इणि परें आण मनावतो, आव्यो आरज दे

श ॥ वात वधामणी, ससुरने, मूक्यो मंत्री विशेष ॥
 ॥ ९ ॥ ते पण अतिही उतावलो, मतिसागर मंत्री
 श ॥ आव्यो निज कंचनपुरी, पढोती मनह जगीश
 ॥ १० ॥ शीघ्र जई प्रणिपत करी, दीध वधाई ना
 थ ॥ जामाता तुम पुत्रीने, तेडी आव्यो साथ ॥ ११ ॥
 वात वधामणी सांजली, हरख्यो कुमरी तात ॥ स
 न्मान्यो मंत्रीशने, दइ वधाइ विख्यात ॥ १२ ॥ हरि
 बल पण कतावलो, आव्यो जलधि तीर ॥ जिहां ल
 ह्युं समकित्त गुरुकने, दें त्यां मेरा सधीर ॥ १३ ॥
 देखी जनमनी नूमिका, दंपति दो हरखात ॥ आ सां
 चूं के सोहणुं, मिलश्यां जननी तात ॥ १४ ॥ खूनी
 आपण दो जणां, हूतां नृपनां चोर ॥ ते थयां साचां
 पुण्यथी, जव मित्या गुरु इण गोर ॥ १५ ॥

॥ ढाल वारमी ॥

॥ मोतीयारां हे लुंवक जुंवखां ॥ अथवा ॥ अजि
 त जिणंदहुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥ एम चिंतवी दंपति
 दो जणां, कालिकाने देउल आय ॥ सहि दुध्यां रंग
 वधामणां ॥ ए आंकणी ॥ एतो पूजा नक्ति करी घ
 णी, एतो प्रणम्या देवीना पाय ॥ १ ॥ स० ॥ धन
 धन भावडी जगतमां, प्रगटी तुं जन सुख हेत ॥

॥ स० ॥ दीन दुःखीया जीवने उद्धरी, करी पावन
 संपद हेत ॥ १ ॥ स० ॥ इम आसना वासना देवी
 नी, करि दंपती बोले आशीष ॥ स० ॥ माता जीव
 जे सुरगिरिनी परें, अम पुंहुची सघली जगीश ॥ ३ ॥
 ॥ स० ॥ हवे हरख्यो कंचनपुर धणी, एतो वसंत
 सेन नृपाल ॥ स० ॥ तेम वसंतसेना रागिणी, पट्ट
 राणी थइ उजमाल ॥ ४ ॥ स० ॥ निज पुत्रीने वर
 कारणें, शणगारी नगरी ते सार ॥ स० ॥ एतो देव
 दाणव विद्याधरा, एतो जोवा मलिया अपार ॥ ५ ॥
 ॥ स० ॥ एतो गजरथ बोडा पालखी, शणगाख्या ते
 बहु ठाठ ॥ स० ॥ राज मारगमां विराजता, पथरा
 व्या सोवन पाट ॥ ६ ॥ स० ॥ डुर्बानां हे तोरण
 बांधियां, वज्रें सुरतरु दल महकंत ॥ स० ॥ एतो घ
 र घर चहुटे चाचरे, फुलमाजापुंज सोहंत ॥ ७ ॥ स० ॥
 टोडे टोडे मोतीना फूमणां, लहकी रह्यां तेजमें ते
 ज ॥ स० ॥ मानुं कुमरी वरने निरखवा, आबी स्व
 र्गपुरी नेहेज ॥ ८ ॥ स० ॥ शणगारी नगरी इणि
 परें, हरखी नृप वसंतसेन ॥ स० ॥ चतुरंगीसेना स
 ज करी, वर कुमरीने तेडवा तेण ॥ ९ ॥ स० ॥ गव
 णांगण मूडी उल्लजे, गुंजाजां गुंजे निशाण ॥ स० ॥

साबेलां सवल ते सज कथां, नगरीजन कुमर सुजा
 ए ॥ १० ॥ स० ॥ इम आमंवरुं नरपति, सामशुं
 सवल सजेय ॥ स० ॥ चालो कुमरी वरने तेडवा,
 पुरजनशुं हर्प धरेय ॥ ११ ॥ स० ॥ नवयोवन नारी
 सोहामणी, मली गावे मधुरां गीत ॥ स० ॥ रंजा उ
 र्वशीना मद गालती, गावे कोकिल स्वरनी रीत ॥
 ॥ १२ ॥ स० ॥ दलयादल देखी पुत्रीनुं, नृप पुरज
 न हरखं नरात ॥ स० ॥ जिम नविकने समकित
 मले, तिम मलिया ससरो जमात ॥ १३ ॥ स० ॥
 वर कन्या आदि सहु मल्यां, नृप राणी हर्प नराय
 ॥ स० ॥ तिण वेला हर्प जे वपनो, ते तो पुस्तक ल
 खियो न जाय ॥ १४ ॥ स० ॥ कुमरी ने जनकी
 जनक तणो, वर्षे वारनो नांग्यो वियोग ॥ स० ॥
 आ ते साहुं के सुहणं थयुं, कुमरी वरनो संयोग ॥
 ॥ १५ ॥ स० ॥ धन दिवस धन वेला घडी, मुज पु
 त्रीयें जे लखं मान ॥ स० ॥ एम भावित्र हरखे म
 न्नेम, जिम हुमक लहे सुनिधान ॥ १६ ॥ स० ॥ ह
 रिवल ए जोशनी जातिमां, प्रगट्यो वडो पुण्य निधान
 ॥ स० ॥ मुज पुत्रीनी संगतें, थयो उंच ए जग सुल
 तान ॥ १७ ॥ स० ॥ हवे हरिवलने ससरो कहे, न

(१३१)

ली मीठी अमृत वाण ॥ स० ॥ स्वामी पधारो गज
 शिर चढी, पुर पावन करो प्रमाण ॥ १७ ॥ स० ॥
 शेर सेनापति सारथ मलि, करे विनती हर्ष विख्या
 त ॥ स० ॥ तव हरिबल हर्ष विनोदथी, गजशिर च
 ढया ससरो जमात ॥ १८ ॥ स० ॥ आमां साहमां
 वाजित्र वाजते, गावे गुणिजन शब्द अखंड ॥ स० ॥
 होवे नाटक वत्रीश वध जे, तेणें गाजी रघुं ब्रह्मंड
 ॥ १९ ॥ स० ॥ कखो उडव विवाह जेटलो, कुमरी
 नी वधारवा लाज ॥ स० ॥ नृपें करमूकामणें म
 ढीने, दीधुं कंचनपुरनुं राज ॥ २० ॥ स० ॥ मणि
 सोवन रूपुं सावटुं, गुणिजनने कीध पसाय ॥ स० ॥
 करि पृथ्वी उरण दानमें, आश्रीजन बहु तृपति कराय
 ॥ २१ ॥ स० ॥ नजां जेटणां लावे पुरजना, वर क
 न्याने करे जेट ॥ स० ॥ मन वंठित सुखनिधि उज
 टीयो, तेणें नाख्यां दुःखने उजेड ॥ २२ ॥ स० ॥ निवास
 नी जायगा मोटकी, रहेवाने दीधीजी खास ॥ स० ॥
 रंग महोलमें वास्यो कुमरीने, दीधो एकविश नृमि
 लास ॥ २३ ॥ स० ॥ जसपडहो वजाड्यो नयर
 णं, वरतावी मन्नीनी आण ॥ स० ॥ दीखल केर
 हरिबल पुत्रडो, वख्यो राज्यें लिखित प्रम

स० ॥ जो जो नवियां साधुनी संगतें, लहो जीव
 बानो धर्म ॥ स० ॥ थयो परसन जलनिधि देवता,
 तिणें बधासो मञ्जीनो नर्म ॥ १६ ॥ स० ॥ थयो बाबो
 ते चिहुं सुंढमें, जोगवे गुन रुद्धि समृद्ध ॥ स० ॥
 जाणे सुरपतिनो समोवडी, थइ वेगो मञ्जी प्रसिद्ध
 ॥ १७ ॥ स० ॥ नजें प्रगट्या सद्गुरु जगतमें, वपगा
 री परम कृपाल ॥ स० ॥ कहि चोया वल्लासनी वा
 रमी, लब्धें संयोगनी ढाल ॥ १८ ॥ स० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवा सजुरु वपणथी, पाम्यो जिनवर धर्म ॥
 थयो परसन जल देवता, वधियो मञ्जी नर्म ॥ १ ॥
 हरिबल दो पदवी लह्यो, सागरदेव पसाय ॥ वकुरा
 इ वत्रीश लाखनी, पायकें अश्व सुहाय ॥ २ ॥ गुंढा
 दंभ विराजता, दिसता जाणे पहाड ॥ गजशालामें
 गज घटा, सोहे सहस्र अठार ॥ ३ ॥ सुख बिलसे
 संसारनां, शोलखें राणी सज ॥ पटराणी थापी व
 डी, वसंतसिरी सुकयज ॥ ४ ॥ मूलगी जे परिणेतनी,
 काजी कर्कशा नार ॥ ते पण हरिबलें संग्रही, करि
 अपठर अवतार ॥ ५ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें,
 जिहां सुधी ठे थाण ॥ तिहां सुधी को जीवनां, का

ढी न शके प्राण ॥ ६ ॥ इणपरें लीला जोगवे, पूरव
 पुण्य पसाय ॥ चावो अयो चिहुं खूंटमें, महोटो ह
 खिल राय ॥ ७ ॥ हवे ससरो हरखें करी, वसंतसेन
 चूपाल ॥ जामाताने वीनवे, कर जोडी उजमाल ॥
 ॥ ८ ॥ द्यो अनुमति दीक्षा तणी, आणी हर्ष अपा
 र ॥ शिव रमणी वरवा अमें, लेशुं संजम नार ॥ ९ ॥
 एम कही आणा लही, सासू ससरो दोय ॥ पंच
 महाव्रत उच्चयां, सुविहित सद्गुरु जोय ॥ १० ॥ च
 ढते परिणामें करी, पाले पंचाचार ॥ उग्र तपस्यानां
 धणी, अयां सूयां अणगार ॥ ११ ॥ कृपक श्रेणी चढ
 तां यकां, तेरमुं लहुं गुणगण ॥ शुक्ल ध्यानना जो
 गधी, पास्यां केवल नाण ॥ १२ ॥ चोशठ इंशदिक
 मली, अंबुज नंद रचेण ॥ जाविकने प्रतियोधतां,
 लहे विजवोध विरोण ॥ १३ ॥ केवल कमला जोग
 वी, पाली पूरण आय ॥ कर्म कुटिल दूरें करी, पही
 तां शिवपुर ठाय ॥ १४ ॥ धन धन वसंतसेनने,
 धन वसंतपट नार ॥ दंपति दो मुगते गवा, चढियां
 सुक्ति मजार ॥ १५ ॥

॥ दाज तेगमी ॥

॥ नक्षरो नगीनो मद्भागो, दागो हीगो मद्भागो, नण

बीरो बीरो महारो साहेबो, बना मारु घडी एक करहो
 फुकाव हो ॥ ए देखी ॥ हवे हरिवल सुख नांगवे ॥ पुण्य
 वंत ॥ पाले राज अखंम हो ॥ सागर देव पसायथी ॥
 पुण्यवंत ॥ ययो गुण मणिनो करम हो ॥ १ ॥ सुगुण
 सनेही प्यारो, धर्मनो मोही शुन, अनुनव गोही सु
 ख सागरु ॥ पु० ॥ हरिवल परजा पाल हो ॥ ए आंक
 णी ॥ आण मनाची चिहुं दिशें ॥ पु० ॥ पोडश देश
 विशेष हो ॥ पोडश देशनी अंगजा ॥ पु० ॥ विलसे गुं
 सुख सुरेश हो ॥ २ ॥ सु० ॥ गुण लिये जीव दया
 तणो ॥ पु० ॥ गुण ले गुरु उपदेश हो ॥ परतख देखी
 पारखुं ॥ पु० ॥ हरख्यो मघी नरेश हो ॥ ३ ॥ सु० ॥
 तो हवे महिमा धर्मनो ॥ पु० ॥ प्रगट करुं वजमाल
 हो ॥ मानव नव सफलो करी ॥ पु० ॥ मेली सुकृत
 माल हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ इम जाणी जल कांठडे ॥ पु० ॥
 जिहां जह्यो गुरु उपदेश हो ॥ तिहां कणो चैत्य रची
 नखुं ॥ पु० ॥ राखुं तिहां नाम विशेष हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ पोड
 श देश सुहामणा ॥ पु० ॥ कीधा जिन प्रासाद हो ॥ बिंव
 नराख्यां रयणमें ॥ पु० ॥ ठंमी सघलो प्रमाद हो
 ॥ ६ ॥ सु० ॥ अमारि पलावे आपथी ॥ पु० ॥ पोड
 श देश मजार हो ॥ मार शब्द को नवि उच्चरे ॥ पु० ॥

જોગવે મઢીરાય હો ॥ રહે જીનો રસતાનમેં ॥ પુઁ ॥
 વીશાલા પુરઠાય હો ॥ ૨૩ ॥ સુઁ ॥ શોલ કલામેં
 ચંડમા ॥ પુઁ ॥ સોદે જ્યું કજાસ હો ॥ તિમ હરિવલ
 શોલ જનપદેં ॥ પુઁ ॥ સોદે તેજપ્રકાશ હો ॥ ૨૪
 ॥ સુઁ ॥ એ ગુણ જીવદયા તણો ॥ પુઁ ॥ ફલિયા
 મનોરથ સિદ્ધ હો ॥ લબ્ધેં ચોથા ઝલ્લાસની ॥ પુઁ ॥
 તેરમી કહી પરસિદ્ધ હો ॥ ૨૫ ॥ સુઁ ॥ ઇતિ ॥

॥ દોહા ॥

॥ પંચ વિષય સુખ વિલસતાં, વીતા કેતા દિન ॥
 વસંતસિરી પટનારીયેં, જન્મ્યો પુત્ર રતન ॥ ૧ ॥ શ્રી
 બલ નામેં સિંહ જ્યું, પ્રગટ્યો માહાબલવંત ॥ હરિવલ
 કેરો પુત્રહો, સકલકલા ઝીપંત ॥ ૨ ॥ કુસુમસિરી
 જે લંકની, તિણેં પણ જન્મ્યો પુત્ર ॥ માત પિતાને
 સુખ દિયેં, ચલવે ઘરનાં સૂત્ર ॥ ૩ ॥ સુવલનામેં પુત્ર
 જે, પ્રગટ્યો જ્યું રવિતેજ ॥ માતપિતા હરખે ઘણું,
 દેશી દો સુત દેજ ॥ ૪ ॥ રામને લખમણ જોડ જ્યું, સો
 દે ત્યું દો ત્રાત ॥ દાનેં માનેં આગલા, પુહવીમાં કરે
 રહ્યાત ॥ ૫ ॥ જોડ મલી દો ત્રાતની, શ્રીવલ સુવલ
 નામ ॥ રાજ કાજમેં તત્પરા, રાખે મન અનિરામ ॥
 ॥ ૬ ॥ વીજી રાણી જે અઠે, પોડગેં જે શુન મન ॥

तिणें पण पुण्यना योगथी, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ ४ ॥
 इणिपरें लीला जोगवे, हरिवल पुण्य विख्यात ॥ सं
 सारिक जे सुख कहाँ, विलसे ते सुख सात ॥ ५ ॥
 तन धन स्त्री सुत सस्यनी, अंबर रस ए सात ॥
 जेहने घरे पुण्यवेल ठे, तेहने ए सुख शात ॥ ६ ॥ इणि
 परें काल ते नीगम्यो, वर्षे सहस पचवीश ॥ नृप
 राणी सरस्वे मने, पाले धर्म जगीश ॥ ७ ॥ जैन
 वरीसनमें थड, नृपनी जगती कहाय ॥ तिहां सुधी
 कृपि विचरता, पुहंवि पवित्र कराय ॥ ८ ॥ देव गु
 रुने बांदिने, सांजलि गुरु उपदेश ॥ त्यार पठें ते कै
 लवे, घरनां काज विशेष ॥ ९ ॥ इणिपरें हर्षे विनो
 दमें, श्रीजिनधर्म दीपाय ॥ तिण समे विशमा जिन
 तणा, आख्या मुनिजन राय ॥ १० ॥ पंचसयाष्ट
 परवखा, गणधर सुस्थित नाम ॥ वीशाला पुर परि
 सरें, वतखा निरखी ठाम ॥ ११ ॥ साधु बधामणी
 मालीयें, नृपने दीधी ताम ॥ नृप पण निसुणी
 मालीने, देवे महर्षिक गाम ॥ १२ ॥

॥ ढाल चठदमी ॥

॥ सुडला संदेशो कहेजे महारा पूज्यने रे ॥ अथवा ॥
 जीव जीवन प्रष्ट किहां गया रे ॥ एदेशी ॥ यात वधा

मणी गुरुनी सांजली रे, हरखित थया नृप लोक रे ॥
 धव धव धाड़ गुरुने वांदवा रे, आव्या ते जोगी चातुर
 कोक रे ॥ १ ॥ सांजले मीठी गुरुनी देशना रे ॥ ए
 आंकणी ॥ जेह थकी पाप पुलाय रे ॥ पावन
 होवे जीवित आपणुं रे, अक्य पद ते लहाय रे ॥
 ॥ सां० ॥ २ ॥ अजिगमन पांचे साचवी रे, वेठा ते
 गुरुना वंदि पाय रे ॥ एकण चितें एकण ध्यानयी रे,
 सांजले दो कर जोडी राय रे ॥ ३ ॥ सां० ॥ तिण
 समे गुरु पण अवसर जंजखी रे, देशना देवे ज्युं जल
 धार रे ॥ जिनवरें जांखी जेहवी देशना रे, तेहवी
 ते वाणीयें कीथो उच्चार रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ सांजलो
 जवियां मीठी देशना रे ॥ पामी ते मानवनो अव
 तार रे ॥ एलें कांहारो मनुजव पामीने रे, सज्जन संधी
 सारो सार रे ॥ ५ ॥ सां० ॥ पंखी परें रे मेजो ए मय्यो रे,
 उमतां शी लागे तस वार रे ॥ तेम रे सगाइ स्वारयनी
 जणी रे, मटतां शी लागे तेहनी वार रे ॥ ६ ॥ सां० ॥
 को कहो तात ने को कहो मात ने रे, को कहो आत ने
 को कहो जात रे ॥ इणि परें सयण संबंध ते बयणयी रे, स
 गपण वेंची लीधुं ख्यात रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ को करो प्रीत को
 करो वेरने रे, को करो साच ने को करो कूड रे ॥ थावुं

ठे अंतें सहुने कालथी रे, आखरे प्राणी धूड जेजी
 धूड रे ॥ ८ ॥ सां० ॥ कूडी माया ने कूडी कामिनी
 रे, कूडां ठे अर्थी बंधव लोक रे ॥ कूडी ठे दुनियां वा
 दल वाह ज्युं रे, ते पण अंतें होवे फोक रे ॥ ९ ॥ सां० ॥
 प्राणथी बाहालो जेहने जाणियें रे, राखीयें तेहने ज्युं
 करि ग्रंथ रे ॥ ते पण न रहे वजो पूठवा रे, जातां
 ते जांवे महोटे पंथ रे ॥ १० ॥ सां० ॥ केहि गया ने
 केहि जायशे रे, केहि ठे प्राणी जावणहार रे ॥ पुण्य
 बिहूणा इण वाटडी रे, जाशे ते प्राणी हाथ पसार
 रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ कुण ते राणा ने कुण ते रांकने
 रे, आखर एहिज एक ठे वाट रे ॥ आबशे साथें सु
 कृत कीधलां रे, उतरतां ते नवनो घाट रे ॥ १२ ॥
 ॥ सां० ॥ श्यो रे नरोंसो काचा कुंजनो रे, श्यो वली क
 रवो धननो मह रे ॥ देखत संध्याराग तणी परें रे,
 उडी ते जावे खिणमें थठह रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ दश
 रे दृष्टांतें मानव नव तणो रे, पाम्यो जो जनम फ
 दाय रे ॥ तो वली फरि फरि पामवो दोहिलो रे, जिम
 करी घूणाकरने न्याय रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ दान शीयल
 तप नावना रे, जांख्यो जे जिनवरें चउबिह धर्म रे ॥
 तेहनो जो कीजें खप छुननावथी रे, तूटीयें खिणमें

निज निज कर्म रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ होवे ते सहस्र
 गणुं पुण्य जाचतां रे, लाख गणुं ते अजाची होय रे ॥
 कोडी गणुं फल गुप्त ए दानथी रे, ए फल पुण्यनुं
 इणि परें जोय रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ व्याजें दीये ते धन
 वमणुं लहे रे, चोगणुं पामे धन व्यवसाय रे ॥ शत
 गणुं पामे एकण क्षेत्रथी रे, दान सुपात्रनी सं
 ख्या न थाय रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ परजव जातां ए म
 होटी सुखडी रे, बांधीयें जातुं आवे काम रे ॥ सुर
 नर अक्षय पदवी सुख पामियें रे, वाधे जुं नरजव
 केरी माम रें ॥ १८ ॥ सां० ॥ एहवुं जाणीने पुण्य की
 जीयें रे, दीजीयें जावें दान सुपात्र रे ॥ नृगति मुगति
 दो पदवी लहे रे, कीजीयें आपणुं निर्मल गात्र रे ॥
 ॥ १९ ॥ सां० ॥ आपज आपणे तग्जो तुंवडे रे,
 नही कोइ आवे परजव साय रे ॥ एहवुं जाणीने प्रा
 णी चेतजो रे, जइ समकित वृद्धनी नग्जो वाय रे
 ॥ २० ॥ सां० ॥ इणि परें उपदेश मुणिने जावियां रे, व्रत
 पचक्काणनी सुखडी लीध रे ॥ राजा ने राणी पण थड
 इकमनां रे, वचन सुधारस कानें पीध रे ॥ २१ ॥
 ॥ सां० ॥ विषय कषायना मल सवि वांमनि रे, आ
 वरे दंपति सुकृतमात्र रे ॥ जोया उखासनी लब्धि

विजयें कही रे, सुंदर महोटी चोदमी ढाल रे ॥
॥ २२ ॥ सां० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम ठपदेश ते सांजली, हरखी परपद सार ॥ गुरुने
वांदी थानकें, पढोता सहु आगार ॥ १ ॥ तव कहे नृप
कर जोडीने, सांजलो गुरु गुणगेह ॥ जब स्थिति
क्यारें पाकरो, माहरी कहो ससनेह ॥ २ ॥ तव ग
णधर सुस्थित कहे, सांजलो तुमें माहाराय ॥ पांम
व सहस्र ते चपेनुं, ठे महोटुं तुम आय ॥ ३ ॥ तिहां
सुखी तुमने धणुं, ठे जोगावलि कर्म ॥ जब ते स्थिति
पूरी थरो, तव वधरो तुम जर्म ॥ ४ ॥ पूरव जब तु
म सांजली, केवली मुनिचंड पास ॥ संयम नृपशर
णुं ग्रही, जेहरो शिव पदवास ॥ ५ ॥ ए अधिका
र ते सांजली, हरण्यां राणी राय ॥ पढोतां सहु निज
मंदिरें, वंदी गुरुना पाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ ठेढो नांजी ॥ ए देशी ॥ हवे हरिवल निज मं
दिर आवी, करे निज सुकृत करणी ॥ वसंतसिरी
पट्टराणी थारें, करे सघली पुण्यजरणी ॥ १ ॥ जवि
यां सुणजो, हरिवलनी जे करणी ॥ ज० ॥ चडवा

मोक्ष निसरणी ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पहेलायी
 चोथे गुणठाणे, आवे हरिबल लेहतो ॥ प्रकृति सात
 नो ह्य ते करिने, ह्यायक समकित ग्रहेतो ॥ १ ॥
 ज० ॥ श्रावकना गुण एकवीश महोटा, जे कह्या सूत्र
 सिद्धांतें ॥ ते गुण श्रावकना शुन पाळे, नृप राणी
 मन खांतें ॥ २ ॥ ज० ॥ चैत्य करावे श्रीजिन केरां,
 षोडशें देश मजार ॥ देशें देशें सुंदर दीपे, देउल शोल
 हजार ॥ ४ ॥ ज० ॥ कोटि एक ते कनक रयणमें,
 उपर ठप्पन लाख ॥ ए संख्या कहि जिनमंदिरनी,
 शोलशें देशनी साख ॥ ५ ॥ ज० ॥ चैत्यें चैत्यें पांचे
 रंगें, थाप्या जिन चोविश ॥ कोटि एकशत लाख जु
 म्मालीश, विंव जराव्यां अधीश ॥ ६ ॥ ज० ॥ साधु
 जनने रहेवा सारु, रजतमें जाक जमाला ॥ सवा को
 डि ते धर्मने हेतें, कीथी पोषध शाला ॥ ७ ॥ ज० ॥
 साव सोवनमें अक्षर रचना, लखीयां पुस्तक सार ॥
 ज्ञानोपगरण करिने महोटां, मूके पुण्य चंमार ॥ ८ ॥
 ज० ॥ साह्यामीवढल दिनप्रतें मढी, पोपे जाव विशेष
 ॥ ९ ॥ जिनमतिनां साते ए खेत्रें, वावे इव्य अशेष ॥ १० ॥
 ज० ॥ श्रीजिन नक्तितणी लय आणी, करे नित त्रिटंक
 सेवा ॥ बत्रिश व-६ नृत्य करावे, प्रभु आगल जश लेवा

॥ १० ॥ ज० ॥ खट वरसनने जावें पोखे, जाणी लाज अनं
 ता ॥ दान तणां दश दूपण टाळी, वे आवर बहु संता ॥
 ॥ ११ ॥ ज० ॥ चोथा गुणठाणानी ए करणी, करे
 हरिवल दिल साच ॥ सिद्धवधू वरवा जणी सारु,
 जाणीयें देवे लांच ॥ १२ ॥ ज० ॥ देशविरति गुण
 ठाणे चढीने, करे पंचपर्यां पोपा ॥ चवद नियम सं
 जारी संखेपें, काढे मनना रोपा ॥ १३ ॥ ज० ॥ आ
 वकनां जे कहां व्रत धारे, ते पण साचवे रूडां ॥
 आवश्यक दो टंकनां साचां, साचवे मन नहीं कूडा
 ॥ १४ ॥ ज० ॥ ठठ अष्टम बली दशम डुवालस, करे
 तप चढतां शक्ति ॥ अष्ट करम दल दुर्बल कीधां, वेसवा
 सिद्धनी पंक्ति ॥ १५ ॥ ज० ॥ एकादश जे आदनी
 प्रतिमा, जांखी जे जगवानें ॥ विधि पूर्वकणुं जिन
 अरचीने, ते पण वहि एक तानें ॥ १६ ॥ ज० ॥ सा
 तमे थंगें पाठ ए चावो, जो जो जवियां रंगें ॥ दश
 आवकें जिम वहि शुन प्रतिमा, तिम वहि महि अ
 नंगें ॥ १७ ॥ ज० ॥ पट आवश्यक नवकार आदें,
 तेहनां वहे उपधान ॥ शिवरमणी वरवाने हेतें, प
 हेरी माल प्रधान ॥ १८ ॥ ज० ॥ आवकने उपधान
 वहा विण, नवकार क्रिया न सृजे ॥ साधूने पण

योग वद्या विण, वांचवुं सूत्र न सूजे ॥१९॥ ज० ॥
 पंचांगी में जोजो सघले, ठे अक्षर परगट्ट ॥ ते जा
 एीने हरिवल पोतें, करे करणी गहगट्ट ॥२०॥ ज० ॥
 इणिपरें नृप राणी गृह वेठां, जाव संयमने पाले ॥
 त्रिकरण शुद्धे जावें करीने, आतम नव अजुवाले ॥
 ॥ २१ ॥ ज० ॥ हरिवल जे करे चैत्यनी करणी, ते
 कोइ कहेजे खोटी ॥ ते उपर तुमें सुणजो प्राणी,
 साखी कहुं तुं महोटी ॥ २२ ॥ ज० ॥ पांचमे आरें
 वीरने वारे, जे दुउ संप्रतिराजा ॥ सहस ठत्रीश ते
 जीरण देहरां, सहस पचविश ते ताजां ॥ २३ ॥ ज० ॥
 ए संख्यायें चैत्य कराव्यां, वत्रीश थडां प्रासाद ॥ को
 टि सवा उंगणी संख्यातां, विंव नराव्यां उद्गाद ॥
 ॥ २४ ॥ ज० ॥ पाटणराजें सिद्ध, सिंघपाटें जे
 दुउ कुमारपाल ॥ वावन जीनालां तिणे पण कीधां,
 जीवित सूधी विशाल ॥ २५ ॥ ज० ॥ आवू उपरें र
 जत समोवड, देवल महोटां दीपे ॥ श्रीआदीसर
 मूरति थापी, शा विमजो जग जीपे ॥ २६ ॥ ज० ॥
 साते धातें चउदे मणनी, चउ जिन पडिमा नरावी ॥
 शा जीमे गढ आवूयें थापी, ते जुउ नजरें चावी ॥
 ॥ २७ ॥ ज० ॥ लाख नवाणुं खरची देवल, राणक

પૂરે જે કીધો ॥ શા ધરણી પોરવાડ વચાણો, ત્રણ મુ
 રા જહ જુઠ સીધો ॥ ૨૮ ॥ જ૦ ॥ શોજમો ઝંઘાર
 શેત્રુંજા ઉપરે, ત્રિજગમેં પરસિદ્ધો ॥ માનવનવ લહિ
 શ્રાવક કુલમેં, શા કરમેં જસ લીધો ॥ ૨૯ ॥ જ૦ ॥
 શ્રાજને સમયેં એહવા પ્રાણી, જે દુથ્યા રતન સરી
 ર્યા ॥ તો શું તદા તે કાલનું કહેવું, શી તસ કરવી પ
 રીશ્વા ॥ ૩૦ ॥ જ૦ ॥ એ દૃષ્ટાંત સુણીને જવિયાં,
 માનજો સઘણું સાણું ॥ ધર્મો જનના જે ગુણ નાં
 ર્યા, તે મત જાણજો કાણું ॥ ૩૧ ॥ જ૦ ॥ એ અધિ
 કાર સુણી જે સર્વહે, તે લહે મંગલમાલ ॥ ચોથા ઝ
 દ્વાસની ઢાલ પત્તરમી, લઘ્યેં એ નાંચી રસાલ ॥ ૩૨ ॥

॥ દોહા ॥

॥ સ્મ કરણી કરતાં થકોં, બોલ્યાં સહસંચર વર્ષે ॥
 એટલે મુનિચંદ્ર કેવલી, પાઠ ધાયાં ચત્કરે ॥ ૧ ॥
 વાજાં નાકી વાજીયાં, મલિયા ચોશર હંદ ॥ નંદ ક
 મંલ રચના કરી, થાપ્યા જ્ઞાનદીપંદ ॥ ૨ ॥ ગુરુની વ
 ધામણી માલીયેં, થાવી નૃપને દીધ ॥ સન્માનેં નૃપ માં
 લીને, ગ્રામ પસાયો કીધ ॥ ૩ ॥ જિમં તૃપાંતુર પ્રા
 ણીયા, ધાડ સરોવર જાય ॥ તિમ નૃપ નિજ પરિવા
 રણું, પ્રણમ્યા નિજ ગુરુ પાંચ ॥ ૪ ॥ ચાતુક જન શ્ર

वणें सुणी, पीवे श्रुत जल हेत ॥ वचनामृत जल
र गुरु, वरसे नवि मन खेत ॥ ५ ॥

॥ ढोल शोलमी ॥

॥ देशी आख्याननी ॥ चेतो चेतो चेतो रे प्राणी,
जाणी संसार असार ॥ अंजलि जल ज्युं आउखुं
जाणी, म करो प्रमाद लगार ॥ १ ॥ परमाद पांचे
परम वैरी, घेरी संसारी जीव ॥ नरग निगोदें नाखे
दुःखमें, विण खूने ते अतीव ॥ २ ॥ आठे मद माहा
महोटा अशने, पहेलो प्रमाद वखाणो ॥ चौवीश दं
मकें जीव दंमावे, परमाद एहवो जाणो ॥ ३ ॥ पांचे
इंडियना अइ सवला, नांख्या विषय त्रैवीश ॥ ए बीजो
प्रमाद जे सेवे, ते लहे थान चौविश ॥ ४ ॥ एकेक
इंडिय मोकली मूके, जीव लहे ते घात ॥ ते उपर
कहुं ज्ञानी नांखे, सांचजजो दृष्टांत ॥ ५ ॥ आंखने
विषे दीपक देखी, चौरिंदि करे जंपापात ॥ चर चर
तन दहे हेमने लोजें, पतंग लहे उपघात ॥ ६ ॥ घा
एंडियनो जो अयो विषयी, रोजंव पंकजवाम्नी ॥ गुंढा
दंमें दंतियें ग्रही कज, आठवो त्रमर तनुराशि ॥ ७ ॥
कानना रतिया नादना लीणा, नाग कुरंगम जेह ॥
वाजीगरने पागधि जालें, पानमें पडिया ते वेह ॥ ८ ॥

रसनानो थयो लोलुपी मठलो, जल कळोल जे क
 रतो ॥ धीवरें गडुं शुड लोन देखाडी, तालुएं ग्रहो
 सुचि धरतो ॥ ९ ॥ हाथणी वेखी मातंग महोटो,
 थयो कामातुर कूल ॥ कामवडों करि पडियो अजा
 डि, निज शिर नाखे धूल ॥ १० ॥ इणिपरें पांचे इं
 दिना रसथी, जे थया विषयाअंध ॥ तंडुलमठ परें
 कर्म निकाचितं, बांधि जोगवे धंय ॥ ११ ॥ शोल क
 पाय ने नव नोकपाय, ए दो मलीने पचवीश ॥ त्रिजो
 प्रमाद ए जाणिने सेवे, पाडे ते नरकमें चीस ॥ १२ ॥
 अनर्थकारी पांचे निडा, सेवे जे चोथो प्रमाद ॥ वा
 विस सागर ठठियें जाये, जोगवे नरकनो स्वाद ॥ १३ ॥
 राजकथादिक चारे विकथा, परमाद पांचमो कर
 ता ॥ नारे कर्मी थइने प्राणी, लहे दुःख चव गंड
 फरता ॥ १४ ॥ पंच प्रमाद ए दुष्ट नयंकर, सुव्रत
 हरे ते सदीवो ॥ लहू चोराशि योनी फरतां, ए ठे
 संतारनो दीवो ॥ १५ ॥ पंच प्रमादना ए गुण जी
 वडा, मनगुंज जावमें आणी ॥ प्रमाद पांचे दूरें ठे
 मो, जिम थाउ केवल नाणी ॥ १६ ॥ प्रमादने चडों
 जाणे जीवडो, ठे सघळुं ए महारुं ॥ पण ते ज्यंतर नि
 रखी जोतां, गुं देखे ठे तहारुं ॥ १७ ॥ दिवस निशा घट

मालने जोगें, आयु सलील घटाडे ॥ चंद ने सूरय वृ
 षन धोरीथी, काल रहट नमाडे ॥ १७ ॥ इणपरें
 न्यंतरमें निशिदिन वहे, नवकूपक घटमाल ॥ काल अनं
 तो परमाद संगें, पडियो मोहनी जाल ॥ १८ ॥ मो
 हनी जालमां जे नर पडिया, तें कदि नावे ऊंचा ॥ सागर
 कोडाकोडी सितेर सुधी, धरमशुं मांमे खूचा ॥ १९ ॥
 कंचन कामिनी अरथें मेले, माया महोटुं माणुं ॥ पण
 ते निशिदिन रहे जीव धखतो, जिम शघडीनुं ठाणुं ॥
 ॥ २० ॥ स्वारथनूत संबंध ए मलीयो, पोषवा पिंमने
 धाड ॥ काम पडे कोड दुकडो नावे, जो जो
 जगनी कमाड ॥ २१ ॥ पोतानो करि गणियें जेहने,
 ते होवे साहामो वैरी ॥ जो जो नवियां सगपण सा
 चुं, ज्ञाननी दृष्टें हेरी ॥ २२ ॥ मात पिता बंधु जात
 सुता पति, लेखवे साचि सगाई ॥ पण तस आवी
 अदल पोहोंचे, नवि रहे पूढवा कांड ॥ २३ ॥ ठे
 संसार विचारी जोतां, वाजीगरना गोटा ॥ कृणनं
 गुर ठे जीवित तो पण, माने वंठित पोटा ॥ २४ ॥ जल
 परपोटा समान ए काया, शी तस कूडी माया ॥ य
 मने मंदिर जावुं सहुने, कुण डुर्वल कुण राया ॥
 ॥ २५ ॥ वांऊणीयें जिम सुहणुं दीतुं, जाणे में ज

न्म्यो घेटो ॥ नाम विश्वं नर देइ एहबुं, वंध्या मेहणुं
 मेह्यो ॥ २४ ॥ जब जागो तब रोवा लागी, किहां गयो
 माहरो पुत्र ॥ वृद्ध कालें मुऊने सुखदाता, राखे घरनां
 सुत्र ॥ २५ ॥ वंध्यानुं जिम सुहणुं खोटुं, तिम संसार
 ठे खोटो ॥ एहबुं जाणी प्राणी चेतो, टाली मोहनो
 गोटो ॥ २६ ॥ ए संसार थसार वखाण्यो, जेहवो
 वारनो ब्रेह ॥ माननी अणीयें ज्युं जल कणिया, तिम ठे
 जगमें नेह ॥ २७ ॥ कहि ने रमणी थापणी तिहां जगें,
 जिहां जगें आख्यो साजी ॥ आख मीचाणो को नही
 ताहरुं, इम कहे जिनवर गाजी ॥ २८ ॥ एटलामांहे
 समजी लेजो, जो दुवो मोहनो अर्थी ॥ तो ए प्रमाद
 पांचे ठंमीने, करो सुकृत निज करथी ॥ २९ ॥ चोया उ
 द्वासनी शोलमी ढालें, दीधो एम उपदेश ॥ लब्धि
 कहे नवि परखद बूजी, बूज्यो मञ्जी नरेश ॥ ३० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ इम उपदेश ते सांजली, विनवे वे कर जोडि ॥
 कहो स्वामी मुऊ आगलें, पूरव नवनी होडि ॥ १ ॥
 शी करणीयें दुं लह्यो, धीवर कुलनी जात ॥ शी कर
 णी नृप पद लखुं, शे लहि नृपथी ख्यात ॥ २ ॥ शी
 करणी मुऊने मळ्यो, तटिनीनाथनो नाथ ॥ सुरम

णिनी परें मुज्जने, पूरी वंभित आय ॥ ३ ॥ शी करणि
 कालसेन जे, खेव्यो मुज्जुं घाता॥में पण पाठी तेहने,
 उपजावी घणी घात ॥४॥ शी करणी सद्गुरु मल्या,
 मुज्जने दीधो धर्म ॥ जीवदया मुज्ज दाखवी, प्रबल व
 धारी शर्म ॥ ५ ॥ तव कहे मुनिचंड केवली, सांजलो
 तुमें राजान ॥ पूरव नव करणी करी, ते कहुं तुमची
 निदान ॥ ६ ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेहवुं फल
 पाय ॥ शुजांशुजना बंध जे, ते तेहवा नोगवाय ॥ ७ ॥
 ॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥जनम्यो जेसल मेर ॥ अथवा ॥ प्रणमी सद्गुरु पा
 य ॥ ए देशी ॥ चौलहू जोजन सार, धातकी खंम विदेह
 में जी ॥ विजय पुष्पावड मनोहार, नदिलपुर वसे
 तेहमें जी ॥ १ ॥ तेहज डिंग मजार, विप्र वसे जयदे
 वता जी ॥ जयसिरी नामें ते नार, नारिया विप्रणी तेव
 ता जी ॥ २ ॥ प्रसव्या ते द्विजणीयें बाल, पुत्रजुगल
 दो सोहामणा जी ॥ नयण वयण सुरसाल, रूप रंग
 में कोइ नहिं मणा जी ॥ ३ ॥ सूनंद उपनंद दोय, ना
 म ठव्यां दो पुत्रनां जी ॥ वाधे शशि परें सोय, मन ह
 रखे मावीत्रनां जी ॥ ४ ॥ पाम्या ते जोवन बाल, प
 रणावी दो अंगना जी ॥ रूपें ते जाक जमाल, जा

लीयें नाकि वासांगना जी ॥ ५ ॥ पंच विषय सुख
 जोग, बिलसे ते केतकी अंग जुं जी ॥ पूरव पुण्य सं
 योग, रहे जीना सुखरंगुं जी ॥ ६ ॥ एक दिन वो
 मलि घात, वसंत जोवाने नीकल्या जी ॥ तव तिहां
 दीठो सुझात, उपशम रसमें जे जल्यो जी ॥ ७ ॥
 श्री जिनवरनो जे ठात्र, ध्यान धरी रह्यो काठस्सगें
 जी ॥ देखी ते नवली हो यात्र, आब्या दो बंधव त
 स पंगें जी ॥ ८ ॥ वंदि ते मुनिना हो पाय, सुनंद
 द्विज स्तवना करे जी ॥ उपनंद देखें जराय, मुंम पणुं
 ते देखी सरे जी ॥ ९ ॥ काली ते काय कशांग, मज्जम
 लीन पणो दीठडो जी ॥ जाणीयें जोई जुजंग, जुर्गंध
 गंधा अथीठडो जी ॥ १० ॥ डुष्ट दरिद्रिनी वेश, दी
 सतो जाणीयें वाघरी जी ॥ न मर्द न स्त्रीनो वेश, एक
 मां नही ए पसागरी जी ॥ ११ ॥ मावित्रें मूक्या निसास,
 चूखने जाडे करी रत्ना जी ॥ दाखवी पापनी राशि,
 सहुने कराये अर्गला जी ॥ १२ ॥ नीची ते दृष्टि धरे
 य, वगपरें हिंमे रसातला जी ॥ बदनें हो ते कर देई, वो
 से मुखयी धूरतकला जी ॥ १३ ॥ मधुरां जांखे हो
 येण, नर नारी विप्रतारवा जी ॥ मेजे टोली ते सेण,
 जवरनुं काज सुवारवा जी ॥ १४ ॥ इणपरें मन

धरी द्वेष, उपनंदें साधुनिंदा करी जी ॥ करि वली ड
 गंढा विशेष, नीच कुलीनुं पोतुं नरी जी ॥ १५ ॥ बांधी
 ज्युं रेशम गांठ, उपर मीण लपेटियें जी ॥ तिम एणें
 बांधीजी गांठ, नोगव्या विण किम तूटियें जी ॥ १६ ॥
 तव तिहां सूनंद चात, रीश धरी कहे बंधुने जी ॥
 मत करो साधुनी तांत, नाव धरी नमो साधुने जी
 ॥ १७ ॥ साधु ठे जगमां उद्योत, ज्ञान दीवो करि
 दाखवे जी ॥ बांधे तीर्थकर गोत, साधु वचन चित्त
 राखवे जी ॥ १८ ॥ मेले ते सकल संयोग, जो रु
 षि आवे हलकमें जी ॥ टाली ते कर्मना रोग, ज्यो
 तिवधू मेले पलकमें जी ॥ १९ ॥ चिन्ताती पुत्र जे ड
 ष्ट, ते गयो सुरलोक आवमे जी ॥ अढी दिन मांहि
 ते पुष्ट, रुषि वचनें थयो ठाठमें जी ॥ २० ॥ करे
 नव कल्पी विहार, नाविकने पडिबोहवा जी ॥ सूज
 तो लेवे आहार, निज आत्मने सोहवा जी ॥ २१
 ॥ जीती ते रागने द्वेष, उपशम रसमें जे नव्या जी
 ॥ स्वारथीयो जग देख, अहिकंचुकि परें नीकल्या जी
 ॥ २२ ॥ एहवा जे मुनिराज, तेहने किम करी नंदी
 यें जी ॥ प्रवल वधारी हो लाज, साधुने कर जोडी
 वंदियें जी ॥ २३ ॥ साधुवंदणथी तुं जोय, नरग च

छ ठेदी विष्णुयें जी ॥ जिन पदवी तिहां सोय, नाव
 श्री बांधी जिष्णुयें जी ॥ २४ ॥ नंदमणियारनो जीव,
 दर्डर बाव्य जे सेवतां जी ॥ वीरने नमतां अतीव,
 ते थयो दर्डर देवता जी ॥ २५ ॥ एहवा ते रूपि गु
 ण जाण, इव्यथी नावथी सेवीयें जी ॥ म करो को
 निंदा सुजाण, साधुने करी देव देवीयें जी ॥ २६ ॥
 इम उपदेश ते देय, सुनदें समजावीयो जी ॥ तव क
 र जोडीने वेय, उपनदें साधु खमावीयो जी ॥ २७ ॥
 ठो तुमें गिरुआ जी साध, पर उपगारी जंतुना जी ॥
 खमजो मुंज अपराध, जे में कीधी आशातना जी ॥
 ॥ २८ ॥ साधुनी स्तवना जो कीध, तो बांधि सुनदें सुरगई
 जी ॥ उपनदें नीच पद लीध, साधु निंदा निजमई जी
 ॥ २९ ॥ इम ते आलोइ हो पाप, बांधव दो रूपिने
 नमी जी ॥ टाली ते सघलो संताप, आव्या दो निज
 गृह वन रमी जी ॥ ३० ॥ चोया उल्लासनी ढाल,
 सतरमी लब्धिविजय कही जी ॥ सुणजो नवि उजमा
 ल, आगल शी शी कथा लही जी ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे दो भ्राता मंदिरें, आवी करे छुज काम ॥
 खट दरिसन पोखे सदा, लेहवां स्वर्गेनां धाम ॥ १ ॥

हवे जयदेवना घरथकी, साहामी ठे एक पोल ॥
 तेहमें दो वसे वाडवा, सुदेव नूदेव जल ॥ १ ॥
 साढू थइ पासें वसे, सुदेव नूदेव नट्ट ॥ खंमा स्त्री ठे सुदे
 वनी, विशाखा नूदेवनी गट्ट ॥ ३ ॥ ते दो नारीने
 थयो, पूर्वकर्म संयोग ॥ दाघ ज्वर बलतर तणो, उप
 नो तेहने रोग ॥ ४ ॥ तव ते चिकित्सा नणी, तेज्या
 बहु वैद्यराज ॥ पण टेकी लागे नही, कोइन सरीशुं
 काज ॥ ५ ॥ तव सुदेव नूदेव विप्र दो, मनशुं कीध
 विचार ॥ किम वहेरो घरणी विना, किम वहेरो घर
 नार ॥ ६ ॥ इम दो विप्र विचारीने, बीजी परण्या नार
 ॥ खंमा विशाखा दो प्रिया, मूकी पीयर सार ॥ ७ ॥
 परहरी दो स्त्री रोगिणी, जुंमा थया दो विप्र ॥ जिम
 मांखी घृतमें पडी, काढी नाखे द्विप्र ॥ ८ ॥ ते स्थिति
 करि इण वाडवें, नवि शोच्या ते लगार ॥ नवि विही
 ना कहोनाथकी, नवि विहिना किरतार ॥ ९ ॥ मद
 वाया दो विप्र ते, न करी सार संजाल ॥ तव दो स्त्री
 ते रोगिणी, तेहने उपनी जाल ॥ १० ॥ क्रोध वशें
 दो रोगिणी, दे दो पतिने शाप ॥ तुमें दो थम पातें
 पडी, लेहजो तुमें संताप ॥ ११ ॥

॥ टाल अठारमी ॥

॥ दिल लगा रे बावल बरणी ॥ ए देगी ॥ इम क
 हेती गइ तातने गेहें, निहां ने हरिचट्ट नामा ॥
 नवि जोजो रे कर्मनी करणी, नोगवे जे फल परणी
 ॥ न० ॥ ने तेहनी हरिचट्टणी द्विजणी, तस कुखनी
 दो रामा ॥ १ ॥ न० ॥ पीयर पण ने एकण डिगें,
 नदिलपुर जे नामें ॥ न० ॥ काढी पतियें पीयर आ
 ची, रोगिणी मावित्र ठामें ॥ २ ॥ न० ॥ मात पिता
 तव निरखी मलीयां, पूते कुशलनी बातो ॥ न० ॥
 कुशल तो नजरें जुबो ठो पिता जी, शी कहुं द्विजनी
 ख्यातो ॥ ३ ॥ न० ॥ जब अम वेने रोगिष्ट जाणी,
 बीजी परणी आणी ॥ न० ॥ ते उपर अम वेहुने
 काढी, शोक्यनी करि तिहां टाढी ॥ ४ ॥ न० ॥ तव अम
 आयां तातजी चरणे, जाणी पीयर शरणें ॥ न० ॥
 स्त्रीने पद कह्या दो वारु, वास पीयर नरतारु ॥ ५ ॥
 ॥ न० ॥ ए अधिकार सुणीने पितायें, आंखें आंसू आण्यो
 ॥ न० ॥ फिट रे जमाई दो कुल हीणा, एहवा न
 होता जाण्या ॥ ६ ॥ न० ॥ धिग धिग ने तुम जीवित
 जाति, कीयो विश्वास घात ॥ न० ॥ एहवा प्राणीनुं
 मुख महीयें, नजरें नावशो कहीये ॥ ७ ॥ न० ॥ पण गुं क

रीयें श्री जगवानें, लेख लख्या जे पानें ॥ न० ॥ अण चि
 तवी जब माथे वणाणी, जोगवे पुत्री ते प्राणी ॥ ७ ॥
 ॥ न० ॥ इणपरें वचन कहीने तातें, राखी दो कुमरी
 हेतें ॥ न० ॥ उपय वेपय करवा लाग्या, जे जिम आवे वेतें
 ॥ ८ ॥ न० ॥ आय उपाय करी बहु आका, वैद्यने
 मुख पड्या फांका ॥ न० ॥ पण जो जो वैद्य प्रगटे
 जाग्यें, कंथा ज्युं गोरख जागे ॥ ९ ॥ न० ॥ एक
 दिन हरिचट जयदेव गेहें, मलवा गयो बहु नेहें
 ॥ न० ॥ सुनंद उपनंद जयदेव आदें, हरिने मल्या कर
 बेहें ॥ १० ॥ न० ॥ वेठा सहु को एकण ठाणें, हरिने वि
 लखो जाणो ॥ न० ॥ तव हरिचटने जयदेव पूढे, शे
 पड्या शोचने बूढे ॥ ११ ॥ न० ॥ तव हरिचट कहि
 संघली मांमी, पुत्री जे दुःखणी ठांमी ॥ न० ॥ ए
 दुःख महोदुं साले अमने, शी कहुं जयदेव तुमने
 ॥ १२ ॥ न० ॥ ते वात सांजली जयदेव बोळ्यो, सां
 जलो हरिचट नाइ ॥ न० ॥ आजयी रोग गयो तुम
 जाणो, जो ठे पाधरो सांइ ॥ १३ ॥ न० ॥ एम कहि
 उपनंदने मूके, वेढो हरिचट साथें ॥ न० ॥ जाउ
 शीघ्र अइ जस लेशो, जेपज करजो हाथें ॥ १४ ॥
 ॥ न० ॥ आव्या मंदिर ततखिए हर्षें, हरिचट उप

नंद दोइ ॥ न० ॥ नाडी जोइ शिलाजित देख, तत
 खिए बलतर खोइ ॥ १६ ॥ न० ॥ आब्यो जस उप
 नंदने बखतें, थइ कुमरी दो साजी ॥ न० ॥ देखी गुण
 उपनंदनो महोदो, मातपिता थयां राजी ॥ १७ ॥
 ॥ न० ॥ हरखी हरिचट्ट कहे कर जोडी, सांजलो
 उपनंद स्वामी ॥ न० ॥ जीवित दान दीधुं तुमें थ
 मने, तिणें थया अंतरजामी ॥ १८ ॥ न० ॥ माण
 स उलें आण्या अमने, कीधा जगमें महोटा ॥ न० ॥
 नावत सघली जनमनी काढी, देई वंछित पोटा ॥
 ॥ १९ ॥ न० ॥ ए उपगार कदी न विसारुं, जो अम
 जाति ठे सागी ॥ न० ॥ थया अम पुत्रीना सुख
 दाता, कीधा अम बडजागी ॥ २० ॥ न० ॥ ए तुम
 गुण उंसिंगण थावा, संकटपुं आ कूडि घरनी ॥
 ॥ न० ॥ तन धन मन ठे सघलुं तुमारुं, मत गण
 जो तुमें परनी ॥ २१ ॥ न० ॥ सार्थे जइने अम चउ
 जीवडा, जो वेचो तो वेचाउं ॥ न० ॥ जीवित सूधी
 इणिपरें बहियें, तो तुम शाबास पाउं ॥ २२ ॥ न० ॥
 तव कुमरी कहे खंमा विशाखा, सांजलो उपनंद वा
 णी ॥ न० ॥ नवो नव ठे अम जीव तुमारा, मूकपुं
 तस कर पाणी ॥ २३ ॥ न० ॥ इणिपरें वयणें कहि

गुणनो दोष ॥ ४ ॥ देवी पडगो वाजरी, के तेडवी
 पडगो घेर ॥ ते जाणी उपनंदबुं, दो विप्र राखे वेर
 ॥ ५ ॥ एहवे एक आवी मल्यो, तपसी विरुठ वेश ॥
 तेहने जइ चरणो नम्या, करी आदेश विशेष ॥ ६ ॥
 आसन वासन देइ करी, तपसी कखो निज हाय ॥
 तव तपसी कहे सेवको, शी वंठो मुऊ आय ॥ ७ ॥
 तव विज कहे कर जोडीने, दो में नूवेव डुष्ट ॥ उपनं
 दने एहबुं करो, हुवे ज्युं यम तस रुष्ट ॥ ८ ॥

॥ ढाल उंगणीशमी ॥

॥ गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ तव तपसी
 समजी कहे रे, सांनजो दो तुमें आप ॥ मोरा वाजा
 रे ॥ ए पातक किहां बूटीयें रे, श्यों दीजें प्रभुने जवाप
 ॥ १ ॥ मो० ॥ इम तपसी कहे विप्रने रे, म करो ए
 हनी तांत ॥ मो० ॥ पापनी ठांहेडी मत रहो रे, जो
 हुयो विप्रनी जात ॥ मो० ॥ २ ॥ ६० ॥ महिय गवा
 मृगने हणो रे, हणो खयर पंखी ठाग ॥ मो० ॥ खट
 दर्शन शास्त्रें कह्यो रे, तेह पापनो नावे ताग ॥ मो०
 ॥ ३ ॥ ६० ॥ एकेक जीव तन उपरें रे, जेती रोमरा
 जी होय ॥ मो० ॥ वरप सहस तेतां गुणी रे, ए शैव
 मततो झेय ॥ मो० ॥ ४ ॥ ६० ॥ होय विपाकें दश गुणुं

दो कुमरी, रागनी गांठ त्यां पाडी ॥ ज० ॥ उपनंद
 पण अनुमोदी पोतें, बांधी मोहनी वाडी ॥ १४ ॥
 ॥ ज० ॥ इण्णिपरें वयणें राजी करीने, उपनंदने सन
 मानी ॥ ज० ॥ हरिजट्ठ साथें उपनंद जेहें, आव्यो
 चढती पांती ॥ १५ ॥ ज० ॥ हरिजट्ठ कहे जयदेवने
 ग्रणमी, धन्य धन्य स्वामी तुमने ॥ ज० ॥ तुम पुत्र
 सुज पुत्री जीवाडी, लेखे आण्या अमनें ॥ १६ ॥
 ॥ ज० ॥ इण्णिपरें कहीने लघुताइ पाइ, हरिजट्ठ मं
 दिर आव्यो ॥ ज० ॥ उपनंदनो जस पुरमें बाथ्यो,
 सज्जनजनमन जाव्यो ॥ १७ ॥ ज० ॥ चोथे चत्तामें
 अटारमी ठाजें, धातायें जेह वनावी ॥ ज० ॥ लब्धि
 कहे जवि सुणजो आगें, ए थइ ते कहुं चावी ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिजट्ठ केरी धीयने, कीधो जे उपमार ॥ ययो
 महिमा उपनंदनो, जदिल पुरमें सार ॥ १ ॥ ते बा
 वक अवणें सुणी, सुदेव नृदेव विप्र ॥ उपनंद उपरें
 पजव्या, जहुं जने अग्रि द्विप्र ॥ २ ॥ जाणुं दहुं दो
 नारीयो, मरजे गोमयी एह ॥ उपनंद जो सज करी,
 आपणा वयरी तेह ॥ ३ ॥ एम विचारी दो जस,
 अखो मनमें गोर ॥ उपनंदने हणवो सही, जो जो

गुणनो दोष ॥ ४ ॥ देवी पडरो बाजरी, के तेडवी
 पडरो घेर ॥ ते जाणी उपनंदबुं, दो विप्र राखे वेर
 ॥ ५ ॥ एहवे एक आवी मळ्यो, तपसी विरुठ वेश ॥
 तेहने जइ चरणो नम्या, करी आदेश विरोप ॥ ६ ॥
 आसन वासन वेइ करी, तपसी कखो निज हाथ ॥
 तव तपसी कहे सेवको, शी वंठो मुऊ आय ॥ ७ ॥
 तव विज कहे कर जोडीने, दो में चूदेव डुष्ट ॥ उपनं-
 दने एहबुं करो, हुवे ज्युं यम तस रुष्ट ॥ ८ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ तव तपसी
 समजी कहे रे, सांजलो दो तुमें थाप ॥ मोरा बाजा
 रे ॥ ए पातक किहां बूटीये रे, श्यो दीजें प्रचुने जवाप
 ॥ १ ॥ मो० ॥ इम तपसी कहे विप्रने रे, म करो ए
 हनी तांत ॥ मो० ॥ पापनी ठांहेडी मत रहो रे, जो
 हुयो विप्रनी जात ॥ मो० ॥ २ ॥ ६० ॥ महिष गवा
 मृगने हणो रे, हणो खयर पंखी ठाग ॥ मो० ॥ खट
 दर्शन शास्त्रे कह्यो रे, तेह पापनो नावे ताग ॥ मो०
 ॥ ३ ॥ ६० ॥ एकेक जीव तन उपरें रे, जेती रोमरा
 जी होय ॥ मो० ॥ वरप सहस तेतां गुणी रे, ए शैव
 मततो होय ॥ मो० ॥ ४ ॥ ६० ॥ होय विपाकें दश गुणं

रे, एकण कीधे कर्म ॥मो०॥ सत सहस लख कोडी
 गमे रे, तीव्र ज्ञावना मर्म ॥मो०॥ ५॥ ५०॥ जुं एक बीज
 कोविंनुं रे, ठोली गद्युं जीने गेर ॥ मो० ॥ तो नृप
 जित शत्रुतणुं रे, लीधुं दशगुणुं वेर ॥ मो० ॥ ६ ॥
 ५० ॥ जैन मते पण इम कहुं रे, जे करे पंचेंद्रि घात
 मो० ॥ तो तस पूरव कोडिनुं रे, चारित्र दूरें जात ॥
 मो० ॥ ७ ॥ ५० ॥ ए अधिकार जाणी करी रे, अमें
 किम करियें पाप ॥मो०॥ रामें रोमें कीडा पडे रे, दे
 खत कुण ले संताप ॥ मो० ॥ ८ ॥ ५० ॥ तुम दोने
 मरवुं नथी रे, जाणो अमर ठे तन्न ॥ मो० ॥ पण य
 मदंठ ठे सद्गुशिरें रे, देवो ठे एक दिन ॥मो०॥ ९॥ ५०॥
 एहवो जवाप ते सांजली रे, जे कहुं रुपियें वचन
 ॥ मो०॥ तव दो विप्र जांखा थया रे, विलखाणा दो
 मन्न ॥ मो० ॥ १० ॥ ५० ॥ तव मुख जेइ पाठा
 वल्या रे, जुं थया शीतल हीम ॥ मो० ॥ दो वि
 प्रने घरे आवतां रे, शो जोजन थइ सीम ॥ मो० ॥
 ॥ ११ ॥ ५० ॥ विण खूने उपनंदहुं रे, राखे ते वेरजाव ॥
 ॥ मो० ॥ पण हेवे जो जो तेहनी रे, शी गति होवे
 सहाव ॥ मो० ॥ १२ ॥ ५० ॥ हवे हरिन्हें निज
 मंदिरें रे, मेली द्विजनी नाति ॥ मो० ॥ अशन वसन

घृत घोलुं रे, संतोषी जजी जाति ॥ मो० ॥ १३ ॥
 ॥ ५० ॥ राजी थया सहु नातना रे, जेता दिज कहे
 वाय ॥ मो० ॥ पण ते दो कुमति प्रतें रे, रह्यां ते व
 दन बिठाय ॥ मो० ॥ १४ ॥ ५० ॥ तेहवे हरिन्ह बो
 जियो रे, कहे वर्गो मुऊ ऊन ॥ मो० ॥ आ वो छष्ट
 पापिष्टीयें रे, शे मुऊ तातजी खून ॥ मो० ॥ १५ ॥
 ॥ ५० ॥ तव तिहां दिज सयजा कहे रे, महारंगणीना
 जाति ॥ मो० ॥ हीणा चौदशना जण्य रे, शे न करी
 स्त्री तांत ॥ मो० ॥ १६ ॥ ५० ॥ इम कहि दिज सव
 जा मली रे, कुटिलने कहे समजाय ॥ मो० ॥ हवे
 मत रहो अम न्यातिमां रे, देखत कीधो अन्याय ॥
 ॥ मो० ॥ १७ ॥ ५० ॥ हवे तुमें ए पुरमां रही रे, मत
 करजो अन्न पान ॥ मो० ॥ जो ए वचन उलंघ्यो रे,
 तो घणा जडशे उपान ॥ मो० ॥ १८ ॥ ५० ॥ इम कहिने
 दो काढिया रे, देई धक्का जोर ॥ मो० ॥ श्याम वदन
 जेई मंदिरें रे, आव्या दो नातिना चोर ॥ मो० ॥
 ॥ १९ ॥ ५० ॥ तिणे पण जावा सज कखा रे, गाडां
 ऊंट वलद ॥ मो० ॥ जेई सजाई आपणी रे, निकल्या पुं
 रयी अठद ॥ मो० ॥ २० ॥ ५० ॥ नीकलतां पुरमां थकी रे,
 लागी दो विप्रने हींग ॥ मो० ॥ गया कोइक देशांतरें रे,

ज्युं गयां उंटनां शिंग ॥ मो० ॥ ११ ॥ ५० ॥ दो कुमरीनी
 ठाती ठरी रे, उखां वलि मावित्र मन्न ॥ मो० ॥ नली
 थइ जे शय्य नीकव्युं रे, उलसि रोम राजी तन्न ॥
 ॥ मो० ॥ १२ ॥ ५० ॥ इम हरखी कहे नातिने रे, हरि
 नट ते कर जोड ॥ मो० ॥ ठे नाति महीमें मोटकी
 रे, नाति ठे शिरनो मोड ॥ मो० ॥ १३ ॥ ५० ॥ नातिथकी
 तरियें सदा रे, जो चाले कुलवट ॥ मो० ॥ जो बहे
 आडो नातिथी रे, तो होवे बहवट ॥ मो० ॥ १४ ॥
 ५० ॥ जे निजवर्ग दूरें तजी रे, करे वल्लन परवर्ग ॥ मो० ॥
 ते नृप कुकर्म परें रे, पामे ते दुःख अपवर्ग ॥ मो० ॥
 ॥ १५ ॥ ५० ॥ नातिथी अधिको को नहिं रे, नाति
 ठे गंग प्रवाह ॥ मो० ॥ तरीयें बूडीयें नातिथी रे,
 नातिथी लहियें उवाह ॥ मो० ॥ १६ ॥ ५० ॥ इम
 स्तवना करी नातिनी रे, हग्नितें द्विजनी प्रसिद्ध ॥
 ॥ मो० ॥ संप्रेडी निज वर्गने रे, राजी करि जस ली
 ध ॥ मो० ॥ १७ ॥ ५० ॥ दाज कहि उगणीशमी रे,
 चौथा उलासनी एह ॥ मो० ॥ लब्धि कहे नवि सां
 सो रे, आगल होवे जेह ॥ मो० ॥ १८ ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिजट पामें रुहे, पाडोशी समनेव ॥ सुद

३. नामा छिज जज्ञी, सगल कला गुणमेह ॥ १ ॥
 सगपण तो काई नथी, ते सगपणची अशीक ॥ पा
 दोशीने नेहने, सगपण जाणे नजीक ॥ २ ॥ तस
 यम अदोनिश दो प्रिया, खंमा विगारवा जेह ॥ सुख
 दुःखनी जे वातडी, करवा आवे तेह ॥ ३ ॥ सुदत्त
 नो एक पुत्र ठे, वसुदत्त एहवे नाम ॥ रूप कला गुण
 चातुरी, उंपे ते अनिराम ॥ ४ ॥ ते दो मांहे विशेष
 ठे, खंमानो घणो राग ॥ दास कुतूहल नातनो, फर
 तां नावे ताग ॥ ५ ॥ दो नारी वसुदत्तगुं, राखे ताली
 एक ॥ सरखा सरखी जोडली, तिणे करे हास्य विवेक
 ॥ ६ ॥ एक दिन ते वसुदत्तगुं, खंमा ठेडी वात ॥
 कर्म कुतूहल वारता, करतां थयो प्रजात ॥
 ॥ ७ ॥ प्रह फाटो तव आपणे, आवी खंमा घेर ॥
 रीप करी माता कहे, शी होशे तुज पेर ॥ ८ ॥ एहवुं
 वचन कल्यायकी, खंमा रीसाणी मात ॥ अणवोली
 रहि मातधी, वार घडी निज धाम ॥ ९ ॥ नोजन
 वेला अवसरें, खंमा न जमे कांय ॥ रीप उतारी मावडी,
 सद्गु जमियां तिण ठाय ॥ १० ॥ एक दिन हरिचंद्र
 ने घरे, सुदत्त छेड परिवार ॥ मिजलस करी वेठा
 तिहां, करवा वातो सार ॥ ११ ॥ तेहवे पण आव्यो

तिहां, उपनंद मलवा रूप ॥ साथ सहु उठी मय्यो,
वेसाज्यो करी चूंप ॥ १२ ॥ हवे सहु वेठा रंगमें, क
रतां वात टकोल ॥ तिण समे आव्या साधुजी, देवा
समकित गोल ॥ १३ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ सूडा रे तुं जइ कहेजे संदेशडो रे ॥ ए देशी ॥
तव हरखे सउ उठीने, कर जोडी नामें शीशो रे ॥
गुरु पण नाविक देखीने रे, देवे सहुने धर्माशीषो रे
॥ १ ॥ नवि सुणजो रे, इहां गुरु पण जान कमावे
रे ॥ ए आंकणी ॥ मास खमणनुं पारणुं, करी वेठा
त्यां चित्रशाली रे ॥ साथ सहु पण तिहां कणे, गुरु
पासैं वेठा संजाली रे ॥ २ ॥ न० ॥ धर्मकथा यथा
स्थित कहि, सहु बूझव्या प्राणी सुजाणो रे ॥ सम
कित वासना पामीया, गुरुमुखथी सुणी वखाणो रे
॥ ३ ॥ न० ॥ तव द्विजणी कर जोडीने, पूठे खंमा
विशाखानी माता रे ॥ आ दो पुत्री दोनागिणी, त
स कदि होशे सुख शाता रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तव रु
षि दो कुमरी तणी, तस कर्मनी रेखा जोय रे ॥ आ
जथी ठे एक वर्षनुं, गुरु जांखे आउखूं होय रे ॥
५॥न०॥ तयारपढी सुख पामशे, जो जिन मारगमें वहे

जो रे ॥ मिथ्या मत जो बंशो, तो मन वंछित जेहेजो
 रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ इम कवि कहे सुण नटणी, तुम मा
 रग शुद्ध बतावूं रे ॥ जो ते मारगें चालशो, तो दुःखनी
 दोरी कपावूं रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ तव नटणी कहे साधु
 जी, तुमें मारग शुद्ध जांखो रे ॥ काज सरें जेहथी
 धणुं, अम करुणा करी ते दाखो रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ तव
 गुरु कहे सुणो जाबुको, तुमें पूजो प्रभु शुभ जाणी
 रे ॥ प्रभु पूज्या ते पामीया, इम लोकमें ठे पण वाणी रे
 ॥ ९ ॥ ज० ॥ सद्गुरुवचन हृद धरी, तुमें आपथी
 मनहुं जाणो रे ॥ प्रभु वंदन फल सांजली, तुमें मनु
 जव जेखें आणो रे ॥ १० ॥ नवियां रे तुमें
 जिन वंदन नणी जावो रे, ए तो मीठा सेवा पावो रे
 ॥ ए आंकणी ॥ चासरें ठी खाटथी घारे, मनहुं जिन
 नणी जावुं रे ॥ उजट आणी जावथी तो, चोथ तणुं
 फल पावुं रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ उठे चैत्य गमण नणी
 ए तो, पहेरी शुद्ध ते वेशो रे ॥ ठठ तणुं फल पामी ते
 लहे, एम केवली दे उपदेशो रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ चोखा
 सोपारी कर लीया, तव अछमनुं फल पावे रे ॥ पगलुं
 दे जावाने देहरे, तव दशम तणुं फल आवे रे ॥ १३ ॥
 ज० ॥ द्वादश तप सम फल जहे, ए तो देहरा मारग

जातां रे ॥ अर्धे पंथें लहे देहरे, ए तो मास खमण फल
 आतां रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ देहरुं देखे दृष्टिमें, तव मा
 स खमण फल लाजे रे ॥ जव पहोंचे चैत्य गंहडी,
 तव खटमासी फल लाजे रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ जिन
 वर वारणना फरसथी, ए तो वरसी तप फल होवे रे
 ॥ व्रण प्रदक्षिणा देयतां, तस शत वर्ष तप फल जो
 वे रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ सहस ते वर्ष उपवास जे, फल
 होवे जिन पूजे एतो रे ॥ पुण्य अनंतुं ते वरे, जिनस्त
 वना जावें करेतो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ चैत्यमें काजो
 काढतां, फल शो उपवासनुं यावे रे ॥ आंगी रचे जो
 विलेपनें, सहस पोषण लाज उपावे रे ॥ १८ ॥ ज०
 ॥ लाख उपोषण फल लहे, एक फूलनी माला चढा
 वे रे ॥ वाजित्र गीत प्रभु आगलें, कीधे लाज अनंत
 गुण जावे रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ घृतदीपक प्रभु आगलें, करतां
 लहे मंगलमाला रे ॥ आरति करे प्रभु जिन तणी, तस
 जाये आरति वाला रे ॥ २० ॥ ज० ॥ न्हवण करे जि
 नजी शिरें, तस होवे आतम शुद्ध रे ॥ धूप उखेवें
 प्रभु आगलें, ते सुरगुरु सम लहे बुद्ध रे ॥ २१ ॥
 ॥ ज० ॥ नाटक करतां पदवी लहे, जिन चक्रि हरिवल
 देवा रे ॥ गणधर सुर नृप पद लहे, प्रभु सेवाथी लहे

मीठा मेवा रे ॥ ३२ ॥ ज० ॥ जो त्रण काल पूजा
 करे, जवसागर पार उतारे रे ॥ हलुवा कर्मा सदैव,
 ते जावे मुगति डुवारे रे ॥ ३३ ॥ ज० ॥ रावण ने
 मंदोदरी, करी अष्टापद ते नृतो रे ॥ ता थै तान न
 चूकियां, जिन पदवीनी लहेवातो रे ॥ ३४ ॥ ज० ॥
 श्रेणिकरायें वीरनी, करी हेममेजवनी पूजा रे ॥ पद्म
 नाज तीर्थकरु, होरो आवति चोवीशी राजा रे ॥
 ॥ ३५ ॥ ज० ॥ कुमारपाल पूरव जवें, कोडी पांचनी
 फूल चढावे रे ॥ देश अढारनो अधिपति, थयो फूल
 अढारथी फावे रे ॥ ३६ ॥ ज० ॥ इणि परें प्रभुनी पू
 जायकी, ए तो सघलां संकट नाजे रे ॥ स्वर्ग मुगति सुख
 पामीयें, वली संसारिक सुख ठाजे रे ॥ ३७ ॥ ज० ॥
 ए अधिकार ते सांजली, सहुनां मन जावें नेदाणा
 रे ॥ जिन वंदन जिन नकिमां, तस आतम रंग रंगा
 णा रे ॥ ३८ ॥ ज० ॥ गुरुनी शीख सोहामणी
 मानी विप्रें सघली साची रे ॥ चोथा उल्लासनी व
 शमी, कहि लव्हें शाखें राची रे ॥ ३९ ॥ ज० ॥

॥ दोहा ॥

॥ रुपिनी शीख सोहामणी, सांजलि सघला वि
 प्र ॥ जिन वंदन अर्चानणी, द्विज द्विजणी थयां दि

प्र ॥ १ ॥ कहे उपनंद सुणो प्रभु, शी विध कीजें
 सेव ॥ ते विधि कहो अमनैं प्रभु, तिण विध पूजा
 देव ॥ २ ॥ तव गुरु देव ते दाखवे, दोष रहित अ
 ढार ॥ जिन वंदन अर्चा तणो, शिखवे गुरु आचार ॥
 ॥ ३ ॥ रमणी कृहि तजी करी, जीत्या राग ने द्वेष ॥
 देव तेहनुं नाम ठे, बीजा देव ते रेख ॥ ४ ॥ देव ते
 नाम धरावीने, राखे कामिनी संग ॥ ते संसारी सुर
 कहा, लुब्धाणा तस रंग ॥ ५ ॥ जे सुर जीवता जे
 दुवे, ते नलें राखे नारि ॥ पण अइ मूरति शैलनी, शे
 स्त्री राखे सार ॥ ६ ॥ मूआ गया परलोकमें, तो पण न
 गयो विकार ॥ ते गुं तारक तारशे, पडिया मोह म
 जार ॥ ७ ॥ बाहालो वयरी एकसम, लेखवे ते खरो
 देव ॥ तस चरणांबुज सेवतां, लहियें शिव ततखेव ॥ ८

॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ तुमें पीतांबर पहरो जी, मुखने मरकलडे ॥ ए
 देशी ॥ सांजली गुरुनी वाणी जी ॥ हरिवल सांजलो ॥
 बूजिया ते द्विज प्राणी जी ॥ ह० ॥ देवनी नांति उ
 नांति जी ॥ ह० ॥ जाणी काढी नांति जी ॥ ह० ॥ १ ॥
 तेहमां त्रणे जीव जी ॥ ह० ॥ लीधुं पण ते अतीव
 जी ॥ ह० ॥ चाकरी जिननी कीजें जी ॥ ह० ॥ तव

सुखमें अन्न दीजें जी ॥ ह० ॥ १ ॥ दो कुमरी उप-
 नंदें जी ॥ ह० ॥ ए त्रणे आणंदे जी ॥ ह० ॥ उन्नखी सु-
 ६ आचरणें जी ॥ ह० ॥ थया पणधारी त्रणे जी
 ॥ ह० ॥ ३ ॥ इम उपदेश ते देइ जी ॥ ह० ॥ चाल्या गुरु
 जान देइ जी ॥ ह० ॥ हरिनिष्ट सुदत्त आर्दे जी ॥ ह० ॥
 सद्गु जिन पूजे आर्हादे जी ॥ ह० ॥ ४ ॥ नव नवी पू-
 जा बनावे जी ॥ ह० ॥ नव नवी आंगी रचावे जी
 ॥ ह० ॥ नव नवां नृत्य करावे जी ॥ ह० ॥ इम
 नित्य जावना जावे जी ॥ ह० ॥ ५ ॥ सहस्रनें पटशें
 ऐंशी जी ॥ ह० ॥ सोवन मुझा विहसी जी ॥ ह० ॥
 प्रभुने जंमारें हरखें जी ॥ ह० ॥ उपनंद मूके एक
 वर्षे जी ॥ ह० ॥ ६ ॥ शोलशें फूल चढावे जी ॥ ह० ॥
 हेम रजतनां जे कहावे जी ॥ ह० ॥ शोलशें मुं-
 गट नरावी जी ॥ ह० ॥ कुंमल हार करावे जी ॥ ह० ॥
 ॥ ७ ॥ कटिसूत्र ने करें कडली जी ॥ ह० ॥ बांहे
 बाहुबंध जडली जी ॥ ह० ॥ इणपरें नूपण सारां जी
 ॥ ह० ॥ प्रभुने चढावे प्यारां जी ॥ ह० ॥ ८ ॥ इणपरे
 द्विजणी टोली जी ॥ ह० ॥ पहेरी पंचरंगी चोली
 जी ॥ ह० ॥ पूजे जिनवर देवा जी ॥ ह० ॥ लें
 हवा शिवसुख मेवा जी ॥ ह० ॥ ९ ॥ तेहमें उपनंदें

साधुं जी ॥ ह० ॥ पूजा नामकर्म बांधूँ जी ॥ ह० ॥
 गुरुमुखें जे पण लीधुं जी ॥ ह० ॥ साथें ते त्रिहुं
 जीव सीधुं जी ॥ ह० ॥ १० ॥ नवो नवनां दुःख
 टाळी जी ॥ ह० ॥ यथा त्रणे एक अवतारी जी ॥
 ॥ ह० ॥ गुरुवचनं जे चाले जी ॥ ह० ॥ ते शिव
 रमणीयुं माले जी ॥ ह० ॥ ११ ॥ इम करतां दिन
 केता जी ॥ ह० ॥ सुकृतमें दिन बीता जी ॥ ह० ॥
 सांजलो आगें जे होवे जी ॥ ह० ॥ नावि जिहां तिहां
 जोवे जी ॥ ह० ॥ १२ ॥ हवे सुदेव नूदेव दोइ जी ॥
 ॥ ह० ॥ रोगिणीना जे धव होइ जी ॥ ह० ॥ ना
 तिना खूनी जाणी जी ॥ ह० ॥ काढ्या ते छुट प्राणी
 जी ॥ ह० ॥ १३ ॥ निकल्या नातिथी हास्या जी ॥
 ॥ ह० ॥ क्रोधानलमें ते गाव्या जी ॥ ह० ॥ गया ते
 कठप देगें जी ॥ ह० ॥ न जाणे को नामनी विगे
 जी ॥ ह० ॥ १४ ॥ तिहां जइ एक कापडी जेटी जी ॥
 ॥ ह० ॥ तिणें शिखवी विद्या महोटी जी ॥ ह० ॥
 बहु रुपिणी विद्या शिखी जी ॥ ह० ॥ आव्या ते दो
 जीखी जी ॥ ह० ॥ १५ ॥ कापडी वेग ते जेइ जी
 ॥ ह० ॥ आव्या ते दिंगमें वेइ जी ॥ ह० ॥ उपनं
 वने घर आगें जी ॥ ह० ॥ कपटें दो निद्धा मागे

जी ॥ ह० ॥ १६ ॥ मधुरी धुने गीत गावे जी ॥
 ॥ ह० ॥ उपनंदनी पोल रीजावे जी ॥ ह० ॥ रूपिणी
 विद्याजोगें जी ॥ ह० ॥ उलखे नहि तस जोगें जी ॥
 ॥ ह० ॥ १७ ॥ एक दिन रातें ते पोलें जी ॥ ह० ॥
 निद्रुक गावे दो उलें जी ॥ ह० ॥ एहवे उपनंद था
 व्यो जी ॥ ह० ॥ कपटीयें दाव ते पाव्यो जी ॥
 ह० ॥ १८ ॥ फरसीयें घाव त्यां घाल्यो जी ॥ ह० ॥ उपनंद
 यमघरे चाल्यो जी ॥ ह० ॥ श्वाननां रूप करी नाठा जी
 ॥ ह० ॥ कपटी दो त्यांथी त्राठा जी ॥ ह० ॥ १९ ॥
 धाउ रे जाइ धाइ जुठ जी ॥ ह० ॥ उपनंद हरिश
 रणें हुठ जी ॥ ह० ॥ जयदेव आवें कुटुंब जी ॥ ह० ॥
 आव्या सहु करी बुंव जी ॥ ह० ॥ २० ॥ रोगिणी देखी दो
 मेटे जी ॥ ह० ॥ फाल पढी तस पेटें जी ॥ ह० ॥
 जयदेव कहे जइ देखो जी ॥ ह० ॥ हणनारुं कुण
 तस पेंखो जी ॥ ह० ॥ २१ ॥ धाया जन बहु केडें
 जी ॥ ह० ॥ न लाया गया कोइ चेडें जी ॥ ह० ॥
 थारतिनगर कुंथारी जी ॥ ह० ॥ न पडे सुध कांइ
 जारी जी ॥ ह० ॥ २२ ॥ राते सामले रांम जी ॥
 ॥ ह० ॥ लेइ गइ पाशेर खांम जी ॥ ह० ॥ आमयी
 गइ आम आवी जी ॥ ह० ॥ ते रीत थइ इहां ठावी

जी ॥ ह० ॥ १३ ॥ आब्या जन बहु जोइ जी ॥
 ॥ ह० ॥ कहे हणी गयो कोइ जी ॥ ह० ॥ सजन
 कुटुंब सह रोवे जी ॥ ह० ॥ नाइवे ज्युं खाल होवे
 जी ॥ ह० ॥ १४ ॥ फट रे देव तुं डष्ट जी ॥ ह० ॥
 विण खूने शे रुष्ट जी ॥ ह० ॥ सुनंद कहे रे नाई
 जी ॥ ह० ॥ गुं गयो ठेह देखाई जी ॥ ह० ॥ १५ ॥ इणि
 परें आक्रंद करतां जी ॥ ह० ॥ मृत कारज तस धरतां
 जी ॥ ह० ॥ धिग संसार असार जी ॥ ह० ॥ धिग
 जे लेखवे सार जी ॥ ह० ॥ १६ ॥ इम ते मनमें वि
 चारी जी ॥ ह० ॥ जयदेव आप संचारी जी ॥ ह० ॥
 जयदेव सूनंद साथें जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा मुनि हाथें
 जी ॥ ह० ॥ १७ ॥ खंभा विशाखा दो कुमरी जी ॥ ह० ॥
 उपनंदनुं दुःख समरी जी ॥ ह० ॥ दीक्षा अज्ञा पासें
 जी ॥ ह० ॥ ले व्रत पाले उद्वासें जी ॥ ह० ॥ १८ ॥ हरि
 जट सुदत्त जेह जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा पण तेह जी ॥
 ॥ ह० ॥ मोहनीकर्म संबंधें जी ॥ ह० ॥ उपन
 दगुं मन बंधे जी ॥ ह० ॥ १९ ॥ चोथा उद्वासनी
 ढाल जी ॥ ह० ॥ एकवीशमी गुणमाल जी ॥ ह० ॥
 लब्धी नवनय मेली जी ॥ ह० ॥ कहुं उपनय मन
 नेली जी ॥ ह० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम कहै मुनिचंड केवली, सांचजो हरिबल रा
 य ॥ जावी माहापण आगलै, को नवि अधिको धाय
 ॥ १ ॥ जीती न शके जाविने, अनंत बली अरिहंत ॥
 ते सरखा पण हारिया, जावि प्रबल बंदत ॥ २ ॥ पंच
 महाव्रत बन्धरी, पामे केवल नाण ॥ तो पण जावी
 नहि मिटे, जीवित सूखी जाण ॥ ३ ॥ केवली आशु
 ने समे, जे करे समुदयात ॥ ते पण जावि जोगथी,
 जाणजो नवि विख्यात ॥ ४ ॥ सुख दुःख पानें जे
 लख्यां, कृण टाले तस दूर ॥ त्रीजगमें व्यापी रह्यां, जि
 हां तिहां जावि हजूर ॥ ५ ॥ वीर जिणंदने पण र
 ह्यो, ठम्मासी अतिसार ॥ केवल पाम्या तोहि पण,
 जावी न मटणुं लगार ॥ ६ ॥ जावीथी पूरव नवें, जे
 बांधुं अंतराय ॥ वर्ष सूखी नूख्या रह्या, जे श्री रूप
 न कहाय ॥ ७ ॥ कृपीकर्म करतां थकां, कूर्मापुत्र सु
 जाण ॥ केवल लही घरमें रह्यो, त्रण रति जावि प्रमा
 ण ॥ ८ ॥ ते माटे हरिबल तुमें, जाणजो करीने ठीक
 ॥ जावी आगेवान ठे, सद्गु ते जंतु नजीक ॥ ९ ॥
 जे जिम जावी नीपजे, टाली न शके कोय ॥ रोगिणी
 दोनी दाऊथी, सुदेवें हणियो सोय ॥ १० ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलीयामणुं रे ॥ ए देशी
 ॥ ते उपनंदनो रे जीव चवी इहां रे, अया तमें हरिब
 ल महोटे नाम ॥ साधुनी निंदा रे कीधी घणी रे,
 तव लखुं धीवर कुलनुं धाम ॥ १ ॥ हरिबल सुणजो रे,
 तुम नवनी कथा रे ॥ ए आंकणी ॥ जे जीव मेले ठे
 ते दल कर्म ॥ गुनागुनना जे बंध बांधीया रे, नोगवे
 ते जीव निज निज मर्म ॥ २ ॥ ह० ॥ जलचर जंतु रे तुमें
 हणता सदा रे, ते निज उदरने कारणें जोर ॥ हरिजट्ट
 संगी रे सुदत्तद्विज चवी रे, अयो इहां तुम तणो सा
 चो गोर ॥ ३ ॥ ह० ॥ तिणें तुमें दाख्यो रे जलने कांठडे रे,
 जीव दयानो महोटो धर्म ॥ तुमें पण साचा रे पण
 धारी अया रे, राख्यो जीवदयानो नर्म ॥ ४ ॥ ह० ॥
 तस पुण्य योगें रे, जलनिधि देवता रे, प्रगट अयो तु
 म पूरव चात ॥ सुनंदनामैं रे बंधु चवी इहां रे, सुर अ
 इ पूरी तुम मन खांत ॥ ५ ॥ ह० ॥ पूरव नवनी रे
 तुम दो रागिणी रे, खंदा विशाखा नामैं जेह ॥ ते दो
 नारी रे अइ तुम मोहथी रे, वसंतसिरी कुसुमसिरी ते
 ह ॥ ६ ॥ ह० ॥ श्री जिनकेरी रे नक्ति करी घणी रे,
 दो गोरी तुमें त्रण जीव ॥ शोलशें फूलें रे शोलशें देशनी रे,

पराया नारी तेणें अतीवा ॥ ७ ॥ ह० ॥ श्रीदत्तनामें रे वड व
 खती थयो रे, व्यवहारी जे विशाला मझा ॥ ते तुम तात रे
 जयदेव चवि थयो रे, तिणें दीधुं रहेवा गृह तुम कझा ॥ ८ ॥
 ॥ ह० ॥ नगरि विशाला रे जे पुरनो धणी रे, जे थयो
 कामी पूरव नेग ॥ सुदेव नामें रे खंमानो धणी रे, ते
 थयो चवीनें मदन वेग ॥ ९ ॥ ह० ॥ माहाड्डट बु
 दि रे नूदेव वाडयो रे, नारि विशाखानो पति जाण ॥
 ते धिज चविने रे हीणी लेशथी रे, थयो काजसेन ते
 ड्डट प्रधान ॥ १० ॥ ह० ॥ तिणो तुम भूक्या रे पूर
 व वयरथी रे, जंका गढ बली जमने घेर ॥ पूरव जव
 ना रे वयर प्रजावथी रे, तुमें पण वाल्युं सवायुं वेर
 ॥ ११ ॥ ह० ॥ नृप पण मोह्यो रे तुम स्त्री देखतां
 पूरव जवनो मोह विकार ॥ ते दो नारी रे वय
 संजालीने रे, मंत्री नृपने कीध खुआर ॥ १२ ॥ ह० ॥
 तव नृप समजी रे बूजी मनमां रे, जाणी महो
 ते तुम उपगार ॥ राज समर्प्यु रे जलनिधि देवथी
 परणावी तुम कुमरी सार ॥ १३ ॥ ह० ॥ हरि
 नट सुणजो रे दो डःखणी पिता रे, थयो ते वसंत
 न नृपाल ॥ हरिजट्ट नारी रे हरिजट्टिणी चवी रे,
 ते वसंतसेना गुणमाल ॥ १४ ॥ ह० ॥ तस कुखें

जाई रे वसंतसिरी जली रे, खंमा नामें दुःखणी ज
 व ॥ वर्षे एक सुधी रे जिन पूजा रची रे, तव थइ कु
 मरी नृपनी अतीव ॥ १५ ॥ ह० ॥ वसुदत्त नामें रे
 सुत सुदत्तनो रे, थयो चवि हरिवल वणिक उवाह ॥
 वसंतसिरीने रे हरिवल नंदशुं रे, प्रगट्यो पूरव मोह
 अथाह ॥ १६ ॥ ह० ॥ पण ते साथें रे संबंध पूरो
 नही रे, वणिकें कुमरी ठंणी ताम ॥ तव तुम मली
 यो रे योग कुमरी तणो रें, जलसुरें मेव्यो ईश्वरि ठाम
 ॥ १७ ॥ ह० ॥ तव तुम साथें रे कुमरी ले चली रे,
 जब आव्या तुमें जग कांतार ॥ रवि जब ऊग्यो रे त
 व तुम देखतां रे, थइ मूरठागत कुमरी तिवार ॥ १८ ॥
 ॥ ह० ॥ तव तुम साजें रे सागर देवता रे, आव्यो
 पूरव जवनो चात ॥ तेणे सज कीधी रे कुमरी तत
 खिणें रे, परणावी तुम मन विख्यात ॥ १९ ॥ ह० ॥
 खंमा नामें रे गख्या अत्रोन्नडा रे, मावडी साथें ति
 णे वडी वार ॥ नेहने जोगें रे मावित्रयुं गह्यो रे, वि
 जोग कुमरीने वर्षे वार ॥ २० ॥ ह० ॥ विजाजा पु
 षी रे वज्री तुम नेडीया रे, तुम मसरो जे वसंतमे
 ण ॥ तिणे तुम नेडी रे पूरवनेगयुं रे, दे तुम गज्यने
 कुमरी विजोग ॥ २१ ॥ ह० ॥ जडि ने गमणी रे ग

ज्य दो पामीयां रे, पूज्या पुर्वे जिन जगवान ॥ तस
 पुण्य जोगे रे सागर केवथी रे, जगमां वजाव्यां जीत
 नीशाण ॥ २२ ॥ ह० ॥ इणपरें नांखुं रे हरिवल
 आगलें रे, पूरव नवनुं जे वृत्तांत ॥ मन्हीयें दोतुं रे
 तेहवुं झानथी रे, जाति समरणें लह्यो उपशांत ॥
 ॥ २३ ॥ ह० ॥ धीवर ब्रूजयो रे केवली वयणथी रे,
 संजम लेवा थयो वजमाल ॥ चोये उल्लासें रे ढाल
 बावीशमी रे, कही लव्यें जोइ शास्त्र संजाल ॥ २४ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ धीवर नृप मन चिंतवी, प्रणमी गुरुना पाय ॥
 आव्यो आपण मंदिरें, समतायुं चित्त लाय ॥ १ ॥
 श्रीवल सुवल निज पुत्रने, राज्य नजावी दोष ॥ अनुमत
 लइ संजम तणी, हरिवल मन्ही सोय ॥ २ ॥ वसंत
 सिरी कुसुमसिरी, दो पट्टराणी एह ॥ तस संगें अ
 नुमति लीये, संजम वरवा तेह ॥ ३ ॥ तव दो नारी
 कंतने, नांखे प्राणाधार ॥ संयम पालवुं दोहिलुं, जिम
 वहेवो करितार ॥ ४ ॥ मदन दशनें अयचना, चाव
 तां जिम झुर्जेन ॥ तिम पियु संजम दोहिलुं, पालवुं
 जाणो अचन ॥ ५ ॥ सुरगिरि तोलवो त्राजुवे, चढवो
 लेइ गिरि नार ॥ चालवुं खंमा धार ज्युं, तिम वहेवो

मुनि चार ॥ ६ ॥ पंच महाव्रत उच्चरी, रहेवुं वनह
जार ॥ बावीश परिसह फोजशुं, लडवुं थइ जूजार ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रैवीशमी ॥

॥ हरियालो श्रावण आवियो ॥ ए देशी ॥ जीरे
वसंतसिरी कहे इणि परें, तुमें सांजलो प्रीतम वातो
रे ॥ घरे बेठा मन थिर राखीने, पालो जाव चारित्र
विख्यातो रे ॥ १ ॥ इम वसंतसिरी कहे कंतने ॥ ए आंक
णी ॥ घरे बेठां चालतो धर्म ठे, जेहनुं मन ठे शुद्ध
चंगा रे ॥ हांजी लोक उखाणो पण कहे, मन शुद्ध
कथोटीमें गंगा रे ॥ २ ॥ ५० ॥ हांजी एक घरे बेठा
तप करे, एक जइ सेवे वनवासो रे ॥ पण कह्यो अ
धिको घरे तप करे, हांजी पण न कह्यो जलो वन
वासो रे ॥ ३ ॥ ५० ॥ हांजी पाराशर विश्वामित्र
जे, तप दोइ करे वनमां जाई रे ॥ हांजी मास मास
ने पारणें, रहे वनपत्र सूकां खाई रे ॥ ४ ॥ ५० ॥
हांजी एहवी तपस्या ते दो करे, लोही मांस गयां ते
सुकाई रे ॥ हांजी ते सरखा पण स्त्री थकी, चलीया
मति विषयनी पाई रे ॥ ५ ॥ ५० ॥ हांजी खटरस
नोजन जे करे, तेहनुं मन किम होवे शुद्धो रे ॥ हांजी
मन वश राखे जे घरे रही, तेहनी कहे जिन जली

बुझो रे ॥ ६ ॥ ५० ॥ हांजी वेश कष्टपें जाणीयें;
 शेत विजय ने विजया नारी रे ॥ हांजी एकण श
 प्यायें रंगमें रहे, गृहमें थड व्रतधारी रे ॥ ७ ॥ ५० ॥
 हांजी शुद्ध स्वभाव को नवि दिये, ए तो प्रगटे सहज
 स्वभावें रे ॥ हांजी शुद्ध स्वभाव जब उजखे, तब पर
 भाणंद पद पावे रे ॥ ८ ॥ ५० ॥ हांजी लौकिकने म
 तें पण कहे, ठार जूंसे केइ तन शीशो रे ॥ हांजी तो
 पण शुद्ध होवे नही, लोटे ठारमें अश्व चक्री दुंशो
 रे ॥ ९ ॥ ५० ॥ हांजी गंगाजलें जीजे केइ जना, करे
 मांहे तप शुद्ध होवा रे ॥ हांजी तो पण शुद्ध होवे
 नही, रहे मेढकां मघी जल लेवा रे ॥ १० ॥ ५० ॥
 हांजी उंधे मस्तकें केइ जना, करे तपस्या थड उज
 मालो रे ॥ हांजी इम जोतां उंधे मस्तकें, रहे वागुल
 जइ तरुमालो रे ॥ ११ ॥ ५० ॥ हांजी केइ जन
 जटा बधारता, करे तपस्या गुन वित्त लाई रे ॥
 हांजी इम तप होवे तो न्यग्रोधें, बधे अहनिश जटा
 बढवाइ रे ॥ १२ ॥ ५० ॥ हांजी केइ जन मुंम मुंमा
 वता, करे मस्तकें चीखां टीलां रे ॥ हांजी इम धर्म
 जो होवे नेकने, केश लूंचे खटमासैं चीला रे ॥ १३ ॥
 ॥ ५० ॥ हांजी निजनिज मतने पोपवा, ए तो चलवे

सहु शुद्ध धर्मों रे ॥ हांजी न्यंतर शुद्ध न उज
 रव्यो, तव तिहां वधे मिष्या जर्मों रे ॥ १४ ॥ ५० ॥
 हांजी जब शुद्धातम आवे जीवने, तव केवलकम
 ला पावे रे ॥ हांजी ज्योतिमां ज्योति मले तदा, जि
 नमुखथी चिदानंद कहावे रे ॥ १५ ॥ ५० ॥ हांजी
 ते माटे तुमें नाथजी, तुमें ठो घणा महोटा जारे रे ॥
 हांजी ठो तुमें सुकुमाल केलि ज्युं, तन तपथी गली
 जाय क्यारें रे ॥ १६ ॥ ५० ॥ हांजी घरे बेगं सुख
 जोगवो, करो जमणो हाथ ते आघो रे ॥ हांजी मन शुद्ध
 जाव संजम लही, तुमें बांधो समकित पाघो रे ॥
 ॥ १७ ॥ ५० ॥ हांजी इव्य चारित्र ते लेखने, फरे म
 टक वैरांगी थाइ रे ॥ हांजी दुर्जर जरवाने केलवे,
 करणी कपटीनी संवेग लाइ रे ॥ १८ ॥ ५० ॥ हांजी
 प्रीतम तिणे न ऊघडे, ए तो उघडे चारित्र जावें रे ॥
 हांजी जावचारित्रथी केइ तस्या, नवजलधि दर्शन
 नावें रे ॥ १९ ॥ ५० ॥ हांजी इव्य चारित्रना योग
 थी, जाये नवमा ग्रैवेयक सूधी रे ॥ हांजी जाव चा
 रित्रना संगथी, पामे अजरामर पद बुद्धि रे ॥ २० ॥
 ॥ ५० ॥ हांजी जरत आरीसा सुवनमां, दुआ जाव
 थी केवल नाणी रे ॥ हांजी आपाढनूति एलाचीयें,

लहं नाटकें केवल प्राणी रे ॥ ११ ॥ ५० ॥ हांजी कू
 मांपुत्र कपि खेडतां, पाम्यो केवलनाण स्वनावें रे ॥
 हांजी बलकलचीरी पण इण परें, पात्र लुंबतां के
 बल पावे रे ॥ १२ ॥ ५० ॥ हांजी मरुदेवी माता जे
 रूपज्जनी, गज घेतां केवल पाम्यां रे ॥ हांजी इत्या
 दिक मन शुद्धी, जयो जवनां दुःख सवि वाम्यां रे
 ॥ १३ ॥ ५० ॥ हांजी ते माटे तुमें नूथणी, कलुं मा
 नो अमारुं ए साचुं रे ॥ हांजी पंच महाव्रत पालतां,
 यणुं दोहिलुं होवे मन काचुं रे ॥ १४ ॥ ५० ॥ हांजी
 इत्यादिक वचनें करी, कहे वसंतसिरी उजमाजो रे ॥
 हांजी चोथा उघासनी ए कही, त्रैविशमी लब्धे ढा
 लो रे ॥ १५ ॥ ५० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी पट्टराणीनां, बोळ्यो हरिव्रज ताम ॥
 सुणो जडे तुमें जे कही, ते मानुं अजिराम ॥ १ ॥
 पण मन माहरुं शुद्ध ठे, जिम गंगानुं नीर ॥ तिम
 में संजम छेह्यो, तरवा जवदधि तीर ॥ २ ॥ उत्तर
 मेह न उन्नहे, उन्नहे तो वरसंत ॥ शा पुरुष वयण
 न उच्चरे, उच्चरे तो ते करंत ॥ ३ ॥ एम कही काव्यो तु
 रत, संजम छेवा सार ॥ संसार कारागृह्यकी, निक

ल्यो ते निरधार ॥ ४ ॥ तव दो कुमरी चिंतवै, प्रीतम
 थयो दृढचित्त ॥ अहिकंचूकि परें ठंमरो, वररो सं
 यम मित्त ॥ ५ ॥ सिद्धवधूनो लालची, थयो आप
 णो नूनाथ ॥ तो हवे आपण दो जणी, वहीयें प्रीत
 म साथ ॥ ६ ॥ जिहां काया तिहां ठांढी, वहे ज्युं
 निशिदिन संग ॥ त्युं दंपति व्रतगेहमें, वहेछुं अवि
 हड रंग ॥ ७ ॥ इम जाणी दो रागिणी, पतिसाथें
 करि नाव ॥ नवजलधि तरवा ग्रहे, संजम महोदुं
 नाव ॥ ८ ॥ वली बीजी जे राणीयो, जे नव सिद्धि
 जीव ॥ ते पण पतिसाथें अइ, व्रत ग्रहवाने अतीव ॥
 ॥ ९ ॥ हरिबल केरो जे अठे, श्रीपति कुल्ल दिवान ॥
 ते पण साथें सज थयो, लेहवा पद निर्वाण ॥ १० ॥
 इणिपरें नाविक जीवडा, राणी आदें केय ॥ पंच स
 यां परिवारछुं, हरिबल संयम लेय ॥ ११ ॥ दीक्षा
 महोत्सव जलि परें, श्रीवल सुबलें कीध ॥ मणि मा
 णिक सोवन घणां, आशी जनने दीध ॥ १२ ॥
 हवे हरिबल मोह उपरें, कोप्यो अतिही पूर ॥ काढ्यो
 कूटी मोहने, आत्मडिंगयी दूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ कडखानी देशी ॥ मोह नृप उपरें चढतरा वा

यो ॥ तेह्वे मन्नीनो जावनृप गुह चढी, मोह नृप
 सैन्यने दूर दायो ॥ मो० ॥ १५ ॥ सहज नालें करी
 ज्ञान गोला जरी, गुप्तदाऊ तपतें उमाडी ॥ आकना
 वूल ज्युं मोहना सैन्यने, जाव नृप मन्नीनो दे उमा
 डी ॥ मो० ॥ १६ ॥ सत्य गुण हाथीयें अष्टमद हाथीया,
 पातिया ज्ञानअंकूश पूरें ॥ दंज गढ तोडियो डुरित डिंग
 मोडियो, फोडीयो मोहमद कुंज दूरें ॥ मो० ॥ १७ ॥
 वार जे व्रत उमराव साथें चढ्या, सगवन संवर सुजट
 तूटा ॥ डुरित उमराव जे अष्टदश आकरा, वाकरी वां
 धता तेह खूटा ॥ मो० ॥ १८ ॥ राग ने द्वेष दो पुत्र
 मोहरायना, काम मंत्री सबल जगत रुंधी ॥ ध्यान
 कवाणथी विरति शर सांधीयां, वांधीयां तीन ते डुष्ट
 बुढी ॥ मो० ॥ १९ ॥ ढाल खीमा तणी खडग ले तप
 तणी, मन्नीयें मूलथी मोह ठेयो ॥ आतम डिंगथी
 शल्य काढी परं, अनुजव रंगमें मन्नि जेयो ॥ मो० ॥
 ॥ २० ॥ काल अनादि जे दंभ चोवीशमें, पीडतो जी
 वने मोह सिद्धी ॥ तेहने जीती मदमस्त मन्नी थयो,
 जाव नृप शरणथी जीत कीधी ॥ मो० ॥ २१ ॥ इण
 परें धीवरु सबल परिवारथी, गुरु कने आयो करि

मोह निज सैन्य मेली ॥ पांच मिथ्यात नीशाण शब्द
 करी, मन्त्री नृप ऊपरें चढत वेली ॥ मो० ॥ ७ ॥ अष्ट
 मद हाथिया सुकृत धन घातीया, पातीया मान ज
 ग जंतु केरा ॥ एहवा हस्ती मदमस्त जऊकारिया,
 जावनृप सेनमें करत खेरा ॥ मो० ॥ ८ ॥ साथें
 उमराव ले अष्ट दश अथ तणा, नही मणा कांइ
 त्रिभुवन हरता ॥ फोज नव नोहकषायनी महाबली,
 साबली मोहनी जीत करता ॥ १० ॥ मो० ॥ राग
 ने द्वेष दो पुत्र ते मोहना, क्षोभना करत संसारमांहे
 ॥ काम मंत्री प्रबल सबल दल मेलीयो, हेलीयो जि
 णें मनुराज प्राहें ॥ मो० ॥ ११ ॥ पांच पचवी
 शनी नालि किरिया करी, शोल कषायना कीध गोला
 ॥ दंज दारू जरी क्रोध अगनें करी, जाव नृप सैन्यमें
 करत होला ॥ मो० ॥ १२ ॥ इणि परें मोह नृप सैन्य जेलुं
 करी, चालीयो मन्त्रीशुं युद्ध करवा ॥ आमुही सामुही
 फोज दोये मली, मनसरें फोज दो मंझि लडवा ॥ मो० ॥
 १३ ॥ मोहनृप जावनृप दोय पोरस चढया, आखड्या
 युद्धमें पूर वेइ ॥ लढू चोराशि जे जोनि चोगानमें, युद्ध
 करतां गयो काल केइ ॥ मो० ॥ १४ ॥ तो पण मो
 हनुं जोर बाधुं धणुं, जाव नृप सैन्यनो अंत आ

यो ॥ तेहवे मन्हीनो जावनृप बुद्ध चढी, मोह नृप
 सैन्यने दूर ढायो ॥ मो० ॥ १५ ॥ सहज नालें करी
 ज्ञान गोलां जरी, गुप्तदारु तपतें उमाडी ॥ आकना
 वृज ज्युं मोहना सैन्यने, जाव नृप मन्हीनो दे उमा
 डी ॥ मो० ॥ १६ ॥ सत्य गुण हाथीयें अष्टमद हाथीया,
 पातिया ज्ञानअंकूश पूरें ॥ दंज गढ तोडियो डुरित डिंग
 मोडियो, फोडीयो मोहमद कुंज दूरें ॥ मो० ॥ १७ ॥
 बार जे व्रत उमराव साथें चढ्या, संगवन संवर सुजट
 तूटा ॥ डुरित उमराव जे अष्टदश आकरा, वाकरी वां
 धता तेह खूटा ॥ मो० ॥ १८ ॥ राग ने घेय दो पुत्र
 मोहरायना, काम मंत्री सबल जगत रुंधी ॥ ध्यान
 कवाण्यी विरति शर सांधीयां, वींधीयां तीन ते डुष्ट
 बुद्धी ॥ मो० ॥ १९ ॥ ढाल खीमा तणी खडग जे तप
 तणी, मन्हीयें मूल्यी मोह नेयां ॥ आतम डिंग्यी
 शब्द काढी परं, अनुभव रंगमें मन्त्रि नेयां ॥ मो० ॥
 २० ॥ काल अनादि जे दंज चोवीशमें, पीडतो जी
 वने मोह सिद्धी ॥ तेहने जीती मदमस्त मन्ही थयो,
 जाव नृप शरण्यी जीत कीधी ॥ मो० ॥ २१ ॥ इणि
 परें धीवरु सबल परिवार्यी, गुरु कने थायो करि

(१८८)

जीत मंका ॥ चोथा उद्घासनी ढाल चोवीशमी, लखि
कहे युद्धनी स्वर्ण टंका ॥ मो० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जित नीशाण वजावतो, इव्यथी जावथी जे
ह ॥ विरवल केरो पुत्रडो, आव्यो जिन चरणेह ॥ १ ॥
श्री मुनिचंड जे केवली, तेहना प्रणमी पाय ॥ कहे
मढी कर जोडिने, संयम नारि मेलाय ॥ २ ॥ तव
तिहां मुनिचंड केवली, विलंब न कीध लगार ॥ क
लशा चउ करी धर्मना, रची चोरी सुखकार ॥ ३ ॥
पंच सया परिवारहुं, सूकी मननो शोच ॥ स्वहस्ते
पंच मुष्टिनो, हरिबले कीधो लोच ॥ ४ ॥ अथ्यातमनी
पीठिका, तस मंमाण करेह ॥ मस्तकें वास ते जिन ठ
वी, करवा शिखगुण गेह ॥ ५ ॥ पंच माहा व्रत
उच्चरी, फेरा फरीया चार ॥ वर नारी आरोगियां, सं
वेग जे कंसार ॥ ६ ॥ गुरुना मुखथि कथा सुणी, शेठ
तणो दृष्टांत ॥ चार बहू चिहु पुत्रनी, सरखी जोई
तांत ॥ ७ ॥ पंचकण दीधावली तणा, दीधा बहूने
हार ॥ एकें नारख्या एक खाइ गइ, रारख्या एक विस्तार
॥ ८ ॥ आगम वेदनी कांमिका, करे मुख जिन उच्चार ॥
संयम स्त्री मढीयें वरी, वरत्या जय जयकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पञ्चीशमी ॥

समदम खंतितणा गुण पूरा, संगम रंगरगाण हे ॥ एदेशी

॥ राग धन्याश्री ॥ श्री मुनिचंद्र जे केवली पासें,

ले संजम उद्यासैं रे ॥ केवलीयें पण ढील न कीधी,

जिननी शिक्षा दीधी रे ॥ १ ॥ सुणो नवियां हरिवल,

जे रुपिराया ॥ ए आंकणी ॥ जैन मारग दीपाया

रे ॥ पंच सयागुं संयम लेई, मनु नव सफल करेई

॥ २ ॥ सु० ॥ पंच माहावत सुरगिरि केरो, नार उपा

ध्या जलेरो रे ॥ पंच सयागुं हरिवल साधु, यया

मुनि जनमें बाधु रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ चोव पूर्वनी विद्या

थापी, श्रुत केवली पद थापी रे ॥ विहार करे मुनि

चंद्रजी संगें, हरिकृपि पंचशें रंगें रे ॥ ४ ॥ सु० ॥

दशविध जतिनो धर्म ते पाजी, आत्म नव थच्छ

गजी रे ॥ तप थगनें करी कर्म प्रजाली, मोहनी

हाल ते बाजी रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ शुक्ल ध्यानने चोथे

वें ते, हरिवल रुपि शुन चढीया रे ॥ हरिकृपि परि

र शुक्ल ध्यानें, ते पण कर्मगुं नडिया रे ॥ ६ ॥

सु० ॥ तेरमें गुणगाणे ते आया, केवल कमजा

या रे ॥ सुर करे नंद कमजनी रचना, झानी दीया

वाया रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ जिन सुवन ज्युं करजल

जीत मंका ॥ चोथा उद्घासनी ढाल चोवीशमी, लब्धि
कहे युद्धनी स्वर्ण टंका ॥ मो० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जित नीशाण वजावतो, डव्यथी नावथी जे
ह ॥ विरवल केरो पुत्रडो, आव्यो जिन चरणेह ॥ १ ॥
श्री मुनिचंड जे केवली, तेहना प्रणमी पाय ॥ कहे
मह्वी कर जोडिने, संयम नारि मेलाय ॥ २ ॥ तव
तिहां मुनिचंड केवली, विलंब न कीध लगार ॥ क
लशा चउ करी धर्मना, रची चोरी सुखकार ॥ ३ ॥
पंच सया परिवारचुं, मूकी मननो शोच ॥ स्वहस्तें
पंच मुष्टिनो, हरिवर्ले कीधो लोच ॥ ४ ॥ अध्यातमनी
पीठिका, तस मंजाण करेह ॥ मस्तकें वास ते जिन ठ
वी, करवा शिखगुण गेह ॥ ५ ॥ पंच माहा व्रत
उच्चरी, फेरा फरीया चार ॥ वर नारी आरोगियां, सं
वेग जे कंसार ॥ ६ ॥ गुरुना मुखयि कथा सुणी, शेर
तणो दृष्टांत ॥ चार बहू चिहु पुत्रनी, सरखी जोई
तांत ॥ ७ ॥ पंचकण दीधावली तणा, दीधा बहूने
हार ॥ एकें नाख्या एक खाइ गइ, राख्या एक विस्तार
॥ ८ ॥ आगम वेदनी कांमिका, करे मुख जिन उचार ॥
संयम स्त्री मढीयें वरी, वरत्या जय जयकार ॥ ९ ॥

॥ ढाल पञ्चीशमी ॥

समदम स्वतितणा गुण पूरा, संगम रंगरगाण हे ॥ एदेशी

॥ राग धन्याश्री ॥ श्री मुनिचंद्र जे केवली पासं,
 ले संजम उद्गासं रे ॥ केवलीयें पण ढील न कीथी,
 जितनी शिक्षा दीधी रे ॥ १ ॥ सुणो नवियां हरिवल,
 जे रुपिराया ॥ ए आंकणी ॥ जैन मारग दीपाया
 रे ॥ पंच सयागुं संयम लेश, मनु नव सफल करेश
 रे ॥ २ ॥ सु० ॥ पंच माहाव्रत सुरगिरि केरो, नार उपा
 ब्यो नलेरो रे ॥ पंच सयागुं हरिवल साधु, थया
 मुनि जनमें वाधु रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ चौद पूर्वनी विद्या
 थापी, श्रुत केवली पद थापी रे ॥ विहार करे मुनि
 चंद्रजी संगें, हरिकृपि पंचशें रंगें रे ॥ ४ ॥ सु० ॥
 दशविध जतिनो धर्म ते पाली, आतम जव अछु
 वाली रे ॥ तप अगनें करी कर्म प्रजाली, मोहनी
 जाल ते वाली रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ शुक्ल ध्यानने चोये
 पदे ते, हरिवल कृपि गुन चढीया रे ॥ हरिकृपि परि
 कर शुक्ल ध्यानें, ते पण कर्मगुं नडिया रे ॥ ६ ॥
 ॥ सु० ॥ तेरमें गुणगणे ते आया, केवल कमला
 पाया रे ॥ सुर करे नंद कमलनी रचना, ज्ञानी दीवा
 कर गया रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ तिन धुवन ज्युं करजल

देखे, शिवरमणी पण चेखे रे ॥ पांढव सहस्र ते
 वर्षज सूधी, ये नविने बोधबुद्धि रे ॥ ७ ॥ सु० ॥
 मासनी संलेशणा करि अंतें, जइ वेठा शिव पंतें रे ॥
 धन धन हरिवल परिकर करणी, जइ शिवरमणी प
 रणी रे ॥ ८ ॥ सु० ॥ जो जो नवियां जीव दयायी,
 शा शा गुण ए प्रगट्या रे ॥ धीवर कुलमां जन्म ल
 हीने, ज्योतिवधूमां उमट्या रे ॥ १० ॥ सु० ॥ तुमें पण न
 वियां इणिपरें निसुणी, जीवदयाशुं राचो रे ॥ उदरने
 कारण करणी करतां, बंधन न पडे साचो रे ॥ ११ ॥
 ॥ सु० ॥ धर्मनो मर्म ते जीवदया ठे, खट दरिशनमें
 जाचो रे ॥ हरिवलनी परें रुद्धि लहो तुमें, जीवदयाशुं
 माचो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ जीवदयायी नवनिधि लहि
 यें, सवले सूत्र ठे साखी रे ॥ हरिवलनुं पण चरित्र
 ठे महोटुं, जुज निविधमें जांखी रे ॥ पाठांतर ॥ जुज
 विचार सार जांखी रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ ते अधिकार में
 नयणें निरख्यो, जेहवो शास्त्र में दीगो रे ॥ तेहवो में
 अधिकार वखाण्यो, देशीयें करीने मीगो रे ॥ १४ ॥
 ॥ सु० ॥ लाटापल्ली पुरनो वासी, पुनिम गडें सोदे
 रे ॥ पंढित नरसिंह धनजी केरो, तप गुणें करी मा
 दे रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ तस आग्रहयी सवणा चारे,

रास रच्यो में रूडो रे ॥ वेधक रसिया धर्मी जनने,
 ए ठे मधुनो पूडो रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ में तो करी ठे वा
 लक कीडा, हुं गुं जाणुं जोडी रे ॥ पंमित होय ते
 शुद्ध करेजो, मत कोइ नाखो विखोडी रे ॥ १७ ॥
 ॥ सु० ॥ रसनाने रसें अधिकुं उठुं, जे में नारखुं अ
 नारखुं रे ॥ ते मिछाछकड कर जोडी, देउं पंच सम
 हें रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ शुद्ध परंपर सोहम तखतें, प्रग
 द्या हीरसूरिंदो रे ॥ तस शिष्य धर्मविजय भ्रमधोरी,
 दीपे ज्युं शारदचंदो रे ॥ १९ ॥ सु० ॥ तस शिष्य
 पंमित धनहपे ज्ञानी, सुमति संदा चित्त मानी रे ॥
 तस शिष्य पंमित कुशल विजय कवि, प्रतिबोध्या अ
 नुमानी रे ॥ २० ॥ सु० ॥ तस आता गणि कमल
 विजयगुन, ज्ञान विज्ञानमें लीना रे ॥ तस शिष्य पं
 मित लखमिविजय गुरु, संवेगरसमें जीना रे ॥ २१ ॥
 ॥ सु० ॥ तस शिष्य पंमित दो गुण ग्याता, केसर अ
 मर दो आता रे ॥ तस पदकिंकर लेब्धिविजय कहे,
 चार उल्लास विख्याता रे ॥ २२ ॥ सु० ॥ शीलांगरथ
 संवत्सर दशकें, १८१० महाशुद्धि बीज जृगुवारें रे ॥
 हरिवलना गुण जीवदया पर, गाया में एक तारें रे
 ॥ २३ ॥ सु० ॥ श्रीतपगच्छ नन दिनमणि सोहे, श्री

विजयधर्म सूरिओ रे ॥ तस गणधरना राजमां रसि
 यो, गायो मन्त्रि विशेषो रे ॥ १४ ॥ सु० ॥ वाव्य
 वंदर श्रीअजित प्रसादें, रही सीमाणा वासैं रे ॥ रा
 णा श्रीगजसिंहने राज्यें, रास रच्यो में उद्गासैं रे ॥ १५ ॥
 ॥ सु० ॥ हरिवलना गुण सुणतां पामे, जीवी सिद्ध
 समाणी रे ॥ ढाल पचवीशमी चोथे उद्गासैं, लब्धि
 कहे गुण खाणी रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ ढाल उगणसाठ
 सातशें दोहा, हरिवल चरित्रथी जांख्या रे ॥ साडात्रण
 सहस्र श्लोक एकावन, ग्रंथाग्रंथ ए दाख्या रे ॥
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ ज्ञाता जुगता दा
 च्यो में वारु रे ॥ हनुआकर्मी
 शे सघली ए वाचा रे ॥ १८ ॥
 भंगल होजो, दिन दिन लब्धिमें
 नी परें संपद लेहेजो, लब्धि
 ॥ १९ ॥ सु० ॥ इति श्री हरि
 चतुर्थ उद्गासः समाप्तः ॥

॥ इति जीवदयापरे ह

विजयधर्म सूरेशो रे ॥ तस गणधरना राजमां रसि
 यो, गायो मन्त्रि विशेषो रे ॥ ३४ ॥ सु० ॥ वाय
 बंदर श्रीअजित प्रसादें, रही सीमाणा वासैं रे ॥ रा
 णा श्रीगजसिंहने राज्यें, रास रच्यो में उल्लासैं रे ॥ ३५ ॥
 ॥ सु० ॥ हरिवलना गुण सुणतां पामे, जीवी सिद्ध
 समाणी रे ॥ ढाल पचवीशमी चोथे उल्लासैं, लब्धि
 कहे गुण खाणी रे ॥ ३६ ॥ सु० ॥ ढाल उगणसात
 सातगें दोहा, हरिवल चरित्रथी नांख्या रे ॥ साडात्रण
 सहस्र श्लोक एकावन, ग्रंथाग्रंथ ए दाख्या रे ॥
 ॥ ३७ ॥ सु० ॥ ज्ञाता जुगता दाता सारु, संवंध र
 च्यो में वारु रे ॥ हलुआकर्मि जे हरो साचा, मान
 रो सवली ए वाचा रे ॥ ३८ ॥ सु० ॥ चउविह संवने
 मंगल होजो, दिन दिन लब्धिमें जलजो रे ॥ हरिवल
 नी परें संपद लेहेजो, लब्धिनी वाचा फलजो रे ॥
 ॥ ३९ ॥ सु० ॥ इतिश्री हरिवल चरित्रे जीवदयापरे
 चतुर्थ उल्लासः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ इति जीवदयापरे हरिवलरासः समाप्तः ॥

